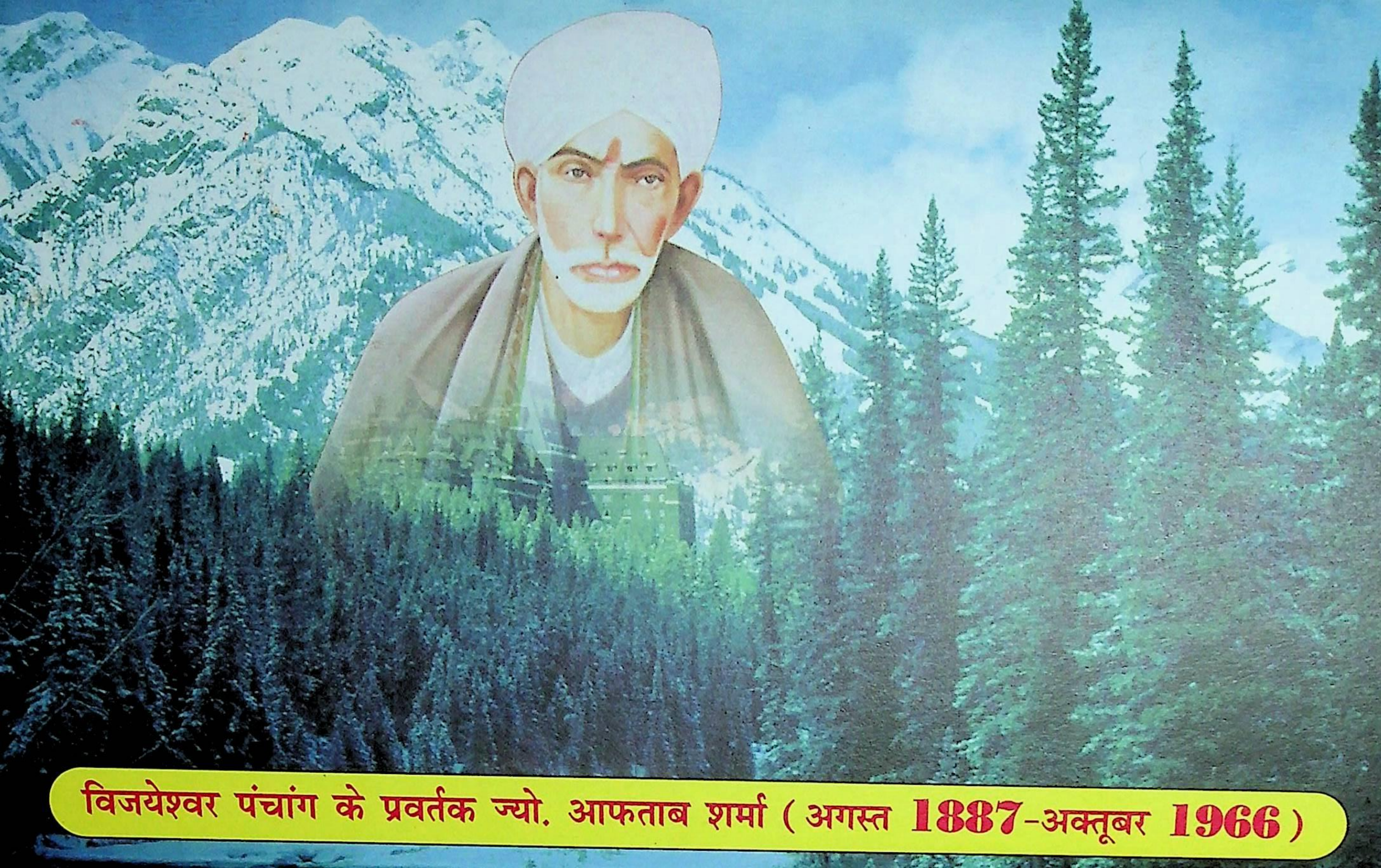
विजयेश्वर पञ्चाङ्ग



मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्तपो मानसम् उच्यते।।


विजयेश्वर पंचांग के प्रवर्तक ज्यो. आफताब शर्मा (अगस्त 1887-अक्तूबर 1966)

प्रणवे च दृढ़ा मतिः

ॐ

स वै "हिन्दू"

शारदा

कन्नड़

गुरुमुखी

सिन्धी

उड़िया

उर्दू

اوم

गुजराती–मराठी

असमिया–बंगला

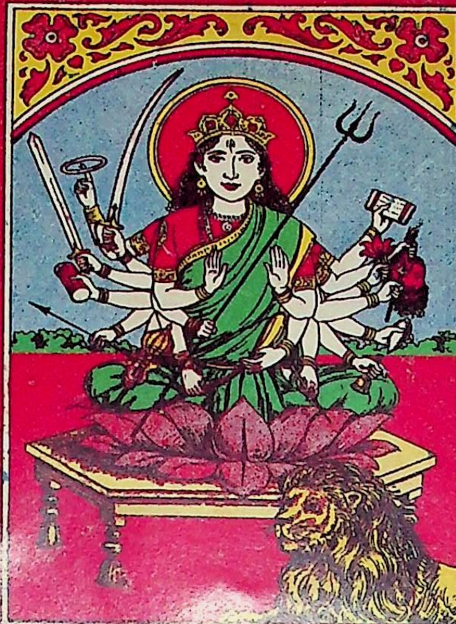
तमिल

मलयालम्

तेलुगु



क्रूल पछ



राजा :शनि

श्री सप्तर्षि
सम्वत् ५०९८
विक्रमी
सम्वत् २०७९

मन्त्री :बृहस्पति

ॐ संसारसागरमहं तरितुं सुनौकां
राज्ञीं नमामि शिरसा शिव सुन्दरीं त्वाम्।।
सर्वेश्वरीं सकल लोक सुख प्रदात्रीं
त्वामेव देवि सततं शरणं प्रपद्ये।।

ॐ अष्टादशी... दायुतैर्भुजैर्या
...तुं समस्तभुवनानि विपद्भ्य...।।
जागर्त्यशेषजनदुःखहरा परा सा
श्रीशारि... मंगलसन्त...

प्रवर्तक
ज्यो० आफताब शर्मा

संस्थापक
पं० प्रेमनाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

सप्तर्षि **5098**

श्री शाका 1944 ईस्वी 2022-23

विक्रमी **2079**

विजयेश्वर सं० 338 | निर्वासन सं० 33

सम्पादक मण्डल
ओंकार नाथ शास्त्री, भूषण लाल ज्योतिषी, अवतार कृष्ण ज्योतिषी, विमर्श ज्योतिषी, सुमन ज्योतिषी
punchang.vijayshwar@yahoo.com

Price : Rs. 150.00

कलियुग सं0 5123 **विषय सूची** श्री कृष्ण सं0 5258

1 यदि आप को धर्म शास्त्र के विषय में कोई समस्या हो।

2 यदि आप पंचांग के सम्पादक ओंकार नाथ शास्त्री से मिलना चाहते है तो दो दिन पहले सम्पर्क करें।

9419133233

इनको भूलिये मत

हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूल स्रोत

- सन्ध्या चोंग
- सन्यवारी
- ब्रान्द फश
- हून्य म्यट
- तरंग गण्डुन
- देव गौण
- द्वार पूजा
- फिर थुर
- आलथ
- व्यूग
- क्रूल खारुन
- लाय बोय
- दयबत
- मास अबीद
- वारिदान
- दिवत गूल्य
- दिवच तबचि
- बूठ मुचरिथ कमरस मंज अचुन
- गुरुस आदर करुन
- जिठ्यन आदर करुन
- गुल्य गंडिथ नमस्कार करुन
- मॉलिस माजि हुँज सेवा
- मेखला संस्कार
- शंख वायुन
- न्यशपत्र थालस प्यठ थावन्य
- न्यश पत्रि बुथ वुछुन
- बिहिथ ख्योंन
- वरी बनावन्य
- तहर बनावन्य
- थालस बुधवुछुन
- थाल भरुण
- अनथ
- गौर त्रय
- क्रूल पछ
- रत्न चाँगिजि
- मनन माल

यज्ञोपवीत का संस्कार घर पर करें

घर पर कशमीरी भाषा में बात करें

बच्चे को 12 वर्ष की आयु तक यज्ञोपवीत धारण करायें

जन्म दिन तिथि के अनुसार मनायें

समाज में भ्रम फैलाने वालों से सावधान रहे

दो शब्द

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय के सभी सदस्य गण विजयेश्वर पंचांग के 338वें वर्षगांठ के शुभ महोत्सव पर पूरे समाज को हार्दिक बधाई देते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि नया वर्ष आप के लिए हर दिन हर पल के लिए मंगलमय हो।

इस पंचांग में सभी पर्व, त्यौहार इत्यादि शास्त्रों के आधार पर लिखे जाते हैं परन्तु कई नक्षत्र सूची ज्योतिषी कभी-कभी जनता को द्विविधा में डालने का प्रयास करते हैं मैं पूरे समाज से प्रार्थना करता हूँ कि इन नक्षत्र सूची ज्योतिषों से सावधान रहें।

यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के किसी भी विषय में किसी प्रकार का कोई संशय हो तो हम से सर्म्पक करें। हम 24 घण्टे समाज सेवा के लिए उपलब्ध हैं।

94191-19922, 94192-40070, 94192-38397, 94192-03424

punchang.vijashwar@yahoo.com

महाश्राद्ध

वह पुण्यात्मा जिन का आकस्मिक निधन कोविड-19 महामारी के कारण हुआ तथा जिन का निश्चित तिथि पर कोई भी क्रिया कर्म नही किया गया उन के उपलक्ष्य में

पं० प्रेम नाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान, जम्मू

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी शुक्रवार तदानुसार 10 जून 2022 को गंगा दशहरा पर 'तीर्थ राज्य शादीपुरा' संगम गान्धरबल कश्मीर में एक महाश्राद्ध का आयोजन करने जा रहा है जिस में कश्मीर मण्डल के विद्वान् कर्मकाण्डी ब्रह्मण सम्मिलित होंगे।

यदि ऐसे शुभ कार्य में कोई भी महानुभाव अपना सहयोग देना चाहता है तो वह इस नम्बर पर संर्म्पक कर सकता है

Pt. Prem Nath Shastri Sanskratik Shod Sansthan,

Mobile No : 94191-33233

महाश्राद्ध को सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग देकर कर पापों से मुक्ति प्राप्त करें।

प्रबन्धक

सूचना

विजयेश्वर वटुक पंचांग

इस वर्ष विजयेश्वर पंचांग के साथ एक छोटा सा पंचांग हम ने जनता की सुविधा के लिए रखा है यह छोटा सा पंचांग आप को विजयेश्वर पंचांग के साथ ही मुफ्त में मिलेगा। कोई भी विक्रेता 'विजयेश्वर वटुक पंचांग' को अलग से बेचने की गलती ना करें।

प्रबन्धक

संदिग्ध व्रत

जन्माष्टमी जन्म सत्तम् (18 अगस्त)

भगवान् कृष्ण का जन्म भाद्र कृष्ण पक्ष अष्टमी को रात्रि के बारह बजे हुआ है। इस वर्ष 18 अगस्त सप्तमी रात के 9 बजे 21 मि तक है फिर अष्टमी आरम्भ होती है और अष्टमी 19 अगस्त रात के 10 बजे 59 मि तक ही है। इस कारण इस वर्ष जन्माष्टमी का व्रत सप्तमी 18 अगस्त 2022 गुरुवार को होगा।

दीपावली

कार्तिक कृष्ण अमावसी को यदि प्रदोष में अमावसी होगी तो अमावसी को ही 'दीपावली' मनानी चाहिये यदि चतुदर्शी को प्रदोष के समय अमावसी होगी तथा अमावसी को प्रदोष में अमावसी का अभाव होगा तो चर्तुदशी को ही दीपावली मनानी चाहिए। प्रदोष के समय अमावसी का होना। जरूरी है इस वर्ष 24 अक्टूबर को प्रदोष में अमावसी है तथा अमावसी 25 अक्टूबर को दिन के 4:18 तक ही है इस कारण दीपावली का पर्व 24 अक्टूबर को मनाया जाएगा।

होली

यह पर्व फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को मनाया जाता है यह पर्व प्रदोष व्यापिनी लिया जाता है यदि पूर्णिमा प्रदोष में होगी तो पूर्णिमा को होली का त्योहार मनाना चाहिए इस वर्ष 6 मार्च को प्रदोष में पूर्णिमा है तथा 7 मार्च को शां 6 बजे 9 मि तक पूर्णिमा है प्रदोष में पूर्णिमा का न होने से 6 मार्च को होली का पर्व होगा।

अक्षया तृतीया

अक्षया तृतीया को पूर्वह्णव्यापिनी ग्रहण करना चाहिए दो दिन तृतीया होने पर पहली को अक्षया तृतीया का पर्व मनाना चाहिए। इस वर्ष 3 मई को पूर्वाह्ण में तृतीया होने से अक्षया तृतीया का पर्व 3 मई को है। (पूर्वाह्ण = सवेरे से दोपर का समय)

वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्णव्यापिनी
ग्राह्या दिन द्वयेपि तद्वयाप्तौ परैव।।

(धर्म शास्त्र)

परशुराम जयन्ती

परशुराम जी का जन्म वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया को रात्रि के प्रथम प्रहर में हुआ था इस कारण इसे प्रदोष व्यापिनी ग्रहण करना चाहिए। इस वर्ष 3 मई को प्रदोष में तृतीया है इस कारण परशुराम जयन्ती 3 मई को है।

निषेध समय 2022-23 के लिये

स्यंध	17 अगस्त से 17 सिप्तम्बर तक
पितृ पक्ष	11 सिप्तम्बर से 25 सिप्तम्बर तक
शुक्र अस्त	1 अक्टूबर से 25 नवम्बर तक
पौष	16 दिसम्बर से 14 जनवरी 2023
चैत्र कृष्ण पक्ष	8 मार्च 2023 से 21 मार्च 2023 तक

सम्पादक

नित्य नियम विधि

प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में नींद से उठते ही, दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुये पढ़ें :

कराग्रे बसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

अर्थ : हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, हाथ के मध्य भाग में सरस्वती और हाथ के मूलभाग में ब्रह्माजी निवास करते हैं।

बिस्तरे से उठने पर यह श्लोक पढ़ें :

समुद्र वसने, देवि पर्वतस्तन मण्डिते।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

अर्थः समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करने वाले, पर्वत रूपस्तनों से शोभायमान भगवान् विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी ! आप मेरे पाद-स्पर्श को क्षमा करें।

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ें :

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे।
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः।

दायां पैर धोते हुए पढ़ें :

ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने।
नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।

मुंह धोते हुए पढ़ें :

गंगा, प्रयाग, गयनै मिष पुष्करादि-तीर्थानि,
यानि भुवि सन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि
करपद्मपुटे मदीये, प्रक्षालयन्तु वदनस्य
निशाकलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव

समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

मुहं धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढ़े :

ॐ गायत्र्यै: नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

यज्ञोपवीत गले में फिर से धारण करते हुए पढ़ें :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यम् अग्य्रं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः, यज्ञोपवीतम् असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि।

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढ़ें:

प्रातः स्मरामि गणनाथम् अनाथ बन्धुं,
सिन्दूर पूरपरि शोभित गण्ड युग्मम्।
उद्दण्ड विघ्न परि खण्डन चण्ड दण्डम्,
आखण्ड लादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम्।

अर्थ : अनाथों के बन्धु, सिन्दूर से शोभायमान दोनों गण्ड मुकट वाले, प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कार किये हुये श्री गणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

ब्रह्मा-मुरारिः त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो-बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः शनि-राहु-केतवः,
कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु-प्रभातम्।

अर्थ: ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

भृगुः वसिष्ठः क्रतुः, अङ्गिराश्च,
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिः च्यवनश्च दक्षः,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ: भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष ये सभी मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्,
प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नोप शान्तये।
अभिप्रीतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि,
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा धिपतये नमः।

बिभ्रत् दक्षिण हस्तपद्म युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे, वामे मोदक पूर्णपात्र, परशु नागो पवीति त्रिदृक्। श्रीमान् सिहंयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्, दिश्यात् ईश्वरपुत्र ईश भगवान् लम्बोदरः शर्मनः।।

सिन्दूर कुंकुम हुताशन विद्रुमार्क,
रक्ताब्ज दाडिम निभाय चतुर्भुजाय।
हेरम्ब भैरव गणेश्वर नायकाय,
सर्वार्थसिद्धि फलदाय गणेश्वराय।।

मुख्यं द्वादश नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत् तु शिवोक्तानि स लभेत् सिद्धिम् उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं

द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम् एव च, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र नायकम्। पठते श्रृणुते यस्तु, गणेश स्तवम् उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धार्मार्थी धार्मम् अक्षयम्। सुमुखैश्चैक दन्तश्च, कपिलो गजकर्णक:, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिप:। धूम्र केतु गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजानन:, द्वादशै स्तानि नामानि, गणेशस्य महात्मन:, य पठेत श्रृणुयात् वापि स लभेत् सिद्धिम् उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

सन्ध्या उपासना विधि

सन्ध्या का वास्तविक अर्थ है दिन और रात्रि के मिलने का समय, सांयकाल। शास्त्रों में सन्ध्या के विषय में लिखा है :

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रता:।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्।।

अर्थात् : जो नियम पूर्वक प्रतिदिन संध्या करते हैं वे पापरहित हो कर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

संध्योपासना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है परन्तु समय के साथ साथ संध्योपासना का लोप होता जा रहा है इस को फिर से सुदृढ करने के निमित में संक्षिप्त रूप में शास्त्रानुसार संध्या उपासना विधि यहां पर लिख रहा हूँ ताकि हमारे नवयुवक इस को अपना कर अपने जीवन का उद्धार करें तथा अपनी संस्कृति के अंग भूत सन्ध्या उपासना विधि का प्रचार करें। हमारे पूर्वज दरिया के किनारे सन्ध्या करते थे परन्तु विस्थापन के कारण कश्मीरी पण्डित पूरे विश्व में भिखर गया और ऐसे स्थानों पर गये जहां पर दरिया, नदियां नही है इस कारण आप अपने बाथरूम में भी सन्ध्या कर सकते है (यह शास्त्र की आज्ञा है) जब आप स्नान के लिये बाथरूम में नहाने के लिये जायेंगे तो सबसे पहले बायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें :

ॐ नमोस्त्व नन्ताय सहस्त्र मूर्तये,
सहस्त्र पादाक्षि शिरोरु बाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्त्र कोटी युगधारिणे नम:।

दायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें :

ॐ नम: कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते।।

अञ्जलि में जल उठा कर पढ़ें :

गंगा प्रयाग गय नैमिष पुष्करादि
तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसादात्।
आयान्तु तानि कर पद्म-पुटे मदीये,
प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्।

इसी जल से मुँह धोते हुये पढ़ें

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मान:।
शंस्यो अरुरुषो धूर्ति: प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

यज्ञोपवीत दोनों हाथों के अँगूठों में रख कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुये धोयें

ॐ भू भुंवः स्वः तत्-सवितुर्-वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।

यज्ञोपवीत को पहले दायें भुजा में डालते हुये पढ़ें :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्राजापर्तेयत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके नमस्कार करते हुये पढ़ें

नमो अग्नये अप्सुषदे, नम इन्द्राय, नमो वरुणाय, नमो वारुण्यै, नमोऽपा पतये, नमोऽदभ्यः।

स्नान करते हुये पढ़ें

ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर-आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवासः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

माथे पर सात बार पानी छिड़कते हुये पढ़ें :

ॐ भूः, ॐ भुवः ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्।

प्राणायाम तथा उपस्थान करते हुये पढ़ें :

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्त-रिक्षसत् होता वेदिषत् अतिथि दुरोण सत्। नृषत वरसत्, ऋत सत् व्योमसत् अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम्।

सूर्य देवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें :

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

तर्पण करते हुये पढ़ें :

ॐ नमो देवभ्य:

यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें

स्वाहा ऋषिभ्य:

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें :

स्वधा पितृभ्य:

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु एवम् अस्तु। गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द गोविन्द नमो नमोस्तु।

स्नान करके सूर्य भगवान् के ओर नमस्कार करते हुये पढ़े :

ॐ गायत्र्यै नमः, सावित्र्यैं नमः, सरस्वत्यै नमः। ॐ प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा, गायत्रं छन्द एव च। देवोग्नि व्याहृतिषु च, विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते व्याहृतयः, पूर्वस्य परमेष्ठिनः, व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च, ब्राह्मम्-अक्षरम् ओऽम् इति। व्याहृतीनां समस्तानां, दैवतं तु प्रजापतिः। व्यस्तानाम् अयम् अग्निश्च, वायुः सूर्यश्च देवताः। छन्दश्च व्याहृतीनाम् एकाक्षराणां उक्ताख्यं, द्वयक्षराणां अत्युक्ताख्यम्। विश्वामित्र

ऋषिश्छन्दो, गायत्रं सविता तथा देवतो पनये जप्ये, गायत्र्या योग उच्यते। आवाहयामि गायत्रीं, सर्वपापप्रणाशिनीम्। न-गायत्र्याः परं जप्यं, न व्याहृति-समं हुतम्। आगच्छ वरदे देवि, जप्ये में सन्निधो भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता। अग्नि-र्वायुश्च-सूर्यश्च बृहस्पत्या-प एव च। इन्द्रश्च विश्वे देवाश्च देवताः समुदाहृताः। एवम् आर्षं छन्दो दैवतं, विनियोगं चानु स्मृत्य। गायत्र्या शिखां आबद्ध्य, गायत्र्यैव समन्ततः। आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं-कुर्यात्।

अपने आप को पानी छिड़क कर अंजलि धारण करते हुये पढ़े :

ॐ ओजोसि सहोसि बलं-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि। विश्वं-असि विश्वायुः सर्वं-असि सर्वायुर्-अभिभूः

तीन आचमन एक साथ करते हुये पढ़े :

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्यु-कृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यत् रात्र्या पापं-अकार्षं, मनसा वाचा हस्ताभ्यां, पद्भ्यां उदरेण शिश्ना। रात्रिस्तत्- अवलुम्पतु, यत् किंचित् दुरितं मयीदम् अहं-आपोऽमृत-योनौ सूर्य ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा

अब सारे शरीर पर पानी छिड़कते हुये पढ़े

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा अरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः। ॐ शन्नो देवीर् अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभिस्त्रवन्तु नः।

तीन बार आचमन करते हुये पढ़े

ॐ अन्तः-चरसि-भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार-आपोज्यातिः रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

उपस्थान करते हुये पढ़ें:

शुक्रियं रुद्रस्य-य उदगात्-पुरस्तात-महतो -अर्णवात् बिभ्राज-मानः सरिरस्य मध्ये। स माम्-ऋषभो रोहिताक्षः, सूर्यो विपश्चित्-मनसा पुनातु। यत्-ब्रह्मा-वादिष्म तन्मा मा हिंसीत्-सूर्याय बिभ्राजाय वै नमो नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर सभी पितरों का तर्पण करकें फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें :

मातृपक्ष्यास्तु ये केचित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः
गुरु-श्वरशुर्-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः,
ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध- वर्जिता,
जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम्-उत्तमाम्

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़े

ॐ नमो देवेभ्य:

गले में यज्ञोपवीत रख कर

स्वाहा ऋषिभ्य:

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर

स्वधा पिृभ्य:।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें

आब्रह्मस्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं।
जगत् तृप्यतु-तृप्यतु-तृप्यतु-एवम्-अस्तु

सूर्य देवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें

नमो धर्म निधानाय नम: स्वकृत-साक्षिणे, नम:
प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नम:, शान्ति:
पुष्टि-स्तथा तुष्टि: सन्तु मे त्वत्-प्रसादत:,
सर्वपाप-प्रशान्तिश्च तीर्थराज नमोस्तुते।

(नोट : यदि आप पूरी विधि अनुसार सन्ध्या करना चाहते है तो आप हमारे कार्यालय द्वारा छपाई हुई 'सन्ध्या पुस्तक' मंगा सकते है।)

गुरु स्तुति:

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वधी साक्षिभूतं,
भवातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेद वृत्ति:,
ध्यायं ध्यायं पशुपतिं उमाकान्तं अन्तर्निषण्णम्
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूषधारा,
भूयो भूयो निजगुरुपदां भोजं युग्मं नमामि।।

यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ,
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।
श्री गुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द विग्रहम्,
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्,
ज्ञान मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः,
गुरु एव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।
वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्,
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व संस्थितम्।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्,
हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्

नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्,
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्मार्थ-सिद्धये।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तंयेन चराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अज्ञानतिमरान्धास्य ज्ञानञ्जन-शलाकया,
चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।
हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्ठे न कश्चन,
सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्,
बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुरवे नमः।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे,
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री गुरवे नमः।

नमस्ते नाथ, भगवन् शिवाय गुरु रूपणि,
विद्यावतार संसिद्धयै स्वीकृतान एक विग्रह:।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे,
सर्वज्ञान तमो भेद भानवे चिद्धनाय ते।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय मरात्मने,
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यहेतवे।।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्,
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्
पुरस्तात्-पार्श्वयो: पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यध:,
सदामत्-चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।
गुरु ब्रह्म: गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वर:,
गुरुएव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नम:।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।1।

अर्थ : हे आदिदेव भास्कर ! आपको प्रणाम है, आप मुझपर प्रसन्न हों, हे दिवाकर ! आपको नमस्कार है, हे प्रभाकर! आपको प्रणाम है।

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपदमधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।2।

अर्थ : सात घोड़ों वाले रथ पर आरूढ़, हाथ में श्वेत कमल धारण किये हुए, प्रचण्ड तेजस्वी कश्यप कुमार सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।3।

अर्थ : लोहितवर्ण रथारूढ़ सर्वलोक पितामह महापापहारी सूर्य देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।4।

अर्थ : जो त्रिगुणमय ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप हैं, उन महापापहारी महान् वीर सूर्य देव को मैं नमस्कार करता हूँ।

बृंहितं तेज:पुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।5।

अर्थ: जो बढ़े हुए तेज के पुञ्ज हैं और वायु तथा आकाश स्वरूप हैं, उन समस्त लोकों के अधिपति सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।6।

अर्थ : जो बन्धूक (दुपहरिया) के पुष्पसमान रक्तवर्ण और हार तथा कुण्डलों से विभूषित हैं, उन एक चक्रधारी सूर्य देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेज: प्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।7।

अर्थ : महान् तेज के प्रकाशक, जगत् के कर्ता, महापापहारी उन सूर्य भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।8।

अर्थ : उन सूर्य देव को, जो जगत के नायक हैं, ज्ञान, विज्ञान तथा मोक्षको भी देते हैं, साथ ही जो बड़े-बड़े पापों को भी हर लेते हैं, मैं प्रणाम करता हूँ।

सूर्य उपासना

प्रात: स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।

सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं

ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।1।

अर्थ : मैं सूर्यभगवान् के उस श्रेष्टरूप को प्रातः समय स्मरण करता हूँ; जिसका मण्डल ऋग्वेद है, तनु यजुर्वेद है और किरणें सामवेद हैं और जो ब्रह्माका दिन है, जगत् की उत्पत्ति, रक्षा और नाश का कारण है तथा लक्ष्य और अचिन्त्यस्वरूप है।

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि

ब्रंह्मेन्द्र पूर्वकसुरै र्नुतमर्चितं च।

वृष्टिप्रमोचन विनि ग्रहहेतुभूतं

त्रैलोक्य पालनपरं त्रिगुणात्मकं च।2।

अर्थ : मैं प्रातः समय शरीर, वाणी और मन के द्वारा ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं से स्तुत और पूजित, वृष्टि के कारण एवं अवृष्टि के हेतु, तीनों लोकों के पालन में तत्पर और सत्त्व आदि त्रिगुणरूप धारण करने वाले तरणि (सूर्य भगवान्) को नमस्कार करता हूँ।

प्रातर्भजामि सवितारम नन्तशक्तिं

पापौघ शत्रुभयरोग हरं परं च।

तं सर्वलोक कलनात्मक कालमूर्तिं

गोकण्ठ बन्धन विमोचन मादिदेवम्।3।

अर्थ : जो पापों के समूह तथा शत्रुजनित भय एवं रोगों का नाश करने वाले हैं, सबसे उत्कृष्ट हैं, सम्पूर्ण लोकों के समय की गणना के निमित्त भूत कालस्वरूप हैं और गौओं के कण्ठबन्धन छुड़ाने वाले हैं, उन अनन्तशक्ति सम्पन्न आदि देव सविता (सूर्य भगवान्) को मैं प्रातः काल भजता हूँ।

गणपति स्तोत्रम्

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बघ्नता,

स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम्।

पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपै: सिद्धये।
ध्यात: पंचशरेण विश्वजितये पायात्स नागानन:।।

अर्थ : त्रिपुरासुर को जीतने के लिये शिव ने, बलि को छल से बाँधते समय विष्णु ने, जगत् को रचने के लिये ब्रह्मा ने, पृथ्वी धारण करने के लिए शेषनाग ने, महिषासुर को मारने के समय पार्वती ने, सिद्धि पाने के लिए सिद्धों के अधिपतियों (सनकादि ऋषियों) ने और सब संसार को जीतने के लिये कामदेव ने जिन गणेश जी का ध्यान किया है, वे हम लोगों को पालन करें।

विघ्न ध्वान्त निवारणै कतरणि
र्विघ्नाट वीह व्यवाड्,
विघ्न व्यालकुलाभिमान गरुडो
विघ्नेभ पंचानन:।
विघ्नोत्तुङ्ग गिरि प्रभेदनपवि
र्विघ्नाम्बु धेर्वाडवो,
विघ्नाघौघ घनप्रचण्ड, पवनो
विघ्नेश्वर: पातु न:

अर्थ: विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने वाले एकमात्र सूर्य, विघ्नरूप वन के जलाने वाले अग्नि, विघ्नरूप सर्पकुल का दर्प नष्ट करने के लिये गरुड, निघ्नरूप हाथी को मारने वाले सिंह, विघ्नरूप ऊँचे पहाड़ के तोड़ने वाले वज्र, विघ्नरूप महासागर के वडवानल, विघ्नरूपी मेघ समूह को उड़ा देने वाले प्रचण्ड वायुसदृश गणेश जी हम लोगों का पालन करें।

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन-मदगन्धलुब्ध-मधुप-व्यालोल गण्डस्थलम्
दन्ताघात विदारितारि रुधिरै: सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शेलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्

अर्थ : जो नाटे और मोटे शरीर वाले हैं, जिनका गजराज के सम्मान मुँह और लम्बा उदर है, जो सुन्दर है तथा बहते हुए मद की सुगंन्ध

के लोभी भौंरों के चाटने से जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दाँतों की चोट से विदीर्ण हुए शत्रुओं के खून से जो सिन्दूर की सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओं के दाता और सिद्धि देने वाले उन पार्वती के पुत्र, गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।

श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणै:
पूजितं श्वेतगन्धै:
क्षीराब्धौ रत्नदीपै: सुरनरतिलकं
रत्नसिंहासनस्थम्
दोर्भि: पाशाङ्कुशाब्जा भयवरमनसं
चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं,
ध्यायेत्-शान्त्यर्थमीशं गणपतिम्-अमलं
श्रीसमेतं प्रसन्नम्

अर्थ : जिनका शरीर श्वेत है, कपड़े श्वेत है, श्वेत फूल, चन्दन और रत्नदीपों से क्षीर समुद्र के तट पर जिनकी पूजा हुई हैं, देवता और मनुष्य जिनको अपना प्रधान पूज्य समझते हैं, जो रत्न के सिंहासन पर बैठे हैं, जिनके हाथों में पाश (एक प्रकार की डोरी), अंकुश और कमल के फूल हैं, जो अभयदान और वदरान देने वाले हैं, जिनके सिर में चन्द्रमा रहते हैं और जिनके तीन नेत्र हैं, निर्मल लक्ष्मी के साथ रहने वाले उन प्रसन्न प्रभु गणेश जी का, अपनी शान्ति के लिये ध्यान करें।

आवाहये तं गणराजदेवं
रक्तोत्पलाभासम् अशेषवन्द्यम्।
विघ्नान्तक विघ्नहरं गणेश
भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।

अर्थ : जो देवताओं के गण के राजा हैं, लाल कमल के समान जिनके देह की शोभा है, जो सबके वन्दनीय हैं, विघ्न के काल हैं, विघ्न के हरने वाले हैं, शिवजी के पुत्र हैं, उन गणेश जी का मैं सिद्धि के साथ आवाहन और भजन करता हूँ।

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति
परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गते: कारणमीश्वरं वा
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

अर्थ : जिनको वेदान्ती लोग ब्रह्म कहते हैं और दूसरे लोग परम प्रधान पुरुष अथवा संसार की सृष्टि के कारण या ईश्वर कहते हैं, उन विघ्नविनाशक गणेश जी को नमस्कार है।

विघ्नेश वीर्याणि विचित्रकाणि
वन्दीजनैर्मागधकै: स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं
ब्राह्मे जगत्-मङ्गलकं कुरुष्व।।

अर्थ : हे विन्घेश ! हे गजानन ! मागध और वन्दीजनों के मुख से गाये जाते हुए अपने विचित्र पराक्रमों को सुनकर, ब्राह्ममुहूर्त में उठो और जगत् का कल्याण करो।

गणेश हेरम्ब गजाननेति
महोदर स्वानुभवप्रकाशिन्।
वरिष्ठ सिद्धिप्रिय बुद्धिनाथ
वदन्त एवं त्यजत प्रभीती:।।

अर्थ : हे गणेश ! हे हेरम्ब ! हे गजानन ! हे लम्बोदर ! हे अपने अनुभव से प्रकाशित होने वाले। हे श्रेष्ठ ! हे सिद्धि के प्रियतम ! हे बुद्धिनाथ ! ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यों ! अपना भय छोड़ दो।

अनेकविघ्नान्तक वक्रतुण्ड
स्वसंज्ञवासिंश्च चतुर्भुजेति।
कवीश देवान्तक नाशकारिन्
वदन्त एवं त्यजत प्रभीती:।।

अर्थ : हे अनेक विघ्नों का नाश करने वाले ! हे वक्रतुण्ड ! हे गणेश आदि अपने नाम वालों में भी निवास करने वाले ! हे

चतुर्भुज ! हे कवियों के नाथ ! हे दैत्यों का नाश करने वाले ! ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यों ! अपने भय को भगा दो।

अनन्तचित्-रूपमयं गणेशं
ह्यभेद, भेदादि विहीनम्-आद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं
तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थ : जो गणेश अनन्त है, चेतनरूप है, अभेद और भेद आदि से रहित और सृष्टि के आदि कारण है, अपने हृदय में जो सदा प्रकाश धारण करते हैं तथा अपनी ही बुद्धि में स्थित रहते हैं, उन एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

विश्वादिभूतं हृदि योगिनां वै
प्रत्यक्ष-रूपेण विभान्तम् एकम्।
सदा निरालम्ब समाधिगम्यं
तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थ : जो संसार के आदि कारण हैं, योगियों के हृदय में अद्वितीय रूप से साक्षात् प्रकाशित होते हैं और निरालम्ब समाधि के द्वारा ही जानने योग्य हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

सर्वान्तरे संस्थितमेकगूढं
यदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपं हृदि बोधकं वै
तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थ : जो सब लोगों के अन्तः करण में अकेले गूढ़ भाव से स्थित रहते हैं, जिनकी आज्ञा से यह जगत् प्रकाशित होता है, जो अनन्त रूप हैं और हृदय में ज्ञान देने वाले हैं; उन एकदन्त गणेशकी शरण में हम जाते है।

यदीय वीर्येण समर्थ भूता
माया तया संरचितं च विश्वम्।
नागात्मकं ह्यात्म तया प्रतीतं
तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।

अर्थ : जिनके बल से माया समर्थ हुई है और उसके द्वारा यह संसार रचा गया है, उन नागस्वरूप तथा आत्मरूप से प्रतीत होने वाला एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

यं योगिनो योगबलेन साध्यं
कुर्वन्ति तं क: स्तवनेन नौति।
अत: प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु
तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:।।

अर्थ : जिनको योगीजन योगबल से साध्य करते (जान पाते) हैं, स्तुति से उनका वर्णन कौन कर सकता है ? इसलिये हम उनको केवल प्रणाम करते हैं कि हमें सिद्धि दे, उन प्रसिद्ध एकदन्त की शरण में हम जाते हैं।

देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणा:,
विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बु जरेणव:।।

अर्थ : जो इन्द्र के मुकुट में गुँथे हुए मन्दार कुसुमों के मकरन्द कणों से लाल हो रही है, वह गणेश जी के चरण कमलों की रज विघ्नों का हरण करे।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ : एक दाँत वाले, बडे शरीर स्थूल उदर वाले, हाथी के समान मुख वाले और विघ्नों का नाश करने वाले गणेश देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

अर्थ : हे देव ! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिये क्षमा करो और हे परमेश्वर ! प्रसन्न होओ।

श्री गणेश स्तोत्रम्

प्रात: स्मरामि गणनाथम् अनाथबन्धुं
सिन्दूर पूर परिशोभित गण्ड युग्मम्

उद्दण्ड विघ्न परिखण्डन चण्डदण्डम्
आखण्डलादि सुरनायक वृन्दवन्द्यम्।1।

अर्थ: जो इन्द्र आदि देवेश्वरों के समूह से वन्दनीय हैं, अनाथों के बन्धु हैं, जिनके युगल कपोल सिन्दूर राशि से अनुरञ्जित है, जो उद्दण्ड (प्रबल) विघ्नों का खण्डन करने के लिये प्रचण्ड दण्डस्वरूप हैं; उन श्रीगणेश जी को मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रात-र्नमामि चतुरानन वन्द्यमानम्
इच्छानुकूलम् अखिलं च वरं ददानम्।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञसूत्रं
पुत्रं विलास-चतुरं शिवयोः शिवाय।2।

अर्थ : जो ब्रह्मा से वन्दनीय हैं, अपने सेवक को उसकी इच्छा के अनुकूल पूर्ण वरदान देने वाले हैं, तुन्दिल हैं, सर्प ही जिनका यज्ञोपवीत है, उन क्रीडाकुशल शिव-पार्वती के पुत्र (श्रीगणेश जी) को मैं कल्याण प्राप्ति के लिये प्रातः काल नमस्कार करता हूँ।

प्रात-र्भजामि अभयदं खलु भक्तशोक
दावानलं गणविभुं वरकुञ्जरास्यम्।
अज्ञान कानन विनाशन हव्यवाहम्
उत्साह वर्धनमहं सुतम्-ईश्वरस्य।3।

अर्थ : जो अपने जन को अभय प्रदान करने वाले हैं, भक्तों के शोकरूप वन के लिये दावानल (वनाग्नि) हैं, गणों के नायक हैं, जिनका मुख हाथी के समान और सुन्दर है और जो अज्ञानरूप वन को नष्ट करने (जलाने) के लिये अग्नि हैं; उन उत्साह बढ़ाने वाले शिवसुत (श्रीगणेश जी) को मैं प्रातः काल भजता हूँ।।3।।

श्रीसंकटनाशनगणेशस्तोत्रम्

नमो नमस्ते परमार्थरूप,
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय

नमो नमस्तेऽखिलकारकाय,

सर्वेन्द्रियाणाम् अधिवासिनेऽपि

अर्थ : हे परमार्थस्वरूप ! आपको नमस्कार है। आप सबके कारण हैं; आपको नमस्कार है। आप सबके कर्ता हैं, आपको नमस्कार है। आप सब इन्द्रियों में निवास करते हैं, आपको नमस्कार है।

नमो नमो भूतमयाय तेऽस्तु,

नमो नमो भूतकृते सुरेश

नमो नम: सर्वधियां प्रबोध,

नमो नमो विश्व लयोद्भवाय

अर्थ : आप समस्त प्राणिमय हैं; आपको नमस्कार है। हे सुरेश! आप भूत-सृष्टिके कर्ता और संहारक हैं; आपको नमस्कार है। आप समस्त बुद्धियों के प्रबोधरूप हैं, संसार की उत्पत्ति और लय करने वाले हैं; आपको नमस्कार है।

नमो नमो विश्व भृतेऽखिलेश,

नमो नम: कारण कारणाय

नमो नमो वेदविदाम् अदृश्य,

नमो नम: सर्ववर प्रदाय

अर्थ : हे अखिलेश ! आप विश्व के पालक हैं, कारणों के भी कारण हैं; आपको नमस्कार है। आप वेदज्ञों के लिये भी अदृश्य हैं; आपको नमस्कार है। आप सबको वर देने वाले हैं; आपको नमस्कार है।

नमो नमो वाग विचार भूत,

नमो नमो विघ्न निवारणाय

नमो नमोऽभक्त मनोरथघ्ने,

नमो नमो भक्तमनो रथज्ञ

अर्थ : आप वाणी के विचार से परे हैं - वाणी से आपके स्वरूप का कथन नहीं किया जा सकता; आपको नमस्कार है। आप

विघ्नों का निवारण करते हैं; आपको नमस्कार है। आप अभक्त के मनोरथ को नष्ट करने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप भक्तों के मनोरथों को जानने वाले हैं; आपको नमस्कार है।

नमो नमो भक्तमनो रथेश,

नमो नमो विश्व विधानदक्ष

नमो नमो दैत्यविनाश हेतो,

नमो नमः सङ्कट नाशकाय

अर्थ : आप भक्तों के मनोरथों के स्वामी हैं, उनके मनोरथों को सिद्ध करने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप विश्व की सृष्टि करने में कुशल हैं; आपको नमस्कार है। आप दैत्यों के विनाश के कारण हैं; आपको नमस्कार है। आप संकटों को नष्ट करने वाले हैं; आपको नमस्कार है।

नमो नमः कारुणिको त्तमाय,

नमो नमो ज्ञानमयाय तेऽस्तु

नमो नमोऽज्ञान विनाशनाय,

नमो नमो भक्त विभूतिदाय

अर्थ : आप करुणा करने वालों में सर्वश्रेष्ठ हैं; आपको नमस्कार है। आपका स्वरूप ज्ञानमय है; आपको नमस्कार है। आप अज्ञान को नष्ट करने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप भक्तों को ऐश्वर्य प्रदान करते है; आपको नमस्कार है।

नमो नमोऽभक्त विभूतिहन्त्रे,

नमो नमो भक्त विमोचनाय

नमो नमोऽभक्त विबन्धनाय,

नमो नमस्ते प्रवि भक्तमूर्ते

अर्थ : आप अभक्तों का ऐश्वर्य नष्ट करने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप भक्तों को मुक्ति देने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप अभक्तों को बन्धन में डालने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप पृथक्-पृथक् मूर्ति में व्याप्त हैं; आपको नमस्कार है।

नमो नमस्तेत्त्व विबोधकाय,

नमो नमस्तत्त्व विदुत्तमाय

नमो नमस्तेऽखिल कर्मसाक्षिणे,

नमो नमस्ते गुण नायकाय

अर्थ : आप तत्त्वबोध कराने वाले हैं; आपको नमस्कार है। आप तत्त्वज्ञों में सर्वश्रेष्ठ हैं; आपको नमस्कार है। आप समस्त कर्मों के साक्षी हैं; आपको नमस्कार है। आप गुणों के स्वामी हैं; आपको नमस्कार है।

श्रीगणनायकाष्टकम्

एकदन्तं महाकायं तप्तकाञ्चन सन्निभम्।
लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देऽहं गणनायकम्।1।

अर्थ : एक दाँतवाले, महान् शरीरवाले, तपाये गये सुवर्ण के समान कान्तिवाले, लम्बे पेटवाले और बड़ी-बड़ी आँखों वाले गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

मौञ्जीकृष्णा जिनधरं नागयज्ञोपवीतिनम्।
बालेन्दुशकलं मौलौ वन्देऽहं गणनायकम्।2।

अर्थ : मूंजकी मेखला एवं कृष्णमृगचर्म को धारण करने वाले तथा नाग का यज्ञोपवीत पहनने वाले और सिर पर बालचन्द्रकला को धारण करने वाले गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

चित्ररत्न विचित्राङ्गं चित्रमाला विभूषितम्।
कायरूपधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्।3।

अर्थ : विचित्ररत्नों से चित्रित अंगों वाले, विचित्र मालाओं से विभूषित तथा शरीर रूप धारण करने वाले उन भगवान् गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

गजवक्त्रं सुरश्रेष्ठं कर्णचामर भूषितम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्।4।

अर्थ : हाथी के मुखवाले, देवताओं में श्रेष्ठ, कर्णरूपी चामरों से

विभूषित तथा पाश एवं अंकुश को धारण करने वाले भगवान् गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

मूषकोत्तमम् आरुह्य देवासुर महाहवे।
योद्धुकामं महावीर्यं वन्देऽहं गणनायकम्।5।

अर्थ : श्रेष्ठ मूषक पर सवार होकर देवासुरमहासंग्राम में युद्ध की इच्छा करने वाले महान् बलशाली गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

यक्षकिन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधरैस्सदा।
स्तूयमानं महाबाहुं वन्देऽहं गणनायकम्।6।

अर्थ : यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, सिद्ध तथा विद्याधरों द्वारा सदा स्तुति किये जाते हुए महाबाहु गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

अम्बिका हृदयानन्दं मातृभिः परिवेष्टितम्।
भक्तप्रियं मदोन्मत्तं वन्देऽहं गणनायकम्।7।

अर्थ : भगवती पार्वती के हृदय को आनन्द देने वाले, मातृकाओं से आवृत, भक्तों के प्रिय, मदसे उन्मत्त की तरह बने हुए गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

सर्वविघ्नहरं देवं सर्वविघ्न विवर्जितम्।
सर्वसिद्धि प्रदातारं वन्देऽहं गणनायकम्।8।

अर्थ : सभी प्रकार के विघ्नों का हरण करने वाले, सभी प्रकार के विघ्नों से रहित तथा सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाले भगवान् गणनायक गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

गणेश स्तुतिः

आयसय शरण करतम क्षमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो,
कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।।

पज़ि लोलु पादन तल नम:,
ओं श्री गणेशाये नम:।
गुडनी च्यय छुय आधिकार,
कलिकालकुय छुख ताजदार।
पज़ि लोल पादन तल प्यमा,
ओं श्री गणेशाये नम:।
मूषक च़्य वाहन शूभवुन,
त्रन लूकनय मंज फेरवुन,
सहायक म्य रोज़तम हर दम:,
ओं श्री गणेशाये नम:।
यज्ञस ज़पस व्यवहारसय,
गुडु छिय सुरान प्रथकारसय,

कारस अनान छुख चय जम:,
ओं श्री गणेशाये नम:।
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त,
स्मरन चाऽ वॅतिन म्ये अन्द:।
रति वेल, सुन्दर छुम सम:,
ओं श्री गणेशाये नम:।
स्मरन यि चॉनी यिम करान,
भवुसागरस अपोर तरान,
रट्अ सानि नावे चुय नमा,
ओं श्री गणेशाये नम:।
स्मरन यि चानी भक्ति जन,
पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रण,

चरणोदकुक अमृत चमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
ज़गतुक महेश्वर च्य पिता,
सति रूप सीति धर्मुच सत्ता,
माता च़्य गौरी श्री वुमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
बाह नाव सुन्दर शूभुवुञ,
स्वर्गस गछान तिम बोलुवुञ
पूरण करुम पूरण तमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
आमुत भक्त च़्येय छुय शरण,
प्योमुत खोरन तल छुय परण,

वर दिथ कास्तम चुय गमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान,
प्रेम पोश ह्यथ छिप प्रारान,
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा,
ओं श्री गणेशाये नमः।
गणिशबल प्यठ आख चलिथय,
अंग अंग स्यंदरा मलिथय,
गोअड़ बोअज म्येन प्रार्थना,
ओं श्री गणेशाये नमः।

आरती गणेश

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्।
एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्।
अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।

चित्रमाल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्।
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्।
देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।
पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्।
यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सदार्चितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्।
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।

शंकर पूजन

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ें:

असंख्याता: सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।१। यो
रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो

वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा:।२। भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, महा देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुए पढे :

तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवाय देवाय, उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, नेत्रस्पर्शं परिगृहणामि नमः।

तिलक लगाते हुये पढे :

सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्। भवाय देवाय, उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय, परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।

फूल चढाते हुए पढें :

सदा शिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय, उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढाते हुए पढें :

हिरण्यबाहो सेनानी: औषधीनां पते शिव।
दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्।
भवाय देवाय, उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नम:।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें :

आत्मा त्वं गिरिजामति: सहचरा:
प्राण: शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना
निद्रा समाधि स्थिति:।
संचार: पदयो: प्रदक्षिणविधि
स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोमि
तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्

अर्थ : हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी है, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है।

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि,
धूपो गुरु र्वपुरिदं हृदयं प्रदीप:।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि,
पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीव:।

अर्थ : हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बनें,

यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजा रूपी यज्ञ में आहुति का काम दें, मेरे कर्मन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये बिना किसी जखम के चावल) का काम दें, हे भगवान् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि,
माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्,
मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते।

अर्थ : इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नही माँगता है कि मेरा आवामगन छूट जाये, अपितु बार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं माँगता हूँ तेरे चित्त से अज्ञान के कारण बना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, बल्कि वह माया बिना किसी रोक टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करें, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको बार बार नमस्कार हो।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव,
निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्,
जन्ममृत्यु- जरारोगै:, पीडितं भवबन्धनात्।।
कर्पूर-गौरं करुणावतारं,
संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं,
भवं भवानी सहितं नमामि।।

हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ।
शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर,
यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्,
उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः
प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना
निद्रा समाधि स्थितिः।।
सञ्चारोऽपि परिक्रमः पशुपते
स्तोत्राणि सर्वागिरो,

यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन्
तत् तत् तवाराधनम्।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम् इदंजन्मनि पुरा।
पुरारे नैवाहं क्वचित अपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुर् अहम् अग्रे प्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तदिदमपराध द्वयम् अपि
करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वा पराधम्।
विदितम् अविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धो श्रीमहादेव शम्भो।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुति:

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं,
चिन्मयम्-एकम्- अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरणयम्-
तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे।।1।।

अर्थ : मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि से ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है, भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशोषम्-इदानीं,
भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या,
त्वं च महेश सदैव ममात्मा,
स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।।2।।

अर्थ : यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अत: यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन न संसृति- भीते: कथास्ति।
सत्-स्वापि दुर्धर-दु:ख विमोह,
त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु।।3।।

अर्थ : हे नाथ ! भयंकर दु:ख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अत: वे संसार के क्षणिक दु:खों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"।

अन्तक मां प्रति मा दृशम्-एनां,
क्रोध-कराल- तमां विदधीहि।

शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो,
भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।।4।।

अर्थ : हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन में लगा रहता हूँ जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्,
दीधिति-दारित- भूरि-तमिस्त्र:।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै:,
नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभोमि।।4।।

अर्थ : हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवार भूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि,
प्रोक्षित-विश्व- पदार्थ-सतत्व:,
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे,
त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि।।6।।

अर्थ : हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में हैं। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव,
क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद,
स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति।।7।।

अर्थ : शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को

जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता हे, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान,
स्नान-तपो- भव-ताप-विनाशि।
तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता,
सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा।।8।।

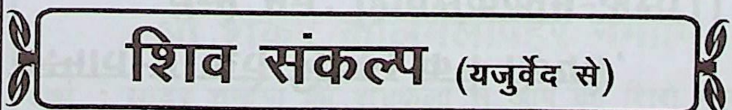
अर्थ : हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दु:खों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती है।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं,
संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं,
दुर्लभम्-अन्यजनै: समयज्ञम्।।9।।

अर्थ : हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है, कभी गायन करती है, कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां,
अभिनव-गुप्त: स्तवम्-इमम्-अकरोत्।
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं,
शमयति झटिति जनस्य दयालु:।।10।।

अर्थ : भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौष कृष्ण दशमी को यह शंकर स्तुति की है जिस के उच्चारण, श्रवण, मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दु:खों का नाश करता है।



यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं,
तदु सुप्तस्य तथैव्-ऐति।

दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं,

तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।।

अर्थ : जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जाता है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो,

यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।

यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां,

तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु।।

अर्थः कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च,

यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।

यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते,

तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु।।

अर्थ : जो मन ज्ञान का कारण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्,

परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता,

तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।।

अर्थ : जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी

वस्तुयें जानी जाती हैं जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होता:- पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्-ऋच: साम यजूँषि यस्मिन्,
प्रतिष्ठिता- रथनाभौ-इवारा:।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां,
तन्मे मन: शिव-संकल्पम्-अस्तु।।

अर्थ : जिस मन में रथचक्र की नाभि में आरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान्,
नेनीयते- अभीशुभिर्-वाजिन: इव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं,
तन्मे मन: शिव-संकल्पम्-अस्तु।।

अर्थ : योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं,
ध्यान स्थितं धरणिभृत्-तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं,
श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।

अर्थ : सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ

काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम्।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि,
पद्मोद्- भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनम्-इन्दु-कलावतं सं,
सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थ : आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम्।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरंच,
भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं,
विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थ : हे शंकर ! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तब उस कालकूट का पान स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण,
प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति,
यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थ : युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गवों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपूर्वक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं,
भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं,
तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थ : आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति-अपने भक्तों को रोज ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर ! आप को मेरा नमस्कार।

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां,
नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम,
त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थ : हे शंकर ! जरा उन राक्षसों का स्परण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीडन करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कहीं है ? आप यथार्थ में परमेश्वर है।

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं,
सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश- वशादवाप्ताः,
तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थ : लंकेश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थें वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महेन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परम ऐश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार कर।

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न,
नो भक्तवत्सल कृतं तव किंचिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि,
माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अर्थ : मैं पापी आप से किस मुहं से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि मैं आप के चरणों पर पड़ा हूँ और नाक रगड़ रहा हूँ आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारि: सुरार्चित लिंगं,
निर्मल-भासित- शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दु:ख-विनाशक-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।1।।

अर्थ : जो लिंग स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु एवं समस्त देव गणों द्वारा पूजित तथा निर्मल कान्ति से सुशोभित है और जो लिङ्ग जन्मजन्य दु:ख का विनाशक है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं,
कामदहं करुणाकर-लिंगम्।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।2।।

अर्थ : जो शिव लिङ्ग श्रेष्ठ देवगण एवं ऋषियों द्वारा पूजित, कामदेव को नष्ट करने वाला करुणा की खानि, रावण के घमण्ड को नष्ट करने वाला है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं,
बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।

सिद्ध-सुरासुर-वंदित-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।3।।

अर्थ : जो शिव-लिङ्ग सभी दिव्य सुगन्धि से सुलेपित, बुद्धि वृद्धिकारक समस्त सिद्ध देवता एवं असुरगणों से वन्दित है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं,
फणिपति- वेष्टित-शोभित-लिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।4।।

अर्थ : माणिक्यादि महामणियों से सुशोभित तथा नागराज द्वारा लिपटे होने से अत्यन्त सुशोभित और (अपने श्वसुर) दक्ष यज्ञ का विनाशक है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

कुङ्कुम-चंदन-लेपितलिंगं,
पंकज-हार-सुशोभित -लिंगम्।
सञ्चित-पाप-विनाशन-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।5।।

अर्थ : सदाशिव का लिङ्ग रूप कुंकुम, चन्दन आदि से पुता हुआ है, दिव्य कमल की माला से सुशोभित और अनेक जन्म-जन्मान्तर के संचित पापों को नष्ट करने वाला है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

देव-गणार्चित सेवित लिंगम्,
भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।6।।

अर्थ : भाव भक्ति द्वारा समस्त देव गणों से पूजित एवं सेवित करोडों सूर्यों की तेज़ कान्ति से युक्त उस भगवान् सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं,
सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।7।।

अर्थ : अष्ट दल कमल से लिपटा हुआ सदाशिव का लिंग रूप सभी चराचर की उत्पति का कारण एवं अष्ट दरिद्रों का विनाशक है। उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्,
सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।8।।

अर्थ : जो शिव रूप लिङ्ग देव गुरु बृहस्पति एवं देव श्रेष्ठ इन्द्रादि के द्वारा पूजित, निरन्तर नन्दन वन के दिव्य पुष्पों द्वारा अर्चित परात्पर एवं परमात्मा स्वरूप है उस सदाशिव-लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

शिव मानस पूजा

रत्नै: कल्पित-मासनं हिम जलै:
स्नानं च दिव्याम्बरं
नाना रत्न विभूषितं मृगमदा
मोदाङ्कितं चन्दनम्।
जाती चम्पक बिल्व पत्र रचितं
पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते
हृद्-कल्पितं गृह्यताम्।।

अर्थ : हे दयानिधे ! हे पशुपते ! हे देव ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावलिविभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिका गन्ध समन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिये।

सौवर्णे नव रत्न खण्ड रचिते
पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्च-विधं पयो-दधि-युतं
रम्भा-फलं पानकम्।
शाकानाम्-अयुतं जलं रुचिकरं
कर्पूर खण्डो-ज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं
भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।

अर्थ : मैं ने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुर्वणपात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यञ्जन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल - ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं प्रभो ! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये।

छत्रं चामरयो र्युगं व्यजनकं
चा-दर्शकं निर्मलं
वीणा भेरि-मृदङ्ग-का-हल-कला
गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुति र्बहुविधा
ह्येतत्-समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो
पूजां गृहाण प्रभो।।

अर्थ : छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टाङ्ग प्रणाम, नानाविधि स्तुति, ये सब मैं संकल्प से ही आप को समर्पण करता हूँ, प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये।

आत्मा त्वं गिरिजा मति सहचरा:
प्राणा: शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोप-भोग रचना
निद्रा समाधि-स्थिति:।
सञ्चार: पदयो: प्रदक्षिण-विधि:
स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं
शम्भो तवाराधनम्।।

अर्थ : हे शम्भो! मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी है, प्राण आप के गण हैं, शरीर आप का मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आप की पूजा है, निद्रा समाधि है मेरा चलना फिरना आप की परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आप के स्तोत्र हैं, इस प्रकार मैं जो जो भी कर्म करता हूँ वह सब आप की आराधना ही है।

कर चरण कृतं वाक् कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितम् अविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धो श्री महादेव शम्भो।।

अर्थ : हे शंकर! मैं ने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हो या अविहित, उन सब को आप क्षमा कीजिये। हे करुणासागर श्री महादेव शंकर! आप की जय हो।

श्री मृत्युञ्जयस्तोत्रम्

रत्नसानु-शरासनं रजताद्रि-शृङ्गनिकेतनं
सिञ्जिनीकृत-पन्नगेश्वरम्-अच्युतानल-सायकम्।

क्षिप्र-दग्ध-पुरत्रयं त्रिदशालयैर्-अभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : कैलास शिखर पर जिस का निवास गृह है, जिन्हो ने मेरु गिरि का धनुष, नाग राज वासुकि की प्रत्यञ्चा (धनुष की डोरी) और भगवान् विष्णु को अग्निमय बाण बना कर तत्काल ही दैत्यों के तीनां पुरो को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिन के चरणों की वन्दना करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

पञ्चपादप-पुष्पगन्धि-पदाम्बुजद्वय-शोभितं
भाललोचन-जातपावक-दग्धमन्मथ-विग्रहम्
भस्मदिग्ध-कलेवरं भव-नाशिनं भवम्-अव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन इन पांच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण कमल जिन की शोभा बढाते हैं, जिन्हों ने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला में कामदेव के शरीर को भस्म कार डाला था, जिन का शरीर सदा भस्म से विभूषित रहता है जो सब की उत्पति के कारण होते हुये भी संसार के नाशक हैं तथा जिन का कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

मत्तवारण-मुख्यचर्म-कृतोत्तरीय-मनोहरं
पङ्कजासन-पद्मलोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।
देवसिद्ध-तरङ्गिणीकर-सिक्त-शीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : जो मतवाले गजराज के मुख्य चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पडते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिन के चरण कमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरङ्गों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

कुण्डलीकृत-कुण्डलीश्वर-कुण्डलं वृषवाहनं
नारदादि-मुनीश्वर-स्तुत-वैभवं-भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तक-माश्रिता-मरपादप-शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : गोलाकार बनाये हुये सर्पराज जिन के कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिन के वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करने वाले, आश्रित जनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

यक्ष-राजसखं भगाक्षि-हरं भुजङ्ग-विभूषणं
शैल-राजसुता-परिष्कृत-चारुवाम-कलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वध-धारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : जो यक्षराज कुबेर के सखा है, जो भग देवता की आंख फोडने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं जिन के शरीर के सुन्दर वाम भाग को गिरिराज किशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिन का कण्ठभाग नीले रंग का दिखाई देता है जो एक साथ में फरसा (तेज़ और चौडी धार की कुलहाडी) और दूसरें में मृग लिये रहते है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा?

भेषजं भवरोगिणाम्-अखिलापदाम्-अपहारिणं
दक्षयज्ञ-विनाशिनं त्रिगुणात्मकं-त्रि-विलोचनम्।
भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदं निखिलाघ-संघनिबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : जो जन्म मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषध रूप हैं समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष यज्ञ का विनाश करने

वाले हैं सत्व आदि तीनों गुण जिन के स्वरूप हैं जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पापराशि का संहार करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

भक्त-वत्सलम-र्चतां निधिम-क्षयं-हरिदम्बरं
सर्वभूत-पतिं-परात्परम-प्रमेयम-नूपमम्।
भूमिवारिन-भोहुताशन-सोमपा-लितस्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : जो भक्तों पर दया करने वाले हैं अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुये भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर अप्रेमय और उपमा रहित हैं पृथ्वी जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिन का शरीर सुरक्षित है उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

विश्वसृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चम-शेषलोक-निवासिनम्।
क्रीडयनतम-हर्निशं गणनाथयूथ-समावृतम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।

अर्थ : जो ब्रह्मा रूप से सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि करते फिर विष्णु रूप से सब के पालन में संलग्न रहते और अन्त में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं सम्पूर्ण लोक में जिन का निवास है तथा जो गणेश जी के पार्षदों से घिर कर दिन रात भाँति के खेल किया करते हैं उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ यमराज मेरा क्या करेगा ?

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठम् उमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।

अर्थ : 'रु' अर्थात् दुःख को दूर करने के कारण जिन्हें रुद्र

कहते हैं जो जीव रूप पशुओं का पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गले में नीला चिह्न धारण करने से नीलकण्ठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं काल नाशनम्

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।

अर्थ : जिन के गले में काला दाग है, जो कलामूर्ति, कालाग्नि स्वरूप और काल के नाशक है उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।

अर्थ : जिन का कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुये भी जो अत्यन्त निर्मल और उपद्रव रहित है, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद् गुरुम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।

अर्थ : जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।

अर्थ : जो देवताओं के भी आराध्यदेव, जगत् के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करने वाले हैं जिन की ध्वजा पर वृषभ का चिह्न बना हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु: करिष्यति।

अर्थ : जो अनन्त, अविकारी, शान्त, रुद्राक्षमालाधारी और सब के दु:खों का हरण करने वाले हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु: करिष्यति।

अर्थ : जो परमानन्द स्वरूप नित्य एवं मोख की प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्त कारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु: करिष्यति।

अर्थ : जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि पालन और संहार के कर्ता हैं उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय,
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै 'न'काराय नम: शिवाय।।

अर्थ : जिस के गले में सांपों का हार है, जिस के तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिस का अनुलेपन है, दिशायें जिस के वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न है) उस शुद्ध 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय,
नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय,
तस्मै 'म'काराय नम: शिवाय।।

अर्थ : गंगा जल और चन्दन से जिस की पूजा हुई है, मन्दार पुष्प तथा नाना

प्रकार के फूलों से जिस की पूजा हुई है उन नन्दी के अधिपति, शिव के गणों के स्वामी 'म' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द,
सूर्याय-दक्षाध्वर-नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय,
तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय।

अर्थ : पार्वती जी के मुख कमल को प्रसन्न करने के लिये जो सूर्य स्वरूप है जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं जिन की ध्वजा में बैल का चिह्न है उस 'शि' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य,
मुनीन्द्र-देवार्चित- शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय,
तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय।।

अर्थ : वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा इन्द्रादि देवताओं ने जिन की मस्तक की पूजा की है चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिन के नेत्र हैं उन 'व' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय,
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय,
तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय।।

अर्थ : जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं जिन के हाथ में पिनाक हैं जो दिव्य सनातन पुरुष हैं उस 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

शिव षडक्षरस्तोत्रम

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।

अर्थ : जो अर्ध चन्द्र बिन्दु से संयुक्त 'ॐकार' स्वरूप है योगी जन जिन का निरन्तर ध्यान करते हैं एवं जो समस्त मनोरथों को प्रदान करने वाले और मोक्षदाता हैं ऐसे 'ॐकार' स्वरूप शिव को बारम्बार नमस्कार है।

नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणा:
नरा नमन्ति देवेश 'न'काराय नमो नम:।

अर्थ : जिस देवेश के ऋषि गण तथा देवतागण एवं सभी अप्सरा गण और मनुष्य स्तुति करते हैं ऐसे 'न' काररूप शिव को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

महादेवं महात्मानं महाध्यान परायणम्
महापापहरं देवं 'म' काराय नमो नम:।

अर्थ : जो उदार स्वभाव वाले महान् आत्मा तथा जो बडे से बडे पाप को नष्ट करने वाले महान् ध्यानपरायण, अखण्ड समाधि में स्थित रहने वाले महादेव शिव हैं ऐसे 'म' कार स्वरूप शिव को मेरा नमस्कार है।

शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोकानु ग्रह-कारकम्
शिवमेकपदं नित्यं 'शि' काराय नमो नम:।

अर्थ : जो समस्त लोक पर अनुग्रह करने वाले एकमात्र शिव स्वरूप कल्याणकारी, शान्तस्वरूप, जगत के स्वामी हैं ऐसे एक पदी 'शि' काररूप भगवान् शिव को नित्य नमस्कार है।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकि: कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं 'वा' काराय नमो नम:।

अर्थ: जिन का वाहन वृषभ है और नागराज वासुकि जिन के कण्ठ का आभूषण है तथा जिन के वाम-भाग में शक्ति स्वरूपा उमा स्थित है ऐसे 'वा' काररूप शिव को नमस्कार है।

यत्र यत्र स्थितो देव: सर्वव्यापी महेश्वर:।
यो गुरु: सर्वदेवानां 'य' काराय नमो नम:।

अर्थ : जो देव मेहश्वर सभी देवताओं के गुरु हैं तथा सर्व व्यापी है ऐसा कोई स्थान नहीं जहां वे स्थित न हों ऐसे 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं,
विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं,
चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

अर्थ : हे शंकर ! मैं मुक्ति स्वरूप, समर्थ, सर्वव्यापक, ब्रह्म, वेद स्वरूप निज स्वरूप में स्थित, निर्गुण, निर्विकल्प, निरीह, अनन्त ज्ञानमय और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त प्रभु को प्रणाम करता हूँ।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं,
गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं,
गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।

अर्थ : जो निराकार है, ओंकार रूप आदि कारण है तुरीय (ज्ञान की अवस्था) है वाणी, बुद्धि और इन्द्रियों के पथ से परे हैं, कैलास नाथ हैं, विकराल और महाकाल के भी काल, कृपाल (कृपालु) गुणों के आगार और संसार से तारने वाले हैं उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं,
मनो भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा,
लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।

अर्थ : जो हिमालय के समान श्वेतवर्ण, गम्भीर और करोडों कामदेवों के समान कान्तिमान शरीर वाले हैं जिन के मस्तक पर मनोहर गंगा जी लहरा रही है ललाट पर छोटा चन्द्रमा सुशोभित होता है और गले में सर्पो की माला शोभा देती है।

चलत्-कुण्डलं-भ्रूसुनेत्रं-विशालं-
प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।।

मृगाधीश-चर्माम्बरं-मुण्डमालं,
प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।

अर्थ : जिन के कानों में कुण्डल हिल रहे हैं जिन के नेत्र एवं भृकुटि सुन्दर और विशाल है, जिन का मुख प्रसन्न और कण्ठ नील है जो बडे ही दयालु हैं जो बाघ के चर्म का वस्त्र और मुण्डों की माला पहनते हैं उन सर्वाधीश्वर प्रियतम शिव का मैं भजन करता हूँ।

प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं,
अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं,
भजेहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।

अर्थ : जो प्रचण्ड, सर्वश्रेष्ठ, प्रतिभाशाली, परमेश्वर, पूर्ण, अजन्मा, कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान, त्रिभुवन के शूलनाशक और हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले हैं उन भावगम्य भवानीपति का मैं भजन करता हूँ।

कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी,
सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी,
प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मधारिः।।

अर्थ : हे प्रभो ! आप कला रहित, कल्याणकारी और दुःखों का अन्त करने वाले हैं। आप सर्वदा सत्पुरूषों को आनन्द देते हैं आप ने त्रिपुरासुर का नाश किया था, आप मोहनाशक और ज्ञानानन्दघन परमेश्वर हैं कामदेव के शत्रु हैं आप मुझपर प्रसन्न हो प्रसन्न हो।

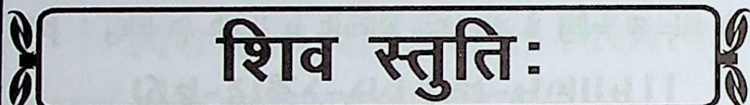
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं,
भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं,
प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।

अर्थ : मनुष्य जब तक उमाकान्त महादेव जी के चरण कमलों का भजन नही करते हैं उन्हें इसलोक या परलोक में कभी सुख

तथा शान्ति की प्राप्ति नही होती है और न उन का सन्ताप ही दूर होता है समस्त भूतों के निवासस्थान भगवान् शिव! आप मुझ पर प्रसन्न हों।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमाम् ईश शंभो।।

अर्थ : हे प्रभो! हे शम्भो ! हे ईश ! मैं योग, जप और पूजा कुछ भी नहीं जानता। मैं सदा सर्वदा आप को नमस्कार करता हूँ। जरा, जन्म और दुःख समूह से सन्तप्त होते हुये मुझ दुःखी की दुःख से आप रक्षा कीजिये।



असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर-शाखा-लेखिनी-पत्रम्-ऊर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति।।

वन्दे देवम् उमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत् कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम् पतिम्
वन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नि नयनम्-वन्दे मुकुन्द-प्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशधर-मुकुटं, च वक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गपरशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्
नागं पाश्च घण्टां डमरुक सहितं, सां कुशं वामभागे
नानालंकार युक्त स्फटिक-मणिनिभं, पार्वतीशं नमामि
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः,

चिताभस्मालेपः स्रगापि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि।
पापोऽहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः,
त्राहि मां पार्वती नाथ सर्व पाप हरो भव।

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप-संहारम् बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : तीन दलवाला, सत्त्व, रज एवं तमः स्वरूप, सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि-त्रिनेत्रस्वरूप और आयुधत्रय स्वरूप, तथा तीनों जन्मों के पापों को नष्ट करने वाला बिल्वपत्र मैं भगवान् शिव के लिये समर्पित करता हूँ।

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : छिद्ररहित, सुकोमल, तीन पत्तेवाले, मङ्गल प्रदान करने वाले बिल्वपत्र से मैं भगवान् शिव की पूजा करूँगा। यह बिल्वपत्र शिव को समर्पित करता हूँ।

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : अखण्ड बिल्वपत्र से नन्दिकेश्वर भगवान् की पूजा करने पर मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर शुद्ध हो जाते है। मैं बिल्वपत्र शिव को समर्पित करता हूँ।

शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयज्ञ-महापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : मेरे द्वारा किया गया भगवान् शिव को यह बिल्वपत्र का

समर्पण, कदाचित् ब्राह्मणों को शालग्रामकी शिला के समान तथा सोमयज्ञ के अनुष्ठान के समान महान् पुण्यशाली हो। अतः मैं बिल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित करता हूँ।

दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
कोटिकन्या-महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : मेरे द्वारा किया गया भगवान् शिव को यह बिल्वपत्र समर्पण हजारों करोड़ गजदान, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ के अनुष्ठान तथा करोड़ों कन्याओं के महादान के समान हो। अतः मैं बिल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित करता हूँ।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : विष्णु-प्रिया भगवती लक्ष्मी के वक्षः स्थल से प्रादुर्भूत तथा महादेवजी के अत्यन्त प्रिय बिल्व वृक्ष को मैं समर्पित करता हूँ। यह बिल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित है।

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : बिल्व वृक्ष का दर्शन और उसका स्पर्श समस्त पापों को नष्ट करने वाला तथा शिवापराधका संहार करने वाला है। यह बिल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित है।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

अर्थ : बिल्वपत्र का मूल भाग ब्रह्मरूप, मध्यभाग विष्णु रूप एवं अग्रभाग शिव रूप है, ऐसा बिल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित है।

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।

अर्थ : जो भगवान् शिव के समीप इस पुण्य प्रदान करने वाले 'बिल्वाष्टक' का पाठ करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अन्त में शिव लोक को प्राप्त करता है।

द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च
श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालम्
ओङ्कारम् अमलेश्वरम्।।1।।

अर्थ : (१) सौराष्ट्रप्रदेश (काठियावाड़) में श्रीसोमनाथ, (२) श्रीशैल पर श्रीमल्लिकार्जुन, (३) उज्जयिनी (उज्जैन) में श्रीमहाकाल, (४) ॐकारेश्वर अथवा अमलेश्वर।

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।

अर्थ : (४) परलीमें वैद्यनाथ, (६) डाकिनी नामक स्थान में श्रीभीमशङ्कर, (७) सेतुबन्धपर, श्रीरामेश्वर, (८) दारुकावनमें श्रीनागेश्वर।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।

अर्थ : (९) वाराणसी (काशी) में श्रीविश्वनाथ, (१०) गौतमी (गोदावरी) के तट पर श्रीत्र्यम्बकेश्वर, (११) हिमालय पर केदारखण्ड में श्रीकेदारनाथ और (१२) शिवालय में श्रीघुश्मेश्वरको स्मरण करे।

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।

अर्थ : जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या के समय इन बारह ज्योतिर्लिङ्गों का नाम लेता है, उसके सात जन्मों का किया हुआ पाप इन लिङ्गों के स्मरण मात्र से मिट जाता है।।4।।

शिव चामर स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली,

कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते,
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्,
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्,
शिवशङ्कर शिवश्ङ्कर हर में हर दुरितम्।

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये,
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं,
दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा,

ओऽम् हर हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे,
स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे,
ओऽम् हर हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे,
स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखत, त्रिभुवन जन मोहे
ओऽम् हर हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी,
ओऽम् हर हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे,
स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे,
ओऽम् हर हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी,
स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी,
ओऽम् हर हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका,
ओऽम् हर हर हर महादेव

शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो,
जटा मुकट छुय गंडिथ च्य दीवो।
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा,
च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छ्यपन गुफाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

बिहिथ छय गौरी च्य़ सूत्य नालय,
वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्र सूर्यि तीज च्य़ मंज़ जटाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान,
कपाल-माल त्रिशूल धारान।
भक्त्यन अभय छुख दिवान यछ़ाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ,
धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवाय दीवो शर्वाय दीवो,
भस्माय दीवो सुरान च्य़ जीवो।
च्य़ जीव पूजान छिय भावनाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम,
अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर,
संसार की दुःख म्य यिम छि, तिम चॖठ।
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

दया करो हे दयालु भगवन्

शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगडी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
न हम में बल हैं न हम में भक्ति,
न हम में साधन, न हम में शक्ति।
तुम्हारे हो कर हैं हम दुःखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक,
तुम जो पिता हो तो हम है बालक।

जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
भले जो हम है तो हैं तुम्हारे
बुरे जो हम हैं तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
न होगी जब तक दया की दृष्टि
न होगी तब तक कृपा की वृष्टि।
न होगी तुम बिन यह न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
प्रधान् कर दो महान् शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहावें गे न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
बस एक यही इक नाम की है,
पुकार राधे श्याम की है।
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।

शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्धय-हंकार-चित्तनि नाहं,
न च श्रोत्र-जिहवे न च घ्राण-नेत्रे।
न च व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायु:,
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

न च प्राण-संज्ञो न वै पंचवायु:,
न वा सप्त-धतु-र्न वा पंचकोश:।
न वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायु:,
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भाव:।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष:,
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं,
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञ:।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेद:,
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्य:
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो,
लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेय:,
चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।

चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।।1।।

रत्नसानु-शरासनं रजताद्रि-शृङ्ग-निकेतनं
सिञ्जिनीकृत-पन्नगेशवरम्-अच्युतानन-सायकम्।
क्षिप्र-दग्ध-पुरत्र्यं त्रिदिवालयैर्-अभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।2।।

पञ्चपादप-पुष्पगन्ध-पदाम्बुजद्वय-शोभितं
भाललोचन-जातपावक-दग्धमन्मथ-विग्रहम्।
भस्मदिग्ध-कलेवरं भव-नाशनं भवम्-अव्ययं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।।3।।
मत्तवारण-मुख्यचर्म-कृतोत्तरीय-मनोहरं
पङ्कजासन-पदमलोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।
देवसिन्धु-तरङ्गसीकर-सिक्त-शुभ्रजटाधरं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।।4।।
यक्ष-राजसखं भगाक्ष-हरं भुजङ्ग-विभूषणं
शैल-राजसुता-परिष्कृत-चारुवाम-कलेवरम्।
क्ष्वेडनालगलं परशवध-धारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।।5।।
कुण्डलीकृत-कुण्डलेश्वर-कुण्डल वृषवाहनं

नारदादि-मुनीश्वर-स्तुत-वैभवं-भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्धक-माश्रिता-ऽमरपादपं-शमनान्तकं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।।6।।
भेषजं भसरोगिणाम्-अखिलापदाम्-अपहारिणं
दक्षयज्ञ-विनाशनं त्रिगुणात्मकं-त्रि-विलोचनम्।
भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदं सकलाघ-सङ्घनिबहणं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।।7।।
भक्त-वत्सलम्-अर्चितं निधिम्-अक्षयं-हरिदम्बरं
सर्वभूत-पतिं-परात्परम्-अप्रमेयम्-अनुत्तमम्।
सोमवारिद-भूहुताशन-सोमपा-निलखाकृतिं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥8॥

विश्वसृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चम्-अशेषलोक-निवासिनम्।
क्रीडयन्तम्-अहर्निशं गणनाथयूथ-समन्वितं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥9॥

मृत्युभीत-मृकण्डसूनु-कृतस्तवं-शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत्।
पूर्णम्-आयुर्-अरोगिताम्-अखिलार्थसम्पदम्-आदरं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥10॥

शिव स्तुति

ॐ शिव हर शङ्कर गौरी शम्
वन्दे गंगा धरणी शम्
शिव रुद्रं पशुपति विश्वनाथं
कल हर काशी पुर नाथं
बज पाल लोचन परमानन्दा
नील कण्ठा तव शरणम्
शिव असुर निकन्दन
भव दुःख भज्जन, सेवक ते प्रतिपाला
ॐ आवागमन मिटाओ शङ्कर
भज शिव भारं भारः
ॐ शिव हर शम्भो सदा शिव शम्
हर हर सदा सदा शिव शम्

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षोत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्र-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत, वसुरन्त रिक्षसत्-होता अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा

ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम् -आस्वादय स्वाहा।

अर्थ : ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दु:खों का निवारण करने के लिए मंगल रूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, **त्रिगुण पुरुष** = तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है, **क्षेत्र चर** = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, **मोहं** = मोह रूपी ग्रन्थि को, **भिन्धि** = काटो, **रजस्तमसी** = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रथियों को काटो, **प्राकृत** = बनावटी, **पाशजालं** = बन्धनों का जाल, **सावरणं** = आवरण सहित, **परिहर** = फैंक दो, **सत्वं ग्रहाण** = तत्व को जान, **पुरुषोत्तमोसि** = तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, **सोम** = चन्द्रमा, **सूर्य** = सूरज, **अनल** = अग्नि, **प्रवर** = तेजोमय रूप, **परमधामन्** = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णू, महेश्वर, **स्वरूप** = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, **सृष्टि स्थिति** = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, **संहार कारक** = नाश करने वाले हो, **भ्रू-मध्य-निलय** = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, **तेजोसि** = तुम तेज रूप हो, **धामासि** = तुम उत्तम धाम वाले हो, **अमृतात्मन्** = तुम अमृत रूप हो, **ॐ तत्सत्** = तुम सत् रूप हो, **हंस** = तुम स्वयं प्रकाश हो, **शुचिषत्** = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, **वसुरन्त-रिक्षसत्** = तुम आकाश में रहने वाले वस नाम के देवता हो, **होता** = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, **वेदिषत्** = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, **अतिथिर्दराणसत्** = तुम ही गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, **नृषत्** = तुम मनुषयों में रहने वाले हो, **वरसत** = तुम देवताओं में रहने वाले हो, **ऋत ऋत्** = तुम सत्य में रहने वाले हो, **व्योम सत्** = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, **अब्ज:** = तुम

जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, **गोजा** = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, **अद्रिजा** = तुम पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी नाले रूप हो, **ऋतुजा** = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, **परम-ब्रह्म-स्वरूप** = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, **सर्वगत** = तुम सब में गए हो, **सर्व शक्ते** = तुम सर्व शक्तिमान् हो, **सर्वेश्वर** = तुम सबों के स्वामी हो, **सर्वन्द्रिय** = सब इन्द्रियों से, **ग्रन्थि भेदं कुरु** = आसक्ति छोड़ो, **परमं-पदं** = उस परमपद का, **पर-मार्ग** = उस उत्तम मार्ग का, **परामर्शय** = विचार कर, **ब्रह्म-द्वारं सर** = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को जान, **कुमार्ग जहि** = अज्ञान के मार्ग को छोड़, **षट-कौशिकं शरीरं** = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य से बने हुये शरीर को, **त्यज** = छोड़ो, **शुद्धोसि** = तुम शुद्ध रूप हो, **बुद्धोसि** = तुम बुद्धि रूप हो, **विमलोसि** = तुम निर्मल हो, **स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा** = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।1।
यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं।
शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।
यद्बल्ये यश्च कौमारे यत् यौवने कृतं मया,
वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मात्तरेषुच।
कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवर्जितं
तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।
तत्रैव गंगा यमुना च वेणी,
गोदावरी सिंधु सरस्वती च,
सर्वाणि तीर्थाणि वसन्ति तत्र,
यत्रेच्युतोदार कथा प्रसंगा।
नमामि नारायण पादपंकजं
करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं,
स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम्।

गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी,
प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः।
यज्ञायत मेरु सुवर्णदानं,
गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।
ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः।
केयूरवान-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी
हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः।
करार बिन्देन पदारिबन्दं
मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं।
अश्वत्थपत्रस्य पुटेशन च,

बालं मुकन्दं मनसा स्मरामि।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे,
गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे।
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण,
गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते।

विष्णु स्तुति

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम,
जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन्
पतितोहं संसारे।
घोरं हर मम नरक रिपो,
केशव कल्मषभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं,
कुरु भव-सागरपारम्, घोरं हर .....।
जय जय देव जया-सुरसूदन,
जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत,
जय दशकन्धार जिष्णो, घोरं हर ....।
यद्यपि सकल्-अहं कलयामि हरे,
नहि किम्-अपि स सत्वम्।
तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम्
अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं, घोरं हर ...।

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं,
पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव
माम्-उद्धर निजदासम्, घोरं हर .....।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत,
त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल,
त्वं भव-जलधि-वहित्रं, घोरं हर .....।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण,
शंकर-मुनिवर- गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम,
वारय संसृति-भीतिम्, घोरं हर .....।

श्री विष्णोः प्रार्थना

प्रातः स्मरामि भवभीति महार्ति शान्त्यै
नारायणं गरुड वाहनम् अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत वरवारण मुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुण वारिज पत्रनेत्रम्।।1।।

अर्थ : गरुडवाहन, कमलनाभ, ग्राह से ग्रसित गजेन्द्र की मुक्ति के कारण, सुदर्शनचक्रधारी नवविकसित कमलपत्र-से नेत्र वाले नारायण का भव-भयरूपी महान् दुःख की शान्ति के लिए, मैं प्रातः स्मरण करता हूँ।

प्रात र्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना
पादार विन्दयुगलं परमस्य पुंसः।
नारायणस्य नरकार्णव तारणस्य
पारायण प्रवण विप्र परायणस्य।।2।।

अर्थ : वेदों का स्वाध्याय करने वाले विप्रों के परम आश्रय, नरकरूप संसार समुद्र से तारने वाले, उस परमपुरुष के चरणारविन्दयुगल में सिर झुकाकर मैं मन-वचन से प्रातः काल नमस्कार करता हूँ।

प्रातर्भजामि भजताम् अभयङ्करं तं
प्राक्सर्व जन्मकृत पापभयापहत्यै।
यो ग्राह वक्त्र पतिताङ्घ्रि गजेन्द्रघोर-
शोक प्रणाशनकरो धृत शङ्खचक्रः।।3।।

अर्थ : जिसने शङ्ख-चक्र धारण करके ग्राह के मुख में पड़े हुए चरण वाले गजेन्द्र के घोर संकट का नाश किया, भक्त को अभय करने वाले उन भगवान् को मैं अपने पूर्वजन्मों के सब पापों का नाश करने के लिए प्रातः काल भजता हूँ।

कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्रायः यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण हमने यह श्लोक अर्थ सहित इस पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता
नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना
मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-
अष्टादशा-ध्यायिनीम्

अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्
गीते भव- द्वेषिणीम्।1।

अर्थ : भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करने वाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूँ।

नमोस्तु ते व्यास विशाल बुद्धे
फुल्लारविंदा- यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्ण:
प्रज्वालितो ज्ञानमय: प्रदीप:।2।

अर्थ : हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी ! आप ने महाभारत रूप तेल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।

प्रपन्न-पारजिताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।
ज्ञान मुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नम:।3।

अर्थ: शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार हो।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दन:।
पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्

अर्थ : सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है। जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष है।

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर-मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।

अर्थ : वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी

को परमानन्द देने वाले जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला
गान्धार-नीलोत्पला,
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी
कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा
दुर्योधना-वर्तिनी,
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी
कैवर्तके केशवः।6।

अर्थ : जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल है, गान्धार नील कमल है, शल्य ग्रह (ग्रसने वाला) जलचर, कृप प्रवाह है, कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई है।

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं,
गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा,
सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः
पेपीयमानं मुदा,
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-
प्रध्वंसिनः श्रेयसे।7।

अर्थ : पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान की कथाओं) से जो प्रफुल्लित है, संसार में सत्यपुरुष भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने

वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करें।

मूकं करोति वाचालं पंङ्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।8।

अर्थ : मैं उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूँ, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करने वाला बना देता है।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुत:
स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवै,
वेंदै: साँगपद-क्रमोप-निषदै-
र्गायन्ति यं सामगा:।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदु: सुरा-सुर-गणा
देवाय तस्मै नम:।

अर्थ : जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार हो।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे

अर्थ : अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नही होता है कि अपने सम्बन्धियों

को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय
सिद्ध्य-सिद्ध्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते

अर्थ : फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्,
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते

अर्थ : जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं।

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः,
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति

अर्थ : ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है।

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः,
विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः

अर्थ : जो मनुष्य इन्द्रियो, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है और वह सदा मुक्त है।

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु,
युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दु:खहा

अर्थ : यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मो को यथा योग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निंद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दु:ख को दूर करने वाला होता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते

अर्थ : परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते हैं वह इस माया से पार हो जाते है।

अग्निर्-ज्योतिर्-अह: शुक्ल: षण्मासा उत्तरायणम्
तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जना:

अर्थ : उत्तरायण काल के छ: मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते है वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्,
साधुर्-एव स मन्तव्य: सम्यक्-व्यव-सितोहि-स:

अर्थ : बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा।

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक महेश्वरम्
असंमूढ: स मर्त्येषु सर्वपापै: प्रमुच्यते।।

अर्थ : जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है।

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्त: संघ-वर्जित:
निर्वैर:, सर्व-भूतेषु य: स मामेति पाण्डव।।

अर्थ : हे अर्जुन ! जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्,
ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-फलत्याग,
स्त्यागात्-शान्तिर-अनन्तरम्

अर्थ : अभ्यास योग से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है,

कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत,
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम

अर्थ : हे भारत ! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वहीं मेरा ज्ञान है।

मां च यो-व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,
स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म-भूयाय कल्पते

अर्थः जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है।

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा
अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामा:
द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दु:ख संज्ञै
र्गच्छन्त्य मूढा: पदम्-अव्ययं तत्।।

अर्थ : जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।

य: शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारत:
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्

अर्थ : जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है।

मन: प्रसाद: सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रह:
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थ : मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है।

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुच:

अर्थ : सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हे सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर।

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म,

व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्

यः प्रयाति त्यजन् देहं,

स याति परमां गतिम्

अर्थ : योग धारणा में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर का) चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसन्देह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या

जगत्-प्रहृष्य- त्यनुरज्यते च

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति

सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।

अर्थ : हे हृषीकेश! यह ठीक है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्,

सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य- तिष्ठति

अर्थ : इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर, मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्यापत कर रहा है।

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्

अणोरणीयांसम्- अनु-स्मरेत्-यः।

सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्

आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

अर्थ : जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है - वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

उर्ध्वमूलम्-अधः शाखम्-
अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि
यस्तं वेद स वेदवित्।

अर्थ : संसार का वृक्ष अनादि चारों और फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली हैं, इनमें सत्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़ें चारों और फैली हुई हैं।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्- अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो
वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।

अर्थ : मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूँ और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूँ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो
मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-
आत्मानं मत्-परायणः।7।

अर्थ : मुझ में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं,
वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।1।।

अर्थ : हे महापुरुष - हे प्रणतपाल भगवान् कृष्ण ! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य है, जो दु:खों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते है, जो रक्षा करने वाला है, जो भक्तों के दु:ख का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं,
धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।2।

अर्थ : धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, जिस को देवता चाहते हैं-ऐसे राज्य पाठ को छोड़कर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड़ पड़ा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरण कमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप,
मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्।।
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं,
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।3।।

अर्थ : मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली इन सामुद्रिक राज योग वाले चिन्हों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप हैं।

वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां,
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-र्मृगपक्षिणां यत्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अर्थ : जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दौड़-धपू करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः,
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे नदीय कुच-कुँकम-पङ्कलिप्तं,
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।5।।

अर्थ : रामलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीड़ित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महापुरुष कृष्ण ! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य,
मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।6।।

अर्थ : पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस

चरणारबिन्द की अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोड़ने में (नष्ट करने में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्,
ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधै:।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थ : जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार हैं। ब्रह्मादि देवता ह्रदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसारपरूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है - हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुष: स्तनपान-बुद्धे:,
त्वत्-अँघ्रिणा- ह्रतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्ते,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थ : गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, दूध पीने के इच्छुक श्री कृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोड़े हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति य: परमस्य पुंसो,
नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु-ह्रदये कुरुते मनुष्य:,
संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अर्थ : सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान् कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य ह्रदय में धारण करता है, भक्ति से पढ़ता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं,
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।

अर्थात् : अच्युत, केशव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गोपिकावल्लभ तथा जानकीनायक रामचन्द्रजी को मैं भजता हूँ।

अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं,
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं,
देवकी नन्दनं नन्दजं सन्दधे।।

अर्थात् : अच्युत, केशव, सत्यभामापति, लक्ष्मीपति, श्रीधर, राधिकाजी द्वारा आराधित, लक्ष्मीनिवास, परम सुन्दर, देवकी नन्दन, नन्दकुमार का चित्त से ध्यान करता हूँ।

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे,
रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने,
कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

अर्थात् : जो विभु हैं, विजयी हैं, शङ्ख-चक्रधारी हैं, रुक्मिणी जी के परम प्रेमी है, जानकी जी जिनकी धर्मपत्नी हैं तथा जो व्रजाङ्गनाओं के प्राणाधार हैं उन परमपूज्य, आत्मस्वरूप, कंसविनाशक मुरलीमनोहर आपको नमस्कार करता हूँ।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण,
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माध्वा धोक्षज,
द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।

अर्थात् : हे कृष्ण ! हे गोविन्द ! हे राम ! हे नारायण ! हे रमानाथ ! हे वासुदेव ! हे अजेय ! हे शोभाधाम ! हे अच्युत ! हे अनन्त ! हे माधव ! हे अधोक्षज (इन्द्रियातीत) ! हे द्वारकानाथ ! हे द्रौपदी रक्षक ! (मुझपर कृपा कीजिये)।

राक्षस-क्षोभित:-सीतया-शोभितो
दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारण:।
लक्ष्मणेना न्वितो-वानरै: सेवित:
अगस्त्य- सम्पूजितो-राघव:पातु-माम्।।

अर्थात् : जो राक्षसों पर अति कुपित है, श्रीसीताजी से सुशोभित हैं, दण्डकारण्य की भूमि की पवित्रता के कारण हैं, श्रीलक्ष्मण जी द्वारा अनुगत हैं, वानरों से सेवित हैं और श्रीअगस्त्यजी से पूजित हैं, वे रघुवंशी श्रीरामचन्द्र जी मेरी रक्षा करें।

धेनुकारिष्टका-निष्टकृत्-द्वेषिहां,
केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादक:।
पूतना कोपक: सूरजा खेलनो,
बाल गोपालक: पातु मां सर्वदा।।

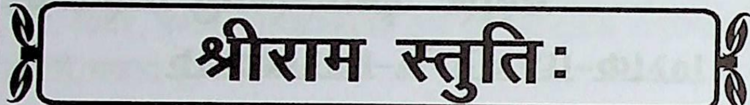
अर्थात् : धेनुक और अरिष्टासुर आदिका अनिष्ट करने वाले, शत्रुओं का ध्वंस करने वाले, केशी और कंसका वध करने वाले, वंशी को बजाने वाले, पूतना पर कोप करने वाले, यमुना तट बिहारी बालगोपाल मेरी सदा रक्षा करें।

विद्युत्-द्योतवत्-प्रस्फुरत्-वाससं,
प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोर: स्थलं,
लोहितांघ्रि द्वयं वारिजाक्षं भजे।।

अर्थात् : विद्युत्प्रकाश के सदृश जिनका पीताम्बर विभासित हो रहा है, वर्षा कालीन मेघों के समान जिनका अति शोभायमान शरीर है, जिनका वक्ष: स्थल वनमाला से विभूषित है और चरणयुगल अरुणवर्ण है, उन कमलनयन श्रीहरि को भजता हूँ।

कुञ्चितैः कुन्तलै भ्राजमा-नाननं,
रत्न-मौलिं -लसत्-कुण्डलं-गण्डयोः।
हारके यूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं,
किंकिणीं-अञ्जुलं-श्यामलं-तं-भजे।।

अर्थः जिनका मुख घुँघराली अलकों से सुशोभित है, मस्तकपर मणिमय मुकुट शोभा दे रहा है तथा कपोलों पर कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं; उज्जवल हार, केयूर (बाजूबन्द), कङ्कण और किङ्किणी कलाप से सुशोभित उन मुञ्जुलमूर्ति श्रीश्याम सुन्दर को भजता हूँ।



श्रीराम स्तुतिः

सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं,
सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं,
श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।

अर्थ : सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति, नवीन मेघ के समान शरीर वाले, करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-
धर्मावतारं हृतभूमि- भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-
श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।

अर्थः असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र को मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लक्ष्मी-विलासं जगतां निवासं-
लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

अर्थ : लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकानाश करने वाला, भूवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं-
गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्।
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं-
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

अर्थ : मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान, साततल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं -
हतारि-मानं- त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं-
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

अर्थ : वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं,
गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं,
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

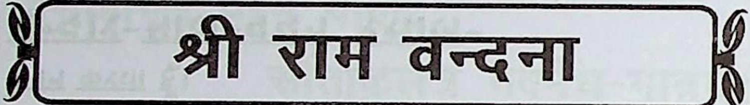
अर्थ : श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं,
विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं,
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

अर्थ : लीला के लिये शरीर धारण करने वाले रणस्थली में धीर, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं-
सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रोगणगीतं वचनात्-अतीतं-
श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।8।।

अर्थः दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राह्य, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।



श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।

अर्थ : आपतियों को हटाने वाले तथा सब प्रकार की सम्पति प्रदान करने वाले लोकाभिराम भगवान् राम को बारंबार नमस्कार करता हूँ।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

अर्थ : राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ प्रभु सीतापति को नमस्कार करता हूँ।

प्रातः स्मरामि रघुनाथ मुखारविन्दं
मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम्।
कर्णावलम्बि चलकुण्डल शोभिगण्डं
कर्णान्त दीर्घनयनं नयनाभिरामम्।।

अर्थ : जो मधुर मुसकानयुक्त, मधुरभाषी और विशाल भाल से सुशोभित हैं; कानों में लटके हुए चंचल कुण्डलों से जिनके दोनों कपोल शोभित हो रहे हैं तथा जो कर्ण पर्यन्त विस्तृत बड़े-बड़े

नेत्रों से शोभायमान और नेत्रों को आनन्द देने वाले हैं, श्रीरघुनाथ जी के ऐसे मुखारविन्द का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातर्भजामि रघुनाथ करारविन्दं
रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः।
यद्राजसंसदि विभज्य महेशचापं
सीताकर ग्रहणमङ्गलमाप सद्यः।

अर्थ : मैं प्रातः काल श्री रघुनाथ जी के करकमलों का स्मरण करता हूँ, जो राक्षसों को भय देने वाले और भक्तों के वरदायक हैं तथा जिन्होंने राज्य सभा में शङ्कर का धनुष तोड़कर शीघ्र ही सीता का मङ्गलमय पाणिग्रहण किया था।

प्रातर्नमामि रघुनाथ पदारविन्दं
वज्राङ्कुशादि शुभरेखि सुखावहं मे
योगीन्द्र मानसमधु व्रतसेव्यमानं
शापापहं सपदि गौतम धर्मपत्नयाः।

अर्थ : मैं प्रातः काल श्री रघुनाथ जी के चरण कमलों को नमस्कार करता हूँ, जो वज्र, अङ्कुश आदि शुभ रेखाओं से युक्त, मेरे लिये सुखदायी, योगियों के मन मधुप द्वारा सेवित और गौतम पत्नी अहल्या के शाप को दूर करने वाले हैं।

प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम्
वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहन्ति।
यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा
प्रीत्या सहस्र हरिनामसमं जजाप।

अर्थ : मैं प्रातः काल अपनी वाणी से श्री रघुनाथ जी के नाम का जप करता हूँ, जो वाणी के दोषों को नाश करने वाला और सर्व पापों को हरने वाला है तथा जिसे पार्वती जी ने अपने पति (शंकर) के साथ भोजन करने की इच्छा से, भगवान् के सहस्त्र नाम के सदृश प्रीतिसहित जपा था।

प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्तिं
नीलाम्बुजोत्पलसिते तररन्तनीलाम्।

आमुक्त मौक्तिकविशेष विभूषणाढ्यां
ध्येयां समस्तमुनिभि र्जनमुक्तिहेतुम्।

अर्थ : मैं प्रातः काल श्री रघुनाथ जी की वेदवन्दित मूर्ति का आश्रय लेता हूँ, जो नीलकमल और नीलमणि के समान नील वर्ण, लटकते हुए मोतियों की माला से विभूषित, समस्त मुनियों की ध्येय तथा भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाली है।

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन
हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख,
कर-कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छबि,
नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि
शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिने दानव-
दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनँदकंद
कौशलचंद दशरथ-नंदनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक
चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर,
संग्राम-जित- खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-

मुनि-मन- रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु,
कामादि खलदल- गंजनम्।
मनु जाहि राचेऽ मिलिहि सो
बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु
सनेहु जानत रावरो।।
एति भाँति गौरि असीस सुनि
सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि
मुदित मन मंदिर चली।।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज,
निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु,
जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवन सुत नामा।।
महावीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन विराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जग वन्दन।
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राज काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धारि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धारि लंक जरावा।।
भीम रूप धारि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरिष उर लाये।।

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपे।।

भूत पिशाच निकट नहीं आवैं।
महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
हे परसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुवर पुर जाई।
जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गौसाँई।
कृपा करहु गुरू देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहिं बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजे हनुमान लला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै।
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सीय सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान (जी) की आरति गावै।
बसि वैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस किये रघुराई।
तुलसीदास स्वामी आरती गाई।।

गौरी स्तुति:

ॐ लीलारब्धा-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।

बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुंजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बुरु-हाक्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जो जगदम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय से ढूंढते है, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे

अर्थ: प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।

इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थः भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थः भिन्न भिन्न शक्तियों से भूः भुवः स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुजर कर मूलाधर से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर-मूर्त्या, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मा-नन्द मयीं ताम्-अभिरामां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्म स्वरूप आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढक्के हुए सफेद हिमलाय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ: जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुधे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है। जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडे।।

अर्थ : जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित है जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः (सायं) काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थः जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर् जगतो खिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थ : शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी ! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी ! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि ! विश्व की रक्षा करो। हे देवी ! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थ : हे देवी! तुम अनन्त बलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्या: समस्तास्तव देवि भेदा:
स्त्रिय: समस्ता: सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्
का ते स्तुति: स्तवयपरा परोक्ति:।।

अर्थ : हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा ! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्रा:।।

अर्थ : हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते है वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो:,
स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दु:ख भय-हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थ : मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दु:ख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित्त सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा
बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति

अर्थ : भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तो:
स्वस्थै: स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दु:ख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदार्द्र-चिता।

अर्थ : माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिनतन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दु:ख दरिद्रता हरने वाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब को उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते

अर्थ : हे माँ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषाथों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा, दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति- हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते

अर्थ : शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते

अर्थ : सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां
त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।

अर्थ : हे देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनेवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्

अर्थ : हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं का नाश करो।

श्री दुर्गा स्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगत्-व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगत्-वन्द्य-पादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।1।।

अर्थ : शरणागतों की रक्षा करने वाली तथा भक्तों पर अनुग्रह करने वाली हे शिवे ! आपको नमस्कार है। जगत् को व्याप्त करने वाली हे विश्वरूपे ! आपको नमस्कार है। हे जगत् के द्वारा वन्दित चरणकमलों वाली ! आपको नमस्कार है। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ! आपको नमस्कार है; आप मेरी रखा कीजिये।

नमस्ते जगत्-चिन्त्य-मान-स्वरूपे
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।2।।

अर्थ : हे जगत् के द्वारा चिन्त्यमानस्वरूप वाली ! आपको नमस्कार है। हे महायोगिनि! आपको नमस्कार है। हे ज्ञानरूपे! आपको नमस्कार है। हे सदानन्दरूपे ! आपको नमस्कार है। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ! आपको नमस्कार है; आप मेरी रक्षा कीजिये।

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।3।।

अर्थ : हे देवी! एकमात्र आप ही अनाथ, दीन, तृष्णा से व्यथित, भय से पीड़ित, डरे हुए तथा बन्धन में पड़े जीव को आश्रय देने वाली तथा एकमात्र आप ही उसका उद्धार करने वाली हैं। जगत्का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है, आप मेरी रक्षा कीजिये।

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।4।।

अर्थ : हे देवी ! वन में, भीषण संग्राम में, शत्रु के बीच में, अग्नि में, समुद्र में, निर्जन तथा विषय स्थान में और शासन के समक्ष एकमात्र आप ही रक्षा करने वाल हैं तथा संसारसागर से पार जाने के लिये नौका के समान है। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है; आप मेरी रक्षा कीजिये।।4।।

अपारे महादुस्तरे-त्यन्त-घोरे
विपत्सागरे मज्जतां देह-भाजाम्।
त्वमेका गति-र्देवि निस्तारहेतु
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दूर्गे॥5॥

अर्थ : हे देवी ! पाररहित, महादुस्तर तथा अत्यन्त भयावह विपत्ति सागर में डूबते हुए प्राणियों की एकमात्र आप ही शरणस्थली हैं तथा उनके उद्धार की हेतु हैं। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है; आप मेरी रक्षा कीजिये॥5॥

नमश्चण्डिके चण्ड-दुर्दण्ड-लीला
समुत्खण्डिता-खण्डिता-शेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥6॥

अर्थ : हे देवी ! आप ही एकमात्र आश्रय हैं तथा भवसागर से पारगमन की बीजस्वरूपा हैं। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है; आप मेरी रक्षा कीजिये।

त्वमेवाघ-भावाधृता-सत्यवादी
र्न जाता जित-क्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी।
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥7॥

अर्थ : आप ही पापियों के दुर्भावग्रस्त मनकी मलिनता हटाकर सत्यनिष्ठा में तथा क्रोध पर विजय दिलाकर अक्रोध में प्रतिष्ठित होती हैं। आप ही योगियों की इडा, पिंगला और सुषुम्णा नाडियों में प्रवाहित होती हैं। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आप को नमस्कार है; आप मेरी रक्षा कीजिए।

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वति-अरुन्धातिम्-अमोघ स्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥8॥

अर्थ : हे देवी ! हे दुर्गे! हे शिवे ! हे भीमनादे! हे सरस्वति ! हे अरुन्धति! हे अमोघस्वरूपे ! आप ही विभूति, शची, कालरात्रि तथा सती है। जगत् का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है; आप मेरी रक्षा करें।

शरणमसि सुराणां सिद्ध-विद्या-धराणां
मुनि-मनुज-पशूनां दस्युभि-स्त्रासितानाम्।
नृपति-गृहगतानां व्याधिभि: पीडितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद।।9।।

अर्थ : हे देवी ! आप देवताओं, सिद्धों, विद्याधरों, मुनियों, मनुष्यों, पशुओं तथा लुटेरों से पीड़ित जनो की शरण हैं। राजाओं के बन्दीगृह में डाले गये लोगों तथा व्याधियों से पीड़ित प्राणियों की एकमात्र शरण आप ही हैं। हे दुर्गे ! मुझपर प्रसन्न होइये।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता
न जाया न विद्या न वृत्ति-र्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।1।।

अर्थ : हे भवानि ! पिता, माता, भाई, दाता, पुत्र, पुत्री, भृत्य, स्वामी, स्त्री, विद्या और वृत्ति-इनमें से कोई भी मेरा नहीं है, हे देवी! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो, तुम्हीं मेरी गति हो।

भवाब्धाव-पारे महादु:ख-भीरु:
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त:।
कुसंसार-पाशप्रबद्ध: सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।2।।

अर्थ : मैं अपार भवसागर में पड़ा हुआ हूँ, महान् दु:,खों से भयभीत हूँ, कामी, लोभी, मतवाला तथा संसार के घृणित बन्धनों में बँधा हुआ हूँ, हे भवानि ! अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यास-योगं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।3।।

अर्थ : हे भवानि! मैं न तो दान देना जानता हूँ और न ध्यानमार्ग का ही मुझे पता है, तन्त्र और स्तोत्र-मन्त्रों का भी मुझे ज्ञान नहीं है, पूजा तथा न्यास आदि की क्रियाओं से तो मैं एकदम कोरा हूँ, अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात:
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।4।।

अर्थ : न मैं पुण्य जानता हूँ न तीर्थ, न मुक्ति का पता है न लय का। हे मात:! भक्ति और व्रत भी मुझे ज्ञात नहीं है, हे भवानि! अब केवल तुम्ही मेरी गति हो, तुम्हीं मेरी गति हो।

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धि: कुदास:
कुलाचार-हीन: कदाचार-लीन:।
कुदृष्टि: कुवाक्य-प्रबन्ध: सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।5।।

अर्थ : मैं कुकर्मी, बुरी संगति में रहने वाला, दुर्बुद्धि, दुष्टदास, कुलोचित सदाचार से हीन, दुराचार परायण, कुत्सित दृष्टि रखने वाला और सदा दुर्वचन बोलने वाला हूँ, हे भवानि! मुझ अधम की अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।6।।

अर्थ : मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य किसी भी देवता को नहीं जानता, हे शरण देने वाली भवानि ! अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।7।।

अर्थ : हे शरण्ये! तुम विवाद, विषाद, प्रमाद, परदेश, जल, अनल, पर्वत, वन तथा शत्रुओं के मध्य में सदा ही मेरी रक्षा करो, हे भवानि ! अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीण-दीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।8।।

अर्थ : हे भवानि! मैं सदा से ही अनाथ, दरिद्र, जरा-जीर्ण, रोगी, अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूँगा, विपद्ग्रस्त और नष्टप्राय हूँ, अब केवल तुम्ही मेरी गति हो, तुम्ही मेरी गति हो।

गायत्री अष्टकम्

सुकल्याणीं वाणीं सुरमुनिवरैः पूजित पदाम्।
शिवामाद्यां वन्द्यां त्रिभुवनमयीं वेदजननीम्

परां शक्तिं स्त्रष्टुं विविध विधि रूपा गुण मयीम्
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्

अर्थ : गायत्री वाणी का कल्याण करने वाली है। सुर (देवता), मुनि द्वारा इसकी पूजा की जाती है। इसे शिवा कहते हैं। यह आद्या है, त्रिभुवन में वन्दनीय है, वेद-जननी है, पराशक्ति है, गुणमयी है तथा विविध रूप धारण करके प्रादुर्भूत होती है। उस अमृत रूप आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

विशुद्धां सत्वस्थामखिल दुख दोषार्निहरणीम्
निराकारां सारां सुविमल तपो मूर्त्तिम तुलाम्
जगज्ज्येष्ठां श्रेष्ठाम् सुरसुरपूज्यां श्रुतिनुताम्
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्

अर्थ : गायत्री विशुद्ध तत्व वाली, सत्वमयी तथा समस्त दुख, दोष एवं आर्त (पीडा) हरने वाली है। वह निराकार है, सारभूत है और अतुल तप की मूर्ति एवं विमल है। यह संसार में सबसे महान् है, ज्येष्ठ है। देवता तथा असुरों से पूजित है, उस अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

तपो निष्ठाभीष्टास्वजनमन सन्ताप शमनीम्
दयामूर्तिस्फूर्ति यतितति प्रसादैक सुलभाम्।।
वरेण्यां पुण्यां तां निखिल भव बन्धाप हरणीम्
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री का तपोनिष्ठ रहना ही अभीष्ट है। वह स्वजनों के मानसिक सन्तापों को शमन करने वाली है। वह स्फूर्तिमती है, दयामूर्ति है और उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेना अत्यन्त सुलभ है। वह संसार के समस्त बन्धनों को हरण करने वाली है एवं वरण (पूजा, सत्कार) करने के योग्य है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

सदाराध्यां साध्यां सुमति मति विस्तार करणीम्
विशोकामालोकां हृदयगत मोहान्ध हरणीम्।
परां दिव्यां भव्यामगम भव सिन्ध्वेक तरणीम्
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री निरन्तर आराधना करने योग्य है और उसकी आराधना करना अत्यन्त साध्य (सरल) है। वह सुमति का विस्तार करने वाली है। वह प्रकाशमय है और शोकरहित है और हृदय में रहने वाले मोहान्धकार को दूर करने वाली है। वह परा (ब्रह्म विद्या से युक्त) है, दिव्य (प्रकाशमय) है, अगम संसार सागर से तरने के लिए नौका समान है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

अजां द्वैतां त्रैतां विविध गुण रूपां सुविमलाम्
तमो हन्त्रीं तन्त्रीं श्रुति मधुरनादां रसमयीम्
महामान्यां धन्यां सततकरुणाशील विभवाम्।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री अजन्मा है, द्वैता (दार्शनिक) तथा त्रैता (रक्षा करने वाली) है, त्रिगुण एवं सुविमल रूपमयी है। तम को दूर करती है। विश्व की सञ्चालिका है। वाणी सुनने में मधुर एवं रसमयी है। वह महामान्या है, धन्य है और उसका वैभव निरन्तर करुणाशील है। उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

जगद्धात्रीं पात्रीं सकल भव संहार करणीम्।
सुवीरां धीरां तां सुविमल तपो राशि सरणीम्
अनेकामेकां वै त्रयजगद धिष्ठान पदवीम्।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री संसार की माता है और सकल संसार को संहार करने की भी उसकी शक्ति है। वह वीर है, धीर है और उसका जीवन पवित्र तपोमय है। वह एक होते हुये भी अनेक है। उसकी

पद्वी संसार की अधिष्ठान गायत्री है। उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

प्रबुद्धां बुद्धां तां स्वजनयति जाड्याप हरणिम्
हिरण्यां गुण्यां तां सुकविजन गीतां सुनिपुणाम्
सुविद्यां निरवद्यामकथ गुण गाथां भगवतीम्।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री प्रबुद्ध है, बोधमयी है, स्वजनों की जड़ता को नाश करने वाली है, हिरण्यमयी (ज्योतिर्मय) है, गुणमयी है, जिसकी निपुणता सुकवि जनों द्वारा गाई जाने वाली है। निरवद्य (दोष रहित) उनके गुणों की गाथा अकथनीय है, वे भगवती अम्बा गायत्री उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं।

अनन्तां शान्तां यां भजित बुध वृन्दः श्रुतिमयीम्
सुगेयां त्र्येयां यां स्मरति हृदि नित्यं सुरपतिः
सदा भक्त्या शक्त्या प्रणति गतिभिः प्रीतिवशगः
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्द जननीम्।

अर्थ : गायत्री अनन्त है, शान्त है, इसका भजन करके पंडित लोग वेदमय हो जाते हैं। इसका गान, ध्यान तथा स्मरण इन्द्र नित्यप्रति हृदय से करता है। सदा भक्तिपूर्वक, शक्ति के साथ, आत्म-निवेदनपूर्वक, प्रेमयुक्त आनन्द एवं अमृत की जननी माता गायत्री की मैं उपासना करता हूँ।

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : इन्द्र बोले - श्रीपीठपर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये। तुम्हे नमस्कार है। हाथ में शङ्ख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मि ! तुम्हे प्रणाम है।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापो कों हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मि ! तुम्हे प्रणाम है।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदु:खहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दु:खों को दूर करने वाली, हे देवी महालक्ष्मि ! तुम्हे नमस्कार है।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते

अर्थ : सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रपूत भगवति महालक्ष्मि ! तुम्हें सदा प्रणाम है।

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : हे देवी ! हे आदि अन्त रहित आदि शक्ते ! हे महेश्वरि ! हे योग से प्रकट हुई भगवती महालक्ष्मि ! तुम्हे नमस्कार है।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : हे देवी ! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्र रूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवी महालक्ष्मि ! तुम्हे नमस्कार है।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्मस्वरूपिणी देवी ! हे परमेश्वरी ! हे जगदम्ब ! हे महालक्ष्मि ! तुम्हे मेरा प्रणाम है।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कार भूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

अर्थ : हे देवी तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो। हे महालक्ष्मि ! तुम्हे मेरा प्रणाम है।

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्

या कुन्देन्दुतुषार हारधवला
या शुभ्र वस्त्रावृता
या वीणावरदण्ड मण्डितकरा
या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्कर प्रभृतिभि:
देवै: सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती
नि:शेष जाड्या पहा।

अर्थ : जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत है, जो शुभ्र कपड़े पहनती हैं, जिन के हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित है, जो श्वेत कमलासन पर बैठती है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती है, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें।

आशासु राशी भवदङ्गवल्ली
भासैव दासी कृतदुग्ध सिन्धुम्।
मन्दस्मिते र्निन्दित शारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दा सनसुन्दरि त्वाम्।

अर्थ : हे कमल पर बैठने वाली सुन्दरी सरस्वती ! तुम सब दिशाओं में पुञ्जीभूत हुई अपनी देहलता की आभासे ही क्षीर-समुद्र को दास बनाने वाली और मन्द मुसकान से शरद् ऋतु के चन्द्रमा को तिरस्कृत करने वाली हो, तुम को मैं प्रणाम करता हूँ।

शारदा शारदाम्भोज वदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।

अर्थ : शरत्काल में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथों को देने वाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ मेरे मुख में सदा निवास करें।

सरस्वती च तां नौमि वागधिष्ठातृ देवताम्।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।

अर्थ : उन वचन की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को प्रणाम करता हूँ, जिन की कृपा से मनुष्य देवता बन जाता है।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।
प्राज्ञेतर परिच्छेदं वचसैव करोति या।

अर्थ : बुद्धिरूपी सोने के लिये कसौटी के समान सरस्वती जी, जो केवल वचन से ही विद्वान् और मूर्खो की परीक्षा कर देती हैं, हम लोगों का पालन करें।

शुकलां ब्रह्मविचार सारपरमाम्
आद्यां जगद् व्यापिनीं
वीणापुस्तक धारिणीम भयदां
जाड्यान्धकारा पहाम्
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधातीं
पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं
बुद्धि प्रदां शारदाम्।

अर्थ : जिनका रूप श्वेत है, जो ब्रह्मविचार की परम तत्त्व हैं, जो सब संसार में फैल रही है, कमल के आसन पर विराजमान होती हैं और बुद्धि देने वाली है, उन आद्या परमेश्वरी भगवती सरस्वती की वन्दना करता हूँ।

वीणाधरे विपुलमङ्गल दानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चि हरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।

अर्थ : हे वीणा धारण करने वाली, अपार मङ्गल देने वाली, भक्तों के दु:ख छुड़ाने वाली, ब्रह्मा, विष्णु और शिव से वन्दित होने वाली, कीर्ति तथा मनोरथ देने वाली, पूज्यवरा और विद्या देने वाली सरस्वती ! तुम को नित्य प्रणाम करता हूँ।

श्वेताब्ज पूर्णविमलासन संस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरम ञ्जुगात्रे।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कज मञ्जुलास्ये
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।

अर्थ : हे श्वेत कमलों से भरे हुए निर्मल आसन पर विराजने वाली, श्वेत वस्त्रों से ढके सुन्दर शरीरवाली, खुले हुए सुन्दर श्वेत कमल के समान मञ्जुल मुखवाली और विद्या देने वाली सरस्वती! तुमको नित्य प्रणाम करता हूँ।

मातस्त्वदीयपदपङ्कज भक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलान परान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्निवायुगगनाम्बु विनिर्मितेन।

अर्थ : हे मातः ! जो (मनुष्य) तुम्हारे चरण-कमलों में भक्ति रखकर और सब देवताओं को छोड़कर तुम्हारा भजन करते हैं, वे पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश और जल - इन पांच तत्त्वों के बने शरीर से ही देवता बन जाते हैं।

मोहान्धकार भरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।

स्वीयाखिलावयव निर्मल सुप्रभाभिः

शीघ्रं विनाशय मनोगतम न्धकारम्।

अर्थ : हे उदार बुद्धिवाली माँ ! मोहरूपी अन्धकार से भरे मेरे हृदय में सदा निवास करो और अपने सब अङ्गों की निर्मल कान्ति से मेरे मन के अन्धकार का शीघ्र नाश करो।

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः

शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।

न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे

न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः।

अर्थ: हे देवी ! तुम्हारे ही प्रभाव से ब्रह्मा जगत् को बनाते है, विष्णु पालते हैं और शिव विनाश करते हैं; हे प्रकट प्रभावशाली ! यदि इन तीनों पर तुम्हारी कृपा न हो, तो वे किसी प्रकार अपना काम नहीं कर सकते।

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः

एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति।

अर्थ : हे सरस्वती ! लक्ष्मी, मेधा, धरा, पुष्टि, गौरी, तुष्टि, प्रभा, धृति - इन आठ मूर्तियों से मेरी रक्षा करो।

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।

वेदवेदान्तवेदाङ्ग विद्यास्थानेभ्य एव च।

अर्थ : सरस्वती को नित्य नमस्कार है, भद्रकाली को नमस्कार है और वेद, वेदान्त, वेदाङ्ग तथा विद्याओं के स्थानों को प्रणाम है।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।

विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते

अर्थ : हे महाभाग्यवती ज्ञानस्वरूपा कमल के समान विशाल नेत्रवाली, ज्ञानदात्री सरस्वती ! मुझको विद्या दो, मैं तुमको प्रणाम करता हूँ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।

अर्थ : हे देवी ! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिये क्षमा करो और हे परमेश्वरी ! प्रसन्न हो।

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी,
गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता,
इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा,
सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारुढ सितम्बर धारी,
स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला,
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई,
सुख उपजल दुख दुरमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया,
निराकर ही अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई,
तरै सकल संकट सो सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली,
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।

तुम्हरी महिमा पान न पावै,
जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता,
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं,
कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै,
आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी,
कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते,
तुमसों पावें सुरता तेते।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे,
जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी,
जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना,
तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा,
तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई,
पारस परसि कुधातु सुहाई।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई,
माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे,
सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता,
पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी,
तुम सम तेर पालकी भारी।
जा कर कृपा तुम्हारी होई,
ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें,
रोगी रोग रहित है जावें।
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा,
नासै दुख हर भव भीरा।

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी,
नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें,
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाच सबै भय खावै,
यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरैं चितलाई,
अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी,
विधवा रहें सत्य व्रत धारी।
जयति जयति जगदम्ब भवानी,
तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्‌गुरु से दीक्षा पावैं,
सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी,
लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता,
सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी,
आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं,
सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ,
धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना,
जो यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः

नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः
दुर्गायै दुर्गापारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरोद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापद:।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति न:
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभि:।

इन्द्राक्षी स्तोत्र

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर- ऋषि:, अनुष्टप्-छन्द:, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकम् सकलकामना-सिद्धयर्थे पाठे विनियोग:।

अथ-ध्यानम्

इंद्राक्षी द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्राधरां शुभाम्
वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।
सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्,
प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।
श्री दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां,
त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाच

इंद्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता,
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः,
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला,
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी
मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी,
महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला।
आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया,
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा,
महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी,
श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता,
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी,
एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं सुख-संपत्तिकारकम्,
क्षया-पस्मार कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम्

पुरुष-सूक्तम्

पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।
ॐ सहस्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।।
पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं चत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायान-च, पुरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्या मृतं दिबि
त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः
ततो विश्वं व्याक्रामत् साशना नशने अभि।।
तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः
यत् पुरुषेण हबिषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः
तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्
पशून तान् चक्रे वायव्यान् आरण्यान ग्राम्यांश्चये।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।
तस्मात् अश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्य कौ बाहू का उरू पादा उच्यते।
ब्रह्माणोस्य मुखं आसीत् बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य यत् वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत।
चन्द्रम: मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायु: अजायत।
नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।
पद्भ्यां भूमि र्दिश: श्रोत्रात् तथा लोकान्- अकल्पयन्
सप्तास्या सन् परिधय: त्रि: सप्त समिध: कृता:।
देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्
तेह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवा:

शांति पाठ

भद्रंकर्णेभि: श्रृणुयाम देवा:,
भर्द्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरंगै: तष्टुवांसस्तनूभि
व्यशेम देवहितं यदायु:,
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा:
स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्तिन: ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमी:
स्वस्ति नो बृहस्पति: दधातु।
स्वस्तिप्रजाभ्य: परिपालयन्तां,
न्यायेन मार्गेण महीं महीपा:।

गोब्राह्मणेभ्य: शुभमस्तु नित्यं,
लोका: समस्त: सुखिनो भवन्तु।
काले वर्षतु पर्जन्य: पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोयं क्षोभरहितो ब्राह्मणा: सन्तु निर्भया:।
दुर्जन: सज्जनो भूयात्
सज्जन: शान्तिम् आप्नुयात्।
शान्तिम् उच्येत बन्धेभ्यो
मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्।
सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत्
राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च।

यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च।
शन्नो मित्र:, शं वरुण:, शन्नो भवत्वर्यमा,
शन्नो इन्द्रो बृहस्पति:, शन्नो विष्णुरु
-रुक्रम:, नमो ब्रह्मणे, नमो वायवे, नमस्ते
वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं
ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं
वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु
मामवतु वक्तारं, शान्ति:, शान्ति: शान्ति।
सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्यं
करवावहै, तेजस्विनाम् अधीतमस्तु
माद्विषावहै शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

क्षमा प्रार्थना

प्रत्येक अनुष्ठान, यज्ञ तथा साधना के अंत में इस क्षमा प्रार्थना स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे जाने या अनजाने में हुई भूलों का दुष्परिणाम शान्त हो जाता है।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनम्
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेश हरणम्।

अर्थ : न तो मैं मंत्र जानता हूँ, न यंत्र जानता हूँ और न स्तुति ही जानता हूँ। आवाहन ध्यान और स्तुति कथा भी नहीं जानता हूँ पूजा और मुद्रा भी नही जानता लेकिन हे माता इतना जानता हूँ केवल तुम्हरा अनुसरण (तुम्हारे पीछे चलना) सब क्लेशों को हर लेने वाला है।

विधेर ज्ञानेन द्रविण विरहेणा लसतया
विधेया शक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलो द्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे शिवे, सकल उद्धारिणी जननि विधि के अज्ञान से, पैसा की कमी से, आलस्य से, सामर्थ्य हीनता के कारण आपकी चरण सेवा करने में जो भूल रह गई हो तो उस सब को क्षमा करना क्यों कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कुमाता नही होती।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे मां, पृथ्वी पर तेरे बहुत से पुत्र हैं जो सरल हैं पर उनके

बीच में तेरा पुत्र अकेला मैं ही टेढ़ा हो गया हूँ, फिर भी हे मां ! तेरे लिये त्याग उचित नहीं है। क्योंकि पुत्र कुपुत्र हो सकते हैं, पर माता कुमाता नहीं होती।

जगन्मात र्मातस्तव चरण सेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

अर्थ : हे, जगत की माता मैंने तेरी चरण सेवा नहीं की, हे देवि तूने मुझे पर्याप्त द्रव्य भी नहीं दिया जिससे दान ही करता, परन्तु तू मेरे ऊपर खूब स्नेह करती है। पुत्र कुपुत्र हो सकते हैं, पर माता कुमाता नहीं होती।

परित्यक्ता देवा विविध विधसेवा कुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकम् अपनीते तु वयसि
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।

अर्थ : गणेशजी को जन्म देनेवाली माता पार्वती ! (अन्य देवताओं की आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा-पूजा मुझ से नहीं हो पाती; अत एव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नही होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किस की शरण में जाऊँगा।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकै:
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदम्
जन: को जानीते जननि जपनीयं जप विधौ।

अर्थ : हे मां, तुम्हारी स्तुति करने से नीच और चाणडाल भी

मीठी मधुर वाणी बोलने वाले महा कवि हो जाते हैं और रंक (दरिद्र, कंगाल) भी दुख की अग्नि से बच कर करोडों स्वर्ण मुहरों से सम्पन्न हो कर चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। हे माता ! तुम्हारी स्तुति करने के ढंग को कौन जानता है ?

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपति:।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।

अर्थ : भवानी ! जो अपने अङ्गों में चिता की राख भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तकपर जटा और कण्ठमें नागराज वासुकि को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है ? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटीका फल है तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्त्व बढ़ गया।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन:
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपत:

अर्थ : मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञानकी अपेक्षा है, न सुखकी आकाङ्क्षा अत: तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी' - इन नामों का जप करते हुए बीते।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारै:
कि रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभि:।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपाम् उचितम् अम्ब परं तवैव।

अर्थ : माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझ से न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन-सा अपराध नहीं किया है। फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपा दृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं,
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।

अर्थ : माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ। (पहले कभी नही करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं।

जगदम्ब! विचित्रमत्र किं,
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराध परंपरापरं,
न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।

अर्थ : हे जगदम्बे ! यदि तुम्हारी मेरे ऊपर कृपा हो तो इसमें क्या विचित्रता है ? अपराधों की चाहे कितनी ही परम्परा क्यों न हो, लेकिन माँ अपने पुत्र की उपेक्षा नही करती है।

मत्समः पतकीनास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु।।

अर्थ : हे महादेविः मेरे समान तो कोई पातकी नहीं है तथा तेरे समान पाप नाश करने वाली कोई नहीं है, ऐसा जानकर हे महादेवि! जैसा तुम्हे उचित लगे, वैसा करो।

माता रूप भवानी के वाख

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ विचार्यम
बहुबल संबाहु एकंत स्वयंबू परमाकारी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य तती परमगती

भावानुवाद : अनन्त, सर्वत्र विराजमान, स्वयं दैदीप्यमान, सर्वशक्तिमान, एकमात्र व्यापक आकार वाले ईश्वर की रचना अपार है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से निर्वाण का रहस्य उदघाटित होता है जिससे परमगति प्राप्त होती है।

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शद्धं अत्यंत विद्ययाधरम।
लल्ल-नाम लल्ल परमा ग्वरम्
शिव माधव नाहं परम् ब्रह्म सोहम्।।

भावानुवाद: मैं (माता श्री रूप भवानी अत्यंत शुद्द विद्याधर के रूप में लल्लदेयद को परमस्वरूप जान कर उन्हें ओंकार के समान अपने निर्मल हृदय में ठहरा कर तथा अपने पूज्य पिता शिवस्वरूप माधव को परमब्रहम स्वरूप मान कर उसी ब्रहम ज्ञान में लीन हा रही हूँ।

सन्तोश समाद एक आसन पर
मैं यूं लगाया प्रयम का पथ।
दृढ़ किया वालवाशी आंखियों का
ज्योती स्वरूपा क्या करूँ मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में बसाया।।

भावानुवाद : शांति पूर्वक समाधिस्थ एक आसन पर मैंने प्रेमपथ अपनाया। चंचल अँखियों को दृढ़ किया। ज्योति स्वरूप खुद को तुझ में कैसे लीन करूँ। तुम्हारी आज्ञा से सूक्ष्म रूप देख पाया। तुम्हारे चरणों में हृदय को रख पाया।

पम्पोश हयेथ ब पादन पयमय

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी
पम्पोश हयेथ ब पादन पयमय
अलखेश्वरपी छुय जय जयकार।।1।।
मण्यग्राम होवथम दरशान मजअय
वासुकर द्युत्थम ज्ञानुक सार।
पम्पोश हयेथ ब पादन पयमय
अलखेश्वरी छुय जय जयकार।।2।।
लक्ष्मी दुर्गा शारिका स्वरूपा
सरिय छिय च्यन अवतार
पम्पोश हयेथ ब पादन पयमय
अलखेश्वरी छुय जय जयकार।।3।।
गर बार तरविथ तपस्याई द्रायख
कोरुथ प्रज्जवलून जग संसार
चमत्कार चान्यन छुय नमस्कार
अलखेश्वरी छुय जय जयकार।।4।।
बालधर ओसिय फरमाबरदार
कृपा करथस वोत दरबार।
भगत चयअन छिय दी अस्य तार
अलखेश्वरी छुय जय जयकार।।5।।
माता पिता भ्राता छख पानय
प्रथ थानय छुय चोनिह ही राज।
राज राजेश्वरी जगतस रछवन
अलखेश्वरी छुय जय जयकार।।6।।

आरती

ॐ जय ज्येष्ठा माता,
जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो।
सकल काम प्रदायिनी, दु:ख माँ दूर करो।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।
दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।
करे हित सभी का, निर्धन या राजे।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।
अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
भक्ति बढ़ाने वाली कोई युक्ति करो।
भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।

हम अति दीन दु:खी माँ, तेरी आस खड़े।
जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।
ॐ जय ज्येष्ठा माता।
ॐ जय ज्येष्ठा माता,
जय जय ज्येष्ठा माता।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करें,
ॐ जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दु:खविनशो मन का,
स्वामी दु:खविनशो मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का,
ॐ जय जगदीश हरे।।
मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ में किसकी,
स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी,
ॐ जय जगदीश हरे।।
तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी,
ॐ जय जगदीश हरे।।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता,
स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता,
ॐ जय जगदीश हरे।।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति,
स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति,
ॐ जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दु:ख हर्ता रक्षक तुम मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे,
ॐ जय जगदीश हरे।।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा,
ॐ जय जगदीश हरे।।

प्रात: स्मरणीय स्तोत्र

एक श्लोकी नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा मुरारि: त्रिपुरान्त कारी,
भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्र: शनि राहु केतव:
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनं, वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्। बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनं पश्चात् रावण कुम्भकर्ण हननं चैतत् हि रामायणम्।

अर्थ : पहले राम का वनवास, सुवर्णमृग का मारना, रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव के साथ प्रेम का वार्तालाप, बाली का मारना, समुद्र का लंघन, लंकापुरी का जलाना, अन्त में रावण कुम्भकर्ण का हनन।

एक श्लोकी भागवत्

आदौ देवकि देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम् माया पूतनि जीविताप हरणं गोवर्द्धनो द्धारणम् कंस च्छेदन कौरवादि हननं कुन्ती सुता पालनम्। एतत् भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम्।

अर्थ : पहले देवकी के गर्भ से भगवान् का जन्म, गोकुल में बाल कृष्ण का पालन पोषण, पूतना का मारना, गोवर्द्धन का उद्धार, कंस का मारना, कौरवों की पराज्य, कुन्ती पुत्र का पालना - यही है संक्षिपत में भागवत् की कथा।

सप्तर्षि स्मरणम्

कश्यपो-अत्रि:-भरद्वाज:, विश्वामित्रोऽथ गौतम:
जमदग्नि-र्वसिष्ठश्च सप्त ते ऋषय: स्मृता:

सप्तचिर-जीवि स्तुति:

अश्वत्थामा बलि व्यास:, हनुमान च विभीषण:
कृप: परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविन:

पंचदेवी स्तुति:

उमा उषा च वैदेही, रमा गंगेति पंचकम्
प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम्

पंचकन्या स्तुति:

अहल्या द्रोपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम्

सप्तपुरी स्तुति

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिका:।
पुरी द्वारवती चैव सप्तेता मोक्षदायिका:।।

हकारादि पञ्चदेव स्तुति:

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम
पंचकं हं स्मरेत् नित्यं घोर संकटनाशनम्

प्रातर्वन्दनीय स्तुति:

प्रात: काले पिता-माता, ज्येष्ठा-भ्राता तथैवच
आचार्य: स्थाविरा: चैव, वन्दनीया दिने दिने।

अर्थ : पिता, माता, ज्येष्ठ भाई, आचार्य तथा सभी वृद्ध। इन को प्रात: काल प्रणाम करना चाहिए।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।

अर्थ : माता के समान कोई तीर्थ नहीं है - जो पुत्र माता का आदर करता है उस के इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह।।

अर्थ : हे पुत्र जो पिता का आदर करता है, उस को वेद पढ़ने की आवश्यकता नहीं, पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ हैं।

मृतसंजीवनी मंत्र

इस मन्त्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है।

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूभुर्वः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौ ॐ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य की उपासना से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अतः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें :

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्पे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये नमः। ॐ आदित्याय

नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ - मरीच्यादित्य सवित्रार्क-भास्करेभ्यो नमः।

असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र

रोगान्-अशोषान्-अपहंसि-तृष्टा
रुष्टा तु कामन्-सकलान्-अभीष्टान्।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्यश्रियतां प्रयान्ति।।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नतास्म परिपालयप देवि ! विश्वम्।

नवग्रहों के छोटे तथा आसान मन्त्र

"सूर्य" ओऽम् रं रवये नमः।
"चन्द्र" ओऽम् सौं सोमाय नमः।
"भौम" ओऽम भौं भौमाय नमः।
"बुध" ओऽम् बं बुधाय नमः।
"गुरु" ओऽम् गुं गुरवे नमः।
"शुक्र" ओऽम् शुं शुक्राय नमः।
"शनि" ओऽम् शं शनैश्चराय नमः।
"राहु" ओऽम् राम् राहवे नमः।
"केतु" ओऽम् कैं केतवे नमः।

बारह राशियों के मन्त्र

मेष-ॐ ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्मी नारायाणाय नमः।

वृष - ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।

मिथुन - ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।

कर्क - ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः

सिंह - ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।

कन्या - ओऽम् पीं पीताम्बराय नमः।

तुला - ॐ तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः

वृश्चिक - ॐ नारायणाय सूरसिंहाय नमः।

धनु - ॐ श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।

मकर - ॐ श्रीं वत्सलाय नमः।

कुम्भ - ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।

मीन - ॐ क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके, गौरि नानारायणि नमोस्तुते

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र

सर्वाबाधा विर्निमुक्तो धन धान्य समन्विता:
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।

भय नाश का मन्त्र

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते
भयेभ्य: त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्, रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे, रमा रमण विश्वेश, विद्याम् आशु प्रयच्छ मे

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्र

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटे दिये जाने से रोग की निवृति होती है :

मन्त्र : अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ, म, ङ ण नम्। झ भ ञ्। घ ड ध श। ज ब ग ड् - द श। ख फ छठे थ - च ट, तव्। क, प, य्। शष सर्। हल्।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते देहि से तनयं कृष्ण। त्वाम्-अहं शरणं गत:

सामूहिक कल्याण मंत्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देव गण शक्तिसमूह मूर्त्या।
तामम्बिकाम खिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।

शुभ फल की प्राप्ति का मंत्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पाप नाश का मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव

महामारी नाश का मंत्र

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते

दारिद्र्यदुःखादिनाश का मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम शेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

रक्षा पाने का मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च

प्रसन्नता प्राप्ति का मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम् ईड्ये लोकानां वरदा भव

पापनाश तथा भक्ति प्राप्ति का मंत्र

नतेभ्य: सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

मोक्ष प्राप्ति का मंत्र

त्वं वैष्णवी शक्तिर् अनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु:।।

अन्नपूर्णा स्तुति:

खाने के समय जब अन्न की थाली आप के सामने आये। तो इस श्लोक का उच्चारण करना चाहिये।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

अर्थ : जो सदा पूर्ण शंकर की प्राण प्रिया पार्वती है वह अन्न पूर्णा है उससे मैं ज्ञान वैराग्य और शुभ कामनाओं के सिद्धि के लिये अन्नरूपी भिक्षा मांगता है।

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य

ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण- कारक:।
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु- मे रवि:

चन्द्र

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु में विधुः

भौम

भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत्सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु में कुजः

बुध

उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु में बुधः।

बृहस्पति

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु में गुरुः।।

शुक्र

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु में भृगुः।।

शनि

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु में शनिः।।

राहु

महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु में शिखी।।

केतु

अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः।
उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।।

मांस खाना निषेध है (धर्म शास्त्र)

देव यज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि
तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्।

अर्थात् : देव यज्ञ, पितृश्राद्ध (ग्यारहवां, बारहवां दिन) पर तथा किसी मंगल कर्म (जन्म दिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिंसा करता है उसे नरक मिलता है।

मधुमांसे प्राश्य-आलभ्य वा शरीरं पुर्नव्रतम्
आलभेया:। (उपनिषद्ध)

अर्थ : जो ब्रह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उस को नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये।

क्व क्व मांस क्वास्ति वै भक्ति: क्वमद्यो
क्व शिवार्चनम्, मद्यमासानु रक्तानां दूरे
तिष्ठति शंकर:। (उपनिषद्ध)

अर्थ : कहां मांस खाना, कहां भक्ति (पूजा पाठ करना) कहां शिवपूजा कहां मांस और शराब का सेवन। मद्य मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता है।

भगवान् व्यास कहते है :

सुरां मत्स्यान् मघु-मांसम्-आसवं कृत्सरोदनम्
धूर्ति: प्रवर्तितं धर्मं नैत्त वेदेषु कल्पितम्।

अर्थ : शराब पीना, मछली खाना, मास सहित तेल वाला बता (तहर चरवन) खाना अथवा देवता को अर्पण करना, यदि कहीं ऐसा दर्ज है - तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है - वेदों में मांस खाना कहीं भी दर्ज नहीं है।

यदि चेत् खादको न स्यात् न तदा घातको भवेत्
घातक: खाद कार्याय तत् घातयतिवैनर:।
(महाभारत)

अर्थ : यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा, अत: जो मांस खाता है वह पशु हिंसा का प्रेरक है।

यत्र प्राणि-वधो धर्म: अधर्म: तत्र कीदृश:, ब्रह्मणे यत्र मांसाशी चण्डाल: तत्र कीदृश:।।

अर्थ : जहां प्राणि हत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाय। जहां ब्राह्मण ही मास खाता हो, वहां चण्डाल कैसा होगा।

गायत्री जप विधि:

शुद्ध आसन पर पद्मासन में पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुए पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):

प्रणवस्य ऋषि र्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-र्व्याह्रतिषु च विनियोग: प्रकीर्तित:, प्रजापते-र्व्याह्रतय: पूर्वस्य परमेष्ठिन:। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याह्रतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापति:, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायु: सूर्यश्च-देवता:। छन्दश्च व्यह्रतीनाम्-एकाक्षराणाम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्-अत्युक्-ताख्यम् विश्वामित्रा-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो पनये जप्ये गायत्र्यै योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्या: परं जप्यं, नव्याह्रति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये में सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे

यस्मात्-गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अबद्ध्य गायत्रैव समन्ततः आत्मन-श्चापः वरिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम्

अपने आप को पानी छिड़कें अंजलि धारण करते हुये पढ़ेः

ओजोसी सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः

अंगन्यास कीजिये, दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ेः

"अ" नाभो (नाभि को) "उ" हृदि (हृदय को) "म" शिरसि (सिर को)।। ॐ "भू"- अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों को) भुवः तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (बीच वाली ऊँगलियों को) "महः" अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी की साथ वाली ऊँगलियों को) "जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी ऊँगलियों को) "तपः सत्यं" करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवों के आपस में स्पर्श करें)। "भू" पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये

(गुह्यस्थान को) "महः नाभौ" (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसि (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महः कवचाय हूँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौष्ट् (नेत्रों को) "तपः" सत्यम्-अस्त्राय "फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः", "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्"

जान्वोः, (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्यां (कमर को), भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः" नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे" (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः, "वरेण्यं" शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौष्ट् "धीमहि" कवचाय हूँ (वस्त्रों को) "धियो योनः" "नेत्राभ्यां वौष्ट्" "प्रचोदयात् अस्त्राय फट्" (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः, "रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूर्भुवः स्वरों" (शिरसि) प्राणायाम करके

तर्पण कीजिये :

ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दः वरुणो देवता ब्रह्म-शाप विमोचने विनियोगः।

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो
विदुस्त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं
ब्रह्मशापात् विमुक्ता भव।।

तर्पण करें :

अस्य गायत्री वशिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दो वशिष्ठ देवता वशिष्ठ शाप विमोचने विनियोगः।

ओ३म्-अर्क-ज्योतिः अहं ब्रह्मा
ब्रह्म ज्योतिः अहं शिवः।
शिव-ज्योतिः अहं विष्णुः
शिव-ज्योतिः शिवः परम्।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।

तर्पण करें :

ओ३म विश्वामित्र शाप मोचन मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः अनुष्टप् छन्दो आद्या देवता विश्वामित्र शाप विमोचने विनियोगः।

ओ३म् अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्रि त्वं विश्वामित्र-शापात्-विमुक्ता भव।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़े :

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल,
च्छायै-र्मुखैः त्रीक्षणैः
युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां
तत्त्वात्म वर्णात्मिकाम्।।

गायत्रीं वरदा-भयां-कुश-करां
शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्द
युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।।

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्री छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर गायत्री मन्त्र का जप करें। जप उस स्थान पर करें जहां आप की एकग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े:

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़े:

देवा-गातु-श्रोत्रिया: देवा गातुविदो, गातुं वित्वा - गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा, वातेधाः। नमोः धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।

गायत्री वेदजननी गायत्री पाप नाशिनी।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम्।

अर्थ: गायत्री वेदों की जननी है, गायत्री पापों को नाश करने वाली है, गायत्री से अन्य कोई पवित्र करने वाला मन्त्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नही है।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवा: केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जप्यं न भूतं न भविष्यति।।

अर्थ: गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है, केशव के समान कोई देवता नही है। गायत्री मन्त्र के जप से श्रेष्ठ कोई जप न आज तक हुआ है न होगा।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है?

वेदों, शास्त्रों और पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री मंत्र की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान हैं, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

कन्याओं को भी यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकार है (धर्मशास्त्र)

शास्त्रों में लिखा है कि वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत ग्रहण करने का वैसा ही अधिकार है जैसा बालकों को, वैदिक काल में स्त्रियां वेद शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्य सूत्र में लिखा है :

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम् अभ्युदानयन्
जपेत् सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति

अर्थात् : कन्या को कपड़ा पहने हुये, यज्ञोपवीत धारण किये हुये पति के निकट लायें तथा यह मन्त्र पढ़ें। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत किये हुये हो। यह श्लोक भी इसकी पुष्टि करता है।

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जीबन्धनम् इष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।

अर्थात् : प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन-संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन भी करती थी।

हारीत संहिता तथा पराशर संहिता में कहा है।

"द्विविधा स्त्रियां ब्रह्मावादिन्य:, सद्यो-वध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम्, अग्निबन्धनम्, वेदाध्ययनम् स्व-गृहे भिक्षा इति, वधूनाम तु उपस्थिते विवाह कथंचित उपनयनं कृत्वा विवाह: कार्य:"।

अर्थात् : दो प्रकार की स्त्रियां होती हैं एक 'ब्रह्मवादिनी' जिन का उपनयन होता है, जो अग्रिहोत्र करती है, वेदाध्ययन करती है अपने परिवार में ही भिक्षावृति से रहती है और दूसरी वे जिन का उपनयन संस्कार करके विवाह होता है। इसकी पुष्टि 'निणर्य सिन्धुकार' ने भी अपने पुस्तक के पृष्ट 414 पर की है।

वेद मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वालों को 'ऋषि' कहा जाता है **"ऋषयो मन्त्र द्रष्टार:"** कई वेद मन्त्रों के अर्थ खोलने वाली **'ऋषिकायें'** भी हुई है ऋग्वेद में इस प्रकार की लगभग 30 ऋषिकाओं के नाम आते हैं जैसे गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसूय्या, देवयानी, अहिल्या, कुन्ती, द्रौपदी इत्यादि गायत्री की उपासक रही हैं।

इसके अतिरिक्त मनु महाराज प्रत्येक धर्म कार्य में स्त्री-पुरुष का समान अधिकार मानते है। मनु ने घर में अग्निहोत्र आदि धर्मकार्यों के आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी स्त्री को ही सौंपी है और यह आदेश दिया है कि पुरुष को प्रत्येक धर्म कार्य स्त्री को साथ लेकर करना चाहिये जैसे **"शोचे धर्म अन्नपक्त्यां"** अर्थात् घर की शुद्धि, धर्मकार्यों का आयोजन और भोजन बनाना आदि स्त्री को सौंपा है मनु ने संस्कारों को सभी के लिये समान रूप दिया है वहां पर स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है सभी संस्कार मन्त्रपूर्ववती करने चाहिये वह स्त्री का हो या पुरुष का संस्कार ब्रह्मण वर्ग के लिये जरूरी है चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष।

कश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं हम लड़की के केवल 9 संस्कार करते हैं और लड़के के 24 संस्कार। मनु स्मृति में लिखा है **'जन्मना जायते शुद्र: संस्कारात् द्विज उच्चते'** अर्थात् संस्कार करने पर ही हम अपने आप को ब्रह्मण कहला सकते है। शास्त्रों में लिखा है कि लड़की माता पिता का क्रिया कर्म कर सकती है तथा लड़की अपने माता पिता का दाह संस्कार भी कर सकती है परन्तु धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि यज्ञोपवीत के बिना हम कोई भी धार्मिक कार्य अथवा क्रिया कर्म नहीं कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार होता था। यह बात भी है कि जब हम अपने लड़के का विवाह करते हैं तो लग्न के समय लड़के को छ: धागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है और लड़के से कहते हैं कि पहले आप को तीन धागों था अब छ: धागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है (वास्तव में पिताजी उस समय लड़की के गले से यज्ञोपवीत निकाल कर दूल्हे के गले में डालता हैं) इसमें से तीन धागे आपको अपनी स्त्री के हैं अर्थात् आप को आज से अपनी स्त्री के धार्मिक कार्यों का चार्ज भी लेना है क्योंकि उसको गृहस्थ का पूरा कार्य है तथा बच्चों की देखभाल करनी है इस से स्पष्ट होता है कि लडकी को भी यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार था परन्तु समय बीतने के साथ साथ यह संस्कार केवल लड़कों तक ही सीमित रहा है जैसे कर्ण वेध का संस्कार पहले दोनों लड़कों तथा लड़कियों को करते थे परन्तु समय बीत जाने के साथ साथ यह संस्कार केवल लड़कियों तक ही सीमित रहा। आप किसी वृद्ध माता जी से भी पूछें कि पहले पहल स्त्रियां भी लंगोट तथा आटीपन लगाती थी, आटीपन को मेखला कहते हैं जो कि यज्ञोपवीत संस्कार पर ही कमर में बांधा जाता है इससे भी स्पष्ट होता है कि पहले पहल लड़कियों को भी यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता था।

यज्ञोपवीत कब ?

कश्मीरी पण्डित यज्ञोपवीत को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि कश्मीरी पण्डितों का गायत्री मन्त्र सामूहिक गुरु मन्त्र है, यह संस्कार कश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था - चूँकि विद्यार्थी गुरुकुल में वेदों का पठन पाठन शास्त्र विद्या तथा शस्त्र विद्या यहां तक कि प्रत्येक प्रकार की विद्या को प्राप्त करता था तथा ब्रह्मचार्य का पालन 25 वर्ष तक करता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे - गर्भ से लेकर यज्ञोपवीत तक के 9 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे। यज्ञोपवीत से लेकर 13 संस्कार कश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन पाठन से सम्बन्धित होते थे - "वेद कहते हैं ज्ञान को, वह इंजीनरी हो या साईंस अथवा डाक्टरी आदि। समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदलने पर विवश होना पडता है। अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में ही करते हैं, केवल यज्ञोपवीत ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 22 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवीत के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को समारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आज के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी ईंजीनरी, डाक्टरी व साईंस आदि कोई

ट्रेनिंग कर रहा है वह विद्यार्थी तब तक ब्रह्मचारी ही कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण वश इस अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवीत न किया हो अवश्य कीजिये।

ऋतु पति

ऋतुपति नारायण का नाम जहां पर भी आता है वहां अपने अपने मास का ऋतुपति पढ़ना होता है इस कारण यहां पर हर मास का ऋतुपति नारायण लिख रहा हूँ।

वैशाखे — शोभासहिताय, जनार्दनाय, विभूति सहिताय, मधुसूदनाय।

ज्येष्ठे — महिमा सहिताये, उपेन्द्राय, इच्छा सहिताय, त्रिविक्रमाय।

आषाढे — लक्ष्मी सहिताय, यज्ञ पुरुषाय, धरती सहिताय, वामनाय।

श्रावणे — कान्ति सहिताय, वासुदेवाय, रतिसहिताय, श्रीधराय।

भाद्रपदे — प्राप्रिसहिताय, हरये, माया सहिताय, हृषिकेषाय।

आश्विने — परकाम्या सहिताय, योगीश्वराय, धी सहिताय, पदमनाभाय।

कार्तिके — लिगमासहिताय, पुण्डरी काक्षाय, गरिमा सहिताय, दामूदराय

मार्ग शीर्ष — रुक्षमणि सहिताय, कृष्णाय, श्री सहिताय, केशवाय।

पौषे — प्रिया सहिताय क्रष्णाय, श्री सहिताय केशवाय।

माघे — प्रीति सहिताय, अच्युताय, कान्ता सहिताय, माधवाय।

फाल्गुने — शक्ति सहिताय, चक्रिणे, क्रयासहिताय, गोविन्दाय।

चैत्रे सिद्धि सहिताय, वैकुण्ठाय, मतिसहिताय, विष्णवे।

अधिमासे सत्यभामा सहिताय, नरकारये, निष्कला सहिताय, महा मार्तण्डाय

तर्पण के लिये कुछ जानकारी

तपर्ण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि और वार का नाम ले उस के पश्चात पित्रों का नाम लें जैसे :

मास : वैशाख मासस्य ज्येष्ठ मासस्य, आषाढ़ मासस्य, श्रावण मासस्य, भाद्र मासस्य, आश्विन मासस्य, कार्तिक मासस्य, मार्ग मासस्य, पौष मासस्य, माघ मासस्य, फाल्गुन मासस्य, चैत्र मासस्य।

पक्ष : शुक्लपक्षस्य, कृष्णपक्षस्य।

तिथि : प्रतिपदा, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां, चर्तुथ्यां, पंचम्यां, षष्ठ्यां, सप्तम्यां, अष्टम्यां, नवम्यां, दशम्यां, एकादश्यां, द्वादश्यां, त्रयोदश्यां, चतुर्दश्या, पूर्णिमायां, अमावस्यां।

वार :

रविवार: रविवासरानितायां, **सोमवार**: सोमवासरानितायां, **मंगलवार**: मंगलवासरानितायां, **बुधवार**: बुधवासरानितायां, **गुरुवार**: गुरुवासरानितायां, **शुक्रवार**: शुक्रवासरानितायां, **शनिवार**: शनिवासरानितायां।

पित्रों का नाम लेने की विधि:

(पिता का नाम) **पित्रे** (दादा का नाम) **पितामहे** (परदादा का नाम) **प्रपितामहे**

(माता का नाम) **मात्रे**, माता की सास (**पितामहि**), माता की सास की सास (**प्रपितामहि**)

(नाना) मातामाहे (परनाना) प्रमामाताह्ये (उसका पिता)

वृद्ध प्रमातामाह्ये

(नानी) मातामह्यै (परनानी) प्रमातामह्यै (उस की सास)

वृद्ध प्रमातामह्यै।

तपर्ण करते समय यह ख्याल रखें कि यदि माता पिता जीवित हैं तो उन का नाम न लीजिये, पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम भी लेना होता है जैसे

तत्सत् ब्रह्य, अध्य तावत् तिथौ अद्य माघ मासस्य कृष्ण पक्षस्य, तिथौ अमावस्यां, मंगल वासरानितायां पित्रे प्रपितामहाये राज्यदराय भारद्वाजाये, मात्रे लीला वती देवयै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अमरावती देव्यै भारद्वाज्यैः।

यहां पर "भारद्वाज" गोत्र का नाम है।

यदि तिथि "दि" हो तो दोतिथियां पढ़ी जाती है यथा द्वितीयस्यां परता तृतीयस्यां।

तर्पण देने की विधि

बायां यज्ञोपवीत रख कर तिल युक्त पानी डालते हुये पढ़े:

ॐ तत्सत् ब्रह्म अद्य भाद्र मासस्य कृष्ण पक्षस्य द्वितीयस्यां भौम वासरानितायां ॐ श्री ब्राह्मणेऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे, वैवसुत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे, भूलोके, जम्मू द्वीपे, भारत वर्षे जम्मू-कश्मीर प्रदेशे, सम्प्रति जम्मू प्रखण्डे .., नगरे .., ग्रामे . निवसतः पित्रे (प्रेमनाथ) दराय कापिष्ठल मानवाय पितामहाय (आप्ताभदराय) कापिष्ठल मानवाय प्रपितामहाय (गाशदराय)

कापिष्ठल मानवाय वृद्ध प्रपितामहाय (वासुदराय) कापिष्ठल मानवाय मात्रे (तुलसी) उचिमान (गुणवत्ती देव्यै) कापिष्ठल मानव्यै: पितामह्यै: (बदरी) उचिमान (राधा देव्यै) कापिष्ठल मानव्यै: प्रपितामह्यै: (हारी) उचिमान (सरस्वती देव्यै) कापिष्ठल मानव्यै:। मातामहाय (गोविन्द देव) उपमन्ये प्रमातामहाय (विष्णु देव) उपमन्ये वृद्ध प्रमातामहाय (देव देव उपमन्ये) मातामह्यै: (जपरी) उचमान (अम्बरावती देव) उपमन्ये प्रमातामह्यै: माता उचमान (पोशमाली देव) उपमन्ये वृद्ध प्रपितामह्यै: (सम्पत्) उचमान (सुमाली देव) उपमन्ये (कतिजी) उचमान (सविधानी देव) उपमन्ये।। मातृ पक्ष्यास्तु ये केचित चान्ये पित्रपक्षजा: गुरु शुश्वर बन्धूनां ये कुलेषु समुदभवा: ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिता: अन्न दानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिं उत्तमाम् समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्य: पितृभ्य: अन्नं स्वधा।

तर्पण

तर्पण में तांबे या कांस का पात्र होना चाहिए। देवताओं का तर्पण हाथ के अग्र भाग से, मनुष्य का हाथ के मध्य भाग से और पितरों का दक्षिणाग्र भाग से होना चाहिए। देवताओं तथा ऋषि तर्पण के समय यज्ञोपवीत दायें ओर रखना चाहिए।

- देव तर्पण में पूर्वाभिमुख, मनुष्य तर्पण में उत्तराभिमुख और पितृ तर्पण में दक्षिणाभिमुख रहना चाहिये।
- देवताओं को एक, एक, मनुष्यों को दो दो और पितरों को तीन तीन अंजलि जल देना चाहिए।

देव तर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुः तृप्यताम्। ॐ रुद्रः तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिः तृप्यताम्। ॐ देवताः तृप्यताम्। ॐ छदांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदाः तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयः तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्याः तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वाः तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्याः तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः साक्यवः तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यः तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसः तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगाः तृप्यन्ताम्। ॐ नागाः तृप्यन्ताम्। ॐ सागरा तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वताः तृप्यन्ताम्। ॐ सरितः तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्याः तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षाः तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचाः तृप्यन्ताम्। ॐ सुर्पणाः तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवः तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयः तृप्यन्ताम्। ॐ ओषध्यः तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधः तृप्यताम्।

ऋषि तर्पण

ॐ मरीचिः तृप्यताम्। ॐ अत्रिः तृप्यताम्। ॐ अंगिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृप्यताम्। ॐ पुलहः तृप्यताम्। ॐ क्रतुः तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठः तृप्यताम्। ॐ प्रचेताः तृप्यताम्। ॐ भृगुः तृप्यताम्। ॐ नारदः तृप्यताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण

गले में यज्ञोपवीत रखें और उत्तराभिमुख हो के बैठ कर तर्पण करें। एक एक मन्त्र को दो बार पढे।

ॐ सनकः तृप्यताम् (2) ॐ सनन्दनः तृप्यताम् (2)। ॐ सनातनः तृप्यताम् (2)। ॐ कपिलः तृप्यताम् (2)। ॐ

आसुरिः तृप्यताम् (2)। ॐ वोढुः तृप्यताम् (2)। ॐ पंच शिखः तृप्यताम् (2)

कुम्भ देने की विधि

सामग्री : पानी का लोटा, विष्ठुर (न होने पर दर्भ का छोटा तिनका), थोड़ा सा काला तिल और ताम्बे का छोटा लोटा (कुम्भ गडव)

विधि : बायां यज्ञोपवीत रखकर शुद्ध आसन पर बैठकर एक थाली में ताम्बे के छोटे लोटे (कुम्भ गडव) को रखें। दायें हाथ पर विष्ठुर या दर्भ का तिनका और थोड़ा तिल डालें और बायें हाथ से पानी का लोटा उठायें और दायें हाथ पर पानी की धारा को इस प्रकार डालें ताकि दायें अंगूठे की तरफ पानी की धारा, तिल, दर्भ, सहित कुम्भ गडवे में गिरता रहे और आप इस मन्त्र का उच्चारण जल धारा डालते हुये करें।

कुम्भो वनिष्ठुः जनिता शचीभिः
यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः
प्लाशिः व्यक्तः शतधार उत्सो
दोहेन कुम्भीं स्वधां पितृभ्यः।

अब इसी कुम्भ गडे को बायें हाथ में उठाकर दायें हाथ पर (दायें हाथ में दर्भ तथा तिल रखें) पानी डालते हुए पढ़ेः

तत् सत् ब्रह्म (मास का नाम) मासस्य (पक्ष शुक्ल/कृष्ण) पक्षस्य (तिथि का नाम) तिथौ (वार का नाम) वासरे (पिता या माता का नाम) पितोः परलोके क्षुत पिपासानिवारनार्थं सोद् कुम्भान्न दान सहिते नित्य कुम्भे एत्ते तिलोदकं एतत् ते उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतं।

फिर दायां यज्ञोपवीत रखें और थाली मे पानी डालते हुए पढें

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे,
नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

अब यह सारा पानी (निर्माल) किसी वृक्ष के नीचे या नदी में डालें।

श्राद्ध संकल्प विधि

पितृ ऋण चुकाने के निमित श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल, थोड़ा सा नमक, फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल, धूप, दीप, फूल, अर्घ, पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितृ का श्राद्ध हो उस का फोटो, तिलक, फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो पंचांग के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ करके संकल्प करते हुये पढ़े :

ॐ तत् सत् ब्रह्म, अद्य तावत् तिथौ अद्य (मास पक्ष वार का नाम लेकर) **जैसे वैशाख मासस्य कृष्ण पक्षस्य, (अथवा) शुक्ल पक्षस्य तृतीयस्यां तिथौ..... वासरान्वितायां विष्णु प्रीत्यर्थम् दीप धूप संकल्पात्-सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपोनमः।**

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़े:

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य

(मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रो..... प्रपितामहाय। मात्रे पिता मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता महाय, वृद्ध प्रमाता महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध प्रमाता मह्यै समस्तमाता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्य: पितृभ्य: नित्यकर्म निमितं दीप: स्वधा:, धूप: स्वध:, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प के लिये हाथ में थोडा पानी लेकर चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़ें - ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर पढ़े : सांवत्सरिके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मन: पुण्य वृद्ध्यर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं फल मूलवस्त्रादि सहितं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि

ओर यदि काम्बर पक्ष (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो तो इस प्रकार पढ़े : कन्यार्कगत आपरि-पाके श्राद्धे।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें: नमो ब्रह्मणे, नमो अस्तु अग्नये, नम: पृथिव्यै, नम: औषधीभ्य:, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कणोमि। इति एतासाम् एव देवतानां सारिष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम् आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते।

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

जन्म दिन पूजा

जन्म दिन पूजा आरम्भ करने से पहले कमरे में एक कम्बल अथवा कोई शुची तौलिया बिछाये फिर पूजा की सामग्री लाये - रत्नदीप, धूप, नारिवन उस को सात गांठ लगाये, थोडा सा दूध, दही, घी, केसर, शहद, चीनी, सर्वोषधि (आरी), फूल, जंग के लिये एक थाली में चावल, उस पर थोडा सा नमक तथा पैसे रखें, अर्घ्य के लिये थोडा सा धोया हुआ चावल यज्ञोपवीत, पवित्र, अथवा थोडा द्रमन घास या सोने की अंगूठी, एक थाली, एक कवली छोटी बाल्टी में पानी उस में थोडा सा दूध तथा दही डालें, पानी छोडने के लिये एक कवली। पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीतधारी यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते समय कोई कन्या यजमान के कन्धे को तीन बार जंग की थाली का स्पर्श करें।

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्राजापर्तेयत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

जिस ने यज्ञोपवीत धारण नहीं किया होगा अथवा लडकी को पूजा आरम्भ करने से पहले उत्तर की ओर मुंह करके हाथ जोड कर यह श्लोक पढ़ें :

नमस्ते शारदे देवि काश्मीर पुरवासिनी
त्वामहं प्राथर्ये नित्यं, विद्या ज्ञानं च देहि मे
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व विघ्नोपशान्तये।
अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि।
सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढ़े।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति, मा न: शंस्योर्-अरुरुषो धूति: प्राणड् मर्त्यस्य रक्षा-णो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमताय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रानाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नम: अर्घो नम: पुष्पं नम:।।

रत्न दीप, धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् की थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढे :

नमो धर्म निधानाय नम: स्वकृत-साक्षिणे, नम: प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नम:।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढ़े :

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धुर्-भ्रातापि नो यत्र सुह्वत्-जनश्च। न ज्ञायते, यत्र दिनं न रात्रि स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु धूपो नम: दीपो नम:।

जल सहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढ़े :

सं व्व: सृजामि ह्वदयं, संसृष्टं मनो अस्तु-व:। संसृष्टा तन्व: सन्तु व: संसृष्ट: प्राणोऽस्तु व: संय्या व: प्रिया-स्तन्व: सं

प्रिया हृदयानि व:, आत्मा वो-अस्तु संप्रिय: संप्रिया स्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढ़े :

अश्विनो: प्राण: तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा-वरुणयो: प्राण: तौ ते प्राणं दत्तान्तेन जीव बृहस्पते: प्राण: स ते प्राणं दत्तात्तेन जीव, समस्त-जन्मोत्सव-देवताभ्य: जीवादानं परिकल्पयामि नम:।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़े :

ॐ भू र्भुव: स्व: तत्-सवितुर्-वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न: प्रचोदयात्।

(3) जन्मोत्सव देवतानां अर्चाम् अहं करिष्ये उों कुरुष्व।

हाथ में पकड़े हुये दो दर्भ निर्माल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढ़ें :

सप्त जन्मोत्सव देवतानां आसनं नम:।

चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड़ कर केवल चावल को कन्धे से फैंकते हुये पढ़ें :

सप्त जन्मोत्सवदेताभ्य: युष्मान् पूजयामि। उों पूजय।

दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढ़ें :

सहस्त्रशीर्षा पुरुष: सहस्त्राक्ष: सहस्त्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम् जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। उों आवाहय।

पहले पकड़े हुये दो दर्भ निर्माल में डाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढ़ें:

भगवन् ! पुण्डरीकाक्ष ! भक्तानु ग्रहकारक अस्मत् दयानु रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढ़े :

पाद्यार्थम् उदकं नमः। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर् अभिस्त्रवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वोषधि, दर्भ, जल, सब चीजें, खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोड़ते हुए पढ़ें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढ़े :

शन्नो देवीर् अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्त्रवन्तुनः।

जल, केसर, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध यह आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढ़ें :

अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य मार्काण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीविनः इदं वोऽर्घ्यं नमः।

शुद्ध जल डालते हुये पढ़े :

प्रजापति जन्मोत्सदेवताभ्यः आचमनीयं नमः।

दूध आदि जल डालते हुये पढ़ें :

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो
जागृवांसः समिन्धते विष्णो र्यत्परमं पदम्।
प्रजापति जन्मोत्सदेवताभ्यः स्नाने नमः।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढ़ें

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः, सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः।

किमासनं ते गरुढासनाय,
किं भूषणं कौस्तुभं भूषणाय,
लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं
वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें

उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते !
उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढ़े :

अश्वत्थम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते,
कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय
सप्तचिर जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते,
कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय,
सप्त चिर, जीवेभ्य अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

धूप रत्नदीप, कपूर उठाकर घुमायें। यह मंत्र पढ़े :

तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवाताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्य: धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नम:।

नमस्कार करते हुये पढ़े :

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर माम्ऽसुरेश विनाशन्, पतितोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त जन्मोत्सव देवताभ्य: चामरं छत्रं परिकल्पयामि नम:।

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :

ध्येयं सदा परिभवघनम्-अभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव विरिंच नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम्।

नमस्कार करते हुये पढ़े :

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग नमस्कारं करोमि नम:।

कटोरी में थोड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढ़े:

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय

प्रजापति जन्मोत्सदेवताभ्य: मात्रामधुमर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नम:।

दक्षिणा डालते हुये पढ़ें:

जन्मोत्सव-देवाताभ्य: दखिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़ें :

एता देवता: सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीता: सन्तु।।

फूल चढ़ाते हुये पढे :

उों तद्विष्णो: परमं पदं सदापश्यन्ति-सूरय: दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांस: समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

अब नैवेद्य तहर या खीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चटू और सात (7) म्यचियाँ, नैवेद्य के साथ ही मिश्री भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर प्रोप्युन पढें।

प्रेप्युन

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्य: प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्य: ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्य: चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये

नारायणाय (यहां पर मास के अनुसार ऋतु पति पढना चाहिये) दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ पुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्य: पितृ गण-देवताभ्य:। ॐ भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय भगवते भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमाय देवाय ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय।। भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्भाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभा-सहिताय श्री महागणेशाय।। भगवते क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय पार्वती नन्दनाय सेनाधिपतये कुमाराय भगवते ह्रां ह्रीं स: सूर्याय सप्ताश्वाय अनाश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय।। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला

भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकर्यै देव्यै भवान्यै क्षेमंकर्यै भगवत्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्रा- धिपतये आनन्देश्वर (जिस भैरव से आप के कुल का संबंध है उसका नाम ले) भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय- गदा-हस्ताय ईशानाय, त्रिशूल हस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्य: कुलनागदेवताभ्य: अग्न्या दित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै।। शिख्यादिभ्य: पंच चत्वारिंशत् वास्तोष्पति याग देवताभ्य:।। ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्य: गौर्यादिभ्यो मातृभ्य: ललितादिभ्यो मातृभ्य: दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्य: राकदेवताभ्य: त्रिका-देवताभ्य:। सिनीवाली

देवताभ्य: यामी देवताभ्य: रौद्री देवताभ्य: ऐन्द्री देवताभ्य: वारुणी देवताभ्य: बार्हस्पत्य देवताभ्य: ॐ भू र्देवताभ्य: ॐ भुवा र्देवताभ्य: ॐ स्व र्देवताभ्य: ॐ भूर्भुव: स्व र्देवताभ्य: अखण्ड ब्रह्माण्ड यागदेवताभ्य: धूर्भ्य: उपधूर्भ्य: महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरुकादिभ्यो वटुकादिभ्य: उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम् अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्।

अपने ईष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढ़ें:

ॐ तत्सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ अद्य .. ... मासस्य .... पक्षस्य ... तिथौ आत्मनो वाङ्मन: कार्योपार्जित-पापनिवारणार्थम्, ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नम:।

चुटू को स्पर्श करते हुये पढ़ें:

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा।

चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढ़ें:

आकाश मातृभ्योऽन्नं नम:, आकाशमातृभ्य: समालभनं गन्धो नम:, अर्घो नम: पुष्पं नम:।

चुटू के सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं - पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े:

भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः।

(2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें :

भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः

(3) तीसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें :

भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि नमः।

(4) चौथी को स्पर्श करते हुये पढ़ें :

ह्रां ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः।

(5) पांचवी को स्पर्श करते हुये पढ़ें:

इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् मिष्ठानं क्षीरं समर्पयामि नमः।

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढ़े:

यो-अस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय सुयंतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति दधातु।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़े:

आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवन् त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा
चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण: सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें :

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम् एव देवतानां सा-रि-ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम् अधीते।

आज्ञा मांगते हुये पढें:

आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षान्तुम् अर्हसि।।

पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:

आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा गतम्।

पविथर् निकालकर, हाथ में नारीवण बांधकर, चटू कही बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुहं में डालते हुये पढ़े:

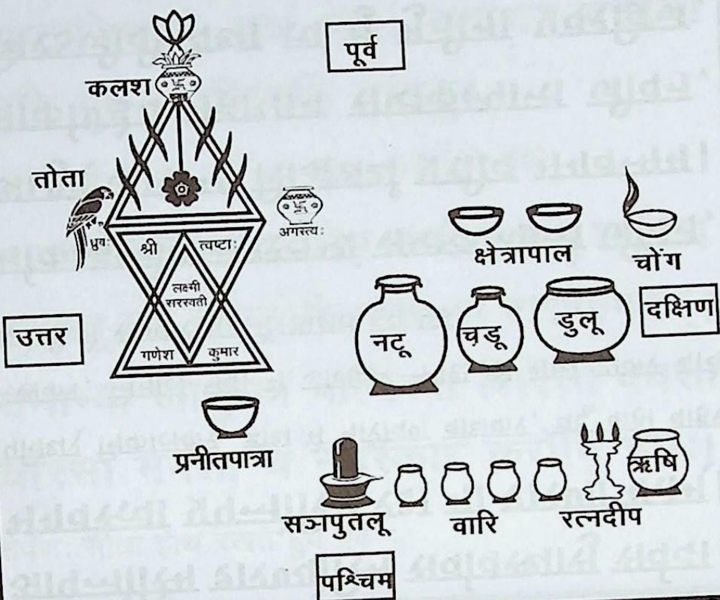
र्माकाडण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर् आरोग्य सिद्धयर्थं प्रसीद भगवन्मम। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।। सर्वें भवन्तु सुखिना सर्वें सन्तु निरामया, सर्वें भद्राणि पश्यन्तु मा कच्चित् दुख भाग्भवेत्।

शिवरात्रि पूजा

पूजा के लिये सामग्री

चूना, दूध, दही, फूल, तिल, काण्ठगण, सिन्दूर, चन्दन का टीका बना के रखे, नारीवन (मौली), रत्नदीप, चोंग, आईना, जंग के लिये चावल, ताम्बूल के लिए किसी पात्र में इलाची, सुपारी, किशमिश इत्यादि रखें। पवित्री (यदि पवित्री न मिले, तो उतने समय के लिये अनामिका ऊँगली में स्वर्ण की अँगूठी डाल कर रखें, अगर दर्भ न मिले तो दूर्वा यानि द्रमुन घास प्रयोग में लायें), दर्भ, किशमिश, धूप, केसर, शहद, चावल, दूध, घी, दही, सर्वोषधि, धान्य की फूल्लियां (लाय), फल, ब्रय, सर्षप, इत्र, कन्द, नाबद इत्यादि थोडी, थोडी, मात्रा में तथा मह्मिनापार पुस्तक रखें। पूजा के स्थान पर वटुकनाथ के पास ही ब्रह्मकलश चूने से बनाये, ब्रह्मकलश चित्र में देखें। ब्रह्मकलश पर एक लोटा रखिये, उस में थोडे से अखरोट, विष्टर, पानी, फूल डाल कर रखें-कलश के दक्षिण से क्रमशः सब वटुक नटू, डुलिजियाँ आदि आरियों पर पहले से ही सज्जा कर रखें, पूजास्थान को इस भावना से सजाये कि आज मैंने पार्वती सहित भगवान् शंकर को निमन्त्रित करना है, वटुक नाथ के दायें ओर अन्त में चोंग रखें, चोंग से जरा उत्तर की ओर दो कटोरियाँ (क्षेत्रपाल रखें) जैसा कि हमने चित्र में

शिवरात्रि के लिये कलश



दिखाया है। अब यजमान को चाहिये आसन पर पूर्व की ओर हाथ में फूल लेकर कलश पूजा आरम्भ करें। कलश पूजा आरम्भ करने से पूर्व शंख नाद करें और थोड़े-थोडे फूल कलश (गड्डे) पर डालते जायें और पढ़ते रहें-

ॐ कारो-यस्य मूलं क्रम-पद-जठरं छन्द-विस्तीर्ण-शाखा। ऋक्-पत्रं सामपुष्पं यजुरु-चितफल: स्यात्-अथर्व: प्रतिष्ठा। यज्ञच्छाया-सुशीतो द्विजगण-मधुपै: गीयते यस्य नित्यं। शक्ति: सन्ध्या-त्रिकालं- दुरितभयहर: पातु नो वेद-वृक्ष:।। मुक्ता विद्रुम हेमनील धवल च्छायै-मुखैस्त्रीक्षणै युक्ताम्इन्दु: निबद्ध-रत्न-मुकटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।। गायत्रीं वरदाभयां-कुशकरां शूलं कपालं गुणं। शंखं चक्रम् अथार बिन्द युगलं हस्तै र्वहन्तीं भजे।।

(तीन बार पढ़िये)

आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्-ब्रह्म-योने नमोस्तुते (3)

भर्द्र-पश्येम-प्रचरेम, भद्रं-भद्रं वदेम श्रृणुयाम भद्रम्। तन्नो मित्रो वरुणो माम-हन्ताम्-अदिति: सिन्धु:, पृथ्वी उत द्यौ:। अभि नो देवीरवसा मह: शर्मणा नृपत्नी:, अच्छिन्न-पत्रा: सचन्ताम्। इहे न्द्राणीमु-पह्वये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।। मही द्यौ: पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्,

पिपृतां नो भरीमभि:।। तयोर्- इत्-घृतवत्-पयो, विप्रा रिहन्ति धीतिभि:, गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवी भवानृक्षरा, निवेशनी। यच्छाऽन: शर्म सप्रथ:।। अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु-र्विचक्रमे। पृथिव्या: सप्त-धामभि:। इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य: अतो धर्माणि धारयन् विष्णो: कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे। इन्द्रस्य युज्य: सखा। तत् विष्णो: परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरय: दिवीव चक्षुर्-आततम्। तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांस: समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ गायत्र्यै नम:, ॐ भुर्भूव: स्व:-तत्-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् ॐ। (तीन बार पढ़े)।

क्षेत्रपालों को अर्घ डालते हुये पढ़ें

अश्वमेधो घोराणामार्षम्।। ॐ द्रष्ट्रे नम:, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नम:, ख्यात्रे नम:, उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नम:, शृण्वते नम:, उपश्रृण्वते नम:, सते नमोऽसते नमो, जाताय नमो, जनिष्यमानाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नम:, चक्षुषे नम:, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नम:, शान्ताय नम:, तपसे नम:।।

कलश पर फूल डालते हुये पढ़े:

भूतंभव्यं भविष्यत् वषट् स्वाहा नमः, ऋक् साम यजु र्वषट् स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्टुप् जगती वषट् स्वाहा नमः। पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमः। अन्नं कृषिर्वृष्टिः वषट् स्वाहा नमः, पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः। प्राणो व्यानोऽपानो वषट् स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्व र्वषट् स्वाहा नमः। यो विश्व-चक्षुर्-उत-विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त, उत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां नमते संपतत्रै द्यावापृथिवी जनयन्-देव एकः।। ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम्-अस्मिन्-राष्ट्रे, राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेनु- र्वोढा-नड्वानाशुः सप्ति-र्जिष्णू- रथेष्ठः, पुरन्ध्रि-र्योषा, सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवती र्न ओषधायः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कलश पर अर्घ चढ़ाते हुए पढ़ें:

इषे त्वोर्जे त्वां वायवः स्थो, पायवः स्थ देवो वः, सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे, आप्यायद्धवम्-अघ्न्या देवभागं, प्रजावतीरनं ईवा अयक्ष्मा मावस्ते न ईशत माऽघशंसः,

परिवो रुद्रस्य हेति-र्वृणक्तु, ध्रुवा-अस्मिन्-गोपतौ स्यात् बह्वी-र्यजमानस्य पशून्-पाहि-यजमानस्य पशुपा असि, देवस्य त्वा सवितुः प्रस-वेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां-आददे, गोपदसि प्रत्युष्टं रक्षः, प्रत्युष्टारातिः प्रेयमगा-द्धिषणा बर्हिच्छ मनुना कृता, स्वधया वितष्टा उर्वन्तरिक्षं वीहीन्द्रस्य परिषू-तमसि माधो, मोपरि, परस्त श्रद्धया, स मा च्छेता, ते मा रिषत् देववर्हिः शतवल्शं विरोह सहस्त्रवल्शं विवयं रुहेम, आदित्या, रास्नासीन्द्राण्याः सन्नहनं पूषा ते ग्रन्थिं ग्रथ्नातु, स ते मा स्थात् इन्द्रस्य त्वा

बाहुभ्यां-उद्यच्छे बृहस्पतेस्त्वा मूर्ध्ना हरामि देवं-गममसि, तदा हरन्ति कवयः, पुरस्तात् देवेभ्यो जुष्टं-इह बर्हिर्-आसदे, वसोः, पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। मधुमत्-घृतवत्-पिन्वमाना जीवा जीवन्तीर्-उप-वः सदेम, मातरिश्वानो धर्मोसि द्यौर्-असि पृथिव्यसि विश्वधाया परेण, धाम्ना ह्रुतासि माह्वाः, सा विश्वायुः सा विश्व्यचाः सा विश्वधाया हुतस्तोको हुतो, द्रप्सोग्नये बृहते

नाकाय स्वाहा, द्यावा पृथिवीभ्यां सपृच्यध्वम् -ऋतावरी, ऊर्मिणा मधुमत्तमा मान्द्राधानस्य सातयः, इन्द्रस्य त्वा भागं, सोमेना तनत् म्यदस्तम् असि विष्णवे विष्णो हव्यं रक्षस्वापो जागृत, महितॄीणां मवोस्तु द्युम्नं मित्रस्यार्यम्णः, दुराधर्षं वरुणस्य, नहि तेषाममाचन नाध्वसु वरणेषु ईशो रिपुः अघशंसः, यस्मै पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय ज्योति-र्यच्छन्त्य-जस्रम, सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते, कक्षीवन्तं य औशजो यो रैवान्यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः सनः सिषक्तु यस्तुरः, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य, रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अब प्रणीतपात्र में जो कलश के सामने दायें तरफ है, उस में तिल, पुष्प, अर्घ और तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुये पढ़ें:

1 सं व्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।

2 संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।

3 संय्यावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम।।

प्रणीतपात्र के दर्भ अथवा विष्टर से कलश और क्षेत्रपालों को ज़ीवाधान के लिये छींटे देते हुये पढ़ें:

अग्नेर्-आयुर्-असि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतः तेन-अस्मा अमुष्मा आयु-र्धेहि। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणस्तस्मै ते स्वाहा। पितृणां प्राणास्ते ते प्राणंददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। मरुतां प्राणास्ते ते प्राणंददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। विश्वेषान्देवानां प्राणास्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। प्रजापतेः प्राणः पर-मेष्ठिनः प्राणस्तौ-ते प्राणं-दत्तां ययोः प्राणस्ताभ्यां वां स्वाहा। यदऽसर्पः तत्सर्पिः अभवो यत्-नवमैः तत्-नवनीतम्-अभवो यत् अद्रि-यथाः तत्

घृतम् अभवो। घृतस्य धाराम्-अमृतस्य पन्थामिन्द्रेण दत्तं प्रयतं मरुभ्दिः। तत्त्वा विष्णुरन्वपश्यत्-तत्त्वेडा गव्यैः अयत्। पावमानेन त्वा स्तोमेन गायत्र्या वर्तन्या पांशोवीर्येणोद्धराम्यसौ। बृहता त्वा रथन्तरेण त्रिष्टुभा वर्तन्या शुक्रस्य वीर्येणोत्सृजाम्यसौ। अग्नेस्त्वा मात्रया जगत्या वर्तन्या देवस्त्वा सवितोन्नयतु जीवातवे जीवनस्याऽया असौ। देवा आयुष्मन्तस्ते अमृतेन आयुष्मन्तस्तेषाम् अयम् आयुषा आयुष्मानः त्वसौ ब्रह्मायुष्मत्तत ब्राह्मणैः आयुष्मत्तास्य अयम् आयुषा

आयुष्मानः त्वसौ। अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिः आयुष्मांस्तस्या अयम् आयुषाऽयुष्मानस्त्वसौ। यज्ञ आयुष्मान् स दक्षिणाभिः आयुष्मान् तस्यायम् आयुषा-आयुषामन्-अस्त्वसौ। सोम आयुष्मान्स ओषधीभिः आयुष्मांः तयायम्-आयुषा-युष्मानऽत्वसौ। ओषधायः आयुष्मतीः ता अभ्दिर् आयुष्मतीः तासाम् अयम् आयुषा -युष्मान् अस्त्वसौ। इमम् अग्न आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममो जो वरुण संशिशाधि। मातेवास्मा अदिते शर्मयच्छ विश्वेदेवा जरदष्टिर्यथासत्। अश्विनो प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव।

अब पूजा स्थान के सभी दिशाओं को अर्घ तिल अर्पण (फेंकते) करते हुए तथा सभी सामग्री को छींटे देते हुये पढ़े:-

(पूर्व की ओर) ये देवाः पुरः सदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवनतु तेभ्यः स्वाहा। (दक्षिण की ओर) ये देवा दक्षिणात् सदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा। (पश्चिम की ओर) ये देवाः पश्चात् सदो मरुत् नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा। (उत्तर की ओर) ये देवा

उत्तरात् सदो मित्रावरुण नेत्रा रक्षोहणस्ते
न: पान्तु नोवन्तु तेभ्य: स्वाहा।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़े:

अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्य: पशुभ्यो
मे धनाय। विश्वस्मै भूताय ध्रुवो अस्तु देवा:
स पिन्वस्व घृतवत्-देवयज्ञ।

अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढ़े:

इहैवैधि मा-पच्योष्ठा: पर्वता इवाविचाचलत्।
इन्द्र इहेव ध्रुव:-तिष्ठेह यज्ञमुदारय।

दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रूप में डालते हुये पढ़े:

इमम्-इन्द्रो अदीधरत्-ध्रुवं-ध्रुवेण हविषा हवि:।
तस्मै सोमे अधिब्रुत्-तस्मा उ ब्रह्मणस्पति:।

कलश को आसन डालते हुये पढ़े :

ध्रुवा द्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवास: पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि।

भूमि को तिलक फूल और अक्षत लगाते हुये पढे :

मही द्यौ: पृथ्वी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतां नो भरीमभि:।

आकाश की ओर फूल अर्घ डालते हुये पढ़े:

वडित्था पर्वतानां क्षेत्रं विभर्षि पृथिवि प्रया
भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि।

कलश के नीचे गणेश पर फूल डालते हुये पढे:

निषुसीद गणपते गणेषु-त्वामाहु-विप्रतमं
कवीनाम्। न ऋते त्वत्क्रियते किंचनारे
महामर्क मधावन्-चित्रमर्च।

कुमार पर फूल डालते हुए पढ़े :

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिमज्जनासः पुरा पश्यन्ति निहित-मरतौ।

श्री पर फूल डालते हुए पढ़े :

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद्- प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।

सरस्वती पर फूल डालते हुए पढ़े :

इयं शुष्मेभि -र्विसखा इबारुजत्-सानु-र्गिरीणां विश्वेभिर्-ऊर्मिभिः। पारावतघ्नीम्-अवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीम् आविवासेम धीतिभिः।

लक्ष्मी पर फूल डालते हुए पढ़े :

कांस्यस्मितां हिरण्य-प्राकाराम्-आर्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां ताम् इहोपह्वये श्रियम्।

अग्नेय कोण पर फूल डालते हुए पढ़े :

विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्व जित विश्वदर्शतः। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठाय समसूषत।

कलश पर फूल डालते हुए पढ़े :

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम् ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृद्रणां स्वधितिः

बनानां सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्। प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। यो रुद्रो अग्नौ, योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। योरुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम् होतारं रत्नधातमम्।। इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि वर्हिषि।

शन्नो देवीर्-अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरऽभि-स्रवन्तु नः। आहं पितृन् सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणंच विष्णोः। बर्हिषदो ये सुधाया सतुस्य-भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।। वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हब्यम्। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे नमः। क्रियासहिताय गोविन्दाय नमः। दुर्गायै नमः। त्र्यम्बकाय नमः। वरुणाय नमः। यज्ञपुरुषाय नमः। अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवाभ्यो नमः।।

रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत निवेशिनीम्।
भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्।
संवेशिनीं संयमीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम्।
प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि नमः।
कालरात्र्यै नमः। तालरात्र्यै नमः, राज्ञिरात्र्यै
नमः, शिवरात्र्यै नमः। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु
य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वाभुवना
विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।

क्षेत्रपालों पर अर्घ ढालते हुये पढ़े:

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जायमसि गामश्वं
पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे। त्रयोदश्यां
देवीपुत्र वटुकनाथाय, त्रिपुरान्तकाय,
भूतवलेभ्यः, वेतालराजाय अग्निवेताल
राजाय, अग्निजिह्वाय, बहुखातकेश्वराय,
करालाय स्थान क्षेत्रपालाय कामाख्याय
मंगलराजाय एकपादाय योगिनीबलेभ्यो,
भीमरूपिणे विश्वक्सेनाय, तारकाख्याय,
जयक्-सेनाय हाटकेश्वराय, तेजाय,
राजराजेश्वराय चण्डाय समस्त शिवरात्रि
याग देवताभ्यः नमः विष्णु पञ्चायतन-
देवताभ्यः नमः अभयंकारीदेव्यै नमः
क्षेमंकरीभवान्यै नमः सर्वशत्रुघातिन्यै नमः
इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय नमः।

यौ ते श्वानौ यमरक्षतारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ। ताभ्यामेनं परिदेहिराजं स्वस्ति चास्मा अनमीवञ्च धीहि।। यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि तत्र हव्यानि गन्तय। मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात -यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्। ग्राहि जग्राह यदि वैतदेनन्तस्या इन्द्राग्नी प्रमुमुक्तम एनम्। अङ्गाद् अङ्गाद् लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि। यक्ष्मं सर्वस्माद् आत्मनः तम् इदं विवृहामि ते।। तद्विष्णु परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते, विष्णोर्यत्परमं पदम्।।

कलश के सींमप थोडा सा नाबद तथा किशमिश नैवेद्य के रूप में रखकर निम्नलिखित (नैवेद्य) मन्त्र पढ़ें:

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशादेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय, गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ पुरुषाय अग्निष्वातादिभ्यः पितृगणयाग देवताभ्यः कालरात्र्यैः तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्री याग देवताभ्यः विष्णु

पञ्चायतन देवताभ्य: अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करी भवान्यै सर्वशत्रु-घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये। (अपने भैरव का नाम लें) भैरवाय हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्य: तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐनमो नैवेद्यं निवेदयामि नम:।

कलश पर फूल अर्घ चढ़ाते हुये पढ़े

हिरण्यगर्भ: समवर्तनाग्ने भूतस्य जात: पतिर्-एक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य: प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो अस्य द्विपद: चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य ओजदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:। यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्मितं येन नाकम्। यो- अन्तरिक्षं विममेवरीय: कस्मै देवाय हिवषा विधेम।। य इमे द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोधासी रेजमाने। यस्मिन् नधि वितता: सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यस्य रसया सहाहु:। दिशो यस्य प्रदिश: पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा विधेम।। आपो

ह-यन्महती विश्वम् आयु: गर्भं दधाना जनयन्तीर् अग्निम्। ततो देवानां निरवर्त तासुर् एक: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। आ न: प्रजां जनयतु प्रजापति र्धाता दधातु सुमनस्यमान:। संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।। अर्चन्तस्वा हवामहे अर्चन्त: समिधीमहि, अग्नेर अर्चत ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णम्-अर्चत-अर्चत।

।। इति कलश पूजा।।

शिव पूजा

(वटुक पूज़ा)

अब यजमान यज्ञोपवीत धारण करते हुये पढे :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रम् प्रजापते र्यते सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रम् यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:।

भद्रपीठ या थाली में "सुम्पुतलू" अथवा "पार्थिवेश्वर" रखकर नारी कचलू अथवा खोसू से जलधारा डालते हुये पढें

ॐ अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोग:।

दो दर्भकाण्ड भूमि पर आसन के रूप में छोडें और पढ़े :

ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिंद जगद् ध्रुवो राजा विशामसि।

पृथ्वी माता को तिलक, फूल, चावल चढाते हुए पढ़े:

प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोडकर पढ़ें :

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता, त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

दर्भ के दो तिनके अनामकि अंगुलियों में रखकर गणेश जी का ध्यान करते हुये पढ़ें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोप शान्तये। अभि-प्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्व-विघ्न छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।

कर्पूर-गौरं करुणाव-तारं संसार-सारं भुजगेन्द्र हारम्, सदा रमन्तं हृदयार बिन्दे भवं भवनी-सहितं नमामि।

गुरु-र्ब्रह्मा गुरु-र्विष्णु, र्गुरुः साक्षात्-महेश्वरः, गुरुर्-एव, जगत्-सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः, परम-गुरवे नमः, परमेष्ठिने-गुरवे नमः, परमाचायार्य नमः, आद्य-सिद्धेभ्यो नमः।

दर्भ के दो तिनके पकड़कर अंगन्यास कीजिये (जिस को अंगन्यास करना नही आता है वह नमस्कार करके भगवान् शंकर का ध्यान करें):

अ नाभौ, उ हृदि, म शिरसि, भूः पादयोः भुवः हृदि, स्वः शिरसि, भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः, भुवः तर्जनीभ्यां नमः, स्वः मध्यमाभ्यां नमः, महः अनामिकाभ्यां नमः, जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, तपः सत्यं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः। भूः पादयोः। भुवः जान्वोः, स्वः गुह्ये, महः नाभौ, जनः हृदि, तपः कण्ठे, सत्यं शिरसि, भूः हृदयाय नमः, भुवः शिरसे स्वाहा, स्वः शिखायै वषट्, महः कवचायं हुँ, जनः नेत्राभ्यां वौष्ट्, तपः सत्यमस्त्राय फट्।

हृदय को दोनों हाथों से छूते हुये पढें :

ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृयाय नमः।

सिर को स्पर्श करते हुये पढें :

यो अप्सु य ओषधीषु शिरसे स्वाहा।

चोटी को स्पर्श करते हुये पढें :

यो वनस्पतिषु शिखायै वषट्।

वस्त्रों को स्पर्श करते हुये पढे:

यो रुद्रो विश्वा-भुवना विवेश-कवचाय हुँ।

नेत्रों को स्पर्श करते हुये पढें :

तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्।

चुटकी मारते हुये पढें :

नमोअस्तु देवा अस्त्राय फट्।

चारों और तिल फेंकते हुये पढे :

अपसर्पन्तु ते भूतो ये भूता भुवि संस्थिता:, ये भूता विघ्नकर्त्तार-स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।

प्राणायाम करें

ॐ भू:, ॐ भुव:, ॐ स्व:, ॐ मह:, ॐ जन:, ॐ तप:, ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयादोमापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम्।

पैरों और मुख को जल की छींटे देते हुये पढें

तीर्थे-स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां, भवति मान:, शंस्यो अररुषो धूर्ति: प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली में पवित्र ऊपर की ग्रन्थि (पर्व) पर धारण करते हुये पढ़ें:

वसो: पवित्रम् असि शतधारं वसूनां पवित्रम् असि सहस्त्रधारम्, अयक्ष्मा व: प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।

यजमान तथा घर के सभी सदस्यों को तिलक लगाते हुये पढ़ें :

मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा: शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणाम्-उदयस्तव आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रितयम् अस्तु ते जीव-त्वं शरद: शतम्।

रक्षा सूत्र (नारीवन) घर के सभी सदस्यों को बान्धते हुये पढें।

यदा बन्धन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमान:। तन्म आबध्नामि शत शारदाया-ऽयुष्माञ्जर-दष्टिर्यथासत्।

यजमान अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आपको तिलक, फूल और अर्घ लगाते हुये पढ़ें:

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्र-नाथाय आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः। अर्घो नमः। पुष्पं नमः।

चोंग (दीप) को तिलक अर्घ और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमरा-पहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:

वनस्पति-रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध वत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में अर्घ, चावल, फूल चढ़ाते हुए पढ़े :

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

खोसू से अर्घ, विष्टर समेत पानी से संकल्प करें :

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धुर्-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते, यत्र दिनं न रात्रि स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु धूपो नमः दीपो नमः। ॐ तत् सत् ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ-अद्य, फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां . . . . . वासरा-न्वितायां

महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्म, विष्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति-सहिताय चक्रिणे क्रिया-सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाया यज्ञ-पुरुषाय अग्नि-ष्वातादिभ्यः पितृगण- यागदेवताभ्यः भगवते भवाय देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय-महादेवाय, पार्वती सहिताय, परमेश्वराय, देवीपुत्राय वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त-शिवरात्रि देवताभ्यः धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरो को जल देते हुये पढ़ें:

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य, कृष्ण पक्षास्य तिथौ त्रयोदश्यां पित्रे, पितामहाय, प्रपितामहाय। मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै। मातामहाय प्रमातामहाय वृद्ध मातामहाय, मातामह्यै प्रमातामह्यै, वृद्ध प्रमातामह्यै समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो शिवरात्रि

व्रत निमित्तं धूप: स्वधा दीप: स्वधा।

दायें भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर सहित जल से पूर्ण खोसू में तिलक और पुष्प डालते हुये पढ़ें:

सं व्व: सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु-व:। संसृष्टा तन्व: सन्तु व:। संसृष्ट: प्राणोऽस्तु व:। संय्या व: प्रिया-स्तन्व: सं प्रिया हृदयानि व:, आत्मा वो-अस्तु संप्रिय: संप्रिया स्तन्वो मम।

इसी खोसू के जल से सञ्पुतलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जीवाधान निमित जल की छीटे दर्भ के तिनकों अथवा विष्ठर से देते हुये पढ़ें :

अश्विनो: प्राण: तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा-वरुणयो: प्राण:-तौ ते प्राणं दत्तान्तेन जीव बृहस्पते: प्राण: स ते प्राणं दत्तातेन जीव, समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्य: जीवादानं परिकल्पयामि नम:।

अक्षत (चावल) सहित दर्भ के दो तिनके सीधे पकड़कर यह मन्त्र तीन बार पढ़ें:

ॐ भू: पुरुषम्-आवाहयामि नम:। ॐ भुव: पुरुषम्-आवाहयामि नम:। ॐ स्व: पुरुषम्- आवाहयामि नम:। ॐ भू: भुव: स्व: पुरुषमावाहयामि नम:।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें :

ॐ भू र्भुव: स्व: तत्-सवितुर्-वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न: प्रचोदयात्।

यह मन्त्र भी तीन बार पढ़ें:

ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

यह मन्त्र पढ़ें:

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ महापर्वणि त्रयोदश्यां वारान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, शर्वस्य देवस्य, पशुपतेः देवस्य, उग्रस्य देवस्य, भीमस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य, परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक नाथस्य, कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि देवतानां अर्चाम् अहं कारिष्ये, ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुये दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर, तिल सर्षप और जव को भी कन्धों पर से फेंके, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो-दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो-दो फूल) आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें:

ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरे श्वर आसनं दिव्यम् ईशान दास्येहं परमेश्वर, भगवत् भवस्य दवेस्य, ईशानस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम्-आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुली पर अंगूठे से दबा कर यदि घंटी आपके पास हो बायें हाथ से बजाते हुये पढ़ें:

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय,

पशुपतये देवाय-रुद्राय देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, महादेवाय पार्वती सहिताय, परमेश्वराय देवीपुत्र वटुक नाथाय, कालरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्याः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय।

चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुये दो तिनकों को हाथ में ही रख कर नये चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें:

भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिं देवं, उग्रं देवं, भीमं देवं, ईशानं देवं, ईश्वरं देवं, महा देवं पार्वती सहितं परमेश्वरं देवीपुत्र वटुक नाथं कालरात्रि तालरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।

भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम्-एकं।
स्थानं निधाय भव मत् विहितांपुरारे।।
सर्वेश विश्वमय! हृत्कमलादि रूढ।
पूजा गृहाण भगवन् भव मेद्य तुष्टः।।
भूमेर्-जलात्-च, पवनात् अनलात् हिमांशोर्
उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात- समेत्य।।
लिंगद्य सन्मणिमये मत् अनुग्रहार्थ।
भक्त्यैक लभ्य! भगवन् कुरु सन्निधानम्।।
भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक।
अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।

दोनों हाथों में मुट्ठीभर फूल उठाकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़कर भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

ॐ भू र्भुवः स्वः तत्-सवितुर्-र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्। इत्या-हूय तु गायत्रीं त्रिसम्-उच्चार्य तत्त्व-वित्, मनसा चिन्तितैर् द्रव्यै र्देवम् आत्मनि पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।

दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणायाम करें और खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:

पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर् अभि स्रवन्तु नः।

अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें:

भगवन्तः पाद्यं पाद्यम्।

खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुए पढ़ें:

महादेव महेशान महानन्द परात् पर गृहाण पाद्यं मत् दत्तं पार्वती परमेश्वर। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुक नाथाय, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।

इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में डालकर खोसू में जल डालते हुये पढ़ें :

शन्नो देवीर् अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुनः।

दर्भ, दूध, घी, दही, चावल, पानी, केसर, शहद यह आठ वस्तु इकट्ठे अर्घ्य कहलाते हैं यही जल की धारा शंकर भगवान् अथवा सञ्पतलू पर डालते हुए पढ़ें:

भगवन्तो अर्घ्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहण देवेश सम्पत् सर्वार्थ साधक। भगवन् भवदेव पार्वती सहित परेमेश्वर देवीपुत्र वटुकनाथ, कालरात्रि तालरात्रि राज्ञरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि देवता: इदं वो-ऽर्घ्यं नम:।

अब भगवान् शंकर को पञ्चदश स्नान कीजिये: जल, दूध, दही, शहद, घी, शक्कर, सर्वोषधि, धान्य की फूल्लियाँ, फूल, फल, सोना, रत्न, सर्षप, ब्रय, इत्र इन सबको मिलाकर शिवलिंग पर जल की धारा डालते हुये पढ़ें:

असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्यां।
तेषां सहस्त्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
येस्मिन्-मह-त्यर्णवे-अन्तरिक्षे भवा-अधि।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये नीलग्रीवा: शितिकण्ठा: दिवं रुद्रा उपाश्रिता:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये नीलग्रीबा शिति-कण्ठा: शर्वा-अध: क्षमा-चरा:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिवतो जनान्।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।

ये भूतानाम् अधिपतयो विशिखास: कपर्दिन:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये पथीनां पथि रक्षय ऐड मृदाय व्युध:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिण:।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ये एतावन्तो वा-भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे।
तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।
ॐ यो रुद्रो-अग्नौ यो-अप्सु य-ओषधीषु
यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश
तस्मै रुद्राय नमो-अस्तु-देवा:। भगवते
भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती
सहिताय परमेश्वराय पंचदशस्नानं
परिकल्पयामि नम:।

देवता तथा पित्रों के लिये चावल, दही, तिल, शहद, और घी सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ें:

ब्रह्मादया देवा: तृप्यन्ताम्।

गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें:

सनकादय: ऋषय: तृप्यन्ताम्।

यज्ञोपवीत बाएँ तरफ रख कर पढें:

अग्निष्वात्ता दय: पितर: तृप्यन्ताम्
तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम्।

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढें:

ॐ नमो देवेभ्य:।

यज्ञोपवीत गले रख कर पढें:

स्वाहा ऋषिभ्य:।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

स्वधापितृभ्य:।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

आब्रह्म-स्तम्ब-पर्यन्तं-ब्रह्माण्डं-सचराचरं जगत्-तृप्यतु-तृप्तयु-तृप्यतु एवमस्तु।

शंकर भगवान् अथवा सुञ्पुतलू पर फिर से स्नान के निमित जल धारा डालते हुये पढ़ें:

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव् बन्धानात् मृत्यो-र्मुखीय माऽमृतात्। शिवरात्रि देवताभ्य: मन्त्रगुडकं परिकल्पयामि नम:।।

बाईं हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावल सहित जल लेकर देवताओं यानि वटुकराज के चारों ओर घुमाकर (आलथ निकाल के) उस जल और चावलों को अपने बायें कन्धें पर से फेंकते हुये पढ़ें:

रक्षोहणं वाजिनम् आजिघर्मि मित्रं पृथिष्ठम्-उपयामि शर्म। शिशानो अग्नि: क्रतुभि: समिद्ध: स नो देव: सरिष: पातु नक्तम्। शिवरात्री देवताभ्य: आरात्रिकां परिकल्पयामि नम:।

दाये अंगूठे तथा तर्जनी यानि अंगूठे की साथ वाली अंगुली से शिवमूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुये पढ़ें।

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नम:।

अब जहां भगवान् शंकर की मूर्ति को बिठाना हो वहां फूलों से आसन सजाते हुये पढ़ें :

आसनाय नम: वृषभासनाय नम: शतदल-

पद्मासनाय नमः सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः।

भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुये यह श्लोक पढ़ें:

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदा-ऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोप शोभितम्। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।

भगवान् शंकर की मूर्ति वटुकनाथ और बाकी पात्रों को सिंदूर का तिलक तथा भगवान् शंकर को चन्दन लगाते हुये पढ़ें:

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राण वल्लभ! गृहाण गन्धं काश्मीर चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

भगवान् शंकर को धूप की आरती निकाले (आलनावुन)

महादेव-मृढानीश जगत्-ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल कल्पितम्।

रत्न दीप और काफूर की आरती निकाले (आलनावुन)

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

चामर करते हुये पढे :

चामरम् रजनीनाथ मरीचिप्रभम्-उत्तम। हेमदण्डयुतं देव गृहाण गिरिजापते, ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: चामरं परिकल्पयामि नमः।

फूलों का छत्र चढ़ाते हुये पढ़ें:

नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता जाल विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान्-शिव-भद्रासन-प्रद। समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: छत्रं परिकल्पयामि नमः।

आईना दिखाते हुये पढ़ें:

एताभ्य: समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: आदर्शं परिकल्पयामि नमः।

ताम्बूल (नैवेध के रूप में रखी हुई इलाची, सुपारी, किशमिश इत्यादि) चढ़ाते हुए पढे :

शिवरात्री देवताभ्य: ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

फिर से सभी वटुकनाथादि को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

एताभ्य: समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: पुष्पं नमः

नमस्कार करते हुए पढ़ें :

एताहां देवतानां अर्घ्यदानादि अर्चन विधिः सर्वः परि पूर्णः अस्तु।

दूध, कन्द या नाभद वटुक में डालते हुये पढ़ें:

क्षीराज्य मधुसंमिश्रं शुभ्र दध्ना समन्वितम्। षड् रसैश्च समायुक्तं गृहाण-अन्नं निवेदये। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः मात्रा-मधुपर्कं चरुं नमो नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुये पढ़ें:

हर विश्वा खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम् इमं शम्भो गृहाण वरदो भव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नमः।

मन से अर्ध परिक्रमा करते हुये पढ़ें:

यानि कानि च पापानि ब्रह्म-हत्यादिकानि च। तानि सर्वानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात्।

भगवान् शंकर पर लगातार फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

नाग्रेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग-रागाय महेश्वराय, देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय। मातंग चरमा म्बर भूषणाय समस्त-गीर्वाण गणार्चिताय त्रयलोक्यनाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव-गौतमादि-मुनीद्र-वंद्याय गिरीश्वराय, श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकारायनमः

शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाक-हस्ताय सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा-ते विषयोप-भोग रचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधि स्तोत्राणि सर्वा गिरः यत्यत् कर्म करोमि देवभगवन् तत् तत्-तवाराधनम् उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा-च-उरसा वचसा मनसा-च-नमस्कारं करोमि नमः।

पूजा में कमी या अधिक होने के लिये क्षमा मांगना

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यं आज्यं अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु। अन्न हीनं, क्रिया हीनं, विधि हीनं, द्रव्य-हीनं, मन्त्र हीनं, च यत्-गतं तत्सर्वम् अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु, एवम्-अस्तु।

हाथ से खोसू में वापस किये हुये पानी से शंकर भगवान् को आचमन देते हुये पढ़ें।

शंन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंय्योर्-अभिस्त्रवन्तु नः, शिवरात्रि देवताभ्यो -पोशानं नमः आचमनीयं नमः।

हाथ से पात्र में उलटाये पानी में तिल और दक्षिणा डालते हुये पढ़ें:

शंन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्त्रवन्तु नः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य-रजत निष्कर्णं ददाति।

फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुये पढ़ें:

ऐता देवता: सदक्षिणा-अनेन प्रीयन्तां प्रीता: सन्तु।

वटुकनाथ को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

नाथं नाथं त्रिभुवन-नाथं भूति सितं त्रिनयनं त्रिशूल-धरं। उपवीती-कृत-भोगिनम्-इन्दु-कलाशेखरं वन्दे।

सभी घर के सदस्य एकत्रित होकर सामूहिक रूप में यह मन्त्र दस बार पढ़ें :

ॐ नम: शम्भवाय च, मयोभवाय च, नम: शंकराय च, मयस्कारय च, नम: शिवाय च शिवतराय च।।

वैश्वदेव विधि:

वटुकनाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम-कोण पर विष्टर (दर्भ), तिल और चावल पानी सहित



इसी प्रकार दर्भ पर 36 देवताओं को 36 टुकड़े रोटी के रूप में बलि देना।

इस पर तिल और पानी से मार्जन करना।

एक कटौरी रखें इस पात्र को प्रणीतपात्र कहते हैं, उस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुये पढ़ें:

(1) संव्व: सृजामि ह्रदयं संसृष्टं मनो अस्तु व:।

(2) संसृष्टा: तन्व: सन्तु व: संसृष्ट: प्राणो-
अस्तु व:।

(3) संय्याव: प्रिया-स्तन्व: संप्रिया हृदयानि व:, आत्मा वो-अस्तु संप्रिय: संप्रिया-स्तन्वो मम।

दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दायें ओर फेंकते हुये पढ़े:

निर्दिग्धं रक्षो निर्दग्धा रातिर् अपाग्ने, अग्नि-मामादं जहि निष्क्रव्यादं सीधा देवयजनं वह।

प्रणायाम करके अग्नि के दायें ओर रखे हुये प्रणीतपात्र में से नौ बार दर्भ से पानी छिड़कते हुये पढ़ें:

(1) ऋतं त्वा सत्येन परिसमू-ह्यामि (2) सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि (3) ऋत्त-सत्याभ्यां-त्वां परिसमूह्यामि (4) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (5) सत्यंत्वर्तेन पर्युक्षामि (6) ऋत-सत्याभ्यां त्वां पर्युक्षामि (7) ऋतं त्वा सत्येन परि-षिंचामि (8) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (9) ऋतसत्याभ्यांत्वा परिषिञ्चामि

अग्नि के चारों ओर दर्भ के चार काण्ड (तिनके) पूर्व, दक्षिण, उत्तर, पश्चिम, से छोड़ते हुये पढ़ें:

यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि। पुरस्तात्, दक्षिणत:, उत्तरत:, पश्चात् इति।

अग्नि को तिलक फूल लगाते हुये पढे:

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय पावकाय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय शक्ति सहिताय समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

घी सहित पकाये हुये अन्न या रोटी पर जलाई हुऐ दर्भ के दो तिनके लगाते हुये पढ़ें:

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोग्ग्रस्य अन्नस्य जुहोति-पाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्ति-अस्तु श्रृतम्-अभिघार्य।

इसी अन्न रोटी (चोचवोर) से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुये पढ़ें:

आदौ अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा, मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा, विश्वेभ्यो-देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, सङ्कर्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, सत्याय स्वाहा, पुरुषाय स्वाहा, अच्युताय स्वाहा, माधवाय स्वाहा, गोविन्दाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा।

किसी थाली आदि में सिलोना सहित चावल आदि रख कर सभी परिवार वाले उस थाली को हाथों से स्पर्ष करते हुये- पृष्ट 173 से प्रेप्युन पढ़ें:

प्रेप्युन करके अग्नि के दायें और पूर्व की ओर सिरे वाले दर्भ बिछाये उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पंक्ति में (लाईन) साँप आकार में रोटी के तीन-तीन

टुकड़े देवताओं को बलि देवें आगे लिखे छतीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुये पढ़ें:

तक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि- नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री-नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती-नामासि नमस्ते, मेघयन्ती-नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती-नामासि-नमस्ते, नन्दिनि नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्गलि-नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य-केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः, मृत्यवे नमः मरुद् भ्यो नमः, वरुणाय नमः, विष्णवे नमः, वैश्रवणाय-राज्ञे नमः, भूतोभ्यो-नमः इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, यमाय नमः, यम पुरुषेभ्यो नमः, सोमाय नमः, सोम पुरुषेभ्यो नमः, वरुणाय नमः, वरुण पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्मणे नमः, ब्रह्म-पुरुषेभ्यो नमः ऊर्ध्वं आकाशाय नमः, स्थण्डिले दिंवचरेभ्यो-भूतेभ्यो नमः, नक्तं चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः (36) षट् त्रिंशत् तक्षादिभ्यो-अन्नं नमः।

पानी डालते हुए पढें

आचमनीयं नमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर दर्भ बिछायें उस दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुये पढ़ें

समस्त-माता-पितृभ्यो-द्वादश-दैवतेभ्यः

पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अंगूठे से स्पर्श करते हुये पढ़ें:

उशान्तस्तवा-हवामह उशन्त: समिधीमहि, उशन् नुशत आवह पितृन्-हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद यह आठ द्रव्य पितरों का अन्न होता है यह एक पात्र में रखें और बायें घुठने को पृथ्वी पर रख कर पढ़े :

देवताभ्य: पितृभ्यश्च माह-योगिभ्य एवच। नम: स्वधा च स्वाहा च नित्यम्-एव-भवतु-इह।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां ....वारान्वितायां आत्मनो वांगमन: कायोपार्जित पाप निवारणार्थं... गोत्र एतत्ते अन्नं ये च त्वानु।

पितरों का नाम लेते हुये अन्न दर्भ पर डालते जाये,

पितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामाह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु, मात एतत् ते अन्नं याश्च त्वानु।

इसी भांति मृत स्त्रियो के नाम लेते हुये अन्न रखते जायें और सभी मृत पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हो रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़ें:

मातृपक्ष्यास्तु ये के चित्-ये चान्ये पितृपक्षजा: गुरु श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवा:। ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध- वर्जिता:।

अन्न-दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम्-उत्तमाम्। समस्त-माता पितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्य: पितृभ्योऽन्नं स्वधा।

अन्न का लेप साफ करें और तिलक फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

समस्त माता पितृभ्य: समालभनं गन्धः स्वधा, समस्त माता पितृभ्य: अर्घ्य: स्वधा, धूप: स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें

समस्त माता पितृभ्य: दीप: स्वधा, धूप: स्वधा।

अन्नकणों पर फल मूलि इत्यादि रखते हुये पढे

समस्त माता पितृभ्य: भक्ष्य भोज्य फल मूल बलि नैवेद्यम् आहारादि अन्नं स्वधा।

तिल, पानी, शहद डालते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्य: तिल मधु मिश्रमुदक पात्रम् आचमनीयं जलं स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें

समस्त माता पितृभ्य: हिमपानं स्वधा, क्षीरपानं स्वधा, मधुपानं स्वधा, तिलोदकं स्वधा उदक-तर्पणं, हिमं हिमं रजतं रजतम्।।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुये पढ़ें:

वसन्ताय नम:, ग्रीष्माय नम:, वर्षाभ्यो नम:, शरदेनम: हेमन्ताय नम: शिशराय नम:, षड्-ऋतुभ्यो नम:।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुये पढ़ें:

अग्न्ये स्विष्टकृते स्वाहा।

हाथ धोकर प्राणायाम करके अग्निको तीन बार पानी छिड़कते हुये पढ़ें

(1) ऋतुंत्वा सत्येन विमुंचामि। (2) सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि। (3) ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुंचामि।

अग्नि के चारों तरफ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुये पढ़ें:

यज्ञस्य सन्ततिर-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुये अग्नि देवता से आशीर्वाद माँगते हुये पढ़ें:

धर्मं देहि, धनं देहि, पुत्रपौत्रान्-च देहि मे, आयुर् आरोग्यम् ऐश्यवर्यम् देहि मे हव्य वाहन, तेजोसि तेजो मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ में अपनी ओर लेते हुये पढ़ें

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधात्सु।

पृथ्वी पर थोडा सा अन्न पानी फिर से डालते हुये पढ़ें:

भगवन्-यक्ष्म एतत्-तेऽन्नं नम:, एतत्-ते-आचमनीयं नम:

यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें:

हन्त-मनुष्येभ्य: सनकादिभ्य-ऋषिभ्य: अन्नं नम:। आचमनीयं नम:।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर चटू को हाथों से पकड़ कर तिलक पुष्प लगाते हुये पढ़ें:

या काचित्-यौगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा

परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु में सदा, आकाश मातृभ्यो अन्नंनमः, समाल भनं गन्धोनमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में थोडा सा अन्न रखते हुये पढ़ें:

शिवरात्रि देवताभ्यः अन्नं समर्पयामि नमः।

अब जो दर्भ पर आपने अन्नकणं रखे हैं उनके पास ही पृथ्वी पर और प्राणियों के लिये अन्न डालते हुये पढ़ें:

सौर-भेय्याः स्वर्ग-हिताः पवित्रा पुण्यराशयः, प्रति गृह्णन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्य मातरः। गोभ्योऽननं नमः। ऐन्द्र वारुण बाय व्या याम्या नैऋति काश्च ये। वायसाः प्रति गृहणन्तु इमं पिण्डं मयोद् धृतम्। काकेभ्यः अन्नं नमः। श्वानौ द्वौ शाव-शवलौ वैवस्वत कुलोद भवौ, ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि स्याताम् एतो अहिंसकौ। श्वभ्यः श्वानकेभ्यः अन्नं नमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:

रौरवाधीन सत्वानां प्रेत द्वार निवासिनाम् अर्थिनां याचमानानाम् अक्षय्यम् उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप-रोगिणाम्। वायसानां क्रिमीणां च शनकैर् निक्षिपेत् भुवि। देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरग दैत्यसंघाः। प्रेता पिशाचाः तरबः

समस्ता ये चान्नम्-इच्छन्ति मया प्रदत्तम्।।
पिपीलिकाः कीट पतंग काद्या बुभुक्षिताः
कर्मणि बद्ध-वद्धाः। प्रयान्तु ते तृप्तिम् इदं
मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।।
येषां न माता न पिता न बन्धुर् नैवान्न
सिद्धिर् न तथान्नम् अस्ति। तत् तृप्तयेऽन्नं
भुवि दत्तम् एतत् ते यान्तु तृप्तिं मुदिता
भवन्तु। भूतानि सर्वाणि तथान्नम् एतत् अयं
चरिष्णुर् न ततो न्यत् अस्ति। तस्मात् अहं
भूत निकाय भूतम् अन्नं प्रयच्छामि भवाय
तेषाम्। चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्रा स्थिता
येऽखिल भूत संघाः। तृप्त्यर्थम् अन्नं हि
मया विसृष्टं, तेषाम् इदं ते मुदिता भवन्तु।
इत्युच्चार्य नरो दद्यात्-अन्नं श्रद्धा समन्वितः।
भुवि भूतोप-काराय गृही सर्वाश्रयो यतः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अंगूठे के तरफ से अन्नकणों पर अन्न सलोना सहित डालते हुये पढ़ें:

यमाम, धर्मराजाय, मृत्यवे, चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय, सर्वप्राणहराय च।
औदुम्बराय नीलाय, ब्रध्नाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः।
पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः।
श्रीयमराज धर्मराज चित्रगुप्त तृप्तयेऽस्तु।।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पवित्र निकाल कर सभी डुलिजियों और सञ्वारियों में सतसौस दूध, अन्न सलोना डालते हुये पढ़ें:

(नोट: वैश्वदेव प्राय: हर एक पूजा में करना होता है, परन्तु यह अन्न आदि डालना केवल शिवरात्रि में ही होता हैं)

ये विश्व-भाविनो भूता ये च तेषु अनुयायिन:। आहरन्तु बलिं तुष्टा: प्रयच्छन्तु शिवं मम। योऽस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपाल: सकिंकर:, तस्मै निवेदयामि अद्य बलिं पानीय संयुतम्। क्षां क्षेत्राधिपतये बलिं नम:, रां राष्ट्राधिपतये बलिं नम:, सर्वे अभय वरप्रदा महेपुष्टिं पुष्टिपतयो ददातु।

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्नकणों पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:

आयु: प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षौ सुखानि च। प्रयन्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीता: पितामहा:।। एष पिण्डो मया दत्त: तव हस्ते जनार्दन। गयायां पितृरूपेण स्वयम्-एवोप-गृह्यताम्। आत्मनश्चार्थ लाभाय क्षेमाय विजयाय च। शत्रूणां, बुद्धि नाशाय पितृन् उद्धरणाय च। पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम् एकं गयाशिला। यत्र तत्र स्मरेत् नित्यं पितृणां दत्तम् अक्षयम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर देवताओं का विसर्जन करने के लिये दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में रखकर तीन बार पढ़ें:

ॐ भू: पुरुषं विसर्जयामि नम:, ॐ भुव: पुरुषं विसर्जयामि नम:, ॐ स्व: पुरुषं विसर्जयामि नम:। ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोदयात्।

ॐ तत्-सत्- ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्ण पक्षस्य त्रयोदश्यां.. वारान्वितायां भवस्य देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि देवतानाम् पूजनमऽच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु।

चावल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ें:

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक-तर्पणं नमः। आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्य-स्यास्य भक्षणे, शरीर-यात्रा सिद्धयर्थ भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।

प्रार्थना के रूप में पढ़ें:

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवन् त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा गतम्।
हर शम्भो महादेव शरणागत वत्सल।
नान्यः त्राताासि मे कश्चित् ऋते त्वत्-परमेश्वर।
आशिरा-वन्तं निमग्नो-स्मि दुस्तरे भव कर्दमे।
प्रसीद कृपया शम्भो पादाग्रेण-उद्धरस्व माम्।
यत्-कृतं यत् करिष्यामि तत् सर्वं न मया कृतम्
त्वयाकृतं तु फलभुक्-त्वम्-एव परमेश्वर।।
शब्द ब्रह्ममये स्वच्छे देवि त्रिपुर-सुन्दरि।
यथा शक्तिं जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि।।
दर्शनात्-पाप- शमनी, जपात्-मृत्यु-विनाशिनी।
पूजिता दु:ख-दौर्भाग्य-हरा त्रिपुर-सुन्दरी।।

आहवानं नैव जानामि नैवजानामि पूजनम्।
पूजा-पाठं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।।

प्रणाम करते हुये पढ़ें:

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा च उरसा च वचसा च मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण करते हुये पढ़ें:

नमो ब्राह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः। नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि इति एतासाम्-एव देवतानां सामीप्यं सार्ष्टितां सायुज्यं सलोकतां-आप्नोति य एवम्-विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते।।

घर के सभी सदस्य इकट्ठे हो कर महिम्नापार तथा आरती करें।

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं।
नाना रत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पक बिल्वपत्ररचितं, पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते, हृत्कल्पितं गृह्यताम्।

अर्थ : हे दयानिधे! हे पशुपते ! हे दवे ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल, जल से स्नान, नाना रत्नावलि विभूषित दिव्य वस्त्र कस्तूरिका गन्ध समन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पाञ्जलि तथा धूप और दीप यह सब पूजोपहार ग्रहण कीजिये।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति

यज्ञ, यज्ञोपवीत, जातकर्म (काहनेथर) तथा देवगौण के लिये सामग्री की सूची

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
चूना	200 ग्राम	2 किलो	3 किलो	250 ग्राम
आटा चावल	X	1 किलो	2 किलो	X
नमक	X	2 पैक्यट	4 पैक्यट	X
जव	2 किलो	15 किलो	20 किलो	2 किलो
चावल	2 किलो	7 किलो	10 किलो	2 किलो
घी	1 किलो	7 किलो	7 किलो	1 किलो
शक्कर	500 ग्राम	3 किलो	7 किलो	1 किलो
खजूर	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नारियल	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नीलोफर (पम्बच)	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
बादाम	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम

पन्न पूजा की सामग्री

धूप, रत्नदीप, कर्पूर, सिन्दूर, नारीवन, दूध, दही, फूल, चावल, जव, दूर्वा (द्रमुन), कपास का काता हुआ धागा, जाफल, एक रूपये का सिक्का।

पंचगव्य की सामग्री

गोमूत्र, गोभर, दूध, दही, घी एक ही गाय का।

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
नाबद	X	3 किलो	2 किलो	X
क0 गण	X	½ किलो	½ किलो	X
श्रीफल	X	12 अदद	20 अदद	X
कन्द	X	12 अदद	20 अदद	X
काला तिल	250 ग्राम	2 किलो	3 किलो	500 ग्राम
सर्वोशद्धि	3 आरी	12 आरी	12 आरी	2 अदद
ज़ाफल	2 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद
नारीवन (मौली)	1 गोला	½ किलो	½ किलो	1 गोला
सिन्दूर	25 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	25 ग्राम
धूप	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1 डब्बा
अगरबती	1 डब्बा	1 डब्बा	1 डब्बा	X
काफूर	1 पैक्यट	1 पैक्यट	2 डब्बे	1 पैक्यट
स0 इलाची	X	100 ग्राम	200 ग्राम	X
कैसर	1 ग्राम	1 ग्राम	1 ग्राम	1 ग्राम

शंकु प्रतिष्ठा की सामग्री

(कन दिनुकसामान)

सात तीर्थो और नदियों का जल, 7 धातु (सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, पीतल, कांसी, जस्द) 7 अनाज (गेंहू, मक्की, जव, माछ, मूंग, चना, मटर) सात औषधियां (शऔंठ, हल्दी, बुनफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कल व्युठ, पुदीना) पांच मिटियां (पांच तीर्थस्थानों की मिटटी)

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
दालचीनी	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
रुंग	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
काली मिर्च	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
ब्रय	2 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
सशर्प	2 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
लाय	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
लाल चन्दन	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
सफेद चन्दन	2 रु0	2 रु0	2 रु0	X
किशमिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
जिरिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	X
रुई	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत
लकडी	25 किलो	1 क्वैटल	2 क्वैंटल	10 किलो
मिट्टी	छोटी गुत्थी	1 गुत्थी	2 गुत्थी	1 किलो

पांच प्रकार के फूल, पांच प्रकार के फल, पांच खूटियां (16 अंगुल लम्बी), पांच चोरस पत्थर, 5 अदद प्रतिमायें (वृषभ, घोडा, हाथी, मनुष्य) ताम्बे के पत्र पर बनी होनी चाहिये तथा चांदी का सांप होना चाहिये, 5 मिट्टी की वारियां, रत्नदीप के लिए 5 दीप, धूप कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नाबद, किशमिश।

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
गोबर	थोडा सा	1 किलो	1 किलो	
फूल	2 किलो	5 किलो	7 किलो	2 किलो
मिट्टी का कलश	1	1 अदद	1 अदद	1 छोटा
बडा द्वीप	1 अदद	1 अदद	1 अदद	1 छोटा
टाकू	3 अदद	5 अदद	20 अदद	20 अदद
कलश के लिये वस्त्र	2½ मीटर	2½ मीटर	3 मीटर	3 मीटर
देवत गुल के लिये वस्त्र	X	X	3 मीटर	3 मीटर
ब्राह्मण के लिये वस्त्र	X	X	3 मीटर	X
तौलिया	1 अदद	2 अदद	3 अदद	2 अदद
अखरोट	100	संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार	100 अदद
वस्त्र देवगौण	X	X	1 साडी	1 साडी
वस्त्र नेत्र पट	X	X	5 मीटर खदर	X
वस्त्र मेखलि महाराज	X	X	गीरि वस्त्र	X
शहद	20 ग्राम	X	X	X

गृह प्रवेश की सामग्री

गौमाता का फोटू, श्री मद्भगवत् गीता, महालक्ष्मी अथवा इष्टदेवी का फोटू, लाल झण्डियां (6), पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा, दही, घी, चावल, धान्य, सात अनाज (थोड़ी मात्रा में), फूल, रत्नदीप, सिन्दूर, केसर, नारीवन, तिल, लाय, जव, किशमिश, शहद, मिट्ठाई, नमक, अखरोट इत्यादि

सामग्री	जातकर्म (काहनेथर) के लिए	यज्ञ के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
समिधा (तुलमूरि)	X	X	1000 तुलमूरि 9 inch लम्बी	X
तुलमूर	X	X	6 ft लम्बी	X
भिक्षा पात्र	X	X	1 थाली	X
घी पात्र	X	X	1 बौली	X
वारीदान	X	X	1 अदद	X
वुपल हाक	X	X	थोडा सा	X
टय्क ताल	X	X	250 ग्राम	250 ग्राम
			संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार
हवन सामग्री	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1
रंग बफ पांच प्रकार का	X	250 ग्राम एवं	250 ग्राम एवं	X
चौकी	X	X	संख्या के अनुसार	जितने का देवगौण हो

मुण्डन

धर्मशास्त्र के अनुसार जीवन में दो बार मुण्डन करना जरूरी है पहले जब चूढ़ा कर्म (ज़रकासय) संस्कार किया जाता है दूसरा माता, पिता के दसवें दिन पर। दसवें दिन पर जो भी कोई क्रिया कर्म करेगा चाहे भाई मित्र ब्राहमण या और कोई हो मुण्डन करना ज़रूरी है।

यज्ञ से देवताओं की और श्राद्ध से पितरों की तृप्ति होती है।

आमदनी खर्च का चित्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
हानि	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ पर भाग दीजिये, यदि

(1) **एक बाकी बचे** : तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में तथा आदर मान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी के तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप कारोबार करते हैं तो आप कारोबार को विशाल बनाने के निमित यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आप को लाभ रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

(2) **दो बाकी बचे** : जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्राय: सभी आशायें पूर्ण होगी। हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आप के सहायक है। खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आप का काम फलों बागों से

सम्बन्धित है तो दौड़-धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने हानि में ही रहना होगा। नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

(3) **तीन बाकी रहे** : तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आप को घेरी रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिये चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में 'हनुमान चालिसा' अथवा 'बहुरूपगर्भ' का पाठ नियम से करें किसी भी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न करे सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन का पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आप को इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परश्रिम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर के किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता पिता के चरणों को स्पर्श करके नित्य उन से आशिवार्द प्राप्त करें।

(4) **यदि चार बाकी बचे** : तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुज़रेगा। हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी के उलट स्थान परिवर्तन होगा, गृहस्थी होने पर घरेलू

परेशानियां आप को घेरी रखेगी, आमदनी इस वर्ष ज्यों की त्यों बनी रहेगी परन्तु खर्च के नये नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी है, तो लेनदेन के विषय में सावधन रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेनदेन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिये बाद में पछताना पडेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगडा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पडते ही आपस में सुलह करने में दिलचस्पी रखें नहीं तो अन्त में हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप विद्यार्थी हैं इस वर्ष पठनपाठन के विषय में सावधान रहें ज़रा सी ढील करने पर पास होने की आशा न रखें उपाय के रूप में नित्य प्रात: काल उठ कर घर के किसी वृद्ध विशेषतया माता पिता के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीवार्द रामबाण का काम करेगा।

(5) यदि पांच शेष बचे : तो वर्ष पर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्षभर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवा डोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होना पडेगा, कभी अचानक लाभ की भी सम्भावना है। उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में, घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनाये ऐसे शुभकामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बनें अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजिशन में सफल होंगें।

(6) यदि छ: शेष बचे : आपके वर्ष भर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो

आप हाथ में लेंगे उस में अवश्य सफलता होगी, आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वर्ग के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़ धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्राय: खर्च शुभकामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।

(7) यदि सात शेष बचे : तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें, यदि आप व्यापार करते हैं, या नौकरी अथवा विद्यार्थी है आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से अवश्य सफल होगा, सम्भव है आपको यात्रा का प्रोग्राम बने इसमें भी सन्तोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ साथ खर्च का भी योग है।

(8) यदि आठ शेष बचे: अर्थात यदि कुछ न बचे तो वर्ष भर संघर्ष तथा दौड़ धूप का माहोल रहेगा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोडेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं, तो दफ्तर में प्राय: मन अशान्त रहेगा सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित तरक्की की कोई आशा न रखें, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पडेगा। यदि आप

विद्यार्थी है परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें तथा बहरूप गर्भ का पाठ किया करें।

जातक मिलाप प्रकरण

बल देखने की विधि : लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होंगें उतने बल मानिये, एक पाप ग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानियें यदि लड़कें के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें घर में कोई पाप ग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्र : अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, तिष्या, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनूराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती।

षष्टाष्टक : लड़के अथवा लड़की की राशि से आठवीं और छठी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, जैसे मिथुन, मकर।

नवपंचक : लड़के अथवा लड़की की राशि से नवी और पांचवी राशि नवपंचक कहलाती है, जैसे मेष और सिंह।

द्विर्द्वादशी : लड़के अथवा लड़की की राशि से दूसरी या बारहवीं हो तो द्विर्द्वादशी कहलाती है, जैसे मेष और मीन।

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हरते	चित्र
मेष	अश्वि	28	33	28	18	21	22	26	17	19	23	31	28	21	25	15	11	9	13
	भरण	34	28	29	19	22	14	18	26	27	31	23	25	20	18	26	21	20	4
	कृति	27	29	28	18	10	16	20	20	21	25	26	23	16	20	20	15	15	18
वृष	कृति	18	20	19	28	20	26	17	17	18	22	23	20	18	22	22	21	21	23
	रोहि	23	23	11	20	28	36	27	23	22	26	27	12	10	24	27	26	26	20
	मृग	23	14	18	35	28	29	24	22	26	26	19	21	19	15	24	23	26	13
मिथुन	मृग	27	18	22	19	27	20	28	33	31	19	12	14	23	19	28	31	34	21
	आर्द्र	19	27	21	18	24	26	34	28	25	12	20	13	23	29	21	24	24	27
	पुर्न	20	27	23	20	22	23	31	24	28	15	22	17	22	26	21	24	25	27
कर्क	पुर्न	22	29	25	22	24	25	18	10	14	28	35	29	16	20	15	18	19	21
	तिष्य	30	21	26	23	25	18	11	18	21	35	28	30	19	15	23	26	27	12
	अश्ले	26	24	22	19	11	19	12	12	15	28	29	28	15	15	18	21	21	26
सिंह	मघा	20	20	16	17	9	17	21	22	20	16	19	16	28	30	27	16	16	21
	पूफा	26	18	20	21	23	15	19	28	26	22	17	16	30	28	35	24	22	7
	उफा	16	26	20	21	26	24	28	20	21	17	25	19	27	35	28	17	16	13
कन्या	उफा	13	22	16	21	26	24	31	23	24	20	28	22	17	25	18	28	17	24
	हस्त	10	20	17	22	25	26	33	22	24	20	28	23	18	22	16	26	28	28
	चित्र	13	5	19	23	20	12	19	26	25	21	12	27	22	8	14	24	27	28

जातक मिलाप सारिणी



वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूष	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	22	26	22	18	25	14	13	25	23	25	26	20	20	15	16	14	24	26
	भरण	13	29	21	17	17	19	20	18	26	27	26	10	10	20	24	22	17	26
	कृति	27	15	19	15	19	25	24	18	12	13	11	25	25	27	19	17	19	11
वृष	कृति	22	10	14	20	24	30	20	13	7	12	10	23	29	31	23	20	22	14
	रोहि	19	15	9	15	29	23	14	19	11	16	17	20	26	24	30	27	27	19
	मृग	12	25	18	24	21	24	15	10	17	21	25	13	19	27	29	26	18	27
मिथुन	मृग	14	27	20	14	11	14	23	18	25	20	23	11	13	21	23	25	17	26
	आर्द्र	20	27	20	13	17	3	16	28	28	23	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुर्न	20	28	22	15	21	7	14	27	27	22	23	17	18	14	16	18	28	27
कर्क	पुर्न	20	28	22	20	26	11	8	21	21	26	27	21	12	8	10	16	26	25
	तिष्य	11	26	21	19	18	21	17	11	21	26	25	13	4	14	18	24	18	27
	अश्ले	25	12	17	15	20	26	22	16	8	13	13	26	17	19	11	17	21	13
सिंह	मघा	24	11	16	22	25	33	25	19	8	3	4	18	24	25	18	18	19	13
	पूफा	10	25	18	24	23	25	19	17	24	19	18	4	10	19	24	24	17	25
	उफा	16	25	16	22	31	17	9	25	25	20	20	11	17	11	15	15	26	25
कन्या	उफा	16	25	16	18	27	13	14	29	29	24	24	16	16	10	14	17	28	27
	हस्त	20	26	18	20	26	13	15	27	28	23	24	18	19	8	13	16	26	27
	चित्र	20	19	26	28	11	25	27	14	22	17	18	15	16	24	16	19	10	19

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्ते	चित्र
तुला	चित्र	22	14	28	23	20	12	13	21	19	20	11	26	25	11	17	17	20	21
	स्वा	27	29	17	12	15	26	27	26	28	29	27	14	13	25	25	25	27	21
	विशा	22	22	20	15	10	18	19	20	21	22	21	18	17	19	17	17	18	27
वृश्चिक	विशा	16	16	14	19	14	22	12	12	13	19	18	15	21	23	21	17	18	27
	अनु	24	15	19	24	27	20	10	15	20	26	18	21	24	20	29	25	26	11
	ज्ये	12	18	24	29	22	22	12	2	5	10	20	26	31	23	16	12	12	24
धनु	मूल	12	20	24	19	13	13	21	15	12	8	17	23	25	19	9	13	13	26
	पूषा	26	18	18	12	18	10	18	27	27	23	13	17	19	17	25	28	27	13
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	27	27	23	23	9	8	24	25	28	28	21
मकर	उषा	27	28	14	12	16	22	20	22	22	28	28	14	4	20	21	24	24	17
	श्रव	27	26	13	11	16	25	22	21	22	28	26	15	6	18	20	23	24	19
	धनि	20	11	26	23	20	12	9	16	16	22	13	28	19	5	12	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	26	30	27	19	12	19	18	13	4	19	25	11	18	17	19	17
	शत	15	21	28	32	25	27	20	12	13	8	14	20	26	20	12	11	8	25
	पूभाद्र	18	25	20	24	31	31	24	17	18	13	20	13	19	25	16	15	15	17
मीन	पूभाद्र	14	21	16	19	26	26	25	18	19	18	25	18	17	23	14	16	16	18
	उभाद्र	24	16	18	21	26	18	17	25	28	27	19	21	18	16	25	27	26	9
	रेव	25	24	11	14	17	26	25	24	26	25	27	14	13	23	23	25	26	19

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूष	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
तुला	चित्र	28	27	34	23	6	20	27	14	22	25	26	23	18	26	18	12	3	12
	स्वा	28	28	20	9	21	16	23	27	19	22	23	26	21	20	25	19	19	12
	विशा	34	19	28	17	16	20	27	22	14	17	17	30	24	26	20	14	13	4
वृश्चिक	विशा	22	7	16	28	27	31	21	16	8	12	12	25	24	25	19	19	18	9
	अनु	6	21	16	28	28	31	15	13	21	25	26	12	11	21	24	24	18	27
	ज्ये	19	15	19	31	30	28	14	16	16	20	20	25	24	18	10	9	21	21
धनु	मूल	26	21	26	22	15	15	28	28	26	15	15	20	28	21	14	16	25	26
	पूषा	13	27	21	17	15	17	28	28	34	22	23	6	14	23	28	30	23	31
	उषा	21	19	13	9	23	17	26	34	28	16	14	15	23	23	29	31	31	23
मकर	उषा	24	22	16	13	27	21	16	23	17	28	26	26	17	17	23	30	30	22
	श्रव	26	22	17	14	27	22	17	23	14	25	28	28	18	18	21	28	29	22
	धनि	22	24	29	26	12	26	21	7	16	26	27	28	18	23	19	26	15	22
कुम्भ	धनि	18	20	24	25	11	25	29	15	24	18	18	19	28	33	28	18	7	14
	शत	26	19	26	26	21	19	22	24	24	18	18	24	33	28	19	8	17	16
	पूभाद्र	18	26	20	20	26	11	15	29	30	24	23	20	28	19	28	17	22	20
मीन	पूभाद्र	11	19	13	19	25	9	15	29	30	29	28	25	17	7	16	28	33	30
	उभाद्र	2	19	12	18	19	21	24	22	30	29	29	14	6	16	21	33	28	35
	रेव	12	11	4	10	27	22	26	29	21	20	21	22	14	16	18	29	34	28

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष+वृश्चिक	मिथुन+मकर	सिंह+मीन	तुला+वृष	धनु+कर्क	कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष+धनु	कर्क+कुम्भ	कन्या+मेष	वृश्चिक+मिथुन	मकर+सिंह	मीन+तुला
मित्र नवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+मिथुन
शत्रु नवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चिक	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्र द्विर्द्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रु द्विर्द्वादशी	वृष+मेष	कर्क+मिथुन	कन्या+सिंह	वृश्चिक+तुला	मकर+धनु	मीन+कुम्भ

देखने की विधि : मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र षष्टाष्टक है जो शुभ है इसी प्रकार वृष राशि का धनु राशि के साथ शत्रु षष्टाष्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोट : मित्रषष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निषेध नहीं अपितु शुभफलदायक है।

नाड़ी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोहि	आश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधि : जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधू-वर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाकिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाड़ी की पंक्ति में हो तो आद्य नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी पंवित में हो तो मध्य नाड़ी दोष होता है,

यदि दोनों वर-वधू का नक्षत्र अन्त्य नाड़ी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाड़ी दोष होता है। नाड़ी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाति देखने का चित्र

देव जाति	अनू	मृग	श्रवण	पुनर्व	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा	पूभा	उभा	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	आश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

जाती देखने की विधि : अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :

देव जाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्य जाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति हो तो विशेष हानिकारक होती है।

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाड़ी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये। 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो के दो अंक यानि 1 गुण मिलते हैं ऐसी

ही क्रमशः तारा के मिलान में 1 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्चो में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधू वर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों लड़के, लड़की की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आर्द्रा पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है **मृगशिर**-सारिणी में देखिये
भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानि वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदारहण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

(1) **शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत्। तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।**
जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1,4,7,8,12वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि, राहु इन्हीं घरों में यानि 1,4,7,8,12वाँ हों तो मंगल का दोष नहीं होता है।

(2) **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे, द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।**
लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवां

हो, कर्क का आठवां हो, धनु का बारहवां हो तो भौम का यानि मंगल का दोष नहीं होता है।

(3) **सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षित: तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत।।**

यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

(4) भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाड़ी दोष अपवाद

(1) लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(2) यदि लड़के-लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक ही धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(3) वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(4) नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।

(5) वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्र : अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती, हस्त, धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्र : भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्र : रोहिणी, उत्तराफा, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभ0, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योग : कालदण्ड:, धौम्य:, ध्वांक्ष:, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्रगरम्, काण्ड:, क्षय:, शूलम्।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमा : अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारहवाँ।

यदि यात्रा को जाना आवश्यक हो तो : बृहस्पतिवार, शुक्रवार, रविवार को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये, ऐसी ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार - इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लिये : रविवार को सुपारी खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र - घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया, दशमी	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह, धनु	मकर, कन्या, वृष
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रयो,	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चिक, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र, शनि	प्रतिपदा, नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

देखने की विधि

शत्रु मित्र चक्रम्

सूर्य का चन्द्रमा, भौम और गुरु मित्र है, शुक्र, शनि, राहु शत्रु है, बुध सूर्य का न शत्रु न मित्र है।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चन्द्र भौम गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र भौम	बुध शनि राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु	बुध राहु	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र भौम	सूर्य चन्द्र भौम
सम	बुध	भौम शुक्र गुरु, शनि	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि राहु	भौम गुरु	गुरु	गुरु

राशियों के स्वामी

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्कट	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामि	भौम	शुक्र	बुध	चन्द्रमा	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु

बारह राशियों का वर्ष फल तथा मासिक फल 2022-23 के लिए

मेष (Aries) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृतिका
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ

वर्ष के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में बृहस्पति तथा शुक्र का होना हर प्रकार से शुभ फल के सूचक है परन्तु बारहवें भाव में सूर्य तथा चन्द्रमा का होना शुभफल के सूचक नही है। गोचर फलित के अनुसार ग्यारहवा बृहस्पति तथा शुक्र होने से धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति, शत्रुओं की पराजय, समस्त कार्यों में सफलता, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार में वृद्धि, वैभव विलास के पदार्थ प्राप्त, पुत्रों तथा राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में रुचि तथा वृद्धि, धन की वृद्धि, आदर मान में वृद्धि, सभी कार्यों में सफलता, स्त्री सम्बन्धित सुखों में वृद्धि, मित्रों का पूर्ण सहयोग। गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि दस वर्ष का आरम्भ अच्छी स्थिति में होगा, वर्ष के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में दो शुभ ग्रहों का होना शुभ फल को दर्शाता है इन के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता मिलेगी, बारहवां सूर्य तथा चन्द्रमा आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नही है यदि आप किसी प्रकार का व्यापार करते हैं तो सावधान रहने की जरूरत है ऐसा न हो कि हानि का मुंह देखना पडे। यदि आप नौकरी की तलाश में है तो ऐसे कार्यों के लिए यह वर्ष लाभप्रद रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष,

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)

रा वृ
मे
सू चं बु मी
गु
मि
कुं शु
क
म
श भौ
तु
सिं
धं
कं
वृं के

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें और वैष्णव रहे:

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेज: प्रदीपनम्
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ स्थिति में होना संघर्ष का ही सूचक है इस कारण यह महीना संघर्ष के वातावरण में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में अचनाक रुकावट आने का योग परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नही है। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मई मास के आरम्भ पर ग्रहों में फेरबदल होने से शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शुभ स्थिति में गुज़रेगा आप की आमदनी भी आशानुरुप रहेगी, ग्रहस्थ सुख का उत्तम योग, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग, खर्च का योग भी प्रबल है। विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जून मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम आया है जो शरीरसुख का सूचक नही है यदि जन्मचक्र में भी भौम की स्थिति खराब होगी तो सावधान रहने की जरुरत, अन्यथा इस का ज्यादा प्रभाव नही रहेगा, शेष आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

जुलाई मास के आरम्भ पर भौम देवता आप के प्रथम भाव में तथा गुरु देव आप के बारहवें भाव में आया यह दोनों आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है विशेषतौर से रक्त विकार तथा पाचन शक्ति कमजोर रहेगी, दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, आमदनी भी आशानुकूल रहेगी।

अगस्त ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह ही व्यतीत होगा। शारीरिक स्थिति डांवा डोल रहने पर भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है। आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर ग्रहों में फेरबदल होने के कारण यह महीना संघर्ष का होते हुए भी हर प्रकार से एक सफल महीना रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता के

साथ साथ लाभ का योग भी है, सन्तान पक्ष से किसी शुभ समाचार का योग, परन्तु प्रथम भाव में राहु होने से आकरण चिन्ता का योग

अक्टूबर इस मास के ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, घर पर किसी शुभ कार्य का कार्यक्रम बन सकता है।

नवम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना दौडधूप के माहोल में गुज़रेगा परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल नही रहेगा जो आप के लिए चिन्ता पैदा कर सकता है। आप की आमदनी ठीक ही रहेगी।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य, बुध तथा शुक्र का एक साथ आना शुभफल का सूचक नही है यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते है तो पैसा फंस जाने का योग जो आप के लिए परेशानी का कारण बन सकता है। यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध रखते है वहां पर आदर व मान का योग।

जनवरी मास के आरम्भ पर दसवें भाव में बुध, शुक्र तथा शनि का एक साथ होना फलित शास्त्र से शुभ नहीं माना जाता है परन्तु गोचर फलित के अनुसार शुभफल का ही संकेत है। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग, किसी छोटी मोटी यात्रा का योग जो आपके लिए लाभदायक रहेगी।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में शनि तथा दूसरें भाव में भौम देवता आने से आप की आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी, घर पर किसी शुभ कार्य का आरम्भ हो सकता है या इस प्रकार का कोई कार्यक्रम बन सकता है। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार।

मार्च मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों सूर्य, बुध तथा शनि की युति किसी शुभ फल को दर्शाता है जिस की प्रतीक्षा में आप बहुत समय से थे, बारहवें भाव में गुरु तथा शुक्र होने से किसी शुभ कार्य पर धन का खर्च। शरीर सुख का उत्तम योग।

वृष (Taurus) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	कृतिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	बे	वो

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभफल को ही दर्शाता है ग्यारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध तथा पहले भाव में राहु होने से गोचर फलित के अनुसार हर प्रकार का लाभ, धन प्राप्ति, उत्तम भोजन, नवीन पद, आध्यात्मिक एवं मांगलिक कार्य का होना, सात्विकता में वृद्धि, राज्य कृपा, पदोन्नति का योग, पिता से लाभ, आय में वृद्धि, व्यापार में पर्याप्त लाभ पुत्रादि से मिलाप, मित्रों से मिलन, स्त्री सुख, तरल पदार्थो से आय और लाभ शारीरिक सुख, यश और धन की प्राप्ति, मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से अच्छा मेल मिलाप, सन्तान प्राप्ति की संभावना, शुभ कार्यो की ओर प्रवृति इत्यादि। गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष वृष राशि वालों के लिए हर प्रकार से सुख और शान्ति का वर्ष होगा। आप जिस भी क्षेत्र में काम करते हैं। कारोबार या नौकरी हर प्रकार से सफलता और लाभ आप की आर्थिक स्थिति में उतार चडाव आने पर भी आप के काम पर कोई प्रभाव नही पडेगा। नौकरी पेशा होनले पर विभागीय पदोन्नति का योग। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा जोर देने पर आप को सफलता मिल सकती है। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग। घर पर कोई शुभ कार्य का कार्यक्रम बन सकता है जिस पर अच्छी धन राशि खर्च हो सकती है। यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध रखते हैं तो वहां से दोखा मिलने का योग। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई परोग्राम बना रहे हो तो उस को अमली रूप दीजिए ग्रह आप के अनुकूल हैं। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। अशुभ ग्रहों को शान्त करने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण रोज़ करें तथा भगवान् शंकर पर जल चढायें:

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)

मि वृ मे सू
क रा मी चं
सिं कुं बु
गु
के शु श
कं म
तु वृं धं भौ

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णु महेश्वरम्
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का अशुभ तथा चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना संघर्ष का ही सूचक है परन्तु संघर्ष के होते हुए भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मई मास के आरम्भ पर आप के ग्यारहवें भाव में गुरु तथा शुक्र की युति हुई है जो हर प्रकार से सफलता तथा लाभदायक रहेगा, बारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा राहु का आना शरीर सुख के लिये मध्यम ही है। ग्यारहवें बृहस्पति होने से किसी भय या हानि का कोई योग नही है। विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जून ग्यारहवें भाव में बृहस्पति तथा भौम का एक साथ होना शुभफल का सूचक है परन्तु पहले भाव का सूर्य तथा बुध आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं बारहवें भाव का राहु आप को बिना कारण के चिन्तित रख सकता है आप की आर्थिक स्थिति में विशेष परिवर्तन आयेगा जो आपके लिए शुभ होगा।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों में फेरबदल होने के कारण यह महीना हर प्रकार से अच्छी स्थिति में गुज़रेगा परन्तु बारहवें भाव का भौम तथा राहु आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है विशेष रूप से रक्त विकार का योग। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

अगस्त ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी भी आशानुरूप रहेगी दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दफतर में आदर व मान का योग। विद्यार्थियों के लिए उत्तम महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर पहले भाव में भौम का होना शुभफल का संकेत नहीं है यह प्रायः आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है आपके स्वभाव में चिडचिडापन आ

सकता है परन्तु ग्यारहवे भाव का गुरु होने से किसी प्रकार का भय नही है। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

अक्टूबर ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गतमास की तरह व्यतीत होगा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, घर पर किसी शुभ कार्य का कार्यक्रम बन सकता है। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता दूसरे भाव में गया है जो शरीर सुख का सूचक है छठे भाव में सूर्य तथा बुध का होना दरबार के लिए उत्तम माना जाता है। दरबार में हर समय आदर व मान का योग, विभागीय पदोन्नति का योग भी बनता है, स्थान परिवर्तन तथा छोटी मोटी यात्रा का योग।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता वक्री होकर फिर से पहले भाव में आया है तथा सूर्य, बुध तथा शुक्र सातवें भाव में आए है जो शुभफल का संकेत नही है यह आप को गृहस्थ की ओर से चिन्तित रखेंगे परिवार के किसी सदस्य की ओर से चिन्ता। परन्तु ग्यारहवें भाव का बृहस्पति किसी प्रकार भी हानी से बचाएगा।

जनवरी ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप की आमदनी भी आशानुकूल रहेगी तथा खर्च का भी प्रबल योग है यदि आप को गृहस्थ की ओर से कोई चिन्ता है तो उस का समाधान अवश्य होगा अथवा समाधान के आसार दिखेंगें।

फरवरी शुभाशुभ ग्रहों का पलडा का एक जैसा होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा कभी धन की अधिकता तथा कभी धन की कमी परन्तु तंगदस्ती का कोई योग नही है खर्च भी अच्छे कार्यों पर ही होगा, सामाजिक स्थिति में आदर व मान का योग, विद्या प्राप्ति का महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर दसवें भाव में सूर्य तथा बुध एवं ग्यारहवें भाव का बृहस्पति तथा शुक्र का होना हर प्रकार से शुभफल तथा लाभ का सूचक है आप की आर्थिक स्थिति में अचानक वृद्धि यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो आप को आशा से अधिक लाभ। विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

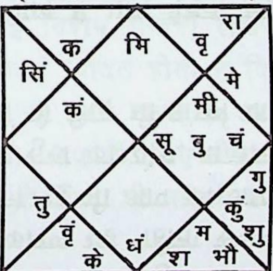
मिथुन (Gemini) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा

वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल तथा का सूचक है गोचर फलित के अनुसार दसवें भाव का सूर्य, चन्द्रमा, बुध होने से धन, स्वास्थ्य मित्रादि का सुख, राज्याधिकारियों और प्रतिष्ठित लोगों से मित्रता, सज्जनों द्वारा लाभ, प्रत्येक कार्य में सफलता, पदोन्नति का सुअवसर, मान, गौरव की प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन और सम्मान की प्राप्ति, गृहस्थ सुख किसी नये पद की प्राप्ति, शुत्रओं के पराजय का सुख, व्यवसाय में वृद्धि, मानसिक सुख शान्ति के साथ साथ उत्तम गृह सुख, जनहित कार्यों में वृद्धि, नवां गुरु होने से पुत्र जन्म का योग, भाग्योदय, हर कार्य में सफलता, भाइयों से सुख तथा लाभ, धार्मिक कार्यों में रुचि, राज्य कृपा, घर में मांगलिक तथा धार्मिक उत्सव मनाने का योग इत्यादि, गोचर चक्र के ग्रहों को देखने से प्रतीत होता है कि यह वर्ष मिथुन राशि वालों के लिए हर प्रकार से सुखऔर सफलता देने वाला वर्ष होगा। पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में शुभ योग का सूचक है परन्तु गोचर फलित के अनुसार आठवां भौम तथा शनि शुभ फल का सूचक नही है यह आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं जो कि आप के सुख में बादा डाल सकते हैं आप में आलस्य की मात्रा बडेगी जो आप के लिए चिन्ता का कारण बनेगी, परन्तु नवें बृहस्पति तथा शुक्र के होने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग। घर में नवजात शिशु के आगमन का योग। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का योग। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये भगवान् शंकर पर जल चढायें तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें।

(1 अप्रैल 11:53 प्रातः)



लोहितं रथमारूढं सर्व लोक पितामहम्
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों की स्थिति दृढ होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी भी आशाजनक रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दरबार में हर समय आदर व मान का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मई ग्यारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा राहु का होना गोचर फलित के अनुसार शुभ फल के सूचक हैं यह आप की आर्थिक स्थिति को दृढ करने में सहायक होंगे यदि आप किसी· प्रकार का कारोबार करते हैं तो आशा से अधिक लाभ का योग। यदि आप अपने कारोबार को बडाना चाहते हैं ग्रह आप के अनुकूल है।

जून मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का सूर्य तथा बुध आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही हैआप की आमदनी ठीक ही रहेगी तथा खर्च का भी प्रबल योग है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष बदलाव आने के कारण अशुभ ग्रहों का पलडा बारी हुआ है इस कारण संघर्ष का योग तथा अकारण चिन्ता का योग आप जो भी कार्य करते हैं उन में अचानक रुकावट आने का योग परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी हानि का कोई योग नही है। विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

अगस्त मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना दौडधूप का ही सूचक है इस कारण यह महीना संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा परन्तु ऐसा होने पर भी आप की आय ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, सन्तान पक्ष की ओर से कुछ चिन्ता, विद्यार्थियों के लिए भी संघर्ष का ही महीना रहेगा।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम देवता का होना शरीर सुख का सूचक नही है प्राय: रक्त विकार अथवा

चोट का भय परन्तु जातक में यदि भौम की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार का भय नही है, भई बन्धों के साथ अच्छा व्यवहार रहेगा, दफतर का माहोल आप के अनुकूल न होने से चिन्ता का योग।

अक्टूबर मास के आरम्भ में ग्रहों में कोई खास बदलाव न आने के कारण यह मास भी गतमास की तरह गुज़रेगा, यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला है तो वह अवश्य हल हो जाएगा क्योंकि बुध तथा शुक्र आप के चौथे भाव में इकट्ठे बैठे हैं। सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग।

नवम्बर भौम देवता आप के पहले भाव में आया है तथा शेष ग्रहों की स्थिति में भी बदलाव आया है परन्तु वह बदलाव संघर्ष को ही दिखाता है इस कारण यह महीना दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा, आप का शरीर भी अस्वस्थ रह सकता है, दरबार में भी डांवा डोल स्थिति रहेगी।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता फिर से वक्री हो कर बारहवें भाव में गया है तथा शेष ग्रंहों की स्थिति में भी सुधार हुआ है जिस के फलस्वरूप यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जनवरी नये वर्ष का पहला मास कोई विशेष सन्देश लेकर नही आया है ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास संघर्ष पूर्ण ही रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में अचानक रुकावट आने का योग जो आप के लिए चिन्ता का कारण बन सकता है, विद्यार्थियों के लिए भी संघर्ष का महीना।

फरवरी ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह मास भी गत मास की तरह दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल नही रहेगा यदि किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो पैसा बाहर फसने का योग। विद्यार्थियों के लिए शांन्ति का महीना।

मार्च ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण यह महीना कुछ न कुछ अच्छे माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यदि आप को गृहस्थ पक्ष से किसी सदस्य की चिन्ता है तो उस का समाधान अवश्य होगा। विधाथियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

कर्कट (Cancer) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	पुन	तिष्य				आश्लेषा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि इस वर्ष का पूर्वार्ध कर्कट राशि वालों के लिए संघर्ष पूर्ण रहेगा। वर्ष के उत्तरार्ध में ग्रहों में कुछ बदलाव आने के कारण यह समय कुछ शान्तिमय ही रहेगा। वर्ष के आरम्भ पर सभी ग्रह सातवें, आठवें तथा नवें भाव में बैठे है जिन में केवल शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में है जिस के प्रभाव से धन की प्राप्ति, सुखों में वृद्धि विलास की सामग्री में वृद्धि, कुटुम्बियों से धन तथा सुख की प्राप्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग। इन शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुए यह वर्ष पहले संघर्ष में ही गुज़रेगा परन्तु ग्रहों में बदलाव के साथ साथ शुभ फल की प्राप्ति का योग भी बनता है यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल न रहते हुए भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है यदि आप कारोबार करते हैं तो आने कारोबार को सीमित ही रखें ज्यादा फैलाने की कोशिश ना करें। यदि आप किसी सामाजिक संस्था के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो उस में आदर व मान का योग। आप की आस्तिकता में वृद्धि होगी जो आप के लिए हर प्रकार से हर समय सहायक रहेगी। गृहस्थी होने पर गृहिस्थ सुख का योग। यदि आप गृहस्थाश्रम में जाने की तयारी में है तो इस प्रकार के कार्यों में अवश्य सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का वर्ष यदि आप उच्चविद्या प्राप्ति के लिए कोई कार्यक्रम बना रहे हैं तो ग्रह आप के अनुकूल है। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिए वैष्णव रहें तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)

सफलता देने वाला होता है। घर पर किसी शुभ कार्य का कार्यक्रम बन सकता है।

अक्टूबर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ को दर्शाता है इस कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ, यदि आप अपने कारोबार को बडाना चाहते हैं तो ग्रह आप के अनुकूल है, विद्यार्थियों के लिए सफलता देने वाला मास।

नवम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता आप के बारहवें भाव में आया है जो आप को अस्वस्थ रख सकता है अथवा आप के स्वभाव में चिडचिडापन ला सकता है शेष यह महीना भी शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। गृहस्थ सुख का योग सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर दसवें भाव का राहु ग्यारहवां भौम तथा नवां बृहस्पति आप को प्रत्येक क्षेत्र में सफलता तथा लाभप्रद रहेगा विशेषतौर से आप की आर्थिक स्थिति तथा आप की आस्तिकता को सुदृढ करेंगे, सामाजिक जीवन में हर प्रकार से आदर व मान का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जनवरी ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होगा आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, परन्तु खर्च का योग भी शुभ कार्यो पर होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

फरवरी शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुए यह मास भी सामान्यता हर प्रकार से शान्ति पूर्व ही रहेगा, सगे सम्बन्धियों, मित्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेगे नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा तथा अफसर लोगों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर सूर्य, बुध तथा शनि का आठवें भाव में होना शुभ फल के सूचक नहीं है यह आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी प्रकार का भय नही है आप की आमदनी भी आशनुरुप रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

सप्ताश्व रथं आरूढं प्रचण्ड कश्यपात्मजम्
श्वेतपदमधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना अशान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, आप जो भी काम करते है उस में अचानक रुकावटे तथा विघ्न आने की सम्भावना जो आप के लिए अशान्ति का कारण बनेगा। गृहस्थी होने पर किसी सदस्य की चिन्ता।

मई मास के आरम्भ पर ग्रहों में बदलाव के कारण छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल का संकेत है परन्तु आठवें भाव का भौम तथा शनि आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं यदि जातक से भी भौम की स्थिति अच्छी नही होगी तो सावधान रहने की जरूरत।

जून शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दफतर में आदर व मान का योग, आप की आर्थिक स्थिति भी आशानुकूल रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

जुलाई मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का सूर्य आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति कों देखते हुए किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, आप की आमदनी ठीक ही रहेगी। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार अथवा संतान सम्बन्धित किसी समस्या का समाधान।

अगस्त शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप का प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा आप को प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ होगा, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग, दरबार में आदर व मान का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना भी कुछ हद तक ठीक ही रहेगा क्योंकि बृहस्पति की स्थिति ठीक होना शुभ फल को सूचित करता है नवें भाव का बृहस्पति आस्तिकता को बडाता है हर कार्य में लाभ तथा

सिंह (Leo) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उ फा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	मा	मि	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे

वर्ष के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से यह वर्ष हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, गोचर फलित के अनुसार छठे भाव के शनि तथा भौम होने से धन, अन्न, ताम्बादि तथा स्वर्ण की प्राप्ति, शत्रुओं पर सरलता से विजय, वैयक्तिक प्रभाव में वृद्धि, भूमि, मकान आदि की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ एवं गृहस्थ सुख का योग आठवां बुध होने से धन लाभ तथा पुत्र सुख, शत्रुओं पर विजय, हर कार्य में सफलता तथा प्रसन्नता, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सन्तोशजनक, दसवां राहु होने से तीर्थ यात्रा का योग, दान पुण्य करने का अवसर, मान, समान में अकस्मात वृद्धि, कार्यों में सफलता इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को अष्टकवर्ग इत्यादि की दृष्टि से देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि वर्ष सिंह राशि वालों के लिए सामान्य रूप से ठीक ही है, यह वर्ष के आरम्भ पर सभी ग्रहों का छठे, सातवें तथा आठवें भाव में होना कोई चमत्कारिक योग नही है, परन्तु ज्यादा कमजोर भी नही है। आप जो भी कार्य, नौकरी या कारोबार करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप की आमदनी भी सामान्य रूप से अच्छी ही रहेगी परन्तु खर्च का योग प्रबल रहेगा, यदि आप किसी सामाजिक या राजनैतिक संस्था के साथ जुडे हुए हैं तो उस में आदर व मान का योग तथा लाभ की प्राप्ति। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, गृहस्थी न होने पर इस से सम्बन्धि बात चीत कहीं चल सकती है, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकर से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें तथा गौमाता को आटे का पिंड खिलाए :

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)



आदिदेव नमस्तुम्यं प्रसीदमम भास्कर
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोस्तुते।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य तथा बुध आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो फिर किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

मई शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह महीना हर प्रकार से दौडधूप के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में अचानक रुकावटें आने का योग जो आप के लिए परेशानी का कारण बनेगा, यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो उस को सीमित ही रखें, गृहस्थ सुख का योग।

जून ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास भी गत मास की तरह सामान्य रूप से ही गुज़रेगा, बने बनाए कार्य बिगडने की आशा, शत्रु पक्ष आप पर हावी होनें का प्रयत्न करेगा।

जुलाई मास के आरम्भ पर केवल ग्यारहवें भाव का सूर्य तथा दसवें भाव का बुध शुभ स्थिति में है इस के प्रभाव से आप की आर्थिक स्थिति तथा दरबार की स्थिति सुदृढ रहेगी जिस को फल स्वरूप किसी प्रकार की चिन्ता का कोई योग नही है आठवें भाव का गुरु आप की पाचन शक्ति को कमजोर कर सकता है।

अगस्त मास के आरम्भ पर ग्रहों में फेरबदल होने पर भी किसी विशेष बदलाव का योग नही है गत मास की तरह ही यह मास भी गुज़रेगा सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग या किसी नवजात शिशु के आगमन की सम्भावना। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभफल तथा लाभ को दर्शाता है इस कारण आप जो भी कार्य करते हैं उस में बिना किसी रुकावट के सफलता तथा लाभ का योग, विभागीय पदोन्नति का योग जिस की प्रतीक्षा

आप बहुत समय से करते थे। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

अक्टूबर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना विशेष शान्ति को नही दर्शाता है इस कारण दौड धूप के ही माहोल में ही यह महीना कटेगा। आप की आमदनी भी डांवाडोल ही रहेगी तथा खर्च का सिलसिला अच्छी प्रकार से होता रहेगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग। यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिए कोई परोग्राम बना रहे हैं तो उस को अमली रूप दीजिए।

नवम्बर मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सुख शान्ति का महीना रहेगा आप की आर्थिक स्थिति आशा से अधिक ठीक रहेगी, घर पर कोई मांगलिक कार्य का कार्यक्रम बन सकता है। सगे समबन्धियों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे, विद्या प्राप्ति का उत्तम महीना।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता वक्री हो कर फिर से दसवें भाव में आया है जिस के फलस्वरूप आप की आमदनी में कुछ हेरफेर होगा परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है जिस कारण यह महीना भी शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

जनवरी नये वर्ष के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होना शुभ फल का संकेत नही है इस कारण यह मास दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, आठवां बृहस्पति आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है आप की आमदनी भी मध्यम ही रहेगी, परन्तु खर्च का योग प्रबल रहेगा। विद्या प्राप्ति का उत्तम महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा जितनी मेहनत आप करेंगे उतना फल आप प्राप्त नहीं कर सकते हैं जो आप के लिए परेशानी का कारण बनेगा, गृहस्थ पक्ष से किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता।

मार्च ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण यह महीना थोडा बहुत शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, आमदनी में थोडी बहुत वृद्धि हो सकती है नौकरी पेशा होने पर दफतरका माहोल आप के अनुकूल न होते हुए भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है, कारोबारी होने पर काम में वृद्धि की सम्भावना। विद्यार्थी वर्ग के लिए भी संघर्ष का महीना, परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा।

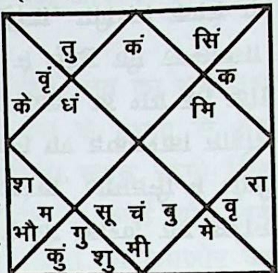
कन्या (Virgo) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	उ फाल्गुनी			हस्त				चित्रा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ स्थिति में होना विशेष शुभ फल को दर्शाता नही है गोचर फलित के अनुसार सातवें भाव का चन्द्रमा तथा नवां राहु होने से धन लाभ, काम सुख, छोटी परन्तु लाभदायक यात्रा, वाणिज व्यवसाय में लाभ, उत्तम भोजन, शरीर सुख, वाहन एवं ख्याति की प्राप्ति। अकस्मात आशातीत लाभ, राज्य की ओर से लाभ एवं मित्रों से सहायता इत्यादिशेष अशुभ ग्रहों के फल को देखते हुए कन्या राशि वालों के लिए यह वर्ष संघर्षमय माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है उस में अचानक रुकावटें आने पर भी अन्ततः सफलता मिलेगी। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं उस में आप को आशातीत लाभ मिलेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से लाभ की सम्भावना, पांचवें भाव में भौम होने से सन्तान पक्ष से चिंता का योग, आप की आमदनी भी बेडंगी रहेगी अर्थात कभी धन की अधिकता कभी धन की कमी जिस कारण आप की चिन्ता बडेगी, क्योंकि खर्च का योग भी ग्रहों को देखते हुए प्रबल है। यदि आप को

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)



जमीन जाईदाद का कोई मस्ला है वह मस्ला लटकता ही रहेगा, यदि आप गृहस्थाश्रम में जाने की तयारी में हैं तो इस प्रकार के कार्य अवश्य सम्पन्न होंगे अथवा सम्पन्न होने के आसार देखने में आएगे। नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग।किसी छोटी मोटी यात्रा पर जाने का योग जिस की प्रतीक्षा में आप बहुत समय से हैं, विद्याथियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष, यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिए कहीं जाना चाहते है तो ग्रह आप के अनुकूल है, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये आप नित्य भगवान् शंकर पर जल चढाये तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें:

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे,
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल शुभाशुभ ग्रहों को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है बिना किसी रुकावट के सम्पन्न नही होगा आप की आमदनी भी सीमित ही रहेगी, खर्च का योग अधिक है जो आप को चिन्तित रख सकता है, विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का महीना।

मई मास के आरम्भ पर भौम तथा शनि गोचर चक्र के छठे भाव में आए है जो हर प्रकार से शुभफल तथा सफलता देने वाले है परन्तु सूर्य तथा राहु का आठवे भाव में होना आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं जो आप के लिए चिन्ता का कारण बनेगा। गृहस्थ होने पर गृहस्थ सुख का योग। पांचवें भाव में भौम तथा शनि के होने से विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का महीना, कटिबद्ध होकर मेहनत की आवश्यकता।

जून मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल का द्योंतक है जिस के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होगा यदि आप किसी प्रकारका कारोबार करते हैं तो आप को आशातीत लाभ का योग आप की आर्थिक स्थिति में विशेष बदलाव का योग।

जुलाई शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में लाभ तथा सफलता का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

अगस्त ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह महीना सर्व साधारण रूप से ही व्यतीत होगा, आप की आमदनी भी अस्थिर स्थिति में रहेगी, बने बनाये कार्य बिगड सकते हैं जो आप के लिए चिन्ता का कारण बन सकता है परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नही है।

सप्तम्बर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, नौकरी

पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहते हुए भी दरबार की ओर से चिन्ता का योग, अपने मित्र जनों तथा सगे सम्बन्धियों के साथ बिना कारण के अनबनी।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह मास भी कुछ चमत्कारिक नही है यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

नवम्बर मास के आरम्भ पर बुध तथा शुक्र ग्रह ने अपनी स्थिति थोडा बहुत सम्भाला है जिन के प्रभाव से यह महीना कुछ हद तक सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी भी आवश्यकता के अनुसार ही रहेगी अपने मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेगें।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों को देखते हुए यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता तथा लाभ का योग, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग, स्थान परिवर्तन के साथ साथ लाभ का भी योग। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख।

जनवरी नये वर्ष का पहल मास भी कन्या राशि वालों के लिए कोई विशेष सन्देश लेकर नही आया है इस मास की ग्रह स्थिति भी डांवा डोल ही है जिस के प्रभाव से यह मास भी दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप का कार्य बनते बनते फिर से अटक जाने का योग, आप की आमदनी भी सीमित ही रहेगी।

फरवरी मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ को दर्शाता है आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलेगा तथा अवश्यकतानुसार लाभ भी मिले गा, कारोबारी होने पर कारोबार में वृद्धि तथा आशा से अधिक लाभ का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुखका योग।

मार्च मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ को दर्शाता है, आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा। घर पर कोई मांगलीक या धार्मिक कार्य का कार्यक्रम बनेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से करते आये हैं।

तुला (Libra) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते

वर्ष के आरम्भ पर ही छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल को दर्शाता है गोचर फलित के अनुसार पांचवां बृहस्पति तथा शुक्र होने से सुख और आनन्द की वृद्धि, हर कार्य में सफलता पद की प्राप्ति, कारोबार में उन्नति, कोई स्थिर लाभ, घर में मांगलिक उत्सव पुत्र जन्म की सम्भावना, तर्क शक्ति तथा सूझ-बूझ में वृद्धि, सदगुणों में वृद्धि, अन्न तथा धन की प्राप्ति और उत्तम प्रकार का खाना पीना यश की वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, विभागीय परीक्षाओं में सफलता, आमोद-प्रमोद की ओर प्रवृति, छठे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, बुध होने से कार्य सिद्धि और सुख की प्राप्ति, अन्न-वस्त्रादि से लाभ, शत्रुओं पर विजय रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ, शरीर स्वस्थ यश औरआनन्द की प्राप्ति, अपने घर में सुखपूर्वक रहने का अवसर इत्यादि। गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से प्रतीत होता है कि यह वर्ष तुला राशि वालों के लिए सुख समृद्धि लेकर आया है हर प्रकार से लाभ तथा सुख की प्राप्ति, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, घर पर नवजात शिशु के आगमन का योग, सन्तान पक्ष से लाभ, यदि सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता होगी उस का समाधान अवश्य हो के रहेगा,नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग, शरीर स्वस्थ रहने का योग, घर पर कोई मांगलिक कार्य का कार्यक्रम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं, विद्या प्राप्ति के लिये सफलता का वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)



जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल में गुज़रे गा आप प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करो गे आप की आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए अच्छा महीना।

मई ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता का योग आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता का योग।

जून मास के आरम्भ पर आठवां सूर्य आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जातक में यदि सूर्य की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही, ऐसा न होने पर सावधान रहने की आवश्यकता विशेषतौर से सर दर्द अथवा आंखों में तकलीफ का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह मास दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, बने बनाये कार्य बिगडने का योग, आप की आमदनी भी प्रभावित हो सकती है परन्तु किसी भय का कोई योग नही है। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग। विद्या प्रप्ति का उत्तम योग।

अगस्त मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल को दर्शाता है नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग, विभागीय पदोन्नति का योग, कारोबारी होने पर हर प्रकार से लाभ तथा सफलता, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव का भौम शुभफल का सूचक नही है यह आप के शारीर को प्रभावित कर सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति कोदेखते हुए किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में सूर्य, बुध तथा शुक्र का होना तथा आठवें भाव का भौम होना शरीर सुख का

द्योतक नही है यह आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है।

नवम्बर ग्रहों में विशेष बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का काम अच्छी प्रकार से चलेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, दरबार में हर प्रकार से आदर व मान का योग। विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर भौम देवता फिर से वक्री हो कर आप के आठवें भाव में आया है जो शरीर सुख का सूचक नही है नौकरी पेशा होने पर दफतरका माहोल आप के अनुकूल रहेगा, विभागीय परीक्षा में सफलता का योग, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी परन्तु खर्च का योग भी प्रबल है।

जनवरी मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर में आदर व मान का योग यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो वहां पर हर प्रकार से मान, सम्मान में वृद्धि

फरवरी ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, यदि आप गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की कतार में है तो यह मसला अवश्य जल्दी हल होगा, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार का योग, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी।

मार्च ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को देखने से विदित होता है कि मास हर प्रकार से दौडधूप के ही माहोल में गुज़रेगा कोई भी कार्य बिना रुकावट के हल नही होगा, अपने मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध भी अच्छे न रहने का योग, आप की आमदनी ठीक ही रहेगी, परन्तु खर्च का योग प्रबल है विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

वृश्चिक (Scorpio) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	वि0	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू

वर्ष के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना कोई चमत्कारिक योग नही है परन्तु ज्यादा खराब भी नही है गोचर फलित के अनुसार तीसरे भाव में शनि तथा भौम के होने से आरोग्य पराक्रम सुख में वृद्धि, हर कार्य में सफलता, धन तथा नौकरी की प्राप्ति शत्रुओं पर विजय, पशु धन की प्राप्ति तथा भूमि प्राप्ति का योग, साहस में वृद्धि, धातुओं से धन की प्राप्ति, राज्य की ओर से सहायता, तर्क शक्ति में वृद्धि तथा चौथे भाव में शुक्र होने से मनोकामनायें पूर्ण, धन की प्राप्ति, वाहन इत्यादि की प्राप्ति, सम्बन्धियों से सहायता, जनता से सम्पर्क तथा आदर व मान का योग इत्यादि गोचर फलित के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि संघर्ष का वर्ष होते हुए भी किसी प्रकार की हानि अथवा अशुभफल का कोई योग नही है आप जो भी कार्य करते हैं आप अपने काम को अच्छी प्रकार से सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे। आप की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी घर पर किसी शुभ कार्य का कार्यक्रम बनेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग। गृहस्थी होने पर परिवार के किसी सदस्य के शरीरसम्बन्धित चिन्ता का योग। यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला है तो उस का समाधान अवश्य होगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा जोर लगाने पर इस समस्या का समाधान भी अवश्य होगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकर से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य गौमाता को आटे का पिंड खिलाए तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

(1 अप्रैल 11:53 प्रातः)

शा, धं, म, वृं, तु, कं, भौ, कुं, के, सिं, गु, शु, सू, बु, मी, चं, मे, रा, वृं, भि, क

सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य समन्विता
मनुष्यो मत्प्रसादेन् भविश्यति न संशयः।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, विभागीय पदोन्नति का योग भी है, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, आप की आमदनी एक जैसी न रहने के कारण चिन्ता का योग।

मई मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार शुभ फल को दर्शाता है इस योग से आप की आमदनी भी सुदृढ रहेगी, आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा लाभ भी आशा से अधिक होगा, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जून ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गतमास की तरह हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे, पांचवे भाव में बृहस्पति के होने से सन्तान पक्ष से सम्बन्धित चिन्ता का समाधान अवश्य होगा। विद्या प्राप्ति का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक में सूर्य की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही, ऐसा न होने पर सावधान रहने की जरूरत। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुखका योग यदि आप गृहस्थाश्रम में जाने की तयारी में है तो अभी उस में समय लग सकता है।

अगस्त मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष बदलाव आने से छः ग्रह शुभ स्थिति में आये है जो हर प्रकार से शुभफल का संकेत हैआप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता के साथ लाभ भी अवश्य होगा आप की आर्थिक स्थिति में भी विशेष सुधार होगा। घर पर किसी मांगलिक कार्यक्रम का परोग्राम बन सकता है।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुए यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। आप की आर्थिक

स्थिति आशनुरूप रहेगी खर्च का योग भी प्रबल है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, घर पर किसी नवजात शिशु के आगमन का योग अथवा सन्तान पक्ष से शुभ सन्देश।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में सूर्य, बुध तथा शुक्र की युति का होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है इस शुभ योग से आप की आर्थिक स्थिति में विशेष दृढता आयेगी यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो उस में आशा से अधिक लाभ का योग, खर्च भी किसी शुभ कार्य पर ही होगा।

नवम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव में भौम तथा बारहवें भाव में सूर्य तथा बुध का होना शरीर सुख के सूचक नही है यह आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते है परन्तु शेष ग्रहो की स्थिति को देखते हुए किसी विशेष भय का कोई योग नही है आप की आमदनी ठीक होगी परन्तु फजूल खर्च का योग।

दिसम्बर ग्रहों में विशेष बदलाव आने के कारण यह महीना कुछ दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से परेशानी का योग, नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दरबार में आदर व मान का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जनवरी नये वर्ष के पहले मास में चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल तथा सफलता का द्योतक है आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता के साथ लाभ का योग, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ संबन्ध अच्छे रहेंगे। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से लाभप्रद तथा सफलता देने वाला योग, देर से रुके हुए कार्य फिर से सुधरने का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग, छोटी मोटी यात्रा का योग, जो आप के लिए लाभदायक रहेगी, विद्यार्थयों को हर प्रकर से सफलता।

मार्च ग्रहों में विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह महीना भी अच्छे वातावरण में गुजरेगा कारोबारी वर्ग के लिये यह महीना हर प्रकार से लाभ प्रद रहेगा, आशा से अधिक लाभ का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से लाभ तथा गृहस्थ सुख, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

धनु (Sagittarius) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढा				उत्तरा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	ध	फ	ढ	भे

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ स्थिति में होना दौडधूप का ही सूचक है गोचर फलित के अनुसार तीसरे भाव का शुक्र चौथे भाव का बुध तथा छठे राहु के होने से माता का सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा भद्र पुरुषों तथा उच्च पदस्थ लोगों से मित्रता, घरेलू जीवन का अच्छा सुख, मित्रों की वृद्धि, शत्रुओं की पराजय, धन की प्राप्ति, साहस में वृद्धि, नौकरों का सुख, मान सम्मान में वृद्धि, भाग्योदय, राज्य की ओरसे लाभ, बहन भाइयों का सुख, धर्म में रुचि इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से प्रतीत होता है वर्ष का पूर्वार्ध कुछ दौडधूप में ही गुज़रेगा उत्तरार्ध में ग्रहों में बदलाव आने के कारण ग्रहों की स्थिति ठीक हो जायेगी जिस कारण वर्ष का उतरार्ध शान्तिपूर्ण माहोल में ही गुजरेगा यदि आप को जमीन जायदाद का कोई मसला है तो उस का समाधान अवश्य होगा कई अच्छे अच्छे पुरुषों के साथ उठने बैठने का अवसर मिलेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, अपने सगे सम्बन्धियों, भाई, बहन, मित्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे, धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, घर पर कोई धार्मिक कार्य का आयोजन हो सकता है, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दरबार में आदर व मान का योग। विद्यार्थियों के लिए भी दौडधूप का वर्ष रहेगा। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें तथा भगवान् शंकर पर पानी चढाएं।

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)

श भौ ध के
गु म वृं
कुं तु
शु मी कं
सू बु चं
मे सिं
वृ मि क
रा

करोतु सान: शुभ हेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राणि अमिहन्त चापद:।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेल मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्व साधारण रूप से ही व्यतीत होगा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी मध्यम होने पर भी आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मई मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दरबार में आदर व मान का योग, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

जून मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभफल को दर्शाता है आप जो भी काम करते हैं उस में सफलता तथा लाभ का योग, सामाजिक क्षेत्र में आदर व मान का योग, गृहस्थ सुख का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

जुलाई अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास दौडधूप के माहोल में गुजरेगा यदि नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल अनुकूल न होने के कारण चिन्ता का योग, गृहस्थी होने पर परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की ओरसे चिन्ता। विद्यार्थियों के लिए भी संघर्ष का महीना।

अगस्त मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है शेष ग्रहों की स्थिति कुछ ठीक न होने के कारण यह महीना अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। आप की आमदनी भी प्रभावति हो सकती है परन्तु किसी विशेष हानि का कोई योग नही है।

सप्तम्बर ग्रहों में विशेष बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप का प्रत्येक कार्य सफलता से सम्पूर्ण होगा घर पर किसी मांगलीक योग का कार्यक्रम बन सकता है स्थान परिवर्तन अथवा छोटी मोटी यात्रा का योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। आप की आर्थिक स्थिति भी ठीक ही रहेगी तथा खर्च का योग भी ठीक ठाक है, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों का एक साथ होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ का सूचक है यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो उस में आशा से अधिक लाभ का योग, यदि आप अपने कारोबार को बडाना चाहते हैं तो ग्रह आप के अनुकूल है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर तीनों ग्रह सूर्य, बुध तथा शुक्र आप के बारहवें भाव में गए है जो फजूल खर्च का सूचक है शेष ग्रहों की स्थिति अच्छी होने से आप का प्रत्येक काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे, आप की सामाजिक स्थिति भी अच्छी रहेगी।

जनवरी मास के आरम्भ पर पहले भाव का सूर्य आप को अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक मे सूर्य की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। शेष ग्रहों की स्थिति दृढ होने से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

फरवरी ग्रहों में विशेष सुधार होने के कारण यह महीना शान्तिपूर्वक माहोल में गुज़रेगा यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो उस में हर प्रकार से आदर व मान योग, यदि आप किसी राज्यनीति पार्टी से सम्बन्ध रखते है तो थोडा बहुत तटस्य रहने की जरूरत है नही तो हानि का योग। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

मार्च छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार सुख शान्ति का द्योतक है नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति तथा अपने अफसर लोगों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहने का योग, स्थान परिवर्तन के साथ साथ पदोन्नति का योग, कारोबारी होने पर हर प्रकार से सफलता का महीना तथा आशा से अधिक लाभ का योग।

मकर (Capricorn) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रावण				धनिष्ठा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी

वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभफल का ही सूचक है परन्तु पहले भाव का भौग तथा शनि आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं गोचर फलित के अनुसार दूसरा बृहस्पति तथा शुक्र होने से धन का आगमन, कुटुम्ब में सुख में वृद्धि, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, शत्रुओं के विरुद्ध कार्य करने की जरुरत, हर तरह से मान तथा आदर का योग, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति, शरीर स्वस्थ उत्तम स्त्री सुख, राज्य की ओर से मान, विद्या में उन्नति, राज्याधिकार्यों से मेल मिलाप, पुत्रों तथा मित्रों से धन लाभ पदोन्नति का योग इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से प्रतीत होता है कि यह वर्ष मकर राशि वालों के लिए हर प्रकार से सुख और शान्ति का वर्ष रहेगा। साढसत्ती होने पर भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, दफतर में विभागीय पदोन्नति का योग यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो उस में आशा से अधिक लाभ यदि आप हार्डवियर का कारोबार करते हैं तो उस में विशेष लाभ का योग यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्धा रखते हैं वहां पर आदर व मान का योग। यदि आप नौकरी की तलाश में है तो इस समस्या का समाधान अवश्य होगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य भगवान् शंकर पर जल चढाये तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

(1 अप्रैल 11:53 प्रातः)

सू चं बु गु कुं शु मी म मे शा भौ धं के वृं तु रा वृ मि क सिं कं

नतेभ्य: सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशो जहि।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर पहले भाव में भौम का होना शरीरसुख का सूचक नही है यह आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है तथा क्रोध की मात्रा में वृद्धि हो सकती है, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग अपने मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध अच्छे न रहने का योग, आप की आमदनी ठीक ही रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मई मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ स्थिति में होना विशेष शान्ति का सूचक नही है। यह महीना संघर्ष के माहोल में होते हुए भी किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य के विषय में चिन्ता का योग। विद्यार्थियों के लिए सफलता मा महीना।

जून मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना गत मास की तरह संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा आप जिस प्रकार के कार्य करते हैं अपने कार्य को ईमानदारी से करते रहें किसी प्रकार के भय का योग नही है क्योंकि शनि देव ईमानदारी वालों का सहायक बनता है।

जुलाई इस मास की ग्रह स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास कुछ हद तक शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से लाभ तथा शान्ति, नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

अगस्त ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को देखते हुए यह महीना दौडधूप के माहोल में गुजरते हुए भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, अपने मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे किसी विशेष व्यक्ति से मिलने का योग तथा छोटी मोटी यात्रा का योग भी बनता है, विद्यार्थियों के लिए उत्तम महीना।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा शरीर अस्वस्थ रहने का योग, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग अथवा इस प्रकार के संकेत देखने में मिलेंगे, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुखका योग, गृहस्थाश्रम में जाने के लिए अचछा समय नही।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर नवें भाव का शुक्र तथा ग्यारहवें भाव का चन्द्रमा होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का कोई भी कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होगा अथवा सम्पन्न होने के लक्षण दिखाई देंगे, आप की आमदनी भी आशानुरूप रहेगी, विद्यार्थियों के लिए अच्छा महीना।

नवम्बर मास के आरम्भ पर पहले भाव का चन्द्रमा तथा दसवें भाव का सूर्य और बुध हर प्रकार से शुभफल का संकेत है इस शुभ योग के प्रभाव से दरबार में हर समय आदर व मान का योग, घर पर किसी मांगलीक कार्य का परोग्राम बन सकता है यदि आप अभी नौकरी की तलाश में है तो थोडा सा परिश्रम करने से इस समस्या का समाधान अवश्य होगा।

दिसम्बर ग्यारहवें भाव में सूर्य, बुध तथा शुक्र की युति होना हर प्रकार से लाभ के संकेत है यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं आप को आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप कारोबार करना चाहते हैं तो समय का लाभ उठायें, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

जनवरी वर्ष का पहला मास कोई विशेष शुभ सन्देश लेकर नही आया है अप्तिु ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह महीना दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, बारहवां सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है तथा फजूल खर्ची का योग, व्यापारी होने पर नुकसान की संभावना, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है आप का काम बिना रुकावट के आगे नहीं बडेगा। बने बनाये कार्य भी बिगड सकते हैं, आप की आमदनी भी प्रभावित होगी परन्तु किसी प्रकार के भय अथवा हानि का योग नही है।

मार्च मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोडा बहुत बदलाव आने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग सन्तान पक्ष से किसी शुभ सन्देश का योग, यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो सावधान रहने की जरूरत।

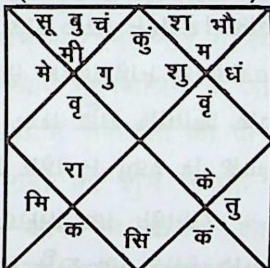
कुम्भ (Aquarius) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	धनिष्ठा		शतभिषजि				पू0 भाद्रपदा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों बुध तथा शुक्र का शुभ स्थिति में होना तथा शेष ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति होने से इस वर्ष का आरम्भ दौडधूप के माहोल में ही होगा गोचर फलित के अनुसार दूसरा बुध तथा पहला शुक्र होने से आनन्द की वृद्धि धन आभूषणों की प्राप्ति, भाषण शक्ति में वृद्धि और लाभ, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग। अच्छे खाद्य पदार्थों की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से धन की प्राप्ति, सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु नाश, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, वैभव विलास की प्राप्ति, सत्यताकी ओर झुकाव, व्यापार में वृद्धि इत्यादि वर्ष के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम तथा शनि का एक साथ होना शुभ फल का संकेत नही है यह आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते है। यदि आप किसी प्रकारका कारोबार करते है तो हानि का योग बनता है तथा पैसा बाहंर फसने का योग भी बनता है इस मिलेझुले ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह वर्ष संघर्ष का होते हुए भी हर प्रकार से अन्ततः सफलता देने वाला ही होग समय बीतने के साथ साथ

(1 अप्रैल 11:53 प्रातः)



ग्रहों में भी बदलाव आये गा जो आप के लिए शुभ फलदायक होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, अविवाहित होने पर विवाह का योग भी बनता है आप के घर में किसी नवजात शिशु का आगमन होगा। यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध रखते हैं हर प्रकार से आदर व मानका योग, सामाजिक कार्यों की ओर रुचि बडती रहेगी जो आप के लिए लाभ प्रद रहेगा। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष, उच्च विद्या प्राप्ति का योग। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें तथा गौमाता को आटे का पिंड खिलाए।

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोस्तुते।।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा बारी होने के कारण यह महीना दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा, बने बनाए कार्यों में रुकावट का योग परन्तु पहले भाव का शुक्र होने से आप की आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मई मास के आरम्भ पर ग्रहों में बदलाव आने के कारण यह महीना हर प्रकार के सुख शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा आप की आर्थिक स्थिति भी आशानुरूप रहेगी, नौकरी पेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग।

जून ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना भी गतमास की तरह शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप नौकरी करते हैं या किसी प्रकार का व्यापार हर प्रकार से ठीक ही चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुखका योग यदि आप नौकरी की तलाश में है तो इस में सफलता।

जुलाई मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना अपने आप में एक शुभ योग का सूचक है इस के प्रभाव आप का प्रत्येक कार्य सुचारू रूप से चलता रहेगा, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, घर पर कोई मांगलीक कार्य का परोग्राम बन सकता है। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

अगस्त ग्रहों में खास परिवर्तन न आने के कारण यह मास भी गत मास की तरह सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आर्थिक स्थिति भी आशानुरूप ही रहेगी, फजूल खर्ची का प्रबल योग, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों ने फिर से अपने आप को सम्भाला है जिस कारण यह मास कुछ सामान्य रूप में ही गुजरेगा परन्तु बृहस्पति की स्थिति अच्छी होने के कारण किसी प्रकार के भय अथवा हानि का कोई योग नही है। आप की आमदनी भी थोडी बहुत प्रभावित हो सकती है।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर आठवे भाव का सूर्य तथा बारहवें भाव का शनि और चौथे भाव का भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यह आप के शरीर को अस्वस्थ रख सकते हैं यदि जातक में इन ग्रहों की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही अथवा सावधान रही की जरूरत।

नवम्बर तीन ग्रहों का मास के आरम्भ पर शुभ स्थिति में होना यद्यपि दौडधूप का ही सूचक है परन्तु गुरुदेव की शुभ स्थिति में होना अच्छा योग माना जाता है जिस के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी परन्तु खर्च का योग भी प्रबल है।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभफल तथा सफलता को दर्शाता है यदि आप किसी कार्य की तलाश में हैं तो आप को अवश्य सफलता होगी नौकरी पेशा होने पर यदि आप को कोई विभागीय परीक्षा में सम्मिलित होना है तो अवश्य सफलता मिलेगी।

जनवरी मास के आरम्भ पर सूर्य आप के ग्यारहवें भाव में आया है जो आप की आर्थिक स्थिति को दृढ करेगा तथा साथ ही किसी अच्छे कार्य पर खर्च का योग भी प्रबल है। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, यदि आप गृहस्थाश्रम में जाने की तयारी में है तो इस प्रकार के कार्यों में सफलता का योग।

फरवरी मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल को ही दर्शाता है आप का प्रत्येक कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला है तो थोडा सा परिश्रम करने से ऐसे मसले का समाधान अवश्य होगा, किसी छोटी मोटी यात्रा का योग भी बनता है जो आप के लिए लाभ प्रद है। विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर दूसरे भाव में गुरु तथा शुक्र का एक साथ होने से धनागमन का योग, परिवार में सुख तथा समर्द्धि, पुत्र जन्म का योग, शुत्रओं के विरुद्ध कार्य करने का अवसर, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति बडेगी। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तथा आपने कारोबार को बडाना चाहते हैं तो यह समय ऐसे कामों के लिए लाभ प्रद रहेगा।

मीन (Pisces) राशि का वर्षफल



नक्षत्र	पू0	उत्तराभाद्रपदा				रेवती			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सुख और शान्ति का वर्ष होगा। गोचर फलित के अनुसार सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोगों से मुक्ति, गृहस्थ सुख, धन प्राप्ति, जय, आरोग्य और धन धान्य की प्राप्ति, आय में आशातीत वृद्धि, भूमि आदि से लाभ, भाइयों की ओर लाभ, कार्यों में सफलता का योग, सुगन्धित विलास पदार्थों की प्राप्ति, लाभ की प्राप्ति, लोहे, भूमि, मशीनरी पत्थर, सीमेंट, कोयला आदि से लाभ, रोगों से मुक्ति, पदोन्नति, नौकरों से लाभ, शत्रुओं पर विजय, धन लाभ, अकस्मात भाग्योदय, मित्रों से लाभ इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष मीन राशि वालों के लिए सामूहिक रूप से हर प्रकार लाभप्रद तथा सुखमय रहेगा आप की आर्थिक स्थिति खर्च के अनुरूप ही रहेगी, आप जो भी कार्य करते है नौकरी अथवा कारोबार हर क्षेत्र में सफलता का योग, यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला दीर्घकाल से टिका हुआ है उस का समाधान अवश्य निकल के आयेगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। भाइयों से लाभ का योग। यदि आप अभी नौकरी की तलाश में है तो थोडा सा परिश्रम करने से अथवा स्थान परिवर्तन करने से इस समस्या का समाधान होगा, यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करना चाहते हैं तो 'हार्डव्यर' के कारेबार में सफलता अच्छी प्रकार से होगी, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा वैष्णव रहे :

(1 अप्रैल 11:53 प्रात:)



विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जने कुरु
रूपं देहिजयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों की स्थिति अच्छी होने से यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा। शरीर स्वस्थ रहने का योग, गृहस्थ सुख का योग, नौकरी पेशा होने पर दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, पदोन्नति का योग तो बनता है, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकर से सफलता।

मई मास के आरम्भ पर भौम देवता आप के बारहवें भाव में आया है जो आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक में भौम की स्थिति अच्छी हो गी तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। फजूल खर्ची का योग भी बनता है आप की आमदनी ठीक रहेगी, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जून मास के आरम्भ पर भौम देवता, बृहस्पति के साथ पहले भाव में आया है गोचर फलित में यह योग शुभ नहीं माना जाता है इस कारण यह महीना दौडधूप के माहोल में ही गुज़रेगा आप जिस प्रकार का कार्य करते हैं उस में बिना किसी कारण के रुकावट आने का योग, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

जुलाई ग्रहों की अस्तव्यस्त स्थिति को देखते हुए यह महीना दौडधूप के माहोल में ही गुजरेगा अचानक चिन्ता का योग, कुटुम्ब के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित परेशानी, नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग, छोटी मोटी यात्रा का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

अगस्त ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण यह महीना कुछ ठीक माहोल में ही गुज़रेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा दफतर में अपने अफसर लोगों के साथ अच्छी बनती रहेगी, जो आप के लिए लाभ प्रद रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

सप्तम्बर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना दौडधूप का होते हुए भी हर प्रकार से लाभदायक

ही रहेगा, घर पर कोई मांगलीक कार्य का परोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार का योग।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल का संकेत है विशेषतौर से ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा तथा शनि का एक साथ होने से आप की आर्थिक स्थिति में विशेष दृढता आएगी प्रत्येक कार्य में आशा से अधिक लाभ का योग।

नवम्बर ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी भी आशानुरूप रहेगी, खर्च भी प्रबल ही रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों ने अपना दबदबा फिर से बहाल किया है जिस के कारण यह महीना दौडधूप के माहोल में गुज़रेगा बने बनाए कार्यों में रुकावट का योग, गृहस्थी होने पर परिवार के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता, नौकरी पेशा होने पर दफतर की चिन्ता।

जनवरी नये वर्ष का पहला मास शुभ सन्देश ले कर ही आया है मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभफल तथा सफलता की ओर इशारा है विशेष तौर से आप की आर्थिक स्थिति, सुदृढ हो गी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों में कोई खास बदलाव नही आया है केवल शनि देव आप के बारहवें भाव में आया है जिस के प्रभाव से परिवार से दूर रहने का योग बनता है, धन का फजूल खर्च, स्थान परिवर्तन का योग, प्रतिष्ठित लोगों से मत भेद शरीर अस्वस्थ रहने का योग। विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में तीन ग्रहों सूर्य, शनि तथा बुध का एक साथ होना दौडधूप का ही सूचक है यह तीनों आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकते हैं यदि जातक में इन ग्रहों की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है, अपितु सावधान रहने की जरूरत है।

साढ-सत्ती

धनु	मकर	कुम्भ	मीन

धनु धनु राशि वालों की साढसत्ती 29 अप्रैल 2022 को समाप्त होगी, परन्तु 12 जुलाई 2022 को शनि देव फिर से वक्री हो कर मकर राशि में आता है और धनु राशि वालों की साढसत्ती फिर से आरम्भ होती है फिर 17 जनवरी 2023 को शनि देव कुम्भ राशि में प्रवेश करता है और धनु राशि वालों की साढसत्ती समाप्त होती है। साढसत्ती का वक्री में होना अशुभ फल को ही दर्शाता है।

मकर मकर राशि वालों की साढसत्ती 29 मार्च 2025 को समाप्त होगी, शनि ग्रह का प्रभाव आमतौर पर खराब ही होता है यह आप के तीसरे तथा दसवें भाव को देख रहा है जिस के फलस्वरूप मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ अच्छी सम्बन्धा नही रहेंगे, दरबार में हर समय अपने अफसर लोगों का दबाव महसूस होगा जो अशान्ति का कारण बन सकता है। क्रूर ग्रह को शान्त करने के लिए नित्य शनि देव को तेल चढाये तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ श्री उपेन्द्राय अच्युताय नमः।।

कुम्भ कुम्भ राशि वालों की साढसत्ती 24 जनवरी 2020 से आरम्भ हुई तथा 3 जून 2027 को समाप्त होगी, शनि देव आपके धन भाव तथा भाग्यस्थान को देख रहा है शनि देव की दृष्टि शुभ नही मानी जाती है इस कारण यह आप की आमदनी को प्रभावित कर सकता है जो आप के लिए ठीक नही है यदि जातक में शनि की स्थिति ठीक है तो किसी भय का कोई योग नही है शनि को शान्त करने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।

मीन मीन राशि वालों की साढसत्ती 29 अप्रैल 2022 को आरम्भ होगी उस दिन शनि देव कुम्भ राशि में आता है फिर 12 जुलाई 2022 को शनि देव वक्री होकर फिर से मकर राशि में जाता है और मीन राशि वालों की साढसत्ती भी समाप्त होती है फिर 17 जनवरी 2023 को शनि दवि कुम्भ राशि में आता है तो मीन राशि वालों की साढसत्ती फिर से आरम्भ होगी।

अर्थात् : मीन राशि वालों की साढसत्ती का समय इस प्रकार है।

29 जनवरी 2022 से 12 जुलाई 2022 तक

17 जनवरी 2023 से फिर से साढसत्तती आरम्भ

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

ढय्या

मिथुन	ककट	तुला	वृश्चिक

मिथुन 29 अप्रैल 2022 को मिथुन राशि वालों की ढय्या समाप्त होगी, परन्तु 12 जुलाई 2022 को फिर से मिथुन राशि वालों की ढय्या आरम्भ होगी और 17 जनवरी 2023 को समाप्त होगी क्योंकि 12 जुलाई 2022 को शनि देव वक्री होकर फिर से मकर राशि में आता है और 17 जनवरी 2023 को फिर से कुम्भ राशि में जाता है इस कारण यह समय मिथुन राशि वालों के लिए हर प्रकार से दौडधूप का ही समय रहेगा।

कर्कट 29 अप्रैल 2022 को शनि देव कुम्भ राशि में प्रवेश करता है और कर्कट राशि वालों की ढय्या आरम्भ होती है यह ढय्या 12 जुलाई 2022 तक रहेगी। 12 जुलाई 2022 से 17 जनवरी 2023 का समय ढय्या से मुक्त रहेगा क्योंकि इतने समय में शनि देव वक्री होकर मकर में आता है। 17 जनवरी 2023 से कर्कट राशि वालों की ढय्या फिर से आरम्भ होगी यह समय परेशानी का ही समय रहेगा।

तुला तुला राशि वालों की ढय्या 29 अप्रैल 2022 को समाप्त होगी क्योंकि उस दिन शनि देव कुम्भ राशि में प्रवेश करता है 12 जुलाई 2022 को तुला राशि वालों की ढय्या फिर से आरम्भ होती है और 17 जनवरी 2023 को ढय्या समाप्त होगी क्यों कि 12 जुलाई 2023 तक शनि देव वक्री रहता है इस कारण तुला राशि वालों के लिए परेशानी का समय।

वृश्चिक 29 अप्रैल 2022 को वृश्चिक राशि वालों की ढय्या आरम्भ होगी और 12 जुलाई 2022 को समाप्त होगी। 17 जनवरी 2023 से फिर से वृश्चिक राशि वालों की ढय्या आरम्भ होगी जब कुम्भ राशि में शनि देव फिर से आयेगा। शनि देव का वक्री रहना कोई शुभ फल का सूचक नही है।

यज्ञोपवीत तथा विवाह मुहूर्त

मार्च - अप्रैल - मई 2023 के लिए

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये साथ रटुन, वस्त्र, मसाला अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय मंज लागन्य, मस मुचुरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

23 मार्च द्वितीया गुरुवार
2-7 दिन से
24 मार्च तृतीया शुक्रवार
1-21 दिन तक
26 मार्च पंचमी सोमवार
2 बजे दिन से
27 मार्च षष्ठी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई पूर्णिमा शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई द्वितीया रविवार
8 मई तृतीया सोमवार
11 मई षष्ठी गुरुवार
2-36 दिन से
12 मई सप्तमी शुक्रवार
1-2 दिन तक
17 मई त्रयोदशी बुधवार
7-38 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 मई द्वितीया रविवार
22 मई तृतीया सोमवार
10-36 दिन तक
24 मई पंचमी बुधवार
25 मई षष्ठी गुरुवार
5-52 दिन तक
31 मई एकादशी बुधवार
1 जून द्वादशी गुरुवार
2 जून त्रयोदशी शुक्रवार
12-48 दिन तक
4 जून पूर्णिमा रविवार

यज्ञोपवीत मुहूर्त

(मेखलि साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

23 मार्च द्वितीया गुरुवार
9-3 दिन से
10-57 दिन तक (वृ
26 मार्च पंचमी रविवार
2-00 दिन से
3-10 दिन तक (क
27 मार्च षष्ठी सोमवार
12-56 दिन से
3-10 दिन तक (क

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई द्वितीया रविवार
10-15 दिन से
12-38 दिन तक (क
8 मई तृतीया सोमवार
10-11 दिन से
12-34 दिन तक (क

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 मई द्वितीया रविवार
7-4 प्रातः से

9-20 दिन तक (मि
22 मई तृतीया सोमवार
11-39 दिन से
12-1 दिन तक (सिं
24 मई पंचमी बुधवार
8-26 दिन से
9-8 दिन तक (मि
11-31 दिन से
1-53 दिन तक (सिं
29 मई नवमी सोमवार
11-49 दिन से
1-33 दिन तक (सिं
31 मई एकादशी बुधवार
6-25 प्रात: से
8-40 प्रात: तक (मि

11-4 दिन से
1-26 दिन तक (सिं

विवाह मुहूर्त
(खान्दर साथ)
2023 के लिए

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई पंचमी बुधवार
4-11 दिन से
5-9 दिन तक (कं
2-59 रात से
4-19 रात तक (मी
11 मई षष्ठी गुरुवार
2-44 दिन से
5-5 दिन तक (कं

2-55 रात से
4-15 रात तक (मी
12 मई सप्तमी शुक्रवार
2-40 दिन से
5-1 दिन तक (कं
12-17 रात से
1-26 रात तक (म

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई प्रतिपदा शनिवार
8-2 दिन से
9-24 दिन तक (मि
2-9 दिन से
4-29 दिन तक (कं
9-14 रात से

11-16 रात तक (धं
21 मई द्वितीया रविवार
7-4 दिन से
9-20 दिन तक (मि
2-5 दिन से
4-25 दिन तक (कं
9-10 रात से
11-12 रात तक (धं
26 मई सप्तमी शुक्रवार
8-50 रात से
10-52 रात तक (धं
1-56 रात से
3-16 रात तक (मी
27 मई सप्तमी शनिवार

6-41 प्रात: से
8-56 दिन तक (मि
1-41 दिन से
4-2 दिन तक (कं
28 मई अष्टमी रविवार
2-19 रात से
3-8 रात तक (मी
29 मई नवमी सोमवार
6-33 प्रात: से
8-48 दिन तक (मि
8-38 रात से
10-41 रात तक (धं
1-45 रात से
3-4 रात तक (मी

31 मई एकादशी बुधवार
6-25 प्रात: से
8-40 दिन तक (मि
8-30 रात से
10-33 रात तक (धं
3 जून चतुर्दशी शनिवार
6-15 प्रात: से
8-28 दिन तक (मि
1-14 दिन से
3-34 दिन तक (कं
8-19 रात से
10-21 रात तक (धं

राशि के अनुसार विवाह तथा यज्ञोपवीत मुहूर्त
मार्च-अप्रैल-मई 2023 के लिये

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

7 मई (चं
8 मई (चं
21 मई
22 मई
24 मई (चं
29 मई
31 मई

वृष कन्या मकर

23 मार्च
26 मार्च
27 मार्च
21 मई (गु
22 मई (गु
24 मई (गु
29 मई (गु
31 मई (गु

मिथुन तुला कुम्भ

23 मार्च
26 मार्च (चं
27 मार्च (चं
7 मई
8 मई
24 मई (सू

कर्कट वृश्चिक मीन

23 मार्च
26 मार्च
27 मार्च

7 मई
8 मई
22 मई (चं
24 मई
29 मई
31 मई

विवाह मुहूर्त

मेष सिंह धनु

10 मई
11 मई
12 मई

20 मई
21 मई
26 मई (चं
27 मई
28 मई
29 मई
31 मई
3 जून (चं

वृष कन्या मकर

20 मई (गु
21 मई (गु
26 मई (गु
29 मई (गु

31 मई (गु
3 जून (गु

मिथुन तुला कुम्भ

10 मई (चं
11 मई (चं
12 मई (चं
21 मई
26 मई (सू
27 मई (सू
28 मई (सू
31 मई (सू
3 जून (सू

कर्कट वृश्चिक मीन

10 मई
11 मई (चं
12 मई
20 मई
21 मई
26 मई
27 मई
28 मई
29 मई
31 मई
3 जून

क्षौर कर्म (हजामत) के लिए शुभ दिन

शास्त्रानुसार रविवार, भौमवार, और शनिवार को क्षौर कर्म नहीं करना चाहिए। इस के अतिरिक्त व्रत, पर्व, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, अमावसी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन क्षौर कर्म करना निषेध है।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षया तृतीया, विजया दशमी, दीपावली, गौरी तृतीया

व्रतों की सूची 2079 के लिये

संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय)		कुमार षष्टी			अष्टमी व्रत			पूर्णिमा व्रत		
वैशाख (10-11)	19 अप्रैल	चैत्र	7 अप्रैल	गुरुवार	चैत्र	9 अप्रैल	शनिवार	चैत्र	16 अप्रैल	शनिवार
ज्येष्ठ (11-19)	19 मई	वैशाख	6 मई	शुक्रवार	वैशाख	9 मई	सोमवार	वैशाख	16 मई	सोमवार
आषाढ (10-52)	17 जून	ज्येष्ठ	5 जून	रविवार	ज्येष्ठ	8 जून	बुधवार	ज्येष्ठ	14 जून	मंगलवार
श्रावण (10-5)	16 जुलाई	आषाढ	4 जुलाई	सोमवार	आषाढ	7 जुलाई	गुरुवार	आषाढ	13 जुलाई	बुधवार
भाद्र (9-36)	15 अगस्त	श्रावण	3 अगस्त	बुधवार	श्रावण	5 अगस्त	शुक्रवार	श्रावण	12 अगस्त	शुक्रवार
आश्विन (8-32)	13 सितम्बर	भाद्र	1 सितम्बर	गुरुवार	भाद्र	4 सितम्बर	रविवार	भाद्र	10 सितम्बर	शनिवार
कार्तिक (8-10)	13 अक्टूबर	आश्विन	1 अक्टूबर	शनिवार	आश्विन	3 अक्टूबर	सोमवार	आश्विन	9 अक्टूबर	रविवार
मार्ग (8-18)	12 नवम्बर	कार्तिक	30 अक्टूबर	रविवार	कार्तिक	1 नवम्बर	मंगलवार	कार्तिक	8 नवम्बर	मंगलवार
पौष (8-00)	11 दिसम्बर	मार्ग	28 नवम्बर	सोमवार	मार्ग	1 दिसम्बर	गुरुवार	मार्ग	8 दिसम्बर	गुरुवार
माघ (8-45)	10 जनवरी	पौष	28 दिसम्बर	बुधवार	पौष	30 दिसम्बर	शुक्रवार	पौष	6 जनवरी	शुक्रवार
फाल्गुन (9-28)	9 फरवरी	माघ	26 जनवरी	गुरुवार	माघ	29 जनवरी	रविवार	माघ	5 फरवरी	रविवार
चैत्र (10-20)	11 मार्च	फाल्गुन	25 फरवरी	शनिवार	फाल्गुन	27 फरवरी	सोमवार	फाल्गुन	7 मार्च	मंगलवार

अमावसी व्रत

वैशाख	30	अप्रैल	शनिवार
ज्येष्ठ	30	मई	सोमवार
आषाढ	29	जून	बुधवार
श्रावण	28	जुलाई	गुरुवार
भाद्र	27	अगस्त	शनिवार
आश्विन	25	सितम्बर	रविवार
कार्तिक	25	अक्टूबर	मंगलवार
मार्ग	23	नवम्बर	बुधवार
पौष	23	दिसम्बर	शुक्रवार
माघ	21	जनवरी	शनिवार
फाल्गुन	20	फरवरी	सोमवार
चैत्र	21	मार्च	मंगलवार

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14	अप्रैल	गुरुवार
ज्येष्ठ	15	मई	रविवार
आषाढ	15	जून	बुधवार
श्रावण	17	जुलाई	रविवार
भाद्र	17	अगस्त	बुधवार
आश्विन	17	सितम्बर	शनिवार
कार्तिक	17	अक्टू	सोमवार
मार्ग	16	नवम्बर	बुधवार
पौष	16	दिस	शुक्रवार
माघ	14	जनवरी	शनिवार
फाल्गुन	13	फरवरी	सोमवार
चैत्र	15	मार्च	बुधवार

एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल पक्ष	12	अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष	26	अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	12	मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	26	मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	11	जून
आषाढ कृष्ण पक्ष	24	जून
आषाढ शुक्ल पक्ष	10	जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	24	जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	8	अगस्त
भाद्र कृष्ण पक्ष	23	अगस्त
भाद्र शुक्ल पक्ष	6	सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	21	सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	6	अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	21	अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	4	नवम्बर
मार्ग कृष्ण पक्ष	20	नवम्बर
मार्ग शुक्ल पक्ष	3	दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	19	दिसम्बर
पौष शुक्ल पक्ष	2	जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	18	जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	1	फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	16	फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	3	मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	18	मार्च

गण्ड मूल नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्ति काल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं गण्डमूल नक्षत्र पर उत्पन्न हुये बच्चों की शान्ति करानी चाहिये यदि जन्मकाल में शान्ति न करवाई गई तो बच्चा जिस नक्षत्र पर पैदा हुआ होगा उसी समय पर बच्चे की शान्ति करानी चाहिये जन्म होने के दिन से 27 दिनों के पश्चात् वही नक्षत्र आयेगा जिस नक्षत्र पर बच्चे ने जन्म लिया होगा।

गण्डान्त आरम्भ				गण्डान्त समाप्त			
31/1	अप्रैल	4-52	रात	2	अप्रैल	5-32	दिन
10/11	अप्रैल	2-25	रात	12	अप्रैल	2-56	दिन
20	अप्रैल	6-09	शां	21	अप्रैल	5-09	प्रात:
29	अप्रैल	12-23	दिन	29	अप्रैल	1-04	रात
9	मई	10-39	दिन	9	मई	9-46	रात
17/18	मई	2-51	रात	18	मई	1-30	दिन
26	मई	6-10	शां	27	मई	7-02	प्रात:
5	जून	5-30	शां	6	जून	6-58	प्रात:
14	जून	1-17	दिन	14	जून	11-51	रात
22	जून	11-40	रात	23	जून	12-38	दिन
2	जुलाई	11-56	रात	3	जुलाई	1-06	दिन
11	जुलाई	12-06	रात	12	जुलाई	10-33	दिन
20	जुलाई	6-35	प्रात:	20	जुलाई	7-00	शां
30	जुलाई	5-37	प्रात:	30	जुलाई	6-48	शां
8	अगस्त	9-09	दिन	8	अगस्त	8-10	रात
16	अगस्त	1-12	दिन	16	अगस्त	2-53	रात
26	अगस्त	12-00	दिन	26	अगस्त	1-09	रात
4	सितम्बर	4-08	दिन	4	सितम्बर	3-31	रात
12	सितम्बर	12-23	रात	13	सितम्बर	12-34	दिन
22	सितम्बर	7-34	रात	23	सितम्बर	8-29	दिन

गण्डान्त आरम्भ				गण्डान्त समाप्त			
1	अक्टूबर	9-32	रात	2	अक्टूबर	8-53	दिन
10	अक्टूबर	9-16	दिन	10	अक्टूबर	9-54	रात
19/20	अक्टूबर	4-3	रात	20	अक्टूबर	5-05	दिन
28	अक्टूबर	3-33	रात	29	अक्टूबर	2-40	दिन
6	नवम्बर	5-56	शां	7	नवम्बर	6-10	प्रात:
16	नवम्बर	12-19	दिन	16	नवम्बर	1-41	रात
25	नवम्बर	11-56	दिन	25	नवम्बर	10-48	रात
3	दिसम्बर	11-57	रात	4	दिसम्बर	12-27	रात
13	दिसम्बर	7-49	रात	14	दिसम्बर	9-15	दिन
22	दिसम्बर	10-51	रात	23	दिसम्बर	9-21	दिन
31	दिसम्बर	5-37	प्रात:	31	दिसम्बर	5-54	शां
9	जनवरी	2-17	रात	10	जनवरी	3-34	दिन
19	जनवरी	9-43	दिन	19	जनवरी	8-49	रात
27	जनवरी	12-34	दिन	27	जनवरी	12-23	रात
6	फरवरी	8-01	दिन	6	फरवरी	9-47	रात
15	फरवरी	7-15	शां	16	फरवरी	6-21	प्रात:
23	फरवरी	9-44	रात	24	फरवरी	9-33	दिन
5	मार्च	1-48	दिन	5	मार्च	3-38	रात
14	मार्च	1-58	रात	15	मार्च	1-20	दिन

कश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध अथवा यज्ञ

नोट : नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

श्री चण्डी ग्राम महात्मा	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	8 अप्रैल	स्वा शंकर जू राज़दान	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	24 मई
स्वा भाई टोठ जी	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	11 अप्रैल	स्वामी नाथ जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	29 मई
पं मथुरादास (क्यलम)	चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी	12 अप्रैल	स्वा प्रेमनाथजी (गुसाई गुण्ड)-बोडी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	29 मई
नन्दकीश्वर महाराज (पुरखू)	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 अप्रैल	भगवान गोपी नाथ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	1 जून
स्वा बोनकाक	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 अप्रैल	स्वा आनन्द गोयल गिरि	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जून
स्वा पृथ्वी नाथ पण्डित (दयाल)	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 अप्रैल	श्री वामन जी	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	17 जून
मंगल राज भैरव	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	21 अप्रैल	स्वामी नन्दलाल जी	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 जून
ऋीष पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	22 अप्रैल	स्वामी किन टोठ (बडगाम)	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 जून
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	23 अप्रैल	स्वा0 गोबिन्द कौल जलाली	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 जून
श्री सूरदास निर्वाण दिवस	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	25 अप्रैल	श्री मोहन लाल ठुस्सु कोफूर	आषाढ कृष्ण पक्ष दशमी	23 जून
स्वा महेश्वरनाथ मल्ला	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	29 अप्रैल	श्री चन्द्र काक बचरू	आषाढ शुक्ल पक्ष तृतीया	2 जुलाई
श्री शंकर साहिब	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रति	1 मई	स्वा श्री विभीषण जी	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 जुलाई
स्वा शम्भु नाथ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	3 मई	स्वा त्रिलोकी नाथ भान (दयाल)	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 जुलाई
योगीराज धर्मदत्त जी	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	3 मई	स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	6 जुलाई
स्वा मोती लाल जी	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 मई	श्री कण्ठ काक वांचू	आषाढ शुक्ल पक्ष दशमी	9 जुलाई
श्री सर्वानन्दजी गुसानी गुण्ड	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	12 मई	स्वा0 पुष्कर नाथ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
स्वा0 दीनानाथ कारिहामा	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	15 मई	श्री अमर नाथ वैष्णवी (बब)	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
श्री काक जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	17 मई	श्रीमती राधा देवी (सागाम)	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	12 जुलाई
बादशाह कलन्द्र	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	19 मई	स्वामी लाल जी	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	16 जुलाई

श्री नन्द काक शर्मा (वेरीनाग)	श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	24 जुलाई
ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	25 जुलाई
स्वामी कशकाक (मनिगाम)	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	2 अगस्त
जानकीनाथ साहिब दर	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	6 अगस्त
ज्यो0 श्रीकण्ठ शर्मा (बिज0)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	9 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल	श्रावण शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	11 अगस्त
स्वामी गण काक	श्रावण शुक्ल पक्ष पुर्णिमा	12 अगस्त
पं0 प्रेमनाथ शास्त्री (बिज0)	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	13 अगस्त
स्वा सर्वानन्द सहीपोरा	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुदर्शी	26 अगस्त
ज्यो0 प्रकाश काक (बिज0)	भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी	27 अगस्त
स्वामी परमानन्द जी	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	31 अगस्त
माता उमादेवी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सितम्बर
स्वामी निरंजनाथ कौल	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	6 सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 सितम्बर
श्री मान भट्ट (फतेहपुरी)	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	8 सितम्बर
ब्रह्मचारी श्री कण्ठ कौल (जलाली) (फतेहकदल श्रीनगर)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	9 सितम्बर
श्री शकर साहब	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	11 सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	14 सितम्बर
स्वामी क्राल बब	आश्विन कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	24 सितम्बर
स्वा पृथ्वी नाथ (गुसाई गुंड)	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	26 सितम्बर
स्वामी हरिकृष्ण	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	27 सितम्बर
स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
स्व0 पृथ्वी नाथ जी	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
श्री शिव जी भागाती	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 अक्टूबर
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	7 अक्टूबर
श्री परमहंस कृष्णानन्द संतोष	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	11 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	11 अक्टूबर
ज्योतिषी आफताभ शर्मा (बिज0)	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	13 अक्टूबर
स्व0 गाश कौल जलाली	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	15 अक्टूबर
स्व0 विदलाल (गुशी)	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	15 अक्टूबर
श्री मधुसूदन राजदान	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	30 अक्टूबर
श्री महादेव काक रत्नीपोरा	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	1 नवम्बर
स्वा रामानन्द जी महाराज	कार्तिक शुक्ल पक्ष दशमी	3 नवम्बर
स्वा आत्माराम (गुसाई गुंड)-बोडी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	4 नवम्बर
स्वा चमनलाल जी बामज़ई(लाले बाग)	मार्ग कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	9 नवम्बर
स्वा राम धिरि महाराज	मार्ग कृष्ण पक्ष चतुर्थी	12 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	13 नवम्बर
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	14 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	22 नवम्बर
स्वा स्वयमानन्दजी (मुट्ठी)	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	22 नवम्बर
स्वामी जीवन साहब	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	25 नवम्बर

स्वामी विद्याधर जी	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	26 नवम्बर
स्वामी आफताम जू वंगू	मार्ग शुक्ल पक्ष पंचमी	28 नवम्बर
स्वामी कृष्ण जू राजदान	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	1 दिसम्बर
स्वा भट मुत अम्बाला	मार्ग शुकल पक्ष नवमी	1 दिसम्बर
महात्मा तारा चन्द जी	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	11 दिसम्बर
स्वा रामदास वैराज्ञी (वितस्ता)	पौष कृष्ण पक्ष पंचमी	13 दिसम्बर
श्री हीम राज बब जी ख्रिव/सुदमहादेव	पौष कृष्ण पक्ष षष्ठी	14 दिसम्बर
श्री रघुनाथ कुकिलू	पौष कृष्ण पक्ष नवमी	17 दिसम्बर
अभिनव गुप्त निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	18 दिसम्बर
स्वा केशव नाथ कौल	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	18 दिसम्बर
श्री अशोकानन्द	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	23 दिसम्बर
स्वामी शिव राम	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 दिसम्बर
श्री राघवानन्द जी	पौष शुक्ल पक्ष तृतीया	25 दिसम्बर
स्व0 श्रीदर पण्डित	पौष शुक्ल पक्ष षष्ठी	28 दिसम्बर
माता कमलावती काचरू	पौष शुक्ल पक्ष नवमी	31 दिसम्बर
श्रीमती मथुरा देवी	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	5 जनवरी
श्री आफताभ जी (भास्कर)	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	12 जनवरी
महात्मा काशी नाथ जी कौल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	12 जनवरी
स्वा जानकी नाथ पण्डिता(द्रुगमुला)	माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी	13 जनवरी
स्वा सत्यानन्द जी महंत	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	15 जनवरी
महामहेश्वराचार्य स्वामी राम ज़ी	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	20 जनवरी
स्वा0 नन्द लाल जी	माघ शुकल पक्ष तृतीया	24 जनवरी
स्वा0 प्रयाग जी (त्रहगाँव)	माघ शुकल पक्ष चुतर्थी	25 जनवरी
श्री दीनानाथ जी भान	माघ शुकल पक्ष द्वादशी	2 फरवरी
स्वामी वामन जी महाराज	माघ शुकल पक्ष त्रयोदशी	3 फरवरी
स्वा0 जीवन साहब	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	7 फरवरी
सन्त राम (सत्त बब) द्रुगमुला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	7 फरवरी
शारिका जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	8 फरवरी
स्वा राम कृष्णानन्द सरस्वती	फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी	13 फरवरी
स्वा डा0 सूर्य कण्ठ जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी	13 फरवरी
स्वा श्यामलाल ओगरा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	14 फरवरी
स्वा पुष्कर नाथ कौल (पौष मोत)	फाल्गुन कृष्ण पक्ष नवमी	15 फरवरी
ब्रह्म महेश्वर नाथ दर	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	21 फरवरी
स्वामी महताब काक जी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	21 फरवरी
स्वा0 रामजुव सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	25 फरवरी
श्री मानकाक जी गौतमनाग	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	1 मार्च
स्वा0 विदलाल मटटू (चन्द्रपुरा)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	1 मार्च
स्वा जगन्नाथ शाला	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वादशी	4 मार्च
स्वा0 हरकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च
श्री किशकाक वडीपोरा-हन्दवारा	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	16 मार्च
ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	17 मार्च
श्री श्याम लाल वांचू (हाज़ीन)	चैत्र कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	20 मार्च
श्री गाशकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	21 मार्च

कश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट : विजयेश्वर पंचांग में उन महानुभावों की जयन्तियाँ लिखी गई हैं जिन का निर्वाण हुआ है। - प्रबन्धक

श्री मोहन लाल ठुस्सु (कोफूर)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	2 अप्रैल	श्री राम कृष्णनन्द सरस्वती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
स्वा केशवनाथ कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	2 अप्रैल	श्री 100 रामानन्द जी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
स्वा नन्दलाल (बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	2 अप्रैल	श्री हेमराज ख्रिव/सुदमहादेव	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
महात्मा काशी नाथ जी कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	6 अप्रैल	श्री सिद्ध बब	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	9 जून
ज्यो श्री कण्ठ शर्मा (बिजबिहारा)	चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	15 अप्रैल	स्वा राम जी धूपवन आश्रम	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी	10 जून
स्वा बादशाह कलन्दर	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 अप्रैल	अभिनव गुप्त जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी	11 जून
मंगलेश्वर भैरव जयन्ती (सिरनू)	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	21 अप्रैल	माता रूप भवानी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 जून
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	23 अप्रैल	स्वा महादेव काका रत्नीपोरा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 जून
स्वा जानकी नाथ साहिब दर	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	23 अप्रैल	स्वा राधे श्याम	आषाढ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	15 जून
स्वा लक्ष्मण जी	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	27 अप्रैल	स्वा भट्ट मोत अम्बाला	आषाढ कृष्ण पक्ष द्वितीया	16 जून
जगद्गुरु शंकराचार्य	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	6 मई	स्वा सत्यानन्द महंत	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	17 जून
स्वा दीनानाथ भान	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	12 मई	स्वा श्यामलाल ओगरा	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	24 जून
स्वा किनटोठ (यक्षकूट बड़गांव)	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 मई	स्वा स्वयमानन्द जी (मुट्ठी)	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 जुलाई
स्वा गोविन्द कौल जलाली	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	20 मई	भगवान गोपीनाथ जी	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
श्री काशी नाथ (बाबा)	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी	23 मई	स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
स्वा दीनानाथ कारिहामा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	24 मई	वसु गुप्त जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
श्री परमहंस कृष्णनन्द संतोष	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी	27 मई	ज्योतिषी आफताव शर्मा	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	3 अगस्त
श्री नन्दकीश्वर महाराज	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	30 मई	स्वा आफताब जी (भास्कर)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	9 अगस्त
श्री मान भट्ट (मान) फतेहपुरी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	31 मई	स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	श्रावण शुकल पक्ष पूर्णिमा	12 अगस्त
श्री रघुनाथ कोकिलू	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी	4 जून			

स्वा काशी नाथ बब	भाद्र कृष्ण पक्ष अष्टमी	19 अगस्त
स्वा श्रीधर पण्डित	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वादशी	24 अगस्त
श्री कृष्णजू राज़दान	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	31 अगस्त
लल्लेश्वरी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सितम्बर
स्वा गाश कौल जलाली	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 सितम्बर
ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ कौल(जलाली)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	9 सितम्बर
पं0 प्रेमनाथ शास्त्री (बिज0)	आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	17 सितम्बर
श्री जगन्नाथ शाला	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	22 सितम्बर
स्वा आनन्द जी	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	22 सितम्बर
स्वा हरकाक	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23 सितम्बर
स्वा डा0 सूर्य कृष्ण जी	आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी	29 सितम्बर
स्वा त्रिलोकी नाथ भान (दयाल)	आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी	6 अक्टूबर
परमदयाल पृथ्वी नाथ पण्डित	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	18 अक्टूबर
स्वा महादेव काक भान (तोफ)	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	19 अक्टूबर
स्वा पुष्कर नाथ कौल	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादशी	22 अक्टूबर
स्वा जानकी नाथ पण्डिता (कुपवारा)	कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23 अक्टूबर
महात्मा तारा चन्द जी	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	25 अक्टूबर
चित्रगुप्त जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया	27 अक्टूबर
स्वा महताब काक	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	29 अक्टूबर
स्वा हरि कृष्ण जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	4 नवम्बर
श्रीमती कमलाजी काचरू	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 नवम्बर
स्वा पुष्करनाथ जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 नवम्बर
चन्डीगाम महात्मा	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
स्वा आशुतोष राज़दान (महात्मा)	मार्ग कृष्ण पक्ष दशमी	19 नवम्बर
स्वा पृथ्वी नाथ (गोसाई गुंड)	मार्ग शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 नवम्बर
शारिका जी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	25 नवम्बर
स्वा जीवन साहिब रैणावारी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	25 नवम्बर
श्री श्याम लाल वांचू (हज़ीन)	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	25 नवम्बर
शारदा देवी	पौष कृष्ण पक्ष सप्तमी	15 दिसम्बर
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	18 दिसम्बर
शैवाचार्य स्वा0 राम जी	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	20 दिसम्बर
श्री मिरज़ा काक जी	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 दिसम्बर
स्वा बोनकाक	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	1 जनवरी
ब्र मट्टेश्वर नाथ दर	माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	7 जनवरी
स्वा कशकाक (मनिगाम)	माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	22 जनवरी
बाला देवी (बालहामा)	माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी	25 जनवरी
स्वा निरञ्जन नाथ कौल	माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी	29 जनवरी
स्वा आफताम जू वंगू	माघ शुक्ल पक्ष दशमी	31 जनवरी
श्री बिदलाल गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	10 फरवरी
श्री महेश्वर नाथ मल्ला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	19 फरवरी
स्वा जगदानन्द जी ब्रह्मचारी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	22 फरवरी
श्री शंकरनाथ राजदान वनपुह	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी	24 फरवरी
स्वा रामजु सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	25 फरवरी
स्वा शम्भु नाथ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी	26 फरवरी
स्वा नन्दलाल जी ब्रह्म0	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	27 फरवरी
स्वा गोविन्द कौल	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	5 मार्च
श्री क्राल बब	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	7 मार्च
स्वा विभीषण जी	चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	10 मार्च
स्वा सर्वानन्द दर (सहीपोरा)	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	11 मार्च
स्वा शिव जी भागाती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च

महत्त्वपूर्ण यात्राएं

हारी पर्वत श्रीनगर, देवी आंगन-पलोडा-डोक	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	4 अप्रैल
उमा भगवती यात्रा, ब्रारि आगन	चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 अप्रैल
चक्रीश्वर यात्रा हारी पर्वत श्रीनगर, पलोडा-डोक जम्मू शिवा भगवती यात्रा, अकिन गाम शैलपुत्री यात्रा माता भद्रकाली - वडीपोरा हन्दवारा	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	10 अप्रैल
यात्रा रुद्रकोर दहाम, देसा डोडा	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	4 मई
कमला यात्रा त्राल	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	6 मई
डुमटबल यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	12 मई
गणपतयार यात्रा गणेशबल यात्रा - गणेशपुरा गणेशबल - हानन्द चवल ग्राम	वैशाख शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	15 मई
त्रिसन्ध्या यात्रा आरम्भ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	17 मई
ज्येष्ठा देवी यात्रा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	20 मई
नन्दकीश्वर यात्रा, सीर जागीर, आकलपुर, जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	30 मई
क्षीरभवानी यात्रा, तुलमुल, कश्मीर खनबरिन्य यात्रा देवसर क्षीरभवानी यात्रा (ख्यार और टिक्कर) मंज गाम यात्रा लकुटी पुरा यात्रा हरीश्वर यात्रा, खुनमुह यात्रा चामुण्डा देवी, सर्वाधार, डोडा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
श्रीमती हुद्धामाता यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	7 जुलाई
प्यठ दरबार यात्रा (दछिन) किशतवाड हारी पर्वत श्रीनगर, देवी आंगन,	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	7 जुलाई
पलोडा डोक	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	8 जुलाई
लोक भवन यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
माता भुवनेश्वरी, चन्दपोरा कश्मीर	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
ख्रिव यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	12 जुलाई
यात्रा महारानी रुद्रगंगा, देसा डोडा	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
माता रूप भवानी स्थल यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
पांजथ यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	2 अगस्त
शोपियान यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	9 अगस्त
श्री अमर नाथ यात्रा, थजीवारा ध्यानेश्वर यात्रा बांढ़ीपोरा चन्द्रा स्वामिन (ख्यार) हरनाग (हार्वन) बर्म्ई सोपोर	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	12 अगस्त

नबदल यात्रा	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	15 अगस्त
पवन सन्ध्या यात्रा वेरीनाग, सुम्भल	भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी	27 अगस्त
शारदा पीठ - पाक अधिकृत कश्मीर		
उमानगरी यात्रा		
साधु गंगा शारदा बल	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सिप्तम्बर
गुशी यात्रा कश्मीर		
हर मुकुट गंगा यात्रा		
गौतम नाग यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	6 सिप्तम्बर
व्यथवतुर यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	8 सिप्तम्बर
पाप हरण नाग (सालिया पांज़मुला)		
अनन्तनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	9 सिप्तम्बर
ऐशमुकाम यात्रा		
कारकूट नाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 सिप्तम्बर
विजयेश्वर यात्रा (बिजबिहारा कश्मीर)	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावसी	25 सिप्तम्बर
सोमयार यात्रा श्रीनगर		
भद्रकाली यात्रा - वडीपोरा हन्दवारा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
यात्रा रुद्रगंगा चन्द्रभागा		
त्रिवेणी घाट डोडा	पौष शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	5 जनवरी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी	28 जनवरी
चक्रीश्वर यात्रा श्रीनगर	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	14 फरवरी
देवी आंगन पलोडा डोक		
विचार नाग यात्रा	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	21 मार्च
वर नाग यात्रा, जैनपुरा शोपियान		

पंचक आरम्भ			पंचक समाप्त		
28 मार्च	11-54	रात	2 अप्रैल	11-20	दिन
25 अप्रैल	5-28	प्रात:	29 अप्रैल	6-42	शां
22 मई	11-11	दिन	26 मई	12-37	रात
18 जून	6-42	शां	23 जून	6-13	प्रात:
15/16 जुलाई	4-16	रात	20 जुलाई	12-49	दिन
12 अगस्त	2-48	दिन	16 अगस्त	9-06	रात
8/9 सितम्बर	12-38	रात	13 सितम्बर	6-35	प्रात:
6 अक्टूबर	8-27	दिन	10 अक्टूबर	4-01	दिन
2 नवम्बर	2-15	दिन	6/7 नवम्बर	12-03	रात
29 नवम्बर	7-50	शां	4 दिसम्बर	6-15	प्रात:
26/27 दिसम्बर	3-30	रात	31 दिसम्बर	11-46	दिन
23 जनवरी	1-50	दिन	27 जनवरी	6-36	शां
19/20 फरवरी	1-13	रात	23/24 फरवरी	3-43	रात
19 मार्च	11-16	दिन	23 मार्च	2-07	दिन

महत्त्वपूर्ण यज्ञ तथा दिवस

यज्ञ शिव मन्दिर पुरखू फेज 2	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	4 अप्रैल
यज्ञ स्वा मोहन बब आश्रम, जिब, उधमपुर	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	4 अप्रैल
यज्ञ सिद्ध लक्ष्मी पीठ दुर्गानगर स्यः 2	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	4 अप्रैल
यज्ञ माता गौरीश्वरी, गौटयूंग, कुपवाडा, जगती जम्मू	चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 अप्रैल
यज्ञ शारदा भवन, पौनी चक (यक्षकूट,बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	10 अप्रैल
शैलपुत्री जयन्ती यज्ञ, गोकुल धाम, अम्बिका विहार	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	10 अप्रैल
स्वा कुमारजी,क्राल बब आश्रम गड्डी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 अप्रैल
मंलेश्वर भैरव अस्थपन दिसव सिरनू, मुंगहामा, पुलवामा	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	21 अप्रैल
यज्ञ बुलबुल लंकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	25 अप्रैल
यज्ञ गणेश अस्थापन,फिडारपोरा सोपोर	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	15 मई
यज्ञ ज्येष्ठादेवी जीठयार, कश्मीर	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	20 मई
यज्ञ मंजगाम (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
यज्ञ मोहनबब आश्रम जिब, उधमपुर	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	17 जून
यज्ञ राज्ञा भगवती, रुणीपोरा, मट्टन	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	7 जुलाई
यज्ञ लोक भवन (अनन्तनाग)	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
भग0 गोपीनाथ जी महोत्सव	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
छड़ी स्नान मातण्डं तीर्थ (मटन)	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
यज्ञ चिश्मा साहिबी श्रीनगर	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
यज्ञ मोहन बब आश्रम, मिश्रीवाला	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
यज्ञ पोषबव आश्रम (गंग्याल)	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 जुलाई
यज्ञ नागडंडी आश्रम अनन्तनाग	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	2 अगस्त
महाराज्ञा भगवती यज्ञ रायथन बडगाम	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 अगस्त
यज्ञ द्वारिका हितकारी आश्रम	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	12 अगस्त
यज्ञ माता रूपभवानी वासकुरा, सुम्बल	भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी	27 अगस्त
गणेश अस्थापन दिवस जीठयार, कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष चर्तुथी	31 अगस्त
यज्ञ आदर्श नगर, बनतालाब, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सिप्तम्बर
शारदा भवन पौनी चक	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सिप्तम्बर
यज्ञ मोहनबब आश्रम,जिब, उधमपुर	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सिप्तम्बर
पुखरीबल यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सिप्तम्बर
यज्ञ माता भुवनेश्वरी चन्दपोरा, हरवन	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	8 सिप्तम्बर
यज्ञ वितस्ता तीर्थ वेरीनाग	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	8 सिप्तम्बर
यज्ञ मोहन बब आश्रम जिब उधमपुर	भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 सिप्तम्बर

यज्ञ डोक वज़ीर नगरोटा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
यज्ञ गोकल धाम, अम्बिका विहार	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
यज्ञ भद्रकाली, वडीपोरा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	4 अक्टूबर
अमृतेश्वर महादेव मन्दिर सरस्वती विहार बोडी	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	7 अक्टूबर
स्वामी पुष्कर आश्रम चिनोर	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 नवम्बर
यज्ञ स्वा मोहन बब,आश्रम,मिश्रीवाला	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
यज्ञ काश्मीर भवन त्रिकूटा नगर जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
चण्डीगाम (कुपवारा) उधमपुर	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
श्री सिद्ध गणेश आश्रम रामकृष्ण विहार (उधयवाला)	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
माता चण्डी भक्ति संगठन-चौगाम	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	मार्ग शुक्ल पक्ष एकादशी	3 दिसम्बर
श्री भद्रकाली स्थापना दिवस (फलाय मण्डाल, जम्मू)	पौष कृष्ण पक्ष अष्टमी	16 दिसम्बर
यज्ञ पुष्कर आश्रम नजबगढ	माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 जनवरी
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	5 फरवरी
यज्ञ गोकुलधाम, अम्बिका विहार	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	5 फरवरी
यज्ञ स्वा मोहन बब आश्रम, मिश्रीवाला	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	5 फरवरी

ज्योतिष सम्राट पं0 प्रेमनाथ शास्त्री जी का 23वां निर्वाण दिवस

(13 अगस्त शनिवार 2022 को)

ज्योतिष सम्राट पं0 प्रेमनाथ शास्त्री जी का 23वां निर्वाण दिवस 13 अगस्त शनिवार तदनुसार भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया को मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर एक यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है आप से सविनय निवेदन है कि कार्यक्रम के अनुसार इस समारोह में सम्मिलित होकर हमारे उत्साह को बडाए और हमें सेवा का अवसर प्रधान करें।

कार्यक्रम

कलशस्थापन	13 अगस्त, प्रातः 5 बजे
पूर्णाहुति	13 अगस्त, 1 बजे दिन
प्रसाद वितरण	13 अगस्त, 1:30 बजे दिन

(स्थान के विषय में समय पर सूचित किया जायेगा)

प्रबन्धक

हमारे पर्व और त्यौहार 2079 के लिये

थालस बुथ वुछुन	2 अप्रैल	ज्येष्ठाष्टमी	8 जून	चन्दन षष्ठी	16 अगस्त
नवरेह	2 अप्रैल	निर्जला एकादशी	11 जून	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	18 अगस्त
जंगत्रय	4 अप्रैल	रूप भवानी प्रकाशोत्सव	14 जून	कुशामावसी	27 अगस्त
दुर्गाष्टमी	9 अप्रैल	हार सप्तमी	6 जुलाई	हरितालिका तृतीया	30 अगस्त
रामनवमी मातृका पूजा	10 अप्रैल	हार अष्टमी	7 जुलाई	विनायक चतुर्थी	31 अगस्त
उमा जयन्ती	10 अप्रैल	हार नवमी	8 जुलाई	वराह पंचमी	1 सिप्तम्बर
शिवा भगवती जयन्ती	10 अप्रैल	शारिका जयन्ती	8 जुलाई	शारदाष्टमी, गंगाष्टमी	4 सिप्तम्बर
शैलपुत्री जय0	10 अप्रैल	देवशयनी एकादशी	10 जुलाई	लल्लेश्वरी जयन्ती	4 सिप्तम्बर
बैशाखी	14 अप्रैल	हार द्वादशी	11 जुलाई	वितस्ता त्रयोदशी	8 सिप्तम्बर
ऋषि पीरश्राद्ध	21 अप्रैल	ज्वाला चतुर्दशी	12 जुलाई	कश्मीरी पण्डितों का	
बेताल षष्ठी	22 अप्रैल	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	13 जुलाई	बलिदान दिवस	
परशुराम जयन्ती	3 मई	वहरात	17 जुलाई	(बट् मजार, कन्यकूट)	9 सिप्तम्बर
अक्षया तृतीया	3 मई	शीतला सप्तमी	20 जुलाई	अनन्त चतुर्दशी	9 सिप्तम्बर
नारद एकादशी	12 मई	कमला एकादशी	24 जुलाई	पितृपक्षारम्भ	10 सिप्तम्बर
शारदा एकादशी	12 मई	नाग पंचमी	2 अगस्त	साहिब सप्तमी	16 सिप्तम्बर
गणेश चतुर्दशी	15 मई	श्रावण द्वादशी	9 अगस्त	हरुद	17 सिप्तम्बर
ज्येष्ठा देवी यात्रा	20 मई	रक्षा बन्धन	12 अगस्त	महालक्ष्मी अष्टमी	18 सिप्तम्बर

पितृामावसी	25 सितम्बर
नवरात्रारम्भ	26 सितम्बर
दुर्गाष्टमी	3 अक्टूबर
महानवमी	4 अक्टूबर
नवदुर्गा विसर्जन	4 अक्टूबर
विजया दशमी	5 अक्टूबर
करवा चौथ	13 अक्टूबर
दीपावली	24 अक्टूबर
भाई दूज	27 अक्टूबर
गोपालाष्टमी	1 नवम्बर
महाकाल भैरवाष्टमी	17 नवम्बर
गीता जयन्ती	3 दिसम्बर
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	7 दिसम्बर
मातृका पूजा	9 दिसम्बर
मुंजहर तहर	9 दिसम्बर
महाकाली जयन्ती	16 दिसम्बर
आनन्देश्वर भैरव जयन्ती	18 दिसम्बर
क्ष्यचरि अमावसी	22 दिसम्बर

चेतना दिवस	27 दिसम्बर
शिशर संक्रान्ति	14 जनवरी
साहिब सप्तमी	14 जनवरी
कश्मीरी पण्डितों का निर्वासण दिसव	19 जनवरी
शिव चतुर्दशी	20 जनवरी
गौरी तृतीया	24 जनवरी
त्रिपुरा चतुर्थी	25 जनवरी
बसन्त पंचमी	26 जनवरी
सूर्य सप्तमी	28 जनवरी
भीष्माष्टमी	29 जनवरी
भीमसेन एकादशी	1 फरवरी
यक्षणी चतुर्दशी	4 फरवरी
माघ पूर्णिमा	5 फरवरी
काव पूर्णिमा	5 फरवरी
हुरि अकदोह	6 फरवरी
होराष्टमी	14 फरवरी
शिव रात्रि (हेरथ)	18 फरवरी

शिवचर्तुदशी	18 फरवरी
डून्यमावसी	20 फरवरी
तैलाष्टमी	27 फरवरी
होली	6 मार्च
थाल भरुण	13 मार्च
सौन्थ	14 मार्च
थाल भरुण	21 मार्च
श्री भट्ट दिवस	21 मार्च
विचार नाग यात्रा (कश्मीर)	21 मार्च

घर पर बच्चों के साथ कश्मीरी भाषा में बात करें

ग्रहण विवरण 2022 के लिये

इस वर्ष भूमण्डल पर चार ग्रहण होंगे परन्तु भारत में केवल दो ग्रहण ही दिखाई देंगे।

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (25 अक्टूबर 2022 ई0 मंगलवार को)

यह ग्रहण 25 अक्टूबर 2022 तदनुसार कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी मंगलवार को दिन के 2 बजे 29 मिन्ट से आरम्भ होकर शां को 6 बजे 32 मिन्ट पर समाप्त होगा। इस ग्रहण का सूतक 24 अक्टूबर को रात के 2 बजे 30 मिन्ट से आरम्भ होगा। यह

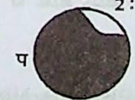


ग्रहण भारत के अलग-अलग शहरों में भिन्न-भिन्न समय पर देखा जाएगा तथा कहीं पर सूर्यास्त सूर्य ग्रहण की समाप्ति से पहले ही होगा। जम्मू में यह ग्रहण दिन के 4 बजे 17 मिन्ट से सूर्यास्त तक दिखाई देगा। यह ग्रहण प्रायः दिन के 4 बजे के पश्चात ही दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण यूरोप, उतरी अफ्रीका तथा उत्तरी हिन्द महासागर में दिखाई देगा। ग्रहण के समय में दान, पाठ, मन्त्र स्तोत्र एवं हवनादि करना शुभ फल का सूचक माना गया है।

यह ग्रहण स्वाती नक्षत्र तथा तुला राशि वालों के लिए शुभ फलदायक नही है।

खग्रास चन्द्र ग्रहण (8 नवम्बर 2022 ई मंगलवार)

यह ग्रहण 8 नवम्बर 2022 तदनुसार कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा मंगलवार को दिन के 2 बजे 39 मिन्ट पर आरम्भ होकर शां के 6 बजे 19 मिन्ट शां पर



समाप्त होगा। भारत में यह ग्रहण चन्द्रोदय के बाद ही दिखाई देगा। भारत में चन्द्रोदय शां के 5 बजे 12 मिन्ट पर है। इस कारण यह ग्रहण शां को चन्द्रोदय के पश्चात् ही दिखाई देगा। इस ग्रहण का सूतक 8 नवम्बर 2022 को प्रातः सूर्योदय के साथ ही आरम्भ होगा। यह ग्रहण भरणी नक्षत्र तथा मेष राशि वालों के लिए अशुभ फलकारक है।

खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण

यह ग्रहण 1 मई 2022 तदनुसार वैशाख कृष्ण पक्ष अमावसी को रात्रि के 12 बजे से रात्रि के 4 बजे तक होगा यह ग्रहण भारत में दिखाई नही देगा। इस कारण किसी प्रकार का व्रत इत्यादि रखने की जरूरत नही है। यह ग्रहण दक्षिणी अमरीका, अर्जनटीना, दक्षिणी एटलाटिक महासागर में दिखाई देगा।

खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण

यह ग्रहण 16 मई 2022 तदनुसार वैशाख शुक्ल पक्ष पूर्णिमा सोमवार को प्रातः 7 बजे 58 मि पर आरम्भ होकर दिन के 11 बजे 25 मि पर समाप्त होगा यह ग्रहण भारत में दिखाई नही देगा, यह ग्रहण केवल सउदी अरब, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका में दिखाई देगा। यहां पर व्रत इत्यादि रखने की जरूरत नही है।

ग्रहण के समय दान, जप, पाठ, मन्त्र जाप, तीर्थ स्नान तथा हवनादि करना मंगलकारी माना जाता है।

ग्रहण के समय मूर्ति र्स्पश करना, खाना-पीना, निद्रा, नाखून काटना वर्जित है।

महाचण्डी यज्ञ

स्वामी स्वयमानन्द आश्रम उमा देवी मन्दिर, मुट्ठी जम्मू में

(3 सिप्तम्बर से 5 सिप्तम्बर 2022 तक)

महाचण्डी यज्ञ भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी शनिवार से भाद्र शुक्ल पक्ष नवमी सोमवार तक स्वामी स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी में विश्व कल्याण तथा शान्ति के लिये आयोजित किया जा रहा है। समस्त प्रजा से सविनय प्रार्थना है कि इस भव्य समारोह में कार्यक्रम के अनुसार सपरिवार सम्मिलित होकर माता का आशीर्वाद प्राप्त करें :

कार्यक्रम

पुष्पार्चन (दुर्गा सप्तशती)	3 सिप्तम्बर 9 बजे प्रातः
कलशस्थापन	3 सिप्तम्बर 9 बजे शां
यज्ञारम्भ	4 सिप्तम्बर 9 बजे प्रातः
पूर्णाहुति	5 सिप्तम्बर 1 बजे दिन
प्रसाद वितरण	5 सिप्तम्बर 2 बजे दिन

मूल मन्त्रः **सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।**

अर्थः तीनों लोकों में आप के जो परम सुन्दर एवं अत्यन्त भयंकर रूप विचरते हैं उन के द्वारा भी आप हमारी तथा इस भूलोक की रक्षा करें।

ज्योतिष की दृष्टि में 2079-5098 (2022-23)

सांवत्सरी पद्धति के अनुसार

वर्ष का राजा शनि

वर्ष का मन्त्री बृहस्पति

धान्य का स्वामी शुक्र

अजनास का स्वामी सूर्य

मेघ का स्वामी बुध

रस का स्वामी चन्द्रमा

धातुओं के स्वामी शनि

फलों के स्वामी भौम

धन का स्वामी शनि

रक्षा मन्त्री बुध

बसन्त का वाहन बाघ

सम्वत्सर का नाम नल

वर्ष का वाहन घोडा

वर्षा भगवती कल्यपाली (शराब बेचने वाली)

आषाढ नवमी 8 जुलाई शुक्रवार

आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश 22 जून प्रातः 11:41 बुधवार

वर्ष का राजा शनि

होने से वर्षा की कमी, प्रजा रोगों से पीडित होवे। राजाओं का युद्ध, चोरों से भय तथा प्रजा में भूखमरी जैसे हालात।

वर्ष का मन्त्री बृहस्पति

होने से पृथिवी धान्य से युक्त तथा समयानुसार वर्षा, राजाओं में प्रजापालन की प्रवृति।

धान्य का स्वामी शुक्र

होने से चारों ओर दुर्भिक्ष तथा आपसी कलह, पूरे देश में विग्रह की स्थिति होगीं।

अजनास के स्वामी सूर्य

होने से सस्यधान्य की उपज आशा से कम, वृक्षादि की उपज आशा से अधिक, धान्य सस्ता हो सकता है, चोर बाज़ारी का योग, वर्षा की अधिकता तथा राजाओं का टकराव देखने में आएगा।

मेघ के स्वामी बुध

होने से वर्षा की अधिकता, धान्य व रसदार वस्तुओं की अधिकता, ब्रह्मण वर्ग यज्ञादि कार्यो में लगे रहेंगे तथा पृथ्वी हर ओर से सुख से परिपूर्ण होगी।

रस का स्वामी चन्द्रमा

होने से पृथ्वी रसदार वस्तुओं तथा धनधान्य से परिपूर्ण होगी, विवाह संस्कारों का बोल बाला होगा, वर्षा भी आशा से अधिक होगी।

धातुओं के स्वामी शनि

होने से सीसा, लोहा, ज़स्त तथा काले वस्तुओं के भावों में वृद्धि होगी।

रक्षा मन्त्री बुध

होने से प्रजा हर प्रकार के सुखों का आनन्द लेगी, प्रजा निर्भय होकर अपना कार्य करेगी तथा आर्थिक स्थिति में वृद्धि का योग।

फलों के स्वामी भौम

होने से पृथिवी फल व फूलों से युक्त होगी तथा बाजार का भाव भी ठीक रहेगा।

धन का स्वामी शनि

होने से धन की कमी, शासक वर्ग रोगों से युक्त रहेगी, व्यापारी वर्ग धन विहीन होंगे, ब्राह्मण वर्ग भी चिन्ता से मुक्त रहेंगे।

सम्वत्सर का नाम नल

होने से घोर अकाल की स्थिति, धान्य जल की कमी के कारण सूख सकता है, धान्य का भाव तेज रहेगा।

वर्ष का वाहन घोडा

होने से भूमि कम्प हो, शासक वर्ग में विग्रह होंगे। वर्षा का अभाव, अन्न महंगा, भूस्खलन के कारण फसलों की हानि एवं प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन की हानि। महंगाई का दबदबा राजनैतिक मतभेद के कारण सत्ता परिवर्तन का योग।

आद्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश

22 जून बुधवार 11-41 दिन नवमी तिथि पर होने से चारों ओर उत्पात विशेषतया पंजाब, जम्मू कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली आदि पश्चिमी राज्यों में आकाशीय प्रकोप एवं गर्मी की अधिकता, खडी फसलों को नुकसान, धान्य आदि का भाव तेज़ रहेगा।

आषाढ नवमी 8 जुलाई शुक्रवार को

आषाढ नवमी को शुक्रवार तथा चित्रा और स्वाति नक्षत्र का होना शुभफल का संकेत नही है। इस के कारण कई प्रदेशों में तेज आंधियां व तूफानों का दृश्य देखने में आयेगा, जन-धनादि सम्पदा को हानि का योग। कहीं पर अतिवृष्टि तथा कहीं पर अनावृष्टि का योग, जो धान्य के उपज के लिए शुभ नहीं है। कहीं पर बाढ तथा कही पर सूखे की स्थिति रहेगी।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:

हनन किया हुआ धर्म प्रजा को भी मारता है और रक्षित किया हुआ धर्म लोगों की रक्षा करता है।

भारत

वर्ष कुण्डली
(1 अप्रैल 22, 11:53 दिन)

सिं क मि वृ रा मे कं मी सू चं बु तु गु वृं कुं म शु के धं भौ श

जगत् कुण्डली
(14 अप्रैल 8:40 प्रात:)

सिं क मि वृ रा मे कं मी सू चं बु तु गु वृं कुं म शु के धं भौ श

वर्ष के आरम्भ पर पांच क्रूर ग्रहों ने पांच पदों तथा शुभ ग्रहों ने पांच पदों पर अपना आधिपत्य जमाया है वर्ष का राजा शनि देव तथा मन्त्री बृहस्पति है परन्तु शनि देव ने महत्व पूर्ण तीन पद् (राजा, धातू, कोश) अपने पास रखे हैं जिस के विषय में फलित शास्त्रों में लिखा है

शनैश्चरे भूमि पतौ सकृज्जलं
प्रभूतरोगै: परिपीडिता जना:

युद्धं नृपाणां बहु तस्करादभ्यं
भवन्ति लोकाः क्षुधया प्रपीडिताः।।

इस के फलस्वरूप देशों में विद्रोह, प्राकृतिक दुर्घटनायें, तथा आतंकियों का दब दबा, प्रजा में क्रोध तथा उत्तेजना एवं धन की लालसा बडेगी, वर्षा की बेडंगी चाल के कारण खाद्य पदार्थों की उपज में हानि होगी जिस के परिणाम स्वरूप कृषि वर्ग परेशान रहेगा, कहीं पर आन्तरिक युद्ध जैसा माहोल देखने को मिलेगा, महंगाई का बोल बाला अपनी चरम सीमा को भी पार कर सकती है जिस के कारण प्रजा में असमंजस की स्थिति रहेगी कुछ प्रदेशों में बाढ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से फसलों को भारी क्षति रहेगी। देश की आर्थिक स्थिति अस्थिर रहने से साधारण जनता परेशान तथा दुखी रहेगी, बाजारों में धनागमन की कमी तथा छोटे व्यापारियों तथा कृषि वर्ग को भी हानि का मुंह देखना पडेगा। मन्त्री का पद बृहस्पति देव ने सम्भाला है जिस के फल स्वरूप शासक वर्ग प्रजा की भलाई के लिये विकास की बडी बडी योजनाओं को अमली रूप देने में किसी प्रकार की कसर नही छोडेगा, धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों के आयोजन में शासकवर्ग कृत संकल्प रहेगा। विश्व राजनीति में कुछ नए समीकरण उभर का आएगे। आतंकवादी तत्वों की देशघाती मानसिकता के कारण पूरा विश्व परेशान रह सकता है। सतारूढ पार्टी विकास शील योजनाओं पर आशातीत खर्चो के बावजूद भी आशातीत सफलता प्राप्त करने में असफल रहेगी, सत्तारूढ पार्टी को अत्यन्त कठिन एवं गम्भीर समस्याओं का सामना करना पडेगा।

सम्वत्सर 'नल' होने से देश में दुर्भिक्ष, महंगाई का दौर एवं प्रशासन की दोषपूर्ण नीतियों के कारण प्रजा में असन्तोष की भावना बडती रहेगी। विश्व एवं भारत का सामाजिक एवं राजनीतिक माहोल विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। राष्ट्रीय नेताओं तथा विपक्षी दलों में अधिक टकराव की स्थिति बनी रहेगी, चारों ओर लडाई झगडे एवं साम्प्रदायिक दंगे, फसाद,

चोरी, लूटमार एवं प्राकृतिक उपद्रव एवं दुर्घटनाये, सत्ता परिवर्तन एवं आतंकी घटनायें होती रहेंगी।

प्रशासन देश की अर्थ व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए हर प्रकार का हथकंडा प्रयोग करेगा तथा कुछ हद तक उस में सफलता भी प्राप्त करने के साथ साथ देश को प्रगति के पथ पर ले जाने में कुछ हद तक सफल भी होगा। विश्व के किसी प्रमुख नेता के अपदस्य अथवा मृत्यु का योग।

इस वर्ष भारत में दो ग्रहण देखने में आयेंगे दोनों ग्रहण मंगलवार को होने से प्रधान राज्य नेताओं को परेशानियों का सामना करना पडेगा, राज्य नेताओं तथा प्रजा के सम्बन्ध में अचानक दूरी का माहोल बन सकता हे जो शासक वर्ग की नींद उडा सकता है। इन ग्रहणों के कारण कहीं पर अग्निकाण्ड चोर भय, युद्ध भय तथा प्राकृतिक प्रकोपों से प्रजा को कष्ट का योग।

विश्व की अशान्त स्थिति को देखते हुए तथा आतंकवाद की गतिविधियों को फैलते हुए विश्व के प्रमुख देश विश्व शान्ति के लिए अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर बडे-बडे सम्मेलनों के आयोजनों में लगे रहेंगे, भारत अपनी प्रभुसता तथा प्रतिष्ठा को स्थिर रखने में सफल रहेगा, विश्व के शक्ति शाली देश भारत के साथ मित्रता, व्यापारिक सम्बन्ध एवं राजनैतिक सम्बन्धों को बनाये रखने में सिद्ध हसत रहेगा।

जम्मू कश्मीर

वर्ष का राजा शनि तथा मन्त्री बृहस्पति का विशेष प्रभाव जम्मू कश्मीर पर ही पडता है। शनि का राजा होना जम्मू कश्मीर के लिये शुभ फल का सूचक नही है परन्तु बृहस्पति देव 13 अप्रैल को मीन राशि में आता है बृहस्पति ने मन्त्री पद सम्भाला है जो हर प्रकार से शुभफल का सूचक हैं परन्तु 28 जुलाई से बृहस्पति देव वक्री होता है। ग्रह का वक्री होना शुभफल का सूचक नही है जिस के प्रभाव से

अराजकता का माहोल बनने की सम्भावना। जम्मू कश्मीर में अलगाववाद तथा साम्प्रदायिक उपद्रव तथा आतंकवाद के विस्फोटक दृश्य देखने में आयेंगे जो यहां की प्रगति के प्रोग्रामों में रुकावट के विशेष कारण बनेगा। आतंकवादी अपनी कार्य प्रणाली में समयानुसार नया नया रूप देते रहेंगे जो यहां की सुरक्षा एजनसियों तथा प्रशासन के लिए सिर दर्द बना रहेगा परन्तु शासक वर्ग आतंकवाद को झड से समाप्त करने में बहुत हद तक सफलता प्राप्त करेगा, शासक वर्ग यहां की प्रजा के लिए नई-नई कार्यप्रणाली को आरम्भ करने में पूरा जोर लगाएगा। यहां की सीमाओं पर हर समय युद्ध जैसा माहोल दिखता रहेगा, प्रजा बाजार में बिकनेवाली खाद्यानों तथा अन्य वस्तुओं की महंगाई के कारण हर समय दु:खी एवं परेशान रहेगी।

(सच्चाई क्या है ? वह तो सर्व शक्तिमान प्रभु ही जानता है।)

धर्म गुरु पं0 प्रेमनाथ शास्त्री

की 102वीं जयन्ती

(17 सिप्तम्बर शनिवार 2022 को)

धर्म गुरु पं0 प्रेमनाथ शास्त्री जी की 102वीं जयन्ती 17 सिप्तम्बर शनिवार तदनुसार आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी को विजयेश्वर पंचांग कार्यालय, अजीत कालोनी गोल गुजराल जम्मू में मनाई जाएगी। इस शुभ अवसर पर प्रीति भोज तथा पुष्पार्चन का कार्यक्रम रखा गया है आप सभी से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस भव्य समारोह में सम्मिलित होकर हमें सेवा का अवसर प्रदान करें।

कार्यक्रम

पुष्पार्चन	17 सिप्तम्बर, प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
प्रसाद वितरण	17 सिप्तम्बर, 1 बजे दिन

प्रबन्धक

94191-03424



चैत्र शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

मीन में सूर्य, बुध। वृष में राहु। वृश्चिक में केतु। मकर में भौम, शनि। कुम्भ में गुरु, शुक्र।

दिन	मान	चैत्र	अप्रैल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण, ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	3	20	2	शनि	रेव	दि	11	20	प्रति	दि	11	58	नवरेह-नवरात्रारम्भ, थालस बुथ वुछुन, 11:20 दिन मेष में चन्द्र और (A)	6/23	6/45
	10	21	3	रवि	अश्वि	दि	12	36	द्विती	दि	12	38	आनन्दः।	21	46
	13	22	4	सोम	भर	दि	2	27	तृती	दि	1	55	जंग त्रय, यज्ञ शिव मन्दिर पुरखू, फैज़ 2, 9 बजे रात वृष में चन्द्र, (B)	19	47
	18	23	5	भौम	कृति	दि	4	51	चतु	दि	3	45	मुसलम्। वैशाखी 14 अप्रैल	18	48
	24	24	6	बुध	रोहि	प्र	7	39	पंच	दि	6	1	शूलम्।	17	49
	31	25	7	गुरु	मृग	प्र	10	40	षष्ठी	प्र	8	32	कुमार षष्ठी, 9:9 दिन मिथुन में चन्द्र, 3:16 दिन कुम्भ में भौम, मृत्युः।	16	50
	33	26	8	शुक्र	आर्द्र	प्र	1	42	सप्त	प्र	11	5	11:58 दिन मेष में बुध, काम्यः।	15	51
	38	27	9	शनि	पुर्न	प्र	4	30	अष्ट	प्र	1	23	दुर्गाष्टमी, 9:50 रात कर्कट में चन्द्र, छत्रम्।	14	52
	45	28	10	रवि	तिष्य	दिन रात			नव	प्र	3	15	रामनवमी, नवदुर्गा विसर्जन, मातृका पूजा, उमा जयन्ती, चक्रेश्वर (C)	12	52
	48	29	11	सोम	तिष्य	दि	6	50	दश	प्र	4	30	2:25 रात से गण्डान्त, प्राजापत्यः।	11	53
	51	30	12	भौम	आश्ले	दि	8	34	एका	प्र	5	2	2:56 दिन तक गंडान्त, 8:34 दिन सिंह में चन्द्र, 2:53 दिन मेष में राहु, (D)	10	54
31	58	31	13	बुध	मघा	दि	9	36	द्वाद	प्र	4	49	3:45 दिन मीन में गुरु, स्वा कुमार जी जयन्ती, गड्डी, मासान्त, चरः।	8	54
32	3	वैश	14	गुरु	पूफा	दि	9	55	त्रयो	प्र	3	55	3:53 दिन कन्या में चन्द्र, 8:40 दिन मेष में सूर्य, मुर्हूत 30 (E)	7	55
	7	2	15	शुक्र	उफा	दि	9	34	चर्तु	प्र	2	25	शूलम्।	6	56
	13	3	16	शनि	हस्त	दि	8	39	पूर्णि	प्र	12	24	हनुमान जन्महोत्सव, 8 बजे रात तुला में चन्द्र, मृत्युः।	4	56

(A) पंचक समाप्त, 5:32 दिन तक गण्डान्त, प्राजापत्य। (B) सुनशा देवी यात्रा, ब्राह, चरः।(C) यात्रा, कश्मीर, पुलौडा जम्मू, श्रीवत्सः। (D) कामदा एकादशी, आनन्दः। (E) समुद्रीय संक्रान्ति व्रत, मुसलम्।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्विती से पूर्णि अपने दिन।



वैशाख कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

मेष में सूर्य, बुध, राहु। तुला मे केतु। मकर में शनि। कुम्भ में भौम, शुक्र। मीन में गुरु।

दिन	मान	वैशा	अप्रैल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण, ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	18	4	17	रवि	चित्र	दि	7	15	प्रति	प्र	10	1	(स्वा प्र 5:33) काम्य:।	6/3	6/57
	21	5	18	सोम	विशा	प्र	3	37	द्विती	प्र	7	23	10:7 रात वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	2	58
	26	6	19	भौम	अनू	प्र	1	38	तृती	दि	4	38	संकट निवारण चतुर्थी, व्रजम्।	1	58
	31	7	20	बुध	ज्येष्ठ	प्र	11	40	चतु	दि	1	52	11:40 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ,6:9 शां से गण्डान्त,ध्वांक्ष:।	0	59
	37	8	21	गुरु	मूल	प्र	9	50	पंच	दि	11	12	ऋषिपीर श्राद्ध 5:07 प्रात: तक गण्डान्त, श्री पंचमी, धौम्य:।	5/59	7/0
	41	9	22	शुक्र	पूषा	प्र	8	13	षष्ठी	दि	8	42	वैताल षष्ठी, , 1:51 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्ध:।	58	0
	46	10	23	शनि	उषा	दि	6	52	सप्त	दि	6	27	त्र्यहः (अष्ट प्र 4:29), क्षय:।	57	1
	51	11	24	रवि	श्रव	दि	5	51	नव	प्र	2	52	12:20 रात वृष में बुध, मुसलम्।	55	2
	53	12	25	सोम	धनि	दि	5	11	दश	प्र	1	38	बुल बुल लंकर यज्ञ, 5:28 प्रात: कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	54	2
	58	13	26	भौम	शत	दि	4	55	एका	प्र	12	48	वरूथिनी एकादशी, मृत्यु:।	53	3
33	3	14	27	बुध	पूभा	दि	5	4	द्वाद	प्र	12	23	10:59 दिन मीन में चन्द्र, ईश्वर स्वरूप शैवाचार्य श्री स्वा लक्ष्मण जी जयन्ती (A)	52	4
	8	15	28	गुरु	उभा	दि	5	39	त्रयो	प्र	12	26	छत्रम्।	51	5
	11	16	29	शुक्र	रेव	दि	6	42	चर्तु	प्र	12	57	6:42 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12:23 दिन से 1:4 रात (B)	50	6
	16	17	30	शनि	अश्वि	प्र	8	12	अमा	प्र	1	57	सौम्य:।	49	7

(A) कश्मीर, जम्मू, देहली, काम्य:।**(B)** तक गंडान्त, 7:51 दिन कुम्भ में शनि, 6:16 शां मीन में शुक्र,. श्रीवत्स:।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से अष्टमी पहले दिन, नवमी से अमा अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से अष्ट पहले दिन, नवमी से अमा अपने दिन।

अष्टमी का जन्मदिन 23 अप्रैल

वैशाख शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

मेंष में सूर्य, राहु। वृष में बुध। तुला में केतु। कुम्भ में शनि, भौम। मीन में गुरु, शुक्र।

दिन	मान	वैश	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	बसन्त ऋतु, उत्तरायण, ग्रहसंचार बजे मिन्टो में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	21	18	1	रवि	भर	प्र	10	9	प्रति	प्र	3	25	4:43 रात वृष में चन्द्र, कालदण्ड:।	6/48	7/8
	26	19	2	सोम	कृति	प्र	12	32	द्विती	प्र	5	25	स्थिर:।	47	8
	28	20	3	भौम	रोहि	प्र	3	17	तृती	दिन रात			दिन अधिक, श्री परशुराम जयन्ती, अक्षया तृतीया, मातंग:।	46	9
	33	21	4	बुध	मृग	दिन रात			तृती	दि	7	32	4:45 दिन मिथुन में चन्द्र, अमृतम्।	45	9
	38	22	5	गुरु	मृग	दि	6	15	चतु	दि	10	00	मृत्यु:।	44	10
	43	23	6	शुक्र	आर्द्र	दि	9	19	पंच	दि	12	32	कुमार षष्ठी, काम्य:।	43	11
	45	24	7	शनि	पुर्न	दि	12	17	षष्ठी	दि	2	56	5:34 प्रातः कर्कट में चन्द्र, श्री शंकराचार्य जयन्ती, छत्रम्।	43	11
	46	25	8	रवि	तिष्य	दि	2	56	सप्त	दि	5	0	विजया सप्तमी, गंगा जयन्ती, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, श्रीवत्स:।	42	12
	54	26	9	सोम	अश्ले	दि	5	7	अष्ट	दि	6	32	5:7 शा सिंह में चन्द्र, 10:39 दिन से 9:46 राततक गंडान्त, सौम्य:।	41	13
	56	27	10	भौम	मघा	दि	6	39	नव	प्र	7	24	कालदण्ड:।	41	14
34	1	28	11	बुध	पूफा	प्र	7	27	दशा	प्र	7	31	1:12 रात कन्या में चन्द्र, स्थिर:।	40	15
	5	29	12	गुरु	उफा	प्र	7	29	एका	दि	6	51	नारद एकादशी, डुमटबल यात्रा, मातंग:।	39	16
	8	30	13	शुक्र	हस्त	दि	6	47	द्वाद	दि	5	27	मासान्त, अमृतम्।	39	17
	11	ज्ये	14	शनि	चित्र	दि	5	27	त्रयो	दि	3	22	6:11 प्रातः तुला में चन्द्र, काण्ड:।	38	17
	16	2	15	रवि	स्वाति	दि	3	34	चर्तु	दि	12	45	गणेश चतुर्दशी, गणपतयार, गणेशबल यात्रा, हानन्द चौलग्राम यात्रा, (A)	37	18
	20	3	16	सोम	विशा	दि	1	17	पूर्णि	दि	9	43	7:53 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	36	18

(A) विनायबल यात्रा, छत्रगुल, 5:28 प्रातः वृष में सूर्य मुहूर्त 15, दयिाई, ग्रीष्म ऋतु, संक्रान्ति व्रत, आलापक:।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से अष्ट पहले दिन, नव से एका अपने दिन, द्वाद से पूर्णि पहले दिन:।

मध्याह्न : प्रति से तृती अपने दिन, चतु का पहले दिन, पंच से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन।

तृतीया का जन्मदिन 4 मई



ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

वृष में सूर्य, बुध। तुला में केतु। कुम्भ में भौम, शनि। मीन में गुरु, शुक्र। मेष में राहु।

दिन	मान	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण, ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	21	4	17	भौम	अनू	दि	10	45	प्रति	दि	6	25	त्र्यहः (द्वि प्र 3:00) 2:51 रात से गंडान्त, 9:31 दिन मीन में भौम, (A)	5/36	7/19
	26	5	18	बुध	ज्येष्ठ	दि	8	9	तृती	प्र	11	36	8:9 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1:30 दिन तक गंडान्त, ध्वांक्षः।	35	20
	30	6	19	गुरु	मूला	दि	5	36	चतु	प्र	8	23	(पूषा प्र 3:16) संकट निवारण चतुर्थी, धौम्यः।	35	21
	33	7	20	शुक्र	उषा	प्र	1	17	पंच	दि	5	29	8:44 दिन मकर में चन्द्र, ज्येष्ठा देवी यज्ञ, जीठ्यार आनन्दः।	34	21
	35	8	21	शनि	श्रव	प्र	11	45	षष्ठी	दि	2	59	स्थिरः।	33	22
	38	9	22	रवि	धनि	प्र	10	46	सप्त	दि	12	59	11:11 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मातंगः।	33	23
	42	10	23	सोम	शत	प्र	10	21	अष्ट	दि	11	34	8:26 रात मेष में शुक्र, अमृतम्।	32	24
	47	11	24	भौम	पूभा	प्र	10	32	नव	दि	10	45	4:26 दिन मीन में चन्द्र, काण्डः।	31	25
	49	12	25	बुध	उभा	प्र	11	19	दश	दि	10	32	अलापकः।	30	25
	51	13	26	गुरु	रेव	प्र	12	37	एका	दि	10	54	अपरा एकादशी, श्री भद्रकाली जयन्ती, 12:37 रात मेष में चन्द्र और पंचक (B)	30	25
	52	14	27	शुक्र	अश्वि	प्र	2	25	द्वाद	दि	11	47	7:2 प्रातः तक गण्डान्त, वज्रम्।	30	26
	55	15	28	शनि	भर	प्र	4	38	त्रयो	दि	1	9	ध्वांक्षः।	29	27
	56	16	29	रवि	कृति	दिन रात			चर्तु	दि	2	55	11:15 दिन वृष में चन्द्र, वट सावित्री व्रत, धौम्यः।	29	28
35	0	17	30	सोम	कृति	दि	7	11	अमा	दि	4	59	सोमामावसी, नन्दकीश्वर यात्रा, सुम्बल, सीर, आक्लपुर जम्मू, स्थिरः।	29	28

(A) श्रीकाक जी यज्ञ नगरोटा, हाँगुल गुँड़, कश्मीर, वज्रम्। (B) समाप्त, 6:10 शां से गंडान्त, मैत्रम्।

श्राद्ध : प्रति, द्विती का पहले दिन, तृती से पंच अपने दिन, षष्ठी से अमा पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति, द्विती का पहले दिन, तृती से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वाद पहले दिन, त्रयो से अमा अपने दिन।

द्वितीया का जन्मदिन 17 मई



ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

वृष में सूर्य, बुध। तुला में केतु। कुम्भ में शनि। मीन में भौम, गुरु। मेष में शुक्र, राहु।

दिन	मान	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण, ग्रहसंचार बजे मिन्टो में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	2	18	31	भौम	रोहि	दि	10	00	प्रति	दि	7	18	11:29 रात मिथुन में चन्द्र, मातंगः।	5/29	7/28
	3	19	जून	बुध	मृग	दि	12	59	द्विती	प्र	9	46	भग0 गोपीनाथ यज्ञ, अमृतम्।	28	29
	7	20	2	गुरु	आर्द्र	दि	4	3	तृती	प्र	12	17	काण्डः।	28	29
	7	21	3	शुक्र	पुर्न	दि	7	4	चतु	प्र	2	41	12:19 दिन कर्कट में चन्द्र, अलापकः।	28	30
	10	22	4	शनि	तिष्य	प्र	9	54	पंच	प्र	4	52	मैत्रम्।	28	30
	10	23	5	रवि	अश्ले	प्र	12	24	षष्ठी	दिन रात			दिन अधिक, कुमार षष्ठी 12:24 रात सिंह में चन्द्र, 5:30 शां से गंडान्त, वज्रम्।	28	31
	13	24	6	सोम	मघा	प्र	2	25	षष्ठी	दि	6	39	6:58 प्रातः तक गंडान्त, ध्वांक्षः।	28	32
	15	25	7	भौम	पूफा	प्र	3	48	सप्त	दि	7	54	धौम्यः।	28	32
	17	26	8	बुध	उफा	प्र	4	30	अष्ट	दि	8	30	10:3 दिन कन्या में चन्द्र, ज्येष्ठाष्टमी, क्षीर भवानी यात्रा, मंजगाम, टिक्कर, (A)	27	32
	17	27	9	गुरु	हस्त	प्र	4	25	नव	दि	8	21	गंगा दशहरा, क्षयः।	27	32
	20	28	10	शुक्र	चित्र	प्र	3	36	दश	दि	7	26	4:6 दिन तुला में चन्द्र, गजः।	27	33
	20	29	11	शनि	स्वाति	प्र	2	4	एका	दि	5	45	त्र्यहः (द्वा प्र 3:23) निर्जला एकादशी, श्री अभिनवगुप्त जयन्ती, सिद्धः।	27	33
	22	30	12	रवि	विशा	प्र	11	57	त्रयो	प्र	12	26	6:32 शां वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	26	34
	22	31	13	सोम	अनू	प्र	9	23	चर्तु	प्र	9	2	मानसम्।	26	34
	22	32	14	भौम	ज्येष्ठ	दि	6	31	पूर्णि	दि	5	21	6:31 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1:17 दिन से 11:51 रात तक (B)	26	35

(A) रवयार, लक्टीपोरा, दिवसर, जगती, जानीपुर जम्मू, शालीमार गाडर्न, प्रवर्धः। (B) गंडान्त, श्री माता रूप भवानी प्रकाशोत्सव, मासान्त, मुद्गरम्।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्विती से षष्ठी अपने दिन, सप्त से द्वाद पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से षष्ठी अपने दिन, सप्त से द्वाद पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

षष्ठी का जन्मदिन 6 जून
द्वादशी का जन्मदिन 11 जून



आषाढ कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

वृष में सूर्य, बुध। तुला में केतु। कुम्भ में शनि। मीन में भौम, गुरु। मेष में शुक्र, राहु।

दिन	मान	आष	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण/दक्षिणयन, ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	25	1	15	बुध	मूला	दि	3	32	प्रति	दि	1	31	संक्रान्ति व्रत, 12:2 दिन मिथुन में सूर्य, मुर्हूत 30 किनारी, ध्वजः।	5/26	7/35
	25	2	16	गुरु	पूषा	दि	12	36	द्विती	दि	9	45	5:54 शां मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	26	35
	25	3	17	शुक्र	उषा	दि	9	55	तृती	दि	6	10	त्र्यहः (चतु प्र 2:59) संकट निवारण चतुर्थी, आनन्दः।	27	36
	26	4	18	शनि	श्रव	दि	7	38	पंच	प्र	12	19	6:42 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 8:15 दिन वृष में शुक्र, स्थिरः।	27	36
	25	5	19	रवि	धनि	दि	5	55	षष्ठी	प्र	10	18	(शत प्र 4:52) मातंगः।	27	36
	25	6	20	सोम	पूभा	प्र	4	34	सप्त	प्र	9	1	10:34 रात मीन में चन्द्र, गजः।	27	37
	25	7	21	भौम	उभा	प्र	5	2	अष्ट	प्र	8	30	सिद्धः।	28	37
	27	8	22	बुध	रेव	दिन रात			नव	प्र	8	45	11:40 रात से गण्डान्त, 11:41 दिन आर्द्रा में सूर्य, दक्षिणायन, उन्मूलम्।	28	37
	27	9	23	गुरु	रेव	दि	6	13	दशा	प्र	9	41	6:13 प्रातः मेष में चन्द्र ओर पंचक समाप्त, 12:38 दिन तक गण्डान्त, मैत्रम्।	28	37
	26	10	24	शुक्र	अश्वि	दि	8	3	एका	प्र	11	12	योगिनी एकादशी, वज्रम्।	29	37
	25	11	25	शनि	भर	दि	10	23	द्वाद	प्र	1	9	5:1 शां वृष में चन्द्र, ध्वांक्षः।	29	37
	23	12	26	रवि	कृति	दि	1	5	त्रयो	प्र	3	25	धौम्यः।	29	38
	23	13	27	सोम	रोहि	दि	4	1	चर्तु	दिन रात			दिन अधिक, 5:38 प्रातः मेष में भौम, प्रवर्धः।	30	38
	22	14	28	भौम	मृग	दि	7	4	चर्तु	दि	5	52	5:32 प्रातः मिथुन में चन्द्र, क्षयः।	30	38
	22	15	29	बुध	आर्द्र	प्र	10	7	अमा	दि	8	21	गजः	30	38

(A)

श्राद्ध : प्रति से चतु पहले दिन, पंच से चर्तु अपने दिन, अमा का पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती से चतु पहले दिन, पंच से चर्तुद अपने दिन, अमा का पहले दिन।

चतुर्थी का जन्मदिन 17 जून

चतुदर्शी का जन्मदिन 28 जून



आषाढ शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

मिथुन में सूर्य। तुला में केतु। कुम्भ में शनि। मीन में गुरु। मेष में भौम, राहु। वृष में बुध, शुक्र।

दिन मान	आष	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु-दक्षिणायन, ग्रहसंचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35 21	16	30	गुरु	पुन	प्र	1	6	प्रति	दि	10	49	6:22 शां कर्कट में चन्द्र, सिद्धः।	5/31	7/38
20	17	जुल	शुक्र	तिष्य	प्र	3	55	द्विती	दि	1	9	शिवा भगवती जयन्ती, उन्मूलम्।	31	38
20	18	2	शनि	आश्ले	दिन रात			तृती	दि	3	17	9:41 दिन मिथुन में बुध, 11:56 रात से गण्डान्त, मानसम्।	31	38
18	19	3	रवि	आश्ले	दि	6	29	चतु	दि	5	6	6:29 प्रातः सिंह में चन्द्र, 1:6 दिन तक गंडान्त, भग0 गोपीनाथ महोत्सव वज्रम्।	32	38
17	20	4	सोम	मघा	दि	8	43	पंच	दि	6	32	कुमार षष्ठी ध्वांक्षः।	32	38
16	21	5	भौम	पूफा	दि	10	29	षष्ठी	दि	7	28	4:51 दिन कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	32	38
15	22	6	बुध	उफा	दि	11	43	सप्त	प्र	7	48	हार सतम प्रवर्धः।	33	38
13	23	7	गुरु	हस्त	दि	12	19	अष्ट	दि	7	28	12:21 रात तुला में चन्द्र, हार अष्टमी, यज्ञ राज्ञाभगवती रूणी पोरा मद्गन, क्षयः।	33	38
12	24	8	शुक्र	चित्र	दि	12	12	नव	दि	6	25	आषाढ नवमी, शारिका जयन्ती, हारी पर्वत, पलोडा, जया देवीजयन्ती, (A)	33	38
11	25	9	शनि	स्वाति	दि	11	24	दशा	दि	4	39	4:20 रात वृश्चिक में चन्द्र, सिद्धः।	34	38
7	26	10	रवि	विशा	दि	9	54	एका	दि	2	13	हरि स्वाप, देवश्यनी एकादशी, उन्मूलम्।	35	37
6	27	11	सोम	अनू	दि	7	49	द्वाद	दि	11	13	(ज्ये प्र 5:15) भ0 गोपी नाथ जयन्ती, हार बाह लोकभवन यात्रा, 12:6 (B)	36	37
5	28	12	भौम	मूल	प्र	2	21	त्रयो	दि	7	46	त्र्यहः (चर्तु प्र 4:00) 2:50 दिन मकर में वक्री शनि,10:33 दिन तक (C)	36	37
3	29	13	बुध	पूषा	प्र	11	18	पूर्णि	प्र	12	7	4:32 रात मकर में चन्द्र,10:49 दिन मिथुन में शुक्र, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, छडी (D)	37	36

(A) बिजबिहारा गजः। (B) रात से गंडान्त, मानसम्। (C) गंडान्त, 5:15 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, ज्वाला चर्तुदशी, खिव यात्रा छत्रम्।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त, अष्ट का अपने दिन, नव से चतुर्द पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन। (D) स्नान मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, श्रीवत्सः।

मध्याह्न: प्रति का पहले दिन, द्विती से एक अपने दिन, द्वाद से चतुर्द पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन।

चतुर्दशी का जन्मदिन 12 जुलाई



श्रावण कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

मिथुन में सूर्य, बुध, शुक्र। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में भौम, राहु।

दिन	मान	आष	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म / वर्षा ऋतु - दक्षिणयन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	58	30	14	गुरु	उषा	प्र	8	17	प्रति	प्र	8	16	सौम्यः।	5/37	7/36
	57	31	15	शुक्र	श्रव	दि	5	30	द्विती	दि	4	39	4:16 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, धौम्यः।	38	36
	53	32	16	शनि	धनि	दि	3	9	तृती	दि	1	27	12:9 रात कर्कट में बुध, संकट निवारण चतुर्थी, मासान्त, प्रवर्धः।	38	36
	52	श्राव	17	रवि	शत	दि	1	24	चतु	दि	10	49	10:55 रात कर्कट में सूर्य, मुहूर्त 30, किनारी, संक्रान्ति व्रत, वर्षा ऋतु, क्षयः।	39	35
	51	2	18	सोम	पूभा	दि	12	23	पंच	दि	8	55	6:33 प्रातः मीन में चन्द्र, श्रावण सोमवार व्रत, ग्रजः।	39	35
	46	3	19	भौम	उभा	दि	12	11	षष्ठी	दि	7	49	सिद्धः।	40	35
	46	4	20	बुध	रेव	दि	12	49	सप्त	दि	7	35	12:49 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, शीतला सप्तमी, (A)	40	35
	41	5	21	गुरु	आश्वि	दि	2	16	अष्ट	दि	8	12	मानसम्।	41	34
	38	6	22	शुक्र	भर	दि	4	24	नव	दि	9	32	11:1 रात वृष में चन्द्र, मुद्गरम्।	42	34
	35	7	23	शनि	कृति	दि	7	2	दश	दि	11	27	ध्वजः।	42	33
	30	8	24	रवि	रोहि	प्र	9	59	एका	दि	1	45	कमला एकादशी, प्राजापत्यः।	43	32
	26	9	25	सोम	मृग	प्र	1	5	द्वाद	दि	4	15	11:32 दिन मिथुन में चन्द्र, श्रावण सोमवार व्रत, आनन्दः।	44	32
	23	10	26	भौम	आर्द्र	प्र	4	8	त्रयो	दि	6	47	चरः।	45	31
	20	11	27	बुध	पुर्न	दिन रात			चर्तु	प्र	9	11	12:21 रात कर्कट में चन्द्र, मुसलम्।	45	30
	16	12	28	गुरु	पुर्न	दि	7	4	अमा	प्र	11	24	सिद्धः।	46	30

वहरात
17 जुलाई

(A) 6:35 प्रातः से 6 बज शां तक गंडान्त, उन्मूलम्।

श्राद्ध : प्रति, द्विती का अपने दिन, तृती से त्रयो पहले दिन, चर्तुद, अमा अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से दश पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

श्रावण शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

ककर्ट में सूर्य, बुध। तुला में केतु। मकर में शनि, मीन में गुरु। मेष में भौम, राहु।

दिन	मान	श्राव	जुल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	11	13	29	शुक्र	तिष्य	दि	9	46	प्रति	प्र	1	21	उन्मूलम्।	5/47	7/29
	8	14	30	शनि	आश्ले	दि	12	12	द्विती	प्र	3	00	12:12 दिन सिंह में चन्द्र, 5:37 प्रातः से 6:48 शां तक गंडान्त, मानसम्।	47	27
	5	15	31	रवि	मघा	दि	2	19	तृती	प्र	4	18	3:44 रात सिंह में बुध, मुद्गरम्।	48	27
	1	16	अग	सोम	पूफा	दि	4	5	चतु	प्र	5	13	श्रावण सोमवार व्रत 10:28 रात कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	48	25
33	56	17	2	भौम	उफा	दि	5	28	पंच	प्र	5	41	नाग पंचमी, प्राजापत्यः।	49	25
	52	18	3	बुध	हस्त	दि	6	23	षष्ठी	प्र	5	40	कुमार षष्ठी, ज्यो आफताब शर्मा की 135वीं जयन्ती, आनन्दः।	49	24
	51	19	4	गुरु	चित्र	दि	6	47	सप्त	प्र	5	6	6:39 प्रातः तुला में चन्द्र, चरः।	50	23
	46	20	5	शुक्र	स्वा	दि	6	36	अष्ट	प्र	3	56	मुसलम्।	51	23
	42	21	6	शनि	विशा	दि	5	50	नव	प्र	2	10	12:5 दिन वृश्चिक में चन्द्र, शूलम्।	52	22
	38	22	7	रवि	अनूरा	दि	4	29	दश	प्र	11	50	5:19 प्रातः कर्कट में शुक्र, मृत्युः।	52	21
	33	23	8	सोम	ज्येष्ठा	दि	2	36	एका	प्र	9	00	2:36 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9:9 दिन से 8:10 रात तक (A)	53	20
	30	24	9	भौम	मूला	दि	12	17	द्वाद	दि	5	46	श्रावण द्वादशी,कपाल मोचन यात्रा, शोपियान, छत्रम्।	53	19
	26	25	10	बुध	पूषा	दि	9	39	त्रयो	दि	2	15	2:57 दिन मकर में चन्द्र, 9:8 रात वृष में भौम, श्रीवत्सः।	54	18
	21	26	11	गुरु	उषा	दि	6	52	चर्तु	दि	10	38	(श्रव प्र 4:7) वज्रम्।	55	17
	17	27	12	शुक्र	धनि	प्र	1	35	पूर्ण	दि	7	5	त्र्यहः (प्रति प्र 3:46) 2:48 दिन कुम्भ में चन्द्र ओर पंचक आरम्भ, (B)	56	16

(A) गंडान्त, पवित्रा एकादशी, श्रावण सोमवार व्रत, काम्यः। (B) रक्षा बंधन, श्री अमरनाथ यात्रा, थजीवार यात्रा, वमू यात्रा, वेरीनाग, चन्द्रास्वामिन यात्रा, रवयार मट्टन, प्राजापत्यः।

श्राद्ध : प्रति से द्वाद अपने दिन, त्रयो से पूर्ण पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति से त्रयो अपने दिन, चर्तुद, पूर्णि पहले दिन।

भाद्र कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

कर्कट में सूर्य, शुक्र। सिंह में बुध। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम।

दिन	मान	श्रव	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	13	28	13	शनि	शत	प्र	11	27	द्विती	प्र	12	53	प0 प्रेमनाथ शास्त्री का 23वां निर्वाण दिवस, आनन्दः।	5/57	7/15
	8	29	14	रवि	पूभा	प्र	9	55	तृती	प्र	10	35	4:14 दिन मीन में चन्द्र, चरः।	57	13
	5	30	15	सोम	उभा	प्र	9	6	चतु	प्र	9	1	संकट निर्वाण चतुर्थी, नवदल यात्रा, त्राल, कश्मीर, मुसलम्।	58	12
	1	31	16	भौम	रेव	प्र	9	6	पंच	प्र	8	17	चन्दन षष्ठी (10:05), 9:6 रात मेष में चन्द्र ओर पंचक समाप्त, (A)	59	11
32	56	भाद्र	17	बुध	अश्वि	प्र	9	56	षष्ठी	प्र	8	24	7:21 प्रातः सिंह में सूर्य मुहूर्त 30, दरियाई, संक्रान्ति व्रत, मृत्युः।	59	10
	52	2	18	गुरु	भरण	प्र	11	34	सप्त	प्र	9	21	जन्माष्टमी (11:06) काम्यः।	6/0	9
	46	3	19	शुक्र	कृति	प्र	1	52	अष्ट	प्र	10	59	6:5 प्रातः वृष में चन्द्र, छत्रम्।	0	8
	42	4	20	शनि	रोहि	प्र	4	39	नव	प्र	1	8	2:5 रात कन्या में बुध, श्रीवत्सः।	1	6
	37	5	21	रवि	मृग	दिन रात			दशा	प्र	3	35	6:8 शां मिथुन में चन्द्र, सौम्यः।	1	5
	33	6	22	सोम	मृग	दि	7	40	एका	दिन रात			दिन अधिक, आनन्दः।	2	4
	28	7	23	भौम	आर्द्र	दि	10	43	एका	दि	6	7	अजा एकादशी, चरः।	2	3
	25	8	24	बुध	पुर्न	दि	1	38	द्वाद	दि	8	30	6:55 प्रातः कर्कट में चन्द्र, मुसलम्।	3	2
	18	9	25	गुरु	तिष्य	दि	4	15	त्रयो	दि	10	37	शूलम्।	4	1
	13	10	26	शुक्र	आश्ले	दि	6	32	चर्तु	दि	12	24	6:32 शां सिंह में चन्द्र, 12 बजे दिन से 1:9 रात तक गण्डान्त, मृत्युः।	4	0
	10	11	27	शनि	मघा	प्र	8	25	अमा	दि	1	46	कुशामावसी, पवन सन्ध्या यात्रा, ज्यो0 प्रकाश काक निर्वाण दिवस, काम्यः।	5	6/59

(A) 1:12 दिन से 2:53 रात तक गण्डान्त, मासान्त, शूलम्।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्विती से एका अपने दिन, द्वाद से अमा पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्विती से एका अपने दिन, द्वाद, त्रयो पहले दिन, चतुर्द, अमा अपने दिन।

प्रतिपदा का जन्मदिन 12 अगस्त

एकादशी का जन्मदिन 23 अगस्त



भाद्र शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

सिंह मे सूर्य। कन्या में बुध। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। कर्कट में शुक्र।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	6	12	28	रवि	पूफा	प्र	9	55	प्रति	दि	2	45	4:14 रात कन्या में चन्द्र, छत्रम्।	6/6	6/57
	1	13	29	सोम	उफा	प्र	11	3	द्विती	दि	3	20	श्रीवत्सः।	7	54
31	55	14	30	भौम	हस्त	प्र	11	48	तृती	दि	3	33	हरितालिका तृतीया, सौम्यः।	7	53
	51	15	31	बुध	चित्र	प्र	12	11	चतु	दि	3	22	12:3 दिन तुला में चन्द्र, 4:17 दिन सिंह में शुक्र, विनायक चतुर्थी कालदण्डः।	8	53
	46	16	सप्त	गुरु	स्वाति	प्र	12	11	पंच	दि	2	49	कुमार षष्ठी, ऋषि पंचमी, स्थिरः।	8	52
	40	17	2	शुक्र	विशा	प्र	11	46	षष्ठी	दि	1	51	5:55 शां वृश्चिक में चन्द्र, मातंगः।	9	51
	36	18	3	शनि	अनू	प्र	10	56	सप्त	दि	12	28	अमृतम्।	10	50
	31	19	4	रवि	ज्येष्ठ	प्र	9	42	अष्ट	दि	10	40	9:42 रात धनु में चन्द्र ओर मूल आरम्भ,4:8 दिन से 3:31 रात तक (A)	11	49
	27	20	5	सोम	मूल	प्र	8	5	नव	दि	8	27	त्र्यहः (दश प्र5:54) अलापकः।	12	47
	21	21	6	भौम	पूषा	दि	6	8	एका	प्र	3	4	11:37 रात मकर में चन्द्र, पदमा एकादशी, मैत्रम्।	12	45
	17	22	7	बुध	उषा	दि	3	59	द्वाद	प्र	12	4	वज्रम्।	13	43
	13	23	8	गुरु	श्रव	दि	1	45	त्रयो	प्र	9	2	12:38 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, वितरत्ता त्रयोदशी, व्यथवतर (B)	14	42
	6	24	9	शुक्र	धनि	दि	11	34	चर्तु	दि	6	7	अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा प्राजापत्यः।	14	40
	2	25	10	शनि	शत	दि	9	36	पूर्णि	दि	3	28	2:22 रात मीन में चन्द्र, पितृपक्ष आरम्भ, पूर्णिमा तथा प्रतिपदा का श्राद्ध आनन्दः।	14	40

(A) गंडान्त, गंगाष्टमी, शारदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी, यज्ञ आदर्श नगर बनतालाब जम्मू, काण्डः। (B) यात्रा, वेरी नाग कश्मीर, ध्वजः।

श्राद्ध : प्रति से दश पहले दिन, एका से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट से दश पहले दिन, एका से पूर्णि अपने दिन।

दशमी का जन्मदिन 5 सप्त



आश्विन कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

सिंह में सूर्य, शुक्र। कन्या में बुध। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम।

दिन	मान	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु/शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	58	26	11	रवि	पूभा	दि	8	1	प्रति	दि	1	14	द्वितीया का श्राद्ध, चरः।	6/15	6/38
	57	27	12	सोम	उभा	दि	6	58	द्विती	दि	11	35	तृतीया का श्राद्ध, 12:23 रात से गंडान्त, मुसलम्।	16	37
	47	28	13	भौम	रेव	दि	6	35	तृती	दि	10	37	चतुर्थी का श्राद्ध 6:35 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12:34 दिन (A)	16	37
	43	29	14	बुध	अश्वि	दि	6	56	चतु	दि	10	25	पंचमी का श्राद्ध, मृत्युः।	17	36
	36	30	15	गुरु	भरण	दि	8	4	पंच	दि	11	00	षष्ठी का श्राद्ध 2:28 दिन वृष में चन्द्र, काम्यः।	17	35
	32	31	16	शुक्र	कृति	दि	9	54	षष्ठी	दि	12	19	सप्तमी का श्राद्ध, साहिव सप्तमी, मासान्त, छत्रम्।	18	33
	28	असो	17	शनि	रोहि	दि	12	20	सप्त	दि	2	14	अष्टमी का श्राद्ध 1:43 रात मिथुन में चन्द्र, 7:20 प्रातः कन्या में सूर्य मुहूर्त 45 (B)	18	31
	22	2	18	रवि	मृग	दि	3	10	अष्ट	दि	4	33	महालक्ष्मी अष्टमी, सौम्यः।	19	30
	18	3	19	सोम	आर्द्र	दि	6	9	नव	प्र	7	1	नवमी का श्राद्ध कालदण्डः।	20	28
	13	4	20	भौम	पुन	प्र	9	6	दशा	प्र	9	26	दशमी का श्राद्ध 2:23 दिन कर्कट में चन्द्र, स्थिरः।	21	27
	7	5	21	बुध	तिष्य	प्र	11	46	एका	प्र	11	34	एकादशी का श्राद्ध इन्दिरा एकादशी, मातंगः।	22	26
	3	6	22	गुरु	आश्ले	प्र	2	2	द्वाद	प्र	1	17	द्वादशी का श्राद्ध, 2:2 रात से सिंह में चन्द्र, 7:34 रात से गंडान्त, अमृतम्।	22	25
29	56	7	23	शुक्र	मघा	प्र	3	49	त्रयो	प्र	2	30	त्रयोदशी का श्राद्ध 8:29 दिन तक गंडान्त, काण्डः।	23	24
	52	8	24	शनि	पूफा	प्र	5	6	चतुर्द	प्र	3	12	चर्तुदशी का श्राद्ध 9:2 रात कन्या में शुक्र, अलापकः।	24	23
	48	9	25	रवि	उफा	प्र	5	54	अमा	प्र	3	24	अमावसी का श्राद्ध, पित्रामावसी 11:21 दिन कन्या में चन्द्र, मैत्रम।	24	21

हरुद 17 सिप्तम्बर

(A) तक गंडान्त, संकट निवारण चतुर्थी, शूलम्। (B) समुद्रीय, शरद ऋतु, हरुद, प0 प्रेमनाथ शास्त्री जी की 102वीं जयन्ती समारोह, संक्राति व्रत, श्रीवत्सः।

श्राद्ध :

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती से पंच पहले दिन, षष्ठी से अमा अपने दिन।



आश्विन शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

कन्या में सूर्य, बुध, शुक्र। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम।

दिन	मान	असो	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	41	10	26	सोम	हस्त	प्र	6	15	प्रति	प्र	3	8	नवरात्रारम्भ वज्रम्। शुक्रास्त	6/25	6/20
	37	11	27	भौम	चित्र	प्र	6	13	द्विती	प्र	2	28	6:17 शां तुला में चन्द्र, ध्वांक्षः। 1 अक्टूबर 5:5 प्रात	25	18
	33	12	28	बुध	स्वाति	प्र	5	51	तृती	प्र	1	27	धौम्यः।	26	16
	26	13	29	गुरु	विशा	प्र	5	12	चतु	प्र	12	8	11:23 रात वृश्चिक में चन्द्र, प्रवर्धः।	26	15
	22	14	30	शुक्र	अनू	प्र	4	18	पंच	प्र	10	34	क्षयः।	27	14
	18	15	अक्टू	शनि	ज्येष्ठ	प्र	3	10	षष्ठी	प्र	8	46	3:10 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, कुमार षष्ठी, 9:32 रात (A)	28	12
	11	16	2	रवि	मूल	प्र	1	52	सप्त	प्र	6	47	8:53 दिन तक गंडान्त, विजय सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, सिद्धः।	28	10
	7	17	3	सोम	पूषा	प्र	12	24	अष्ट	दि	4	37	दुर्गाष्टमी, उन्मूलम्।	29	9
	3	18	4	भौम	उषा	प्र	10	50	नव	दि	2	20	महानवमी, भद्रकाली यात्रा, नवदुर्गा विर्सजन, 6:1 प्रातः (B)	30	8
28	58	19	5	बुध	श्रव	प्र	9	14	दशा	दि	12	00	विजय दशमी छत्रम्।	30	7
	52	20	6	गुरु	धनि	प्र	7	41	एका	दि	9	40	8:27 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, पापाङ्कुशा एकादशी, श्रीवत्सः।	31	6
	48	21	7	शुक्र	शत	प्र	6	16	द्वाद	दि	7	26	त्र्यहः (त्रयो प्र 5:24) सौम्यः।	31	5
	43	22	8	शनि	पूभा	दि	5	7	चर्तु	प्र	3	41	11:22 दिन मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	32	4
	36	23	9	रवि	उभा	दि	4	20	पूर्णि	प्र	2	24	स्थिरः।	33	3

(A) से गण्डान्त, शुक्रास्त, गजः। (B) मकर में चन्द्र, मानसम्।

श्राद्ध : प्रति से अष्ट अपने दिन, नव से त्रयो पहले दिन, चर्तुद पूर्णिमा अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से दश अपने दिन, एका से त्रयो पहले दिन, चर्तुद, पूर्णि अपने दिन।

त्रयोदशी का जन्मदिन 7 अक्टूबर



कार्तिक कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

कन्या में सूर्य, बुध, शुक्र। तुला में केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम।

दिन	मान	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	32	24	10	सोम	रेव	दि	4	1	प्रति	प्र	1	38	4:1 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 9:16 दिन से 9:54 रात (A)	6/33	6/1
	28	25	11	भौम	अश्वि	दि	4	16	द्विती	प्र	1	29	अमृतम्।	34	0
	23	26	12	बुध	भर	दि	5	9	तृती	प्र	1	59	11:28 रात वृष में चन्द्र, काण्ड:।	35	5/59
	16	27	13	गुरु	कृति	प्र	6	40	चतु	प्र	3	8	संकट निवारण चतुर्थी,ज्यो0 आफताव शर्मा का 56वाँ निर्वाण दिवस, (B)	36	57
	12	28	14	शुक्र	रोहि	प्र	8	46	पंच	प्र	4	52	मैत्रम्।	37	55
	8	29	15	शनि	मृग	प्र	11	21	षष्ठी	दिन रात			दिन अधिक, 10 बजे दिन मिथुन में चन्द्र, वज्रम्।	38	54
	3	30	16	रवि	आर्द्र	प्र	2	13	षष्ठी	दि	7	3	मासान्त, 6:32 प्रात: मिथुन में भौम, ध्वांक्ष:।	38	53
27	58	कत	17	सोम	पुर्न	प्र	5	11	सप्त	दि	9	29	7:21 शां तुला में सूर्य, मुहूर्त 45, पहाडी, 10-27 रात कर्कट (C)	39	52
	55	2	18	भौम	तिष्य	दिन रात			अष्ट	दि	11	57	9:39 रात तुला में शुक्र, प्रवर्ध:।	40	51
	48	3	19	बुध	तिष्य	दि	8	1	नव	दि	2	13	4:3 रात से गंडान्त, मातंग:।	41	50
	43	4	20	गुरु	आश्ले	दि	10	29	दशा	दि	4	4	10:29 दिन सिंह में चन्द्र, 5:5 दिन तक गंडान्त, अमृतम्।	41	49
	38	5	21	शुक्र	मघा	दि	12	27	एका	दि	5	22	रमा एकादशी, काण्ड:।	42	48
	35	6	22	शनि	पूफा	दि	1	49	द्वाद	प्र	6	2	8:4 रात कन्या में चन्द्र, अलापक:।	43	47
	31	7	23	रवि	उफा	दि	2	33	त्रयो	प्र	6	3	मैत्रम्।	43	46
	26	8	24	सोम	हस्त	दि	2	41	चर्तु	दि	5	27	2:32 रात तुला में चन्द्र, दीपावली वज्रम्:।	44	45
	21	9	25	भौम	चित्र	दि	2	16	अमा	दि	4	18	सूर्य ग्रहण, ध्वांक्ष:।	45	44

(A) तक गंडान्त, मातंग:। (B) करवा चौथ (8:10) अलापक:। (C) में चन्द्र, संक्राति व्रत, धौम्य:।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठी अपने दिन, सप्त से एका पहले दिन, द्वाद से चर्तुद अपने दिन, अमा का पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति से षष्ठी अपने दिन, सप्त, अष्ट पहले दिन, नव से अमा अपने दिन।

षष्ठी का जन्मदिन 16 अक्टूबर



कार्तिक शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

तुला में सूर्य, शुक्र, बुध, केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष मे राहु। मिथुन में भौम।

दिन	मान	क्त	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	16	10	26	बुध	स्वाति	दि	1	23	प्रति	दि	2	42	1:48 दिन तुला में बुध, अन्नकूट गोवर्धन पूजा, धौम्य:।	6/46	5/43
	12	11	27	गुरु	विशा	दि	12	10	द्विती	दि	12	45	6:30 प्रात: वृश्चिक में चन्द्र, **भाई दूज,** प्रवर्ध:।	47	42
	8	12	28	शुक्र	अनू	दि	10	41	तृती	दि	10	33	3:33 रात से गंडान्त, क्षय:।	48	41
	3	13	29	शनि	ज्येष्ठ	दि	9	5	चतु	दि	8	13	**त्र्यह:** (पं प्र 5:49) 9:5 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	49	39
26	58	14	30	रवि	मूल	दि	7	25	षष्ठी	प्र	3	27	(पूषा प्र 5:46), **कुमार षष्ठी,** सिद्ध:।	50	38
	48	15	31	सोम	उषा	प्र	4	14	सप्त	प्र	1	11	11:23 दिन मकर में चन्द्र, मृत्यु:।	51	38
	43	16	नव	भौम	श्रव	प्र	2	53	अष्ट	प्र	11	4	**गोपालाष्टमी,** अलापक:।	51	35
	40	17	2	बुध	धनि	प्र	1	42	नव	प्र	9	9	2:15 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।	52	34
	36	18	3	गुरु	शत	प्र	12	48	दशा	प्र	7	30	वज्रम्।	53	33
	33	19	4	शुक्र	पूभा	प्र	12	11	एका	प्र	6	8	6:18 शां मीन मे चन्द्र, **हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप**, ध्वांक्ष:।	54	32
	28	20	5	शनि	उभा	प्र	11	55	द्वाद	दि	5	6	धौम्य:।	54	31
	23	21	6	रवि	रेव	प्र	12	3	त्रयो	दि	4	28	12:3 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 5:56 शां से गंडान्त, प्रवर्ध:।	55	30
	18	22	7	सोम	अश्वि	प्र	12	36	चर्तु	दि	4	16	6:10 प्रात: तक गंडान्त, क्षय:।	56	30
	16	23	8	भौम	भर	प्र	1	38	पूर्णि	दि	4	31	**कार्तिक पूर्णिमा** चन्द्र ग्रहण, गज:।	57	29

(A) 2:40 दिन तक गंडान्त, गज:।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से द्वाद अपने दिन, त्रयो से पूर्णि पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति, द्विती अपने दिन, तृती, चतु, पंच पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि अपने दिन।

पंचमी का जन्मदिन 29 अक्टूबर



मार्ग कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

तुला में सूर्य, बुध, शुक्र, केतु। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। मिथुन में भौम।

दिन	मान	क्त	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु/हेमन्त ऋतु - दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	11	24	9	बुध	कृति	प्र	3	8	प्रति	दि	5	17	7:57 प्रातः वृष में चन्द्र, सिद्धः।	6/58	5/28
	7	25	10	गुरु	रोहि	प्र	5	7	द्विती	प्र	6	32	उन्मूलम्।	59	28
	3	26	11	शुक्र	मृग	दिन रात			तृती	प्र	8	17	6:16 शां मिथुन में चन्द्र, 8:9 रात वृश्चिक में शुक्र, मानसम्।	7/0	28
	1	27	12	शनि	मृग	दि	7	32	चतु	प्र	10	25	संकट निवारण चतुर्थी, वज्रम्।	1	27
25	56	28	13	रवि	आर्द्र	दि	10	17	पंच	प्र	12	51	9:19 रात वृश्चिक में बुध, 8:37 रात वृष में वक्री भौम, ध्वांक्षः।	2	26
	53	29	14	सोम	पुर्न	दि	1	14	षष्ठी	प्र	3	23	6-29 प्रातः कर्कट में चन्द्र, धौम्यः।	3	26
	53	30	15	भौम	तिष्य	दि	4	12	सप्त	प्र	5	49	मासान्त, प्रवर्धः।	4	25
	48	मग	16	बुध	आश्ले	प्र	6	58	अष्ट	दिन रात			दिन अधिक, 6:58 शां सिंह में चन्द्र, 7:14 शां वृश्चिक में सूर्य, (A)	5	25
	46	2	17	गुरु	मघा	प्र	9	19	अष्ट	दि	7	56	महाकाल भैरवाष्टमी, गजः।	6	24
	41	3	18	शुक्र	पूफा	प्र	11	7	नव	दि	9	33	सिद्धः।	7	23
	38	4	19	शनि	उफा	प्र	12	13	दशा	दि	10	29	5:28 प्रातः कन्या में चन्द्र, उन्मूलम्।	8	23
	33	5	20	रवि	हस्त	प्र	12	35	एका	दि	10	41	उत्पन्ना एकादशी, मानसम्।	10	22
	31	6	21	सोम	चित्र	प्र	12	23	द्वाद	दि	10	7	12:29 दिन तुला में चन्द्र, मुद्गरम्।	11	22
	27	7	22	भौम	स्वात	प्र	11	11	त्रयो	दि	8	49	त्र्यहः (चर्तु प्र 6:53) ध्वजः।	12	22
	26	8	23	बुध	विशा	प्र	9	36	अमा	प्र	4	26	4:3 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्राजापत्यः।	13	21

(A) मुहूर्त 30 समुद्रीय, 12:19 दिन से 1:41 रात तक गंडान्त, संक्रान्ति व्रत, हेमन्त ऋतु, क्षयः।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्विती से अष्ट अपने दिन, नव से चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से अष्ट अपने दिन, नव से चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

अष्टमी का जन्मदिन 17 नवम्बर
चतुर्दशी का जन्मदिन 22 नवम्बर



मार्ग शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022

वृश्चिक मे सूर्य, बुध, शुक्र। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु।

दिन	मान	मा	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु -दक्षिणायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	23	9	24	गुरु	अनू	प्र	7	36	प्रति	प्र	1	37	आनन्दः।	7/14	5/21
	18	10	25	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	5	20	द्विती	प्र	10	34	5:20 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 11:56 दिन से 10:48 रात तक (A)	15	21
	16	11	26	शनि	मूला	दि	2	57	तृती	प्र	7	27	मुसलम्।	16	20
	13	12	27	रवि	पूषा	दि	12	37	चतु	दि	4	25	6:3 शां मकर में शुक्र, शूलम्।	16	20
	11	13	28	सोम	उषा	दि	10	28	पंच	दि	1	35	कुमार षष्ठी, मृत्युः।	17	20
	8	14	29	भौम	श्रव	दि	8	37	षष्ठी	दि	11	4	(धनि प्र 7:10) 7:50 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, अलापकः।	18	20
	5	15	30	बुध	शत	प्र	6	11	सप्त	दि	8	58	मानसम्।	19	20
	3	16	दिस	गुरु	पूभा	प्र	5	43	अष्ट	दि	7	21	त्र्यहः (नव प्र 6:14) 11:47 रात मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	19	20
	1	17	2	शुक्र	उभा	प्र	5	44	दशा	प्र	5	39	ध्वजः।	20	20
24	58	18	3	शनि	रेव	प्र	6	15	एका	प्र	5	34	गीता जयन्ती 6:47 प्रातः धनु में बुध, 11:57 रात से गंडान्त, प्राजापत्यः।	21	20
	56	19	4	रवि	अश्वि	प्र	7	14	द्वाद	प्र	5	57	12:27 दिन तक गंडान्त, 6:15 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, आनन्दः।	21	20
	53	20	5	सोम	भरण		दिन	रात	त्रयो	प्र	6	47	5:56 शां धनु में शुक्र, चरः।	22	20
	52	21	6	भौम	भरण	दि	8	37	चर्तु		दिन	रात	दिन अधिक, 3:2 दिन वृष में चन्द्र, गजः।	23	20
	51	22	7	बुध	कृति	दि	10	24	चर्तु	दि	8	1	दत्तात्रेय जयन्ती, सिद्धः।	23	20
	48	23	8	गुरु	रोहि	दि	12	32	पूर्णि	दि	9	37	1:43 रात मिथुन में चन्द्र, उन्मूलम्।	24	20

शुक्रोदय 25 नवम्बर 5:21 दिन

गीता जयन्ती 3 दिसम्बर

(A) गंडान्त, शुक्र उदय, चरः।

श्राद्ध : : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से नव पहले दिन, दश से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति से पंच अपने दिन, षष्ठी से नव पहले दिन, दश से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन।

नवमी का जन्मदिन 1 दिसम्बर

चतुर्दशी का जन्मदिन 7 दिसम्बर



पौष कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2022

वृश्चिक में सूर्य। धनु में बुध, शुक्र। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु।

दिन	मान	मग	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - दक्षिणयन/उत्तरायन - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	46	24	9	शुक्र	मृग	दि	2	58	प्रति	दि	11	34	मुजंहर तहर, मानसम्।	7/25	5/20
	46	25	10	शनि	आर्द्र	प्र	5	41	द्विती	दि	1	47	मुद्गरम्।	26	21
	46	26	11	रवि	पुर्न	प्र	8	35	तृती	दि	4	14	1:51 दिन कर्कट में चन्द्र, संकट निवारण चतुर्थी, ध्वजः।	27	21
	43	27	12	सोम	तिष्य	प्र	11	35	चतु	प्र	6	48	प्राजापत्यः।	28	21
	42	28	13	भौम	आश्ले	प्र	2	31	पंच	प्र	9	21	2:31 रात सिंह में चन्द्र, 7:49 शां से गंडान्त, आनन्दः।	28	21
	42	29	14	बुध	मघा	प्र	5	15	षष्ठी	प्र	11	42	9:15 दिन तक गंडान्त, चरः।	29	22
	41	30	15	गुरु	पूफा		दिन	रात	सप्त	प्र	1	39	मासान्त्, मुसलम्।	30	22
	40	पौष	16	शुक्र	पूफा	दि	7	33	अष्ट	प्र	3	2	महाकाली जयन्ती, 9:56 दिन धनु में सूर्य, मुर्हूत 45, किनारी, (A)	31	23
	40	2	17	शनि	उफा	दि	9	17	नव	प्र	3	41	उन्मूलम्।	31	23
	38	3	18	रवि	हस्त	दि	10	17	दशा	प्र	3	32	10:30 रात तुला में चन्द्र, श्री नन्द वव साहिव जयन्ती, लाले बाग जम्मू, (B)	32	23
	38	4	19	सोम	चित्र	दि	10	30	एका	प्र	2	32	सफला एकादशी, मुद्गरम्।	32	23
	37	5	20	भौम	स्वाति	दि	9	54	द्वाद	प्र	12	45	2:56 रात वृश्चिक में चन्द्र, ईश्वर स्वरूप शैवाचार्य श्री रामजी जयन्ती, ध्वजः।	32	23
	37	6	21	बुध	विशा	दि	8	32	त्रयो	प्र	10	16	(अनू प्र 6:32) उत्तरायण, प्राजापत्यः।	33	24
	37	7	22	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	4	2	चर्तु	प्र	7	13	यक्षामावसी 4:2 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 10:51 रात से गंडान्त,(C)	34	24
	37	8	23	शुक्र	मूला	प्र	1	12	अमा	दि	3	46	9:21 दिन तक गंडान्त, स्थिरः।	34	25

(A) संक्रान्ति व्रत, 2:3 दिन कन्या में चन्द्र, सिद्धः।(B) आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, मानसम्। (C) कालदण्डः।

श्राद्ध : प्रति से तृती पहले दिन, चुत से अमा अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्विती से अमा अपने दिन।



पौष शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2022-23

धनु में सूर्य, बुध, शुक्र। मकर में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु।

दिन	मान	पौष	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	40	9	24	शनि	पूषा	प्र	10	14	प्रति	दि	12	6	3:30 रात मकर में चन्द्र, श्री मिरज़काक जयन्ती, नगरोटा, कुकर नाग, (A)	7/34	5/26
	38	10	25	रवि	उषा	प्र	7	20	द्विती	दि	8	24	त्र्यहः (तृती प्र 4:51) अमृतम्।	35	26
	40	11	26	सोम	श्रव	दि	4	41	चतु	प्र	1	37	3:30 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, सिद्धः।	35	27
	41	12	27	भौम	धनि	दि	2	26	पंच	प्र	10	52	उन्मूलम्।	36	27
	40	13	28	बुध	शत	दि	12	45	षष्ठी	प्र	8	44	5:9 प्रातः मकर में बुध, कुमार षष्ठी, मानसम्।	36	28
	42	14	29	गुरु	पूभा	दि	11	43	सप्त	प्र	7	17	4:2 दिन मकर में शुक्र, 5:54 प्रातः मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	36	29
	45	15	30	शुक्र	उभा	दि	11	23	अष्ट	प्र	6	33	10:8 रात धनु में वक्री बुध, ध्वजः।	37	30
	46	16	31	शनि	रेव	दि	11	46	नव	प्र	6	33	11:46 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 5:37 प्रातः से 5:54 शां (B)	37	31
	45	17	जन	रवि	अश्वि	दि	12	47	दश	प्र	7	11	2023 ईस्वी, आनन्दः।	37	29
	47	18	2	सोम	भरण	दि	2	23	एका	प्र	8	23	8:51 रात वृष में चन्द्र, पुत्रदा एकादशी चरः।	37	30
	50	19	3	भौम	कृति	दि	4	25	द्वाद	प्र	10	1	मुसलम्।	37	31
	50	20	4	बुध	रोहि	प्र	6	47	त्रयो	प्र	12	00	शूलम्।	38	32
	51	21	5	गुरु	मृग	प्र	9	25	चर्तु	प्र	2	14	8:5 दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	38	32
	52	22	6	शुक्र	आर्द्र	प्र	12	13	पूर्णि	प्र	4	37	काम्यः।	38	33

(A) हांगलगुण्ड, स्वा चमन लाल जी बाम्जई जयन्ती लाले बाग जम्मू, मातंगः। (B) तक गंडान्त, प्राजापत्यः।

श्राद्ध : प्रति से तृती पहले दिन, चतु से पूर्णि अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्विती, तृती पहले दिन, चतु से पूर्णि अपने दिन।

तृतीया का जन्मदिन 25 दिसम्बर



माघ कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2023

धनु में सूर्य, बुध। मकर में शुक्र, शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु।

दिन	मान	पौष	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त/शिशुर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	56	23	7	शनि	पुर्न	प्र	3	7	प्रति	प्र	7	7	8:23 रात कर्कट में चन्द्र, छत्रम्।	7/38	5/34
	57	24	8	रवि	तिष्य	प्र	6	4	द्विती		दिन	रात	दिन अधिक, श्रीवत्सः।	38	36
	57	25	9	सोम	आश्ले		दिन	रात	द्विती	दि	9	39	2:17 रात से गंडान्त, सौम्यः।	39	37
25	0	26	10	भौम	आश्ले	दि	9	00	तृती	दि	12	9	9 बजे दिन सिंह में चन्द्र,3:44 दिन तक गंडान्त,संकट निवारण चतुर्थी, आनन्दः	39	38
	3	27	11	बुध	मघा	दि	11	49	चतु	दि	2	31	चरः। 19, 20, 21 जनवरी	39	38
	7	28	12	गुरु	पूफा	दि	2	23	पंच	दि	4	37	8:59 रात कन्या में चन्द्र, मुसलम्। शिव चतुर्दशी व्रत	38	39
	10	29	13	शुक्र	उफा	दि	4	34	षष्ठी	प्र	6	17	मासान्त्, शूलम्।	38	39
	11	माघ	14	शनि	हस्त	प्र	6	13	सप्त	प्र	7	22	साहिब सप्तमी, 8:43 रात मकर में सूर्य, मुर्हूत 30 पहाडी, शिशर ऋतु,(A)	38	40
	15	2	15	रवि	चित्र	प्र	7	11	अष्ट	प्र	7	45	6:47 प्रातः तुला मे चन्द्र, काम्यः।	38	42
	17	3	16	सोम	स्वा	प्र	7	22	नव	प्र	7	20	छत्रम्।	37	43
	21	4	17	भौम	विशा	प्र	6	45	दशा	प्र	6	5	12:59 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 5:59 शां कुम्भ में शनि, श्रीवत्सः।	37	43
	22	5	18	बुध	अनू	दि	5	22	एका	दि	4	2	सौम्यः।	37	44
	25	6	19	गुरु	ज्येष्ठ	दि	3	17	द्वाद	दि	1	18	3:17 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9:43 दिन से 8:49 रात तक (B)	36	45
	28	7	20	शुक्र	मूला	दि	12	39	त्रयो	दि	9	59	त्र्यहः (चर्तु प्र 6:17) शिवचर्तुदशी, ईश्वर स्वरूप शैवाचार्य राम जी निर्वाण दिवस स्थिरः।	36	46
	32	8	21	शनि	पूषा	दि	9	39	अमा	प्र	2	22	(उषा प्र 6:29) 2:52 दिन मकर में चन्द्र, मातंगः।	36	47

(A) शिशर संक्रान्ति व्रत, मकर संक्रान्ति, मृत्युः। (B) गंडान्त, कालदण्डः।

श्राद्ध : प्रति, द्विती अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से एका अपने दिन, द्वाद से चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से द्वाद अपने दिन, त्रयो, चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन। द्वितीय का जन्मदिन 9 जनवरी, चतुदर्शी का जन्मदिन 20 जनवरी

माघ शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2023

मकर में सूर्य, शुक्र। कुम्भ में शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु। धनु में बुध।

दिन	मान	माघ	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	35	9	22	रवि	श्रव	प्र	3	20	प्रति	प्र	10	27	3:53 दिन कुम्भ में शुक्र, मुसलम्।	7/35	5/48
	38	10	23	सोम	धनि	प्र	12	25	द्विती	प्र	6	43	1:50 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	35	49
	42	11	24	भौम	शत	प्र	9	57	तृती	दि	3	22	गौरी तृतीया, मृत्युः।	35	50
	45	12	25	बुध	पूभा	प्र	8	4	चतु	दि	12	34	2:28 दिन मीन में चन्द्र, त्रिपुरा चर्तुथी, काम्यः।	35	51
	50	13	26	गुरु	उभा	प्र	6	56	पंच	दि	10	28	बसन्त पंचमी कुमार षष्ठी, छत्रम्।	34	52
	53	14	27	शुक्र	रेव	प्र	6	36	षष्ठी	दि	9	10	6:36 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12:34 दिन से 12:23 दिन तक(A)	33	53
	57	15	28	शनि	अश्वि	प्र	7	5	सप्त	दि	8	43	सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, भीष्म अष्टमी सौम्यः।	32	54
26	1	16	29	रवि	भर	प्र	8	20	अष्ट	दि	9	5	2:45 रात से वृष में चन्द्र, कालदण्डः।	32	55
	6	17	30	सोम	कृति	प्र	10	14	नव	दि	10	11	स्थिरः।	31	56
	10	18	31	भौम	रोहि	प्र	12	38	दशा	दि	11	53	मातंगः।	31	57
	13	19	फर	बुध	मृग	प्र	3	22	एका	दि	2	2	1:58 दिन मिथुन में चन्द्र, भीम सेन एकादशी, अमृतम्।	30	57
	18	20	2	गुरु	आर्द्र	प्र	6	17	द्वाद	दि	4	26	काण्डः।	29	58
	22	21	3	शुक्र	पुर्न		दिन	रात	त्रयो	प्र	6	57	2:31 रात कर्कट में चन्द्र, अलापकः।	29	58
	23	22	4	शनि	पुर्न	दि	9	15	चर्तु	प्र	9	29	यक्ष चतुर्दशी, छत्रम्।	28	59
	28	23	5	रवि	तिष्य	दि	12	12	पूर्णि	प्र	11	58	माघ पूर्णिमा, काव पूर्णिमा, श्रीवत्सः।	28	6/0

(A) गण्डान्त, श्रीवत्सः।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से द्वाद पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से दश पहले दिन, एका से पूर्णि अपने दिन।



फाल्गुन कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2023

मकर में सूर्य। कुम्भ में शुक्र, शनि। मीन में गुरु। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु। धनु में बुध।

दिन	मान	माघ	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	33	24	6	सोम	आश्ले	दि	3	2	प्रति	प्र	2	18	3:2 दिन सिहं में चन्द्र, 8:1 दिन से 9:47 रात तक गंडान्त, (A)	7/27	6/2
	37	25	7	भौम	मघा	दि	5	44	द्विती	प्र	4	28	7:28 प्रातः मकर में बुध, कालदण्डः।	26	3
	41	26	8	बुध	पूफा	प्र	8	13	तृती	प्र	6	23	2:48 रात कन्या में चन्द्र, स्थिरः।	25	4
	46	27	9	गुरु	उफा	प्र	10	26	चतु		दिन	रात	दिन अधिक, संकट निवारण चतुर्थी मातंगः।	24	5
	51	28	10	शुक्र	हस्त	प्र	12	17	चतु	दि	7	58	अमृतम्।	23	6
	56	29	11	शनि	चित्र	प्र	1	39	पंच	दि	9	7	1:2 दिन तुला में चन्द्र, काण्डः।	23	7
27	1	30	12	रवि	स्वाति	प्र	2	26	षष्ठी	दि	9	45	मासान्त, अलापकः।	22	7
	6	फा	13	सोम	विशा	प्र	2	34	सप्त	दि	9	45	8:36 रात वृश्चिक में चन्द्र, 9:43 दिन कुम्भ में सूर्य, मुर्हूत 45 किनारी (B)	21	8
	11	2	14	भौम	अनूरा	प्र	2	00	अष्ट	दि	9	3	होराष्टमी, चक्रीश्वर यात्रा, श्रीनगर,पलोडा जम्मू, वज्रम्।	20	9
	13	3	15	बुध	ज्येष्ठ	प्र	12	45	नव	दि	7	39	त्र्यहः (दश प्र 5:32) 12:45 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 8:1 रात (C)	19	9
	18	4	16	गुरु	मूला	प्र	10	52	एका	प्र	2	49	6:21 प्रातः तक गंडान्त, विजया एकादशी, सौम्यः।	18	10
	23	5	17	शुक्र	पूषा	प्र	8	27	द्वाद	प्र	11	36	वागिर बाह, 1:47 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	17	11
	28	6	18	शनि	उषा	दि	5	41	त्रयो	प्र	8	2	शिवरात्रि (हेरथ), शिवचतुर्दशी, क्षयः।	16	12
	33	7	19	रवि	श्रव	दि	2	43	चर्तु	दि	4	18	1:13 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मुसलम्।	15	13
	38	8	20	सोम	धनि	दि	11	45	अमा	दि	12	35	डूनि अमावसी सोमामावसी, वटुक परमोजुन, शूलम्।	14	14

शिवरात्रि 18 फरवरी

(A) हुरि ओकदोह, सौम्यः। (B) संक्रान्ति व्रत, मैत्रम्। (C) मीन में शुक्र, 7:15 शां से गंडान्त, ध्वांक्षः।

श्राद्ध : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से दश पहले दिन, एका से चर्तुद अपने दिन, अमा पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से दश पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

चतुर्थी का जन्मदिन 10 फरवरी

दशमी का जन्मदिन 15 फरवरी



फाल्गुन शुक्ल पक्ष
वि 2079-ई 2023

कुम्भ में सूर्य, शनि। मीन में गुरु, शुक्र। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु। मकर में बुध।

दिन	मान	फा	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - ग्रह संचार बजे मिन्टों में	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	43	9	21	भौम	शत	दि	8	59	प्रति	दि	9	4	त्र्यहः (द्वि प्र 5:57) (पूभा प्र 6:37) 1:10 रात मीन में चन्द्र, मृत्युः।	7/13	6/15
	46	10	22	बुध	उभा	प्र	4	49	तृती	प्र	3	24	अलापकः।	12	16
	51	11	23	गुरु	रेव	प्र	3	43	चतु	प्र	1	33	3:43 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 9:44 रात से गंडान्त, मैत्रम्।	11	17
	56	12	24	शुक्र	अश्वि	प्र	3	25	पंच	प्र	12	31	9:33 दिन तक गंडान्त, वज्रम्।	10	17
28	1	13	25	शनि	भर	प्र	3	58	षष्ठी	प्र	12	20	कुमार षष्ठी ध्वांक्षः।	9	18
	7	14	26	रवि	कृति	प्र	5	18	सप्त	प्र	12	58	10:13 दिन वृष में चन्द्र, धौम्यः।	6	19
	13	15	27	सोम	रोहि	दिन रात			अष्ट	प्र	2	21	4:45 दिन कुम्भ में बुध, तैलाष्टमी, प्रवर्धः।	6	20
	16	16	28	भौम	रोहि	दि	7	18	नव	प्र	4	18	8:31 रात मिथुन में चन्द्र, मातंगः।	5	20
	21	17	मार्च	बुध	मृग	दि	9	51	दश	प्र	6	39	अमृतम्।	3	22
	25	18	2	गुरु	आर्द्र	दि	12	42	एका	दिन रात			दिन अधिक, काण्डः।	2	23
	31	19	3	शुक्र	पुर्न	दि	3	42	एका	दि	9	11	8:57 दिन कर्कट में चन्द्र, अमला एकादशी, अलापकः।	1	24
	37	20	4	शनि	तिष्य	प्र	6	40	द्वाद	दि	11	43	मैत्रम्।	0	25
	41	21	5	रवि	आश्ले	प्र	9	29	त्रयो	दि	2	7	9:29 रात सिंह में चन्द्र, 1:48 दिन से 3:38 रात तक गंडान्त, वज्रम्।	6/58	26
	46	22	6	सोम	मघा	प्र	12	4	चर्तु	दि	4	17	होली, ध्वांक्षः।	57	27
	51	23	7	भौम	पूफा	प्र	2	21	पूर्णि	दि	6	9	धौम्यः।	55	28

(A)

श्राद्ध : प्रति, द्विती पहले दिन, तृतीया से एका अपने दिन, द्वाद से पूर्णि पहले दिन।

मध्याह्न : प्रति, द्विती पहले दिन, तृती से एका अपने दिन, द्वाद का पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

द्वितीया का जन्मदिन 21 फरवरी
एकादशी का जन्मदिन 3 मार्च



चैत्र कृष्ण पक्ष
वि 2079-ई 2023

कुम्भ में सूर्य, बुध, शनि। मीन में गुरु, शुक्र। मेष में राहु। वृष में भौम। तुला में केतु।

दिन	मान	फा	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु/बसन्त ऋतु-उत्तरायण-ग्रह संचार बजे मिन्टों में		सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	57	24	8	बुध	उफा	प्र	4	19	प्रति	प्र	7	42	8:52 दिन कन्या में चन्द्र, प्रवर्धः।	थाल भरुण 13 मार्च	6/54	6/29
29	1	25	9	गुरु	हस्त	प्र	5	56	द्विती	प्र	8	54	क्षयः।		53	30
	6	26	10	शुक्र	चित्र	दिन	रात		तृती	प्र	9	42	6:36 शां तुला में चन्द्र, गजः।	सोन्थ 14 मार्च	52	31
	11	27	11	शनि	चित्र	दि	7	10	चतु	प्र	10	5	संकट निवारण चतुर्थी, काण्डः।		50	32
	17	28	12	रवि	स्वात	दि	7	59	पंच	प्र	10	1	2:18 रात वृश्चिक में चन्द्र, 8:27 दिन मेष में शुक्र, अलापकः।		49	32
	23	29	13	सोम	विशा	दि	8	20	षष्ठी	प्र	9	27	5:01 प्रातः मिथुन में भौम, मासान्त, थाल भरुण, मैत्रम्।		48	33
	26	चैत्र	14	भौम	अनूरा	दि	8	12	सप्त	प्र	8	22	1:58 रात से गंडान्त, सोन्थ, बसन्त ऋतु, वज्रम्।		47	33
	32	2	15	बुध	ज्येष्ठ	दि	7	33	अष्ट	प्र	6	45	(मूल प्र6:23)6:33 प्रातः मीन में सूर्य, मुर्हूत15 समुद्रीय, संक्रान्ति व्रत, (A)		45	33
	38	3	16	गुरु	पूषा	प्र	4	46	नव	दि	4	39	प्राजापत्यः।	थाल भरुण 21 मार्च	44	34
	41	4	17	शुक्र	उषा	प्र	2	45	दशा	दि	2	6	10:18 दिन मकर में चन्द्र, आनन्दः।		43	34
	46	5	18	शनि	श्रव	प्र	12	28	एका	दि	11	13	पाप मोक्षिनी एकादशी, स्थिरः।		42	35
	52	6	19	रवि	धनि	प्र	10	3	द्वाद	दि	8	7	त्र्यहः (त्रयो प्र 4:55) 11:16 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मातंगः।		41	36
	58	7	20	सोम	शत	प्र	7	38	चर्तु	प्र	1	47	अमृतम।		40	36
30	1	8	21	भौम	पूभा	दि	5	24	अमा	प्र	10	52	11:56 दिन मीन में चन्द्र, थाल भरुण, चैत्रामावसी, विचार नाग यात्रा, (B)		39	37

(A) 7:33 प्रातः धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ,10:47 दिन मीन में बुध,1:20 दिन तक गंडान्त, ध्वांक्षः। (B) श्री भट्ट दिवस, वर नाग यात्रा, जैनपुरा शोपियां, कश्मीर, काण्डः।

श्राद्ध : प्रति से नव अपने दिन, दश से त्रयो पहले दिन, चर्तुद, अमा अपने दिन।

मध्याह्न : प्रति से दश अपने दिन, एका से त्रयो पहले दिन, चर्तुद अमा अपने दिन।

त्रयोदशी का जन्मदिन 19 मार्च

मुहूर्त प्रकरण सप्तर्षि सं 5098 विक्रमी 2079 ईस्वी 2022-23 के लिये

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये साथ रटुन, वस्त्र, मसाला अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय मंज लागन्य, मस मुचुरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल द्वितीया रविवार
12-16 दिन तक
6 अप्रैल पंचमी बुधवार
7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार
11 अप्रैल दशमी सोमवार
6-50 प्रात: तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रैल प्रतिपदा रविवार
18 अप्रैल द्वितीया सोमवार
20 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
1-52 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-32 प्रात: तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
9-19 दिन से
8 मई सप्तमी रविवार
2-56 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
8-9 दिन तक
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
12-59 दिन तक
2 जून तृतीया गुरुवार
4-3 दिन से
9 जून नवमी गुरुवार
8-21 दिन से
10 जून दशमी शुक्रवार
12 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-10 प्रात: तक
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
26 जून त्रयोदशी रविवार
1-5 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
11-43 दिन से
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
7-28 प्रात: तक
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-25 शां से
10 जुलाई एकादशी रविवार
11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
5-30 शां तक
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
12-49 दिन से

21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8-12 दिन तक
24 जुलाई एकादशी रवि
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
9-46 दिन तक
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
7 अगस्त दशमी रविवार
8 अगस्त एकादशी सोम
2.36 दिन तक
11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार
10-38 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सप्त प्रतिपदा सोमवार
28 सप्त तृतीया बुधवार
30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
10-28 दिन से
4 दिस द्वादशी रविवार
7 दिस चतुर्दशी बुधवार
10-24 दिन से
8 दिस पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
2-58 दिन तक
11 दिस तृतीया रविवार
4-14 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

15 जनवरी अष्टमी रविवार
18 जनवरी एकादशी बुध
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-17 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
6-36 शां से
1 फरवरी एकादशी बुध
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र
5 फरवरी पूर्णिमा रविवार
12-12 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
15 फरवरी नवमी बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
27 फरवरी अष्टमी सोमवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-42 दिन से
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

यज्ञोपवीत मुर्हूत
(मेखलि साथ) 2022-23 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल द्वितीया रविवार
10-13 दिन से
12-29 दिन तक (मि
6 अप्रैल पंचमी बुधवार
10-1 दिन से
12-17 दिन तक (मि
7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार
8-4 दिन से

9-57 दिन तक (वृ

11 अप्रैल दशमी सोमवार

6-17 प्रातः से

6-50 प्रातः तक (मे

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

1-52 दिन से

2-55 दिन तक (सिं

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

6-18 प्रातः से

7-32 प्रातः तक (वृ

8 मई सप्तमी रविवार

7-55 प्रातः से

10-11 दिन तक (मि

12 मई एकादशी गुरुवार

7-40 प्रातः से

9-55 दिन तक (मि

9-55 दिन से

12-19 दिन तक (क

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

7-16 प्रातः से

8-9 दिन तक (मि

20 मई पंचमी शुक्रवार

7-8 प्रातः से

9-24 दिन तक (मि

9-24 दिन से

11-48 दिन तक (क

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

8-36 दिन से

11-00 दिन तक (क

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

10-29 दिन तक (क

10 जून दशमी शुक्रवार

8-17 दिन से

10-25 दिन तक (क

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

11-28 दिन तक (सिं

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

9-2 दिन से

11-24 दिन तक (सिं

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

8-42 दिन से

11-4 दिन तक (सिं

10 जुलाई एकादशी रवि

9-54 दिन से

10-46 दिन तक (सिं

11 जुलाई द्वादशी सोमवार

5-59 प्रातः से

7-49 प्रातः तक (क

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

8-7 दिन से

10-29 दिन तक (सिं

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

10-18 दिन से

12-38 दिन तक (वृं

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

7-46 प्रातः से

10-10 दिन तक (तु

मार्ग शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

12-33 दिन से

1-55 दिन तक (कुं

विवाह मुर्हूत

(खान्दर साथ) 2022-23 के लिये

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
12-20 दिन से
1-45 दिन तक (कुं
2 दिस दशमी शुक्रवार
12-4 दिन से
1-29 दिन तक (कुं
4 दिस द्वादशी रविवार
11-56 दिन से
1-21 दिन तक (कुं

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
11-36 दिन से
1-21 दिन तक (कुं

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार
9-51 दिन से
11-13 दिन तक (मी
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
9-47 दिन से
11-9 दिन तक (मी
1 फरवरी एकादशी बुध
9-29 दिन से
10-49 दिन तक (मी
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र
9-20 दिन से
10-41 दिन तक (मी

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
8-54 दिन से
10-13 दिन तक (मी

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
12-51 दिन से
2-6 दिन तक (मि
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-42 दिन से
2-33 दिन तक (मि
3 मार्च एकादशी शुक्रवार
7-31 प्रात: से
8-51 दिन तक (मी
11-32 रात से
1-39 रात तक (धं

चैत्र शुक्ल पक्ष

15 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार
9-26 दिन से
11-41 दिन तक (मि
16 अप्रैल पूर्णिमा शनिवार
9-22 दिन से
11-37 दिन तक (मि
11-8 रात से
1-35 रात तक (धं

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल पंचमी गुरुवार
9-2 दिन से
11-18 दिन तक (मि
11-18 दिन से
1-42 दिन तक (क
8-48 रात से
9-50 रात तक (वृं
22 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
11-4 रात से
1-12 रात तक (धं

24 अप्रैल नवमी रविवार
11-6 दिन से
1-30 दिन तक (क
10-57 रात से
1-4 रात तक (धं
25 अप्रैल दशमी सोमवार
8-46 दिन से
11-2 दिन तक (मि
27 अप्रैल द्वादशी बुधवार
10-45 रात से
12-52 रात तक (धं
28 अप्रैल त्रयोदशी गुरु
10-50 दिन से
1-14 दिन तक (क
10-41 रात से
12-48 रात तक (धं
29 अप्रैल चतुर्दशी शुक्र
10-46 दिन से
1-10 दिन तक (क
10-37 रात से
12-44 रात तक (धं

वैशाख शुक्ल पक्ष

2 मई द्वितीया सोमवार
12-33 रात से
2-11 रात तक (मं
4 मई तृतीया बुधवार
10-27 दिन से
12-50 दिन तक (क
10-17 रात से
12-24 रात तक (धं
9 मई अष्टमी सोमवार
9-58 रात से
12-5 रात तक (धं
11 मई दशमी बुधवार
9-50 रात से
11-53 रात तक (धं
11-53 रात से
1-30 रात तक (म
12 मई एकादशी गुरुवार
9-55 दिन से
12-19 दिन तक (क
11-49 रात से
1-32 रात तक (म

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
9-32 दिन से
11-55 दिन तक (क
11-55 रात से
1-4 रात तक (म
20 मई पंचमी शुक्रवार
9-2 दिन से
11-48 दिन तक (क
9-14 रात से
11-18 रात तक (धं
21 मई षष्ठी शनिवार
9-20 दिन से
11-44 दिन तक (क
9-10 रात से
11-14 रात तक (धं
25 मई दशमी बुधवार
9-4 दिन से
11-28 दिन तक (क
10-58 रात से
12-41 रात तक (म
26 मई एकादशी गुरुवार
9-00 दिन से
11-24 दिन तक (क
10-54 रात से
12-37 रात तक (धं
27 मई द्वादशी शुक्रवार
8-56 दिन से

11-20 दिन तक (क
10-50 रात से
12-33 रात तक (धं

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
8-36 दिन से
11-00 दिन तक (क
6 जून षष्ठी सोमवार
8-17 दिन से
10-40 दिन तक (क
10-9 रात से
11-48 रात तक (म
8 जून अष्टमी बुधवार
8-9 दिन से
10-32 दिन तक (क
9 जून नवमी गुरुवार
8-5 दिन से
9-57 दिन तक (क
9-57 रात से
11-36 रात तक (म
10 जून दशमी शुक्रवार
8-1 दिन से
10-25 दिन तक (क
9-53 रात से
11-32 रात तक (म
13 जून चतुर्दशी सोमवार
7-49 प्रात: से
10-13 दिन तक (क
7-39 रातसे
9-23 रात तक (धं

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून तृतीया शुक्रवार
7-23 शां से
9-26 रात तक (धं
23 जून दशमी गुरुवार
7-10 प्रात: से
9-33 दिन तक (क
9-2 रात से
10-43 रात तक (म
26 जून त्रयोदशी रविवार
1-5 दिन से
2-3 दिन तक (कं
8-50 रात से
10-29 रात तक (म
27 जून चतुर्दशी सोमवार
11-39 दिन से
2-00 दिन तक (कं
11-51 रात से
1-10 रात तक (मी

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई चतुर्थी रविवार
11-16 दिन से
1-36 दिन तक (कं
11-27 रात से
12-46 रात तक (मी
4 जुलाई पंचमी सोमवार
6-27 प्रात: से
8-43 दिन तक (क
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
6-19 प्रात: से
8-42 दिन तक (क
11-15 रात से
12-35 रात तक (मी
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
6-15 प्रात: से
8-58 दिन तक (क
3-44 दिन से
6-00 शां तक (वृं
11-11 रात से
12-31 रात तक (मी

8 जुलाई नवमी शुक्रवार
10-56 दिन से
1-17 दिन तक (कं
11-7 रात से
12-27 रात तक (मी
9 जुलाई दशमी शनिवार
10-52 दिन से
11-24 दिन तक (कं

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई पंचमी सोमवार
3-1 दिन से
5-22 दिन तक (वृं
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
10-9 दिन से
12-29 दिन तक (कं
10-20 रात से
11-40 रात तक (मी
21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
10-5 दिन से
12-26 दिन तक (कं
23 जुलाई दशमी शनिवार
10-8 रात से
11-28 रात तक (मी
24 जुलाई एकादशी रविवार
9-53 दिन से
12-14 दित तक (कं
2-39 दिन से
4-58 दिन तक (वृं
10-4 रात से
11-24 रात तक (मी
12-55 रात से
2-54 रात तक (वृ
25 जुलाई द्वादशी सोमवार
9-49 दिन से
12-10 दिन तक (कं
10-00 रात से
11-20 रात तक (मी

श्रावण शुक्ल पक्ष

30 जुलाई द्वितीया शनिवार
2-14 दिन से
4-34 दिन तक (वृं
9-41 रात से
11-00 रात तक (मी
12-32 रात से
2-25 रात तक (वृ
31 जुलाई तृतीया रविवार
9-26 दिन से
11-46 दिन तक (कं
1 अगस्त चतुर्थी सोमवार
9-33 रात से
10-52 रात तक (मी
12-24 रात से
2-17 रात तक (वृ
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
6-52 प्रातः से
9-14 दिन तक (सिं
1-58 दिन से
4-19 दिन तक (वृं
8-00 रात से
9-25 रात तक (कुं
9-25 रात से
10-45 रात तक (मी
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
9-10 दिन से
11-30 दिन तक (कं
9-21 रात से
10-41 रात तक (मी
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
6-44 प्रातः से

9-6 दिन तक (कं
1-50 दिन से
4-11 दिन तक (वृं
8 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
3-59 दिन से
6-1 शां तक (धं
9-5 रात से
10-25 रात तक (मी
10 अगस्त त्रयोदशी बुध
9-00 दिन से
11-7 दिन तक (कं
8-58 रात से
10-17 रात तक (मी
1-42 रात से
3-57 रात तक (मि

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त तृतीया रविवार
1-26 रात से
3-41 रात तक (मि
15 अगस्त चतुर्थी सोमवार
8-27 दिन से
10-47 दिन तक (कं
3-31 दिन से
5-34 दिन तक (धं
1-22 रात से
3-37 रात तक (मि

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सप्त प्रतिपदा सोमवार
12-46 दिन से
2-49 दिन तक (धं
10-37 रात से
12-52 रात तक (मि
28 सप्त तृतीया बुधवार
12-38 दिन से
2-41 दिन तक (धं
10-29 रात से
12-44 रात तक (मि

मार्ग शुक्ल पक्ष

26 नवम्बर तृतीया शनिवार
12-28 दिन से
1-53 दिन तक (कुं
1-53 दिन से
3-12 दिन तक (मी
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-38 दिन से
10-28 दिन तक (धं
2 दिस दशमी शुक्रवार
12-8 दिन से
1-33 दिन तक (मी
10-56 रात से
1-18 रात तक (सिं
3 दिस एकादशी शनिवार
12-00 दिन से
1-25 दिन तक (कुं
10-48 रात से
1-10 रात तक (सिं
4 दिस द्वादशी रविवार
11-56 दिन से
1-21 दिन तक (कुं
1-21 दिन से
2-41 दिन तक (मी
10-44 रात से
1-6 रात तक (सिं
8 दिस पूर्णिमा गुरुवार
12-32 दिन से
1-6 दिन तक (कुं
1-6 दिन से
2-25 दिन तक (मी
10-29 रात से
12-50 रात तक (सिं

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार

11-36 दिन से

12-32 दिन तक (कुं

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार

10-32 दिन से

11-52 दिन तक (मी

10-17 रात से

12-38 रात तक (कं

19 जनवरी द्वादशी गुरुवार

3-4 दिन से

5-20 दिन तक (मि

10-5 रात से

12-26 रात तक (कं

20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र

10-16 दिन से

11-36 दिन तक (मी

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार

10-9 दिन से

11-28 दिन तक (मी

9-53 रात से

12-14 रात तक (कं

25 जनवरी चतुर्थी बुधवार

9-42 रात से

12-2 रात तक (कं

26 जनवरी पंचमी गुरुवार

2-37 दिन से

4-52 दिन तक (मि

9-38 रात से

11-58 रात तक (कं

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

2-33 दिन से

4-48 दिन तक (मि

9-34 रात से

11-54 रात तक (कं

28 जनवरी सप्तमी शनिवार

9-45 दिन से

11-4 दिन तक (मी

2-29 दिन से

4-44 दिन तक (मि

1 फरवरी एकादशी बुध

9-29 दिन से

10-49 दिन तक (मी

9-14 रात से

11-35 रात तक (कं

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार

8-47 रात से

11-7 रात तक (कं

9 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

8-58 दिन से

10-17 दिन तक (मी

1-42 दिन से

3-57 दिन तक (मि

3-47 रात से

5-40 रात तक (धं

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

8-54 प्रातः से

10-13 दिन तक (मी

1-38 दिन से

3-53 दिन तक (मि

3-43 रात से

5-46 रात तक (धं

11 फरवरी पंचमी शनिवार

8-50 दिन से

10-9 दिन तक (मी

1-34 दिन से

3-49 दिन तक (मि

8-35 रात से
10-55 रात तक (कं
16 फरवरी एकादशी गुरु
8-30 दिन से
9-50 दिन तक (मी
1-14 दिन से
3-30 दिन तक (मि
8-15 रात से
10-36 रात तक (कं
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8-11 रात से
10-32 रात तक (कं
18 फरवरी त्रयोदशी शनि
8-22 दिन से
9-42 दिन तक (मी

1-6 दिन से
3-22 दिन तक (मि
8-7 रात से
10-28 रात तक (कं
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार
8-18 दिन से
9-38 दिन तक (मी
1-3 दिन से
2-43 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
12-51 दिन से
2-6 दिन तक (मि
7-51 रात से
10-12 रात तक (कं
23 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
12-47 दिन से
2-2 दिन तक (मि
7-48 रात से
10-8 रात तक (कं
5 मार्च त्रयोदशी रविवार
2-13 रात से
4-15 रात तक (धं
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार
12-4 दिन से
2-19 दिन तक (मि
7-4 शां से
9-25 रात तक (कं

प्रवेश मुहूर्त
(नविस मकानस या फलैटस अचनुक साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई षष्ठी शनिवार
12-38 दिन से
3-00 दिन तक (सिं
3-00 दिन से
5-21 दिन तक (कं
12 मई एकादशी गुरुवार
7-40 प्रात: से
9-55 दिन तक (मि
12-19 दिन से
2-40 दिन तक (सिं

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
7-8 प्रात: से
9-24 दिन तक (मि
11-47 दिन से
2-9 दिन तक (सिं
2-9 दिन से
4-29 दिन तक (कं

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
11-00 दिन से
12-59 दिन तक (सिं
4 जून पंचमी शनिवार

6-9 प्रात: से
8-25 दिन तक (मि
10-48 दिन से
1-10 दिन तक (सिं
1-10 दिन से
3-30 दिन तक (कं
9 जून नवमी गुरुवार
10-29 दिन से
12-50 दिन तक (सिं
10 जून दशमी शुक्रवार
5-46 प्रात: से
8-1 दिन तक (मि
10-25 दिन से
12-46 दिन तक (सिं

आषाढ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9-2 दिन से
11-24 दिन तक (सिं
11-24 दिन से
1-44 दिन तक (कं
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
8-42 दिन से
11-4 दिन तक (सिं
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-1 शां से
7-38 शां तक (धं
9 जुलाई दशमी शनिवार

8-31 दिन से
10-52 दिन तक (सिं

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार
12-38 दिन से
2-41 दिन तक (धं
30 सप्त पंचमी शुक्रवार
12-30 दिन से
2-33 दिन तक (धं

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-38 दिन से
10-28 दिन तक (धं
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार

8-30 दिन से
8-58 दिन तक (धं
2 दिस दशमी शुक्रवार
8-23 दिन से
10-25 दिन तक (धं
3 दिस एकादशी शनिवार
8-19 दिन से
10-21 दिन तक (धं

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार
2-37 दिन से
4-52 दिन तक (मि
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
2-33 दिन से
4-48 दिन तक (मि

1 फरवरी एकादशी बुध
9-29 दिन से
10-49 दिन तक (मी

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
8-54 दिन से
10-13 दिन तक (मी
1-38 दिन से
3-53 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
12-51 दिन से
2-6 दिन तक (मि

5-30 दिन से

6-15 शां तक (सिं

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

4-54 दिन से

6-24 शां तक (सिं

शंकु प्रतिष्ठा
बुनियाद-मकान
(कॅन-द्युन)

(शंकु प्रतिष्ठा के लिये स्यंध निषेध नहीं हैं।)

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई षष्ठी शनिवार

3-00 दिन से

5-21 दिन तक (कं

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

7-8 प्रातः से

9-24 दिन तक (मि

2-9 दिन से

4-29 दिन तक (कं

21 मई षष्ठी शनिवार

7-4 प्रातः से

9-20 दिन तक (मि

2-5 दिन से

4-25 दिन तक (कं

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

1-22 दिन से

3-42 दिन तक (कं

4 जून पंचमी शनिवार

6-9 प्रातः से

8-25 दिन तक (मि

1-10 दिन से

3-40 दिन तक (कं

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

5-37 शां से

7-36 शां तक (धं

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार

6-52 प्रातः से

9-14 दिन तक (सिं

4-19 दिन से

6-21 शां तक (धं

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार

6-48 प्रातः से

9-10 दिन तक (सिं

9-10 दिन से

11-30 दिन तक (कं

4-15 दिन से

6-17 शां तक (धं

भाद्र कृष्ण पक्ष

13 अगस्त द्वितीया शनिवार

8-35 दिन से

10-55 दिन तक (कं

3-3 दिन से

5-42 दिन तक (धं

भाद्र शुक्ल पक्ष

29 अगस्त द्वितीया सोमवार

2-36 दिन से

4-39 दिन तक (धं

6-18 शां से

6-54 शां तक (कुं

1 सप्त पंचमी गुरुवार

7-20 प्रातः से

9-40 दिन तक (कं

2-25 दिन से

4-27 दिन तक (धं

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

8-31 दिन से

10-41 दिन तक (धं

1-45 दिन से

3-4 दिन तक (मी

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोम

10-5 दिन से

11-24 दिन तक (मी

2-49 दिन से

5-4 दिन तक (मि

26 जनवरी पंचमी गुरुवार

2-37 दिन से

4-52 दिन तक (मि

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

2-33 दिन से

4-48 दिन तक (मि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

8-54 दिन से

10-13 दिन तक (मी

1-38 दिन से

3-53 दिन तक (मि

11 फरवरी पंचमी शनिवार

8-50 दिन से

10-9 दिन तक (मी

1-34 दिन से

3-49 दिन तक (मि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुध

12-51 दिन से

2-6 दिन तक (मि

चूढा कर्म मुहूर्त (ज़रकासय-सॅाथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल पंचमी बुधवार

8-8 दिन से

10-2 दिन तक (वृ

2-41 दिन से

5-2 दिन तक (कं

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

1-52 दिन से

4-7 दिन तक (सिं

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई पंचमी शुक्रवार

10-19 दिन से

12-32 दिन तक (क

12 मई एकादशी गुरुवार

5-50 प्रात: से

7-44 प्रात: तक (वृ

7-44 प्रात: से

9-59 दिन तक (मि

12-32 दिन से

2-44 दिन तक (सिं

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

7-16 प्रात: से

8-9 दिन तक (मि

20 मई पंचमी शुक्रवार

7-8 प्रात: से

9-24 दिन तक (मि

9-24 दिन से

11-47 दिन तक (क

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

8-36 दिन से

11-00 दिन तक (क

2 जून तृतीया गुरुवार

4-3 दिन से
6-6 शां तक (तु
9 जून नवमी गुरुवार
8-21दिन से
10-29 दिन तक (क
10-29 दिन से
12-50 दिन तक (सिं
10 जून दशमी शुक्रवार
8-1 दिन से
10-25 दिन तक (क
10-25 दिन से
12-46 दिन तक (सिं

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-49 दिन से
11-28 दिन तक (सिं
11-28 दिन से
1-48 दिन तक (कं
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9-2 दिन से
11-24 दिन तक (सिं
11-24 दिन से
1-44 दिन तक (कं
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
6-19 प्रातः से
8-42 दिन तक (क
8-42 दिन से
11-4 दिन तक (सिं
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
11-13 दिन से
1-5 दिन तक (कं
1-5 दिन से
3-28 दिन तक (तु

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
5-43 प्रातः से
8-7 दिन तक (क
8-7 दिन से
10-29 दिन तक (सिं
10-29 दिन से
12-49 दिन तक (कं

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार
10-18 दिन से
12-38 दिन तक (वृं
12-38 दिन से
2-41 दिन तक (धं
30 सप्त पंचमी शुक्रवार
7-46 प्रातः से
10-10 दिन तक (तु
12-30 दिन से
2-33 दिन तक (धं

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
10-28 दिन से
10-41 दिन तक (धं
12-20 दिन से
1-35 दिन तक (कुं
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-31 दिन से
8-58 दिन तक (धं
2 दिस दशमी शुक्रवार
8-23 दिन से
10-25 दिन तक (धं
12-4 दिन से
1-29 दिन तक (कुं

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
11-36 दिन से
1-2 दिन तक (कुं
1-2 दिन से
2-21 दिन तक (मी

वाग्दान मुहूर्त
(गण्डन साथ)

माघ शुक्ल पक्ष

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

2-33 दिन से

4-48 दिन तक (मि

1 फरवरी एकादशी बुध

8-50 दिन से

10-9 दिन तक (मी

3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

9-21 दिन से

10-41 दिन तक (मी

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्र

8-58 दिन से

10-17 दिन तक (मी

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

12-51 दिन से

2-6 दिन तक (मि

2-6 दिन से

5-30 दिन तक (क

2 मार्च एकादशी गुरुवार

2-35 दिन से

4-58 दिन तक (क

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

7-31 प्रातः से

8-51 दिन तक (मी

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल पंचमी बुधवार

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

21 अप्रैल पंचमी गुरुवार

22 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

25 अप्रैल दशमी शुक्रवार

27 अप्रैल द्वादशी बुधवार

28 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

2 मई द्वितीया सोमवार

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 प्रातः तक

11 मई दशमी बुधवार

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

8-9 दिन से

20 मई पंचमी शुक्रवार

22 मई सप्तमी रविवार

12-59 दिन तक

25 मई दशमी बुधवार

26 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

12-59 दिन तक

6 जून षष्ठी सोमवार

9 जून नवमी गुरुवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

20 जून सप्तमी सोमवार

26 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई चतुर्थी रविवार

5-6 शां से

4 जुलाई पंचमी सोमवार

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

6-25 शां से
10 जुलाई एकादशी रविवार
9-54 दिन से
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-49 प्रात: तक
13 जुलाई पूर्णिमा बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

14 जुलाई प्रतिपदा गुरुवार
15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
18 जुलाई पंचमी सोमवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
22 जुलाई नवमी शुक्रवार
4-24 दिन से
24 जुलाई एकादशी रविवार
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

31 जुलाई तृतीया रविवार
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
7 अगस्त दशमी रविवार
4-29 दिन तक
8 अगस्त एकादशी सोम
2-36 दिन से
12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त तृतीया रविवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सप्त प्रतिपदा सोमवार
28 सप्त तृतीया बुधवार
30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-25 दिन से
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिस दशमी शुक्रवार
7 दिस चर्तुदशी बुधवार
8 दिस पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
14 दिस षष्ठी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुध
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-17 दिन से
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र
9-59 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
23 जनवरी द्वितीया सोम
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार
12-34 दिन से
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
30 जनवरी नवमी सोमवार
10-11 दिन से
1 फरवरी एकादशी बुध

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

6 फरवरी प्रतिपदा सोम
3-2 दिन से
8 फरवरी तृतीया बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-58 प्रात: से
16 फरवरी एकादशी गुरु
17 फरवरी द्वादशी शुक्र

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
26 फरवरी सप्तमी रविवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
6 मार्च चतुदर्शी सोमवार
4-17 दिन से

जातकर्म मुहूर्त (काहनेथर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल द्वितीया रविवार
12-16 दिन तक
6 अप्रैल पंचमी बुधवार
7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-32 प्रात: तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
9-59 दिन से
8 मई सप्तमी रविवार
2-56 दिन तक
12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
12-59 दिन तक
2 जून तृतीया गुरुवार
4-3 दिन से
9 जून नवमी शुक्रवार
8-21 प्रात: से

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-36 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-49 दिन से
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
10 जुलाई एकादशी रवि
9-54 दिन से
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-49 प्रात: तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
7 अगस्त दशमी रविवार
4-29 दिन तक
10 अगस्त त्रयोदशी बुध
9-39 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार
30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-58 दिन तक
2 दिस दशमी शुक्रवार
4 दिस द्वादशी रविवार

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिस तृतीया रविवार
4-14 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुध
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

1 मार्च दशमी बुधवार

9-51 दिन तक

2 मार्च एकादशी गुरुवार

12-42 दिन से

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

विद्यारम्भ मुहूर्त

(पढाई आरम्भ करने या स्कूल भेजने का मुहूर्त) स्कूल गछनुक साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल द्वितीया रविवार

12-36 दिन तक

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 प्रात: तक

5 मई चतुर्थी गुरुवार

10-00 दिन से

6 मई पंचमी शुक्रवार

11 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

8-9 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

2 जून तृतीया गुरुवार

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-36 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

6-25 शां से

10 जुलाई एकादशी रवि

9-54 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिस द्वादशी रविवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार

11-34 दिन से

11 दिस तृतीया रविवार

4-14 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी चतुर्थी बुधवार

12-34 दिन से

1 फरवरी एकादशी बुध

2 फरवरी द्वादशी गुरुवार

4-26 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

2 मार्च एकादशी गुरुवार

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

दधि मुहूर्त
लड़की को दूध देने का मुहूर्त (दुध साथ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

19 अप्रैल तृतीया भौमवार

4-38 दिन तक

21 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-12 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई सप्तमी रविवार

2-56 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

31 मई प्रतिपदा भौमवार

10 बजे दिन से

2 जून तृतीया गुरुवार

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10 जुलाई एकादशी रवि

9-54 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त पंचमी भौमवार

5-28 शां से

7 अगस्त दशमी रविवार

4-29 दिन तक

11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार

10-38 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

27 सप्त द्वितीया भौमवार

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिस तृतीया रविवार

4-14 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार

5 फरवरी पूर्णिमा रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

2 मार्च एकादशी गुरुवार

12-42 दिन से

दिवचक्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल द्वितीया रविवार

12-36 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रैल प्रतिपदा रविवार

18 अप्रैल द्वितीया सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

10 जून दशमी शुक्रवार

12 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

11-43 दिन से

7 जुलाई अष्टमी गुरुवार

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

6-25 शां से

10 जुलाई एकादशी रविवार

11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

5-30 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार

5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार

7 अगस्त दशमी रविवार

12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सप्त प्रतिपदा सोमवार

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

10-28 दिन से

4 दिस द्वादशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोम

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

नया दुकान खोलने या नया काम आरम्भ करने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल पंचमी बुधवार

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

11 अप्रैल दशमी सोमवार

6-50 प्रात: तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 प्रात: तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

12-59 दिन तक

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

10 जून दशमी शुक्रवार

7-26 प्रात: तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-36 दिन से

17 जून तृतीया शुक्रवार

6-10 प्रात: तक

23 जून दशमी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

11 जुलाई द्वादशी सोमवार

7-49 प्रात: तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त सप्तमी गुरुवार

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार

9-39 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

5-20 शां से

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

10-28 दिन तक

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार

11-34 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी द्वादशी गुरुवार

3-17 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुध

2-2 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

1 मार्च दशमी बुधवार

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

3-42 दिन से

नया मकान, फ्लैट या भूमि खरीदने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 दिन तक

6 मई पंचमी शुक्रवार

9-19 दिन से

11 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

12-59 दिन तक

2 जून तृतीया गुरुवार

4-3 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-36 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

12-12 दिन से

13 जुलाई पूर्णिमा बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्र

11-34 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी चतुर्थी बुधवार

12-34 दिन से

1 फरवरी एकादशी बुध

2-2 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

1 मार्च दशमी बुधवार

9-51 दिन तक

2 मार्च एकादशी गुरुवार

12-42 दिन से

3 मार्च एकादशी शुक्र

9-11 दिन तक

शिशर मुहूर्त

शिशुर लागनुक साथ

(शिशर मुर्हूत के लिये पौष मास निषेध नही है।)

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर चतुर्थी रविवार

4-25 दिन से

2 दिस दशमी शुक्रवार

4 दिस द्वादशी रविवार

7 दिस चतुर्दशी बुधवार

10-24 दिन से

8 दिस पूर्णिमा गुरुवार

9-37 दिन तक

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार

11 दिस तृतीया रविवार

4-14 दिन तक

18 दिस दशमी रविवार

21 दिस त्रयोदशी बुधवार

पौष शुक्ल पक्ष

30 दिस अष्टमी शुक्रवार

1 जनवरी दशमी रविवार

12-47 दिन तक

4 जनवरी त्रयोदशी बुध

माघ कृष्ण पक्ष

12 जनवरी पंचमी गुरुवार

2-23 दिन से

पन्न मुहूर्त

(पन्न दिनुक साथ)

(पन्न मुर्हूत के लिये स्यंध निषेध नही है।)

भाद्र शुक्ल पक्ष

31 अगस्त चतुर्थी बुधवार

1 सप्त पंचमी गुरुवार

2 सप्त षष्ठी शुक्रवार

8 सप्त त्रयोदशी गुरुवार

1-45 दिन से

9 सप्त चतुर्दशी शुक्रवार

दीपदान मुर्हूत

(तील द्युनुक साथ)

(नोट : अस्त के कारण दीपदान के महूर्त बहुत कम है मासवार के दिन कर सकते है।)

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुध

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

27 फरवरी अष्टमी सोमवार

1 मार्च दशमी बुधवार

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

3-42 दिन से

अन्न प्राशन मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल पंचमी बुधवार

6-1 शां तक
11 अप्रैल दशमी सोमवार
6-50 प्रात: तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

25 अप्रैल दशमी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-32 प्रात: तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
9-19 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
5-29 दिन तक
25 मई दशमी बुधवार
10-32 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
12-59 दिन तक
2 जून तृतीया गुरुवार
4-3 दिन से
9 जून नवमी गुरुवार
8-21 दिन से
10 जून दशमी शुक्रवार
7-26 प्रात: तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-36 दिन से
17 जून तृतीया शुक्रवार
6-10 प्रात: तक
23 जून दशमी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-49 दिन से
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-25 शां से

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-35 प्रात: तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार
30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
1-35 दिन तक
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-58 दिन तक
2 दिस दशमी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
10-28 दिन तक
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-58 प्रात: से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

1 मार्च दशमी बुधवार

9-51 दिन तक

स्लैब या छत्त (सीमेन्ट स्लैब डालने का मुर्हूत)

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रैल सप्तमी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई चतुर्थी गुरुवार

10-00 दिन तक

6 मई पंचमी शुक्रवार

8 मई सप्तमी रविवार

2-56 दिन तक

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

12-59 दिन से

2 जून तृतीया गुरुवार

8 जून अष्टमी बुधवार

8-30 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-36 दिन से

17 जून तृतीया शुक्रवार

6-10 प्रातः तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

5-30 शां तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार

9-30 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर चतुर्थी रविवार

4-25 दिन से

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्र

2.58 दिन से

11 दिस तृतीया रविवार

4-14 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी द्वादशी गुरुवार

3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

1 मार्च दशमी बुधवार

9-51 दिन से

2 मार्च एकादशी गुरुवार

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

वाहन खरीदने का मुर्हूत

साईकल, स्कूटर, गाड़ी इत्यादि लाने का मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

11 अप्रैल दशमी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 प्रात: तक

6 मई पंचमी शुक्रवार

9-19 दिन से

11 मई दशमी बुधवार

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

5-29 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

12-59 दिन तक

2 जून तृतीया गुरुवार

4-3 दिन से

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

17 जून तृतीया शुक्रवार

6-10 प्रात: तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

4 जुलाई पंचमी सोमवार

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

6-25 शां से

11 जुलाई द्वादशी सोमवार

7-49 प्रात: तक

13 जुलाई पूर्णिमा बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त सप्तमी गुरुवार

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार

2-15 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

10-28 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुध

3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

1 मार्च दशमी बुधवार

9-51 दिन से

2 मार्च एकादशी गुरुवार

10-42 दिन से

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

नया चुल्हा या गैस जलाने का मुर्हूत

नोव गैस ज़ालनुक साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

11 अप्रैल दशमी सोमवार

6-50 प्रात: तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

1-52 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार

7-32 प्रात: तक

6 मई पंचमी शुक्रवार

9-19 दिन से

11 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार

8-9 दिन तक

20 मई पंचमी शुक्रवार

27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

2 जून तृतीया गुरुवार

4-3 दिन से

9 जून नवमी गुरुवार

8-21 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-36 दिन से

17 जून तृतीया शुक्रवार

6-10 प्रात: तक

23 जून दशमी गुरुवार

24 जून एकादशी शुक्रवार

8-3 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार

10-49 दिन से

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

4 जुलाई पंचमी सोमवार

8-43 दिन से

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

11-43 दिन से

8 जुलाई नवमी शुक्रवार

6-25 शां से

11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

5-30 दिन से

25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार

6-47 शां से

8 अगस्त एकादशी सोम

2-36 दिन से

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार

9-39 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सप्त तृतीया बुधवार

30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

पौष शुक्ल पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुध
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-17 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुध
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-58 प्रातः से
15 फरवरी नवमी बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
1 मार्च दशमी बुधवार
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-42 दिन से
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

कर्ण छेदन मुर्हूत
(कन्नु च्वम्बनुक साथु)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल षष्ठी गुरुवार
11 अप्रैल दशमी सोमवार
6-50 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

25 अप्रैल दशमी सोमवार
5-11 दिन तक
28 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
5-39 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-32 प्रातः तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
9-19 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई एकादशी गुरुवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2 जून तृतीया गुरुवार
4-3 दिन से
9 जून नवमी गुरुवार
8-21 दिन से
10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-3 प्रातः तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
11-43 दिन से
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-25 शां से
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-49 प्रातः तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलांई द्वितीया शुक्रवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार

21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8-12 प्रात: तक
25 जुलाई द्वादशी सोम

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
9-46 दिन तक
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार
10-38 दिन से
12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सप्त प्रतिपदा सोमवार
30 सप्त पंचमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
10-28 दिन से
8 दिस पूर्णिमा गुरुवार
12-32 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिस प्रतिपदा शुक्रवार
2-58 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुध
5-22 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुध
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

वस्त्र धारण मुहूर्त

3 अप्रैल
12-36 दिन तक
6 अप्रैल
17 अप्रैल
27 अप्रैल
28 अप्रैल
6 मई
9-19 दिन से
8 मई
2-56 दिन तक
12 मई
20 मई
22 मई
25 मई
26 मई
27 मई
2 जून
4-3 दिन से
8 जून
8-30 दिन तक
9 जून
8-21 दिन से
10 जून
12 जून
16 जून
12-36 दिन से

17 जून	6-25 शां से	4-29 दिन तक	21 सिप्तम्बर	13 नवम्बर
6-10 प्रात: तक	10 जुलाई	10 अगस्त	28 सिप्तम्बर	10-17 दिन से
19 जून	14 जुंलाई	9-39 दिन से	30 सिप्तम्बर	20 नवम्बर
5-55 प्रात: तक	15 जुलाई	12 अगस्त	6 अक्टूबर	24 नवम्बर
23 जून	5-30 शां से	24 अगस्त	9 अक्टूबर	27 नवम्बर
24 जून	20 जुलाई	10-37 दिन तक	14 अक्टूबर	4-25 दिन से
8-3 दिन तक	21 जुलाई	31 अगस्त	23 अक्टूबर	2 दिसम्बर
26 जून	8-12 दिन तक	3-12 दिन से	26 अक्टूबर	4 दिसम्बर
1-5 दिन से	24 जुलाई	1 सिप्तम्बर	27 अक्टूबर	7 दिसम्बर
30 जून	29 जुलांई	2 सिप्तम्बर	28 अक्टूबर	10-24 दिन से
1 जुलाई	9-46 दिन तक	7 सिप्तम्बर	10-33 दिन तक	8 दिसम्बर
6 जुलाई	3 अगस्त	8 सिप्तम्बर	6 नवम्बर	12-32 दिन तक
7 जुलाई	4 अगस्त	11 सिप्तम्बर	4-28 दिन तक	11 दिसम्बर
7-28 शां तक	5 अगस्त	8-1 दिन से	10 नवम्बर	4-14 दिन तक
8 जुलाई	7 अगस्त			

18 दिसम्बर
21 दिसम्बर
29 दिसम्बर
11-43 दिन से
30 दिसम्बर
1 जनवरी
4 जनवरी
12 जनवरी
2-23 दिन से
15 जनवरी
18 जनवरी
5-22 दिन तक
22 जनवरी
26 जनवरी
27 जनवरी
3 फरवरी
5 फरवरी
12-7 दिन तक
10 फरवरी
7-58 प्रात: से
22 फरवरी
24 फरवरी
2 मार्च
12-42 दिन से
3 मार्च
8 मार्च
9 मार्च
10 मार्च
12 मार्च
16 मार्च
4-46 दिन से
17 मार्च
2-45 दिन तक

सर्वार्थ सिद्धि योग

(किसी खास परिस्थिति वश कोई कार्य मुहूर्त पर कर सकना सम्भव न होने पर सवार्थ सिद्धि योग मुहूर्त का आश्रय लेना चाहिये।)

3 अप्रैल
12-36 दिन तक
5 अप्रैल
6 अप्रैल
10 अप्रैल
11 अप्रैल
6-50 प्रात: तक
12 अप्रैल
8-34 दिन तक
28 अप्रैल
5-39 दिन से
29 अप्रैल
6 मई
9-19 दिन से
8 मई
2-56 दिन तक
16 मई
1-17 दिन से
21 मई
26 मई
27 मई
30 मई
2 जून
4-3 दिन से
3 जून
13 जून
17 जून
9-55 दिन से
18 जून
7-38 प्रात: तक

21 जून	12-11 दिन तक	13 सिप्तम्बर	14 नवम्बर	18 दिसम्बर
23 जून	21 जुलाई	6-35 शां से	1-14 दिन से	10-17 दिन तक
24 जून	2-16 दिन तक	25 सिप्तम्बर	18 नवम्बर	21 दिसम्बर
8-3 प्रात: तक	23 जुलाई	2 अक्टूबर	20 नवम्बर	8-32 प्रात: से
27 जून	25 जुलाई	9 अक्टूबर	24 नवम्बर	26 दिसम्बर
30 जून	28 जुलाई	4-20 दिन तक	27 नवम्बर	4-41 दिन तक
6 जुलाई	3 अगस्त	11 अक्टूबर	12-37 दिन से	30 दिसम्बर
11-43 दिन से	6-23 शां तक	4-16 दिन तक	28 नवम्बर	11-23 दिन से
9 जुलाई	20 अगस्त	19 अक्टूबर	10-28 दिन से	1 जनवरी
12-12 दिन से	22 अगस्त	8-1 दिन से	4 दिसम्बर	12-47 दिन तक
11 जुलाई	7-40 प्रात: तक	21 अक्टूबर	6 दिसम्बर	3 जनवरी
7-49 प्रात: तक	25 अगस्त	23 अक्टूबर	8-37 दिन से	4-25 दिन तक
15 जुलाई	4-15 दिन तक	27 अक्टूबर	7 दिसम्बर	4 जनवरी
5-30 दिन तक	11 सिप्तम्बर	12-10 दिन से	12 दिसम्बर	10 जनवरी
19 जुलाई	8-1 दिन से	30 अक्टूबर	13 दिसम्बर	9 बजे दिन तक

18 जनवरी
27 जनवरी
3 फरवरी
5 फरवरी
18 फरवरी
5-41 दिन से
23 फरवरी
24 फरवरी
27 फरवरी
2 मार्च
3-42 दिन तक
11 मार्च
7-10 प्रात: से
17 मार्च
2-45 दिन से
18 मार्च
21 मार्च
5-24 प्रात: से

यात्रा मुहूर्त

(यात्रा मुहूर्तों में केवल तिथि, वार तथा नक्षत्र को प्रधानता दी गई है।)

2 अप्रैल पश्चिम उत्तर
3 अप्रैल पूर्वोत्तर
12-36 दिन से
5 अप्रैल पूर्व दक्षिण
6 अप्रैल उत्तर विना
7 अप्रैल पूर्व पश्चिम
9 अप्रैल पूर्व विना
10 अप्रैल पूर्वोत्तर
11 अप्रैल पूर्व विना
6-50 प्रात: तक
15 अप्रैल पश्चिम विना
16 अप्रैल पूर्व विना
8-39 दिन तक
19 अप्रैल पूर्व दक्षिण
20 अप्रैल उत्तर विना
21 अप्रैल पूर्व पश्चिम
22 अप्रैल पश्चिम विना
24 अप्रैल पूर्वोत्तर
26 अप्रैल पूर्व यात्रा
27 अप्रैल पूर्व पश्चिम
28 अप्रैल पूर्व पश्चिम
29 अप्रैल पूर्वोत्तर
3 मई पूर्व दक्षिण
4 मई उत्तर विना
5 मई पूर्व पश्चिम
6-15 प्रात: तक
6 मई पश्चिम विना
9-19 दिन से
7 मई पूर्व विना
8 मई पूर्वोत्तर
2-56 दिन तक
10 मई पूर्व दक्षिण
11 मई उत्तर विना
12 मई पूर्व पश्चिम
18 मई उत्तर विना
19 मई पूर्व पश्चिम
20 मई पश्चिम विना
21 मई पूर्व विना
22 मई पूर्वोत्तर
23 मई पश्चिम उत्तर
24 मई पूर्व यात्रा
25 मई पूर्व पश्चिम
26 मई पश्चिम विना
30 मई पूर्व विना
31 मई पूर्व दक्षिण
1 जून उत्तर विना
12-59 दिन तक

2 जून पूर्व पश्चिम	22 जून पूर्व पश्चिम	6 जुलाई उत्तर विना	23 जुलाई पूर्व विना	5-50 दिन से
4-3 दिन से	23 जून पूर्व पश्चिम	7 जुलाई पूर्व पश्चिम	7-2 प्रात: से	7 अगस्त पूर्वोत्तर
3 जून पश्चिम विना	24 जून पश्चिम विना	12-19 दिन तक	24 जुलाई पूर्वोत्तर	8 अगस्त पूर्व विना
4 जून पूर्व विना	8-3 दिन तक	10 जुलाई पूर्व पश्चिम	25 जुलाई पूर्व विना	9 अगस्त पूर्व दक्षिण
7 जून पूर्व दक्षिण	26 जून पूर्वोत्तर	9-44 दिन से	27 जुलाई उत्तर विना	10 अगस्त उत्तर विना
8 जून उत्तर विना	1-5 दिन से	11 जुलाई पूर्व विना	28 जुलाई पूर्व पश्चिम	11 अगस्त पूर्व पश्चिम
9 जून पूर्व पश्चिम	27 जून पूर्व विना	13 जुलाई उत्तर विना	29 जुलाई पश्चिम विना	12 अगस्त पूर्वोत्तर
13 जून पूर्व विना	28 जून पूर्व दक्षिण	14 जुलाई पूर्व पश्चिम	31 जुलाई पूर्वोत्तर	13 अगस्त पश्चिम उत्तर
16 जून पूर्व पश्चिम	7-4 शां तक	15 जुलाई पश्चिम विना	2-19 दिन से	14 अगस्त पूर्वोत्तर
17 जून पश्चिम विना	30 जून पूर्व पश्चिम	18 जुलाई पश्चिम उत्तर	1 अगस्त पूर्व विना	15 अगस्त पश्चिम उत्तर
18 जून पूर्व विना	1 जुलाई पश्चिम विना	19 जुलाई पूर्व यात्रा	2 अगस्त पूर्व दक्षिण	20 अगस्त पूर्व विना
19 जून पूर्वोत्तर	4 जुलाई पूर्व विना	20 जुलाई पूर्व पश्चिम	3 अगस्त उत्तर विना	21 अगस्त पूर्वोत्तर
20 जून पश्चिम उत्तर	8-43 दिन से	21 जुलाई पूर्व पश्चिम	6-23 शां तक	23 अगस्त पूर्व दक्षिण
21 जून पूर्व यात्रा	5 जुलाई पूर्व दक्षिण	2-16 दिन तक	6 अगस्त पूर्व विना	10-43 दिन से

24 अगस्त उत्तर विना	13 सिप्तम्बर पूर्व यात्रा	3 अक्टूबर पूर्व विना	8-1 प्रातः तक	4 नवम्बर पूर्वोत्तर
25 अगस्त पूर्व पश्चिम	14 सिप्तम्बर उत्तर विना	4 अक्टूबर पूर्व दक्षिण	21 अक्टूबर पश्चिम विना	5 नवम्बर पश्चिमोत्तर
4-15 दिन तक	6-56 प्रातः तक	5 अक्टूबर उत्तर विना	12-27 दिन से	6 नवम्बर पूर्वोत्तर
28 अगस्त पूर्वोत्तर	18 सिप्तम्बर पूर्वोत्तर	6 अक्टूबर पूर्व पश्चिम	22 अक्टूबर पूर्व विना	7 नवम्बर पूर्व विना
29 अगस्त पूर्व विना	19 सिप्तम्बर पूर्व विना	7 अक्टूबर पूर्वोत्तर	23 अक्टूबर पूर्वोत्तर	10 नवम्बर पूर्व पश्चिम
30 अगस्त पूर्व दक्षिण	6-9 शां तक	8 अक्टूबर पश्चिम उत्तर	24 अक्टूबर पूर्व विना	11 नवम्बर पश्चिम विना
3 सिप्तम्बर पूर्व विना	20 सिप्तम्बर पूर्व दक्षिण	9 अक्टूबर पूर्वोत्तर	2-41 दिन तक	12 नवम्बर पूर्व विना
4 सिप्तम्बर पूर्वोत्तर	21 सिप्तम्बर उत्तर विना	10 अक्टूबर पश्चिम उत्तर	27 अक्टूबर पूर्व पश्चिम	7-32 दिन तक
5 सिप्तम्बर पूर्व विना	24 सिप्तम्बर पूर्व विना	11 अक्टूबर पूर्व दक्षिण	12-10 दिन से	13 नवम्बर पूर्वोत्तर
6 सिप्तम्बर पूर्व दक्षिण	25 सिप्तम्बर पूर्वोत्तर	4-16 दिन तक	28 अक्टूबर पश्चिम विना	10-17 दिन से
7 सिप्तम्बर उत्तर विना	26 सिप्तम्बर पूर्व विना	14 अक्टूबर पश्चिम विना	30 अक्टूबर पूर्वोत्तर	14 नवम्बर पूर्व विना
8 सिप्तम्बर पूर्व पश्चिम	30 सिप्तम्बर पश्चिम विना	15 अक्टूबर पूर्व विना	31 अक्टूबर पूर्व विना	18 नवम्बर पश्चिम विना
9 सिप्तम्बर पूर्वोत्तर	1 अक्टूबर पूर्व विना	18 अक्टूबर पूर्व दक्षिण	2 नवम्बर पूर्व पश्चिम	19 नवम्बर पूर्व विना
12 सिप्तम्बर पश्चिम उत्तर	2 अक्टूबर पूर्वोत्तर	19 अक्टूबर उत्तर विना	3 नवम्बर पूर्व पश्चिम	20 नवम्बर पूर्वोत्तर

24 नवम्बर पूर्व पश्चिम	9 दिसम्बर पश्चिम विना	28 दिसम्बर पूर्व पश्चिम	18 जनवरी उत्तर विना	4 फरवरी पूर्व विना
25 नवम्बर पश्चिम विना	2-58 दिन तक	29 दिसम्बर पूर्व पश्चिम	19 जनवरी पूर्व पश्चिम	5 फरवरी पूर्वोत्तर
26 नवम्बर पूर्व विना	11 दिसम्बर पूर्वोत्तर	30 दिसम्बर पूर्वोत्तर	20 जनवरी पश्चिम विना	12-12 दिन तक
27 नवम्बर पूर्वोत्तर	12 दिसम्बर पूर्व विना	31 दिसम्बर पश्चिम उत्तर	21 जनवरी पूर्व विना	7 फरवरी पूर्व दक्षिण
28 नवम्बर पूर्व विना	17 दिसम्बर पूर्व विना	1 जनवरी पूर्वोत्तर	22 जनवरी पूर्वोत्तर	5-44 दिन से
29 नवम्बर पूर्व दक्षिण	18 दिसम्बर पूर्वोत्तंर	12-47 दिन तक	23 जनवरी पश्चिम उत्तर	8 फरवरी उत्तर विना
30 नवम्बर पूर्व पश्चिम	10-17 दिन तक	3 जनवरी पूर्व दक्षिण	24 जनवरी पूर्व यात्रा	9 फरवरी पूर्व पश्चिम
1 दिसम्बर पूर्व पश्चिम	21 दिसम्बर उत्तर विना	4-25 दिन से	25 जनवरी पूर्व पश्चिम	10 फरवरी पश्चिम विना
2 दिसम्बर पूर्वोत्तर	8-32 दिन से	4 जनवरी उत्तर विना	26 जनवरी पूर्व पश्चिम	14 फरवरी पूर्व दक्षिण
3 दिसम्बर पश्चिम उत्तर	22 दिसम्बर पूर्व पश्चिम	5 जनवरी पूर्व पश्चिम	27 जनवरी पूर्वोत्तर	15 फरवरी उत्तर विना
4 दिसम्बर पूर्वोत्तर	23 दिसम्बर पश्चिम विना	7 जनवरी पूर्व विना	28 जनवरी पूर्व विना	16 फरवरी पूर्व पश्चिम
7 दिसम्बर उत्तर विना	24 दिसम्बर पूर्व विना	11 जनवरी उत्तर विना	31 जनवरी पूर्व दक्षिण	17 फरवरी पश्चिम विना
10-24 दिन से	26 दिसम्बर पूर्व विना	11-49 दिन से	1 फरवरी उत्तर विना	18 फरवरी पूर्व विना
6 दिसम्बर पूर्व पश्चिम	27 दिसम्बर पूर्व यात्रा	12 जनवरी पूर्व पश्चिम	3 फरवरी पश्चिम विना	19 फरवरी पूर्वोत्तर

20 फरवरी पश्चिम उत्तर
22 फरवरी पूर्व पश्चिम
23 फरवरी पूर्व पश्चिम
24 फरवरी पश्चिम विना
27 फरवरी पूर्व विना
28 फरवरी पूर्व दक्षिण
1 मार्च उत्तर विना
9-51 दिन तक
2 मार्च पूर्व पश्चिम
12-42 दिन से
3 मार्च पश्चिम विना
4 मार्च पूर्व विना
7 मार्च पूर्व दक्षिण
8 मार्च उत्तर विना
9 मार्च पूर्व पश्चिम
15 मार्च उत्तर विना
16 मार्च पूर्व पश्चिम
17 मार्च पश्चिम विना
18 मार्च पूर्व विना
20 मार्च पश्चिम उत्तर

श्री गणेश जी की स्थापना

कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तथा चर्तुदशी, चित्रा या ज्येष्ठा नक्षत्र तथा रविवार पर करनी चाहिए

मूर्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त

मूर्ति प्रतिष्ठा के लिये उत्तरायण मास (21 दिसम्बर से 21 जून तक का समय उत्तरायण होता है) विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण समय में भी नक्षत्र, योग, तिथि, वार इत्यादि देख कर मुहूर्त निकाले जाते है परन्तु उस के अतिरिक्त कुछ शुभ दिन शास्त्रकारों ने मूर्ति प्रतिष्ठा के लिये निश्चित किये हैं इस कारण आप इन शुभ दिनों पर मूर्ति प्रतिष्ठा कर सकते हैं।

विष्णु, श्रीराम की स्थापना

परशुराम जयन्ती, अक्षया तृतीया, राम नवमी, विजयादशमी तथा दीपावली पर कर सकते है।

भगवान् शिव की स्थापना

श्रावण एवं फाल्गुन मास की चर्तुदशी (शिवरात्रि) पर करी चाहिये।

श्री हनुमान जी की स्थापना

चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण पक्ष चर्तुदशी, मंगलवार, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र पर करनी चाहिए।

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत,विवाह शंकु प्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त 2022-23 के लिये

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

3 अप्रैल	(सू
6 अप्रैल	(सू
7 अप्रैल	(सू
4 मई	(गु
12 मई	(गु
18 मई	(गु
20 मई	(गु
1 जून	(गु
9 जून	(गु
10 जून	(गु
30 जून	(गु
6 जुलाई	(गु
15 जुलांई	(गु
28 सिप्तम्बर	(गु
1 फरवरी	(गु
3 फरवरी	(गु
10 फरवरी	(गु
2 मार्च	(गु
3 मार्च	(गु

वृष कन्या मकर

3 अप्रैल	(चं
6 अप्रैल	
7 अप्रैल	
11 अप्रैल	
20 अप्रैल	(सू
4 मई	(सू
8 मई	(सू
12 मई	(सू
18 मई	(चं
20 मई	
1 जून	
9 जून	
10 जून	
30 जून	
1 जुलाई	
11 जुलाई	
15 जुलाई	
28 सिप्तम्बर	
30 सिप्तम्बर	
25 नवम्बर	
28 नवम्बर	
2 दिसम्बर	
4 दिसम्बर	(चं
9 दिसम्बर	
26 जनवरी	
27 जनवरी	
1 फरवरी	
3 फरवरी	
10 फरवरी	
22 फरवरी	
2 मार्च	
3 मार्च	

मिथुन तुला कुम्भ

3 अप्रैल	
6 अप्रैल	(चं
7 अप्रैल	(चं
11 अप्रैल	
20 अप्रैल	
4 मई	(चं
8 मई	
12 मई	(चं
18 मई	(सू
1 जून	(सू
30 जून	
1 जुलाई	
6 जुलाई	(चं
10 जुलाई	
11 जुलाई	
15 जुलाई	(चं

- 28 सिप्तम्बर (सू
- 30 सिप्तम्बर (सू
- 25 नवम्बर
- 28 नवम्बर (चं
- 2 दिसम्बर
- 4 दिसम्बर
- 9 दिसम्बर
- 26 जनवरी (सू
- 27 जनवरी (सू
- 3 फरवरी (सू
- 22 फरवंरी
- 2 मार्च
- 3 मार्च

कर्कट वृश्चिक मीन

- 3 अप्रैल (गु
- 6 अप्रैल (गु
- 7 अप्रैल (गु
- 11 अप्रैल (गु
- 20 अप्रैल
- 4 मई
- 8 मई
- 12 मई
- 18 मई
- 20 मई
- 1 जून (चं
- 9 जून
- 10 जून
- 1 जुलाई (सू
- 6 जुलाई (सू
- 10 जुलाई (सू
- 11 जुलाई (सू
- 15 जुलाई (सू
- 28 सिप्तम्बर (चं
- 30 सिप्तम्बर
- 25 नवम्बर
- 28 नवम्बर
- 2 दिसम्बर
- 4 दिसम्बर
- 9 दिसम्बर (चं
- 26 जनवरी
- 27 जनवरी
- 1 फरवरी
- 3 फरवरी (चं
- 10 फरवरी
- 2 मार्च (चं
- 3 मार्च (चं

विवाह मुहूर्त
राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

- 15 अप्रैल (गु
- 16 अप्रैल (गु
- 21 अप्रैल (गु
- 24 अप्रैल (गु
- 25 अप्रैल (गु
- 29 अप्रैल (गु
- 2 मई (गु
- 4 मई (गु
- 9 मई (गु
- 11 मई (गु
- 12 मई (गु
- 18 मई (गु
- 20 मई (गु
- 21 मई (गु
- 27 मई (गु
- 1 जून (गु
- 6 जून (गु
- 8 जून (गु
- 9 जून (गु
- 10 जून (गु
- 17 जून (गु
- 23 जून (गु
- 26 जून (गु
- 27 जून (गु
- 3 जुलाई (गु
- 4 जुलाई (गु
- 6 जुलाई (गु
- 7 जुलाई (गु

8 जुलाई (गु	11 फरवरी (गु	27 अप्रैल (सू	8 जून (चं	18 जुलाई	15 अगस्त
9 जुलाई (गु	16 फरवरी (गु	28 अप्रैल (सू	9 जून	20 जुलाई	26 सिप्तम्बर
26 सिप्तम्बर (गु	17 फरवरी (गु	29 अप्रैल (सू	10 जून	21 जुलाई (चं	28 सिप्तम्बर
28 सिप्तम्बर (गु	18 फरवरी (गु	2 मई (सू	13 जून	23 जुलाई	26 नवम्बर (चं
16 जनवरी (गु	19 फरवरी (गु	4 मई (सू	17 जून	24 जुलाई	28 नवम्बर
19 जनवरी (गु	5 मार्च (गु	12 मई (सू	23 जून (चं	25 जुलाई	2 दिसम्बर
20 जनवरी (गु	6 मार्च (गु	18 मई (चं	26 जून	30 जुलाई (चं	3 दिसम्बर
22 जनवरी (गु	**वृष कन्या**	20 मई	27 जून	31 जुलाई (चं	4 दिसम्बर (चं
27 जनवरी (गु	**मकर**	21 मई	3 जुलाई (चं	1 अगस्त (चं	8 दिसम्बर
28 जनवरी (गु		25 मई	4 जुलाई (चं	3 अगस्त	9 दिसम्बर
1 फरवरी (गु	15 अप्रैल (सू	27 मई (चं	6 जुलाई	4 अगस्त	16 जनवरी
8 फरवरी (गु	16 अप्रैल (सू	1 जून	7 जुलाई	5 अगस्त	19 जनवरी
9 फरवरी (गु	24 अप्रैल (सू	6 जून (चं	8 जुलाई	8 अगस्त (चं	20 जनवरी (चं
10 फरवरी (गु	25 अप्रैल (सू	7 जून (चं	9 जुलाई	10 अगस्त	22 जनवरी
				14 अगस्त	25 जनवरी

26 जनवरी	5 मार्च (चं	2 मई (चं	17 जून (चं	25 जुलाई (चं	3 दिसम्बर
27 जनवरी	6 मार्च (चं	4 मई (चं	23 जून	30 जुलाई	4 दिसम्बर
28 जनवरी (चं	मिथुन तुला कुम्भ	9 मई	26 जून (चं	31 जुलाई	8 दिसम्बर (चं
1 फरवरी		11 मई	27 जून (चं	1 अगस्त (चं	9 दिसम्बर
8 फरवरी		12 मई (चं	3 जुलाई	3 अगस्त (चं	16 जनवरी (सू
9 फरवरी	15 अप्रैल (चं	18 मई (सू	4 जुलाई	4 अगस्त	19 जनवरी (सू
10 फरवरी	16 अप्रैल	25 मई (सू	6 जुलाई (चं	5 अगस्त	20 जनवरी (सू
11 फरवरी	21 अप्रैल	26 मई (सू	7 जुलाई (चं	8 अगस्त	25 जनवरी (सू
16 फरवरी (चं	22 अप्रैल	27 मई (सू	8 जुलाई	10 अगस्त	26 जनवरी (सू
17 फरवरी (चं	24 अप्रैल (चं	1 जून (सू	9 जुलाई	14 अगस्त	27 जनवरी (सू
18 फरवरी	25 अप्रैल	6 जून (सू	18 जुलाई	15 अगस्त	28 जनवरी (सू
19 फरवरी	27 अप्रैल	8 जून (सू	20 जुलाई	28 सिप्तम्बर (सू	1 फरवरी (सू
22 फरवरी	28 अप्रैल	10 जून (सू	21 जुलाई	26 नवम्बर	8 फरवरी (सू
23 फरवरी	29 अप्रैल	13 जून (सू	23 जुलाई (चं	28 नवम्बर (चं	11 फरवरी (सू
			24 जुलाई (चं	2 दिसम्बर	16 फरवरी

17 फरवरी		25 अप्रैल	(चं	27 मई		18 जुलाई		15 अगस्त		27 जनवरी	
18 फरवरी	(चं	27 अप्रैल		1 जून	(चं	20 जुलाई		26 सिप्तम्बर		28 जनवरी	
19 फरवरी	(चं	28 अप्रैल		6 जून		21 जुलाई		28 सिप्तम्बर	(चं	1 फरवरी	(चं
22 फरवरी		29 अप्रैल		8 जून		23 जुलाई		26 नवम्बर		8 फरवरी	
5 मार्च		2 मई		9 जून		24 जुलाई		28 नवम्बर		9 फरवरी	
6 मार्च		4 मई	(चं	10 जून	(चं	25 जुलाई	(चं	2 दिसम्बर		10 फरवरी	
ककर्ट वृश्चिक मीन		9 मई		13 जून		30 जुलाई		3 दिसम्बर		11 फरवरी	(चं
15 अप्रैल		11 मई		17 जून	(सू	31 जुलाई		4 दिसम्बर		16 फरवरी	(सू
16 अप्रैल	(चं	12 मई		23 जून	(सू	1 अगस्त		8 दिसम्बर		17 फरवरी	(सू
21 अप्रैल		18 मई		26 जून	(सू	3 अगस्त		9 दिसम्बर	(चं	18 फरवरी	(सू
22 अप्रैल		20 मई		27 जून	(सू	4 अगस्त	(चं	16 जनवरी	(चं	19 फरवरी	(सू
24 अप्रैल		21 मई		3 जुलाई	(सू	5 अगस्त	(चं	20 जनवरी		22 फरवरी	(सू
		25 मई		4 जुलाई	(सू	8 अगस्त		22 जनवरी		23 फरवरी	(सू
		26 मई		6 जुलाई	(सू	10 अगस्त		25 जनवरी		5 मार्च	(सू
				7 जुलाई		14 अगस्त		26 जनवरी		6 मार्च	(सू

प्रवेश मुहूर्त
राशि के अनुसार
(मकानस अचनुक साथ या फलैटस)

मेष सिंह धनु

12 मई
20 मई
1 जून
9 जून
10 जून
6 जुलाई
8 जुलाई
9 जुलाई
28 सिप्तम्बर
28 नवम्बर
30 नवम्बर
1 फरवरी
10 फरवरी

वृष कन्या मकर

7 मई
12 मई
20 मई
1 जून
4 जून
9 जून
10 जून
1 जुलाई
6 जुलाई
8 जुलाई
9 जुलाई
28 सिप्तम्बर
30 सिप्तम्बर
28 नवम्बर
30 नवम्बर
2 दिसम्बर
3 दिसम्बर
26 जनवरी
27 जनवरी
1 फरवरी
10 फरवरी
22 फरवरी
3 मार्च

मिथुन तुला कुम्भ

7 मई
1 जून
4 जून
1 जुलाई
8 जुलाई
9 जुलाई
28 सिप्तम्बर
30 सिप्तम्बर
30 नवम्बर
2 दिसम्बर
3 दिसम्बर
26 जनवरी
27 जनवरी
22 फरवरी
3 मार्च

ककर्ट वृश्चिक मीन

7 मई
12 मई
20 मई
4 जून
9 जून
10 जून
1 जुलाई
6 जुलाई
30 सिप्तम्बर
28 नवम्बर
2 दिसम्बर
3 दिसम्बर
26 जनवरी
27 जनवरी
1 फरवरी
10 फरवरी
22 फरवरी
3 मार्च

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त
राशि के अनुसार
(कॅन ध्रुन साथ)

मेष सिंह धनु

20 मई
21 मई
1 जून
15 जुलाई
3 अगस्त
4 अगस्त
13 अगस्त
29 अगस्त
1 सिप्तम्बर
28 नवम्बर
23 जनवरी
10 फरवरी
11 फरवरी

वृष कन्या मकर

7 मई
20 मई
21 मई
1 जून
4 जून
15 जुलाई
3 अगस्त
4 अगस्त
13 अगस्त
29 अगस्त
1 सिप्तम्बर
28 नवम्बर
23 जनवरी
26 जनवरी
27 जनवरी
10 फरवरी
11 फरवरी
22 फरवरी

मिथुन तुला कुम्भ

7 मई
1 जून
4 जून
13 अगस्त
1 सिप्तम्बर
23 जनवरी
26 जनवरी
27 जनवरी
11 फरवरी
22 फरवरी

कर्कट वृश्चिक मीन

7 मई
20 मई
21 मई
4 जून
15 जुलाई
29 अगस्त
28 नवम्बर
23 जनवरी
26 जनवरी
27 जनवरी
10 फरवरी
11 फरवरी
22 फरवरी

शान्ति के समान कोई तप नही, सन्तोष से श्रेष्ठ कोई सुख नहीं, तृष्णा से बढ कर कोई रोग नहीं और दया से बढ कर कोई धर्म नहीं।

कश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाति

हमारे पास ई0 1889 की छपी हुई एक पुस्तक मौजूद है, जिस में कश्मीरी पण्डितों के गोत्र और ज़ाते दर्ज है, उसी पुस्तक के आधार पर आम जनता की जानकारी के लिये विजयेश्वर पञ्चांग में हम ने गोत्र तथा ज़ात दर्ज किये है।

सं0	गोत्र	ज़ात	सं0	गोत्र	ज़ात
1	दत्तात्रेय	कौल, नगारी, जिन्सी, जलाली, वातल, सुल्तान, ओगरा, ऐमा, मोज़ा, दीनत, ताती, बसीह, किसू, मन्डल, सांगरी, राफिज़, बालव, द्राबी, बामज़ाई, र्शगा, पडरू, दफतरी (कौल), चमन	6	स्वामिन गौतम	गुरिटू, राज़दान, थपलू, नकैब, तहलाचार, काक, लाबरू, पारमन, ज़र्मी, पदौरा, लंगर, च्रंगू, खोसा, काकापोरी, बादाम, रैणा, काज़ी, चल्लू, प्याला, तोषखानी, भट्ठ (कटाल)
2	उपमान	रीवू।	7	स्वामिन गौतम लौगाक्ष	जोखू, राज़दान
3	धौह्य	राज़दान्।	8	स्वामिन भारद्वाज	तिक्कू, मुंशी, कहर, मिसकीन, घडियाली, बाज़ारी, खान, गगरू
4	कण्ठ धौम्या	राज़दान, वाँगनी, मुजू, शेर	9	पालदेव वास गार्गेय	शिवपूरी, पण्डित, मल्ला, पतू, मीरखोर, कदलभुजू, कोकरू, हंगरू, पंडित (ठठू), भवनू, बकाया, खशू, किचलू, मिसरी, खर, माम, खैचरी, पारिमू
5	स्वामिन मुद्गल्य	ज़ावेह, राज़दान, मुशरान, चन्ना, कण्ठ, खज़ांची, हस्त, वालव, मोंगा, देवानी, जटू, ज़ोतन, पोट, शोरा, लाला (राज़दान), नदन, ऋषि, विष्ण	10	पत सास कौशिक	गंजू, कुचरू, सोलू, जदू,

सं0	गोत्र	ज़ात
		अम्बारदार, कुली, वैष्णवी, ब्राब्रू, मुसलमान, कमान, वांचू, मियां, जवानशेर, जाला, पंजू, मट्टू, फोतदार, सत्मान।
11	देवपत सामिन औपमन्यु	
	कौशिक	शिवपूरी
12	देव औपमन्यु	खोसू, मेवा, पण्डित
13	भव कापिष्ठल औपमन्यु	वानी, खान
14	सामिन वास औपमन्यु	डुल्लू
15	राजपराशर	राज़दान
16	स्वामिन वास औपमन्यु	भट्ट, वल्ली
17	स्वामिन औपमन्यु	गिगू, वल्ली
18	कश औपमन्यु	भटट
19	भूतवास औपमन्यु लौगाक्ष	पैशन, जालपुरी, ठाकुर
20	राजभूत लौगाक्ष देवल	भान
21	रात्रि भार्गवा	ज़ित्शू
22	भूत लौगाक्ष - धौम्या गौतम	हण्डू, भट्ट (कटाल)
23	देवसामिन गौतम	
	कौशक मुद्गल्य भारद्वाज	पण्डित, कोकिल

सं0	गोत्र	ज़ात
24	स्वामिन मुद्गल्य पाराशर	गीरू
25	स्वामिन वास	तुफची
26	वरीवस	साहनी
27	वशिष्ठ गार्ग्य	पण्डिता
28	स्वामिन कौशिक	ठाकर, वातल, जालपुरी, द्राबू, हाली
29	स्वामिन भार्गवा	वाली, बटव
30	स्वामिन कौशिक भारद्धाज	भट्ट, कोकरू
31	स्वामिन शाण्डल्य	पण्डित, वास
32	स्वामिन वास आत्रेय	ठुस्सू, गासी, वाज़ा
33	स्वामिन गौतम आत्रेय	
	शलान कौत्स	रैणा, भटट
34	स्वामिन गौतम आत्रेय	चोलू
35	स्वामिन कण्ठ कश्यप	लाब्रू
36	स्वामिन गार्गेय	कचामा
37	स्वामिन गण भौशक	पावेह
38	स्वामिन गौतम भारद्वाज	कमदा
39	स्वामिन वास लौगाक्ष	तव
40	दरभारद्वाज	दर, त्रिसल, मिसरी, जवानशेर, कन्दहारी, थालचूर, ओदू, तुर्की,

सं0	गोत्र	ज़ात	सं0	गोत्र	ज़ात
		वागुज़ारी, बांगी, सर, चर	59	राजदत आत्रेय	
41	वशिष्ठ भारद्वाज	भटट, हखू, हण्डू		शलान कौत्स	भटट
42	शर्मण भारद्वाज	भटट, माड, कल्लू, वल्ली	60	शर्मण आत्रेय	गढू
43	देव भाराज कौशिक	देवा	61	भव आत्रेय	वारिकू
44	शाण्डल्य भारद्वाज	भटट	62	स्वामिन वार्षिकन	काठजू, काव, चौथाई
45	नन्द कौशिक भारद्वाज	भटट	63	भव कापिष्ठल	काव, त्रकरू, मटटू
46	कौशिक भारद्वाज	भटट	64	रात्र विशवामित्र अगस्त	त्रकरू, मटटू
47	कश्यप	आनन्द	65	दर केशटल	लदव, भटट
48	चण्द शाण्डली	साधू	66	कण्ठ कश्यप	वासव, राज़दान, भटट, आनन्द
49	वर्षाण्डली	जोगी	67	मित्र कश्यप	भटट, खेडा
50	वरवासक शाण्डली	सफाया	68	दत्तशर्मण कण्ठ कश्यप	ब्राडू, रैणा
51	वरदेव शीलान कपी	मोटा	69	देव कश्यम मुद्गल्य कश्यप	ब्राडू
52	मित्र शाण्डली	सैद	70	देव कश्यप मुद्गल्य गौतम	आखन
53	देव शाण्डली	भतफल	71	स्वामिन भार्गव भारद्वाज	
54	राज शाण्डली	वख		ओस अत्री	कल्लू
55	सम शाण्डली	भटट, ददरू	72	देव गर्गी	बहान
56	स्वामिन ऋषि कनि गार्गेय	कोल, कमज़ात	73	देव वसिष्ट	अकबलू
57	शेलान कौत्स	तेलवान, कोल, मुक्कू	74	देव कौत्स आत्रेय	बडगामी
58	कौत्स आत्रेय	भटट, राज़दान	75	देव विश्वामित्र वार्षिगन	वांगू

सं0	गोत्र	ज़ात
76	देव गौतम	भटट, पूर्वी
77	देव कण्ठ कश्यप	कार
78	देव लौगाक्ष	पण्डित, सन्तापोरी
79	देव कौशक	भटट
80	अर्थ वार्षिण शाण्डल्य	चौधरी
81	कौशिक	भटट, सलमान
82	पत्त सामिन कौशिक	पण्डित, वाईल
	देव रात्र परवार	
83	वसिष्ट	भटट, रंगाटेंग, काबू, मुज्जू, गरीब
84	रात्र विश्वामित्र अगस्त	पण्डित
85	कार चन्द शाण्डल्य	चौधरी, कार
86	मित्रा कौशिक	पण्डित
87	शरमताकौत्स	भटट, सस
88	दतवास	कहार
89	वसिष्ट स्वामिन मुद्गल्य	भण्डारी
90	ईश्वर शाण्डल्य कौशिक	रावल, नखासी
91	दत दत शैलान कौत्स	भटट, सत्थू, कसवा, मलिक, कहकशू
92	रात्र वार्षिगण	कोतर

सं0	गोत्र	ज़ात
93	पाराशर	पचिह, हज़ारी
94	आत्र भार्गव	हापा
95	भूत लौगाक्ष	पण्डित
96	राज वसिष्ट	शँगलू
97	ऋषि कौशिक	काशकारी
98	दत्त वार्षिमण	सनर
99	ऋषि कविगार्ग	ज़ारू
100	समवास गार्ग	भटट, सम
101	नन्द कौशिक	भटट
102	स्वामिन हासवसी	खान, कटू
103	भव कापिष्ठल	राडू, कल्ला, सापन, लटू, कटू, वांटू, चूर, चूदर, गीरू, हकीम, वांगनू, शैव
104	भव कापिष्ठल औपमन्यु	कठारू
105	स्वामिन वास लौगाक्ष	छटू
106	दरभारद्वाज	ज़ंगम
107	देव भारद्वाज	तू
108	भूत औपमन्य	खि, रैबरी, त्रारू, सैदा, उप्पल
109	स्वामिन आत्रेय	शाल, हण्डू, जदवाली, सिक,चक

सं0	गोत्र	ज़ात
110	शाण्डल्य	शायिर, टपिलू, गुल्ला, हकसर, चोपरा, कार, परचा
111	स्वामिनवास गार्गी	सम, नन्द, गदवा, दत्त, हलमत, लंगू, ऋषि
112	स्वामिन गोश वास औपमन्यू	चकू
113	शमर्ण कौत्स आत्रेय	रगू, नन्द, गदवा, दत्त
114	देव पाराशर	यच्छ
115	कण्ठ धौम्या	काव ब्रेठ
116	दर वार्षिमण	सफाया, बखशी, कुचरू, शाली
117	दर कापिष्ठल औपमन्यु	मीच
118	मित्रा स्वामिन कौशिक आत्रेय	पाण्डित हण्डू
119	वासुदेव पालगार्ग्य	पटवारी
120	पत स्वामिन कौशिक	कन्ना, कितरू, दरबारी, बल्ली, गणहार, सराफ, पीर,गारू, चीरिवू, खचरु, सपरु, वज़ीर, काचरु
121	ऋषिकन्य गार्ग्य	गोजा
122	देवभारद्वाज	माचा, गडरू
123	वसिष्ठ विश्वामित्र	त्रकरू

सं0	गोत्र	ज़ात
124	स्वामिन गौतम	तैमिनी
125	औपमन्यु कौशिक	सपरू
126	नन्द गौतम काश्यप	भटट
127	राज़ कौशिक	भटट
128	उपमन्यो लौगाक्षी	धोबी कारिहलू
129	गोश वाच्य उपमन्यु	पण्डिता
130	देवदत्त गौतम कौशिक भारद्वाज	पण्डित
131	शलाक्यान	पट्ठवारी
132	रत्न क्वच	रैणा
133	राज पराशर	राजदान
134	कारशाण्डल्य	शिशु
135	देवकश्यप	चत्ता
136	रात्र विश्वामित्र वसिष्ठ	त्रकरू
137	दर शालक्य	दर
138	काल	मातू, बिन्दरू (मट्टू)
139	देवशांडल्य	जान, तिंगलू
140	स्वामिन वसिष्ठ	कोठेदार
141	दर कापिष्ठल मानव	भूतनाथ, ज्योतिषी
142	विष्णु आत्रेय	भान

सं0	गोत्र	ज़ात	सं0	गोत्र	ज़ात
143	विश्वा मित्र अगस्त्य	राज़दान	162	वार्षगणे	हांजूरा
144	सामन्त	हखू	163	स्वामिन वाच उपमन्यु लौगाक्ष	बूनी
145	कौशिक	मान्तू	164	कण्ठ धौमन्यु	लंगू
146	दत्त कण्ठ कौशिक	भटट, रैणा	165	स्वामिन शाण्डल्य	दास
147	कौशिक गार्ग्य	पण्डिता	166	कार शाण्डल्य	चौधरी
148	वास गार्ग्य	पण्डिता	167	कूट भारद्वाज	पण्डित
149	नावकुश	पाधे	168	पिपलाद	शाह
150	भूत औपमन्य शालंकाय	गंजू	169	वास शौनके	पण्डिता
151	वार्षज्ञे	पण्डित	170	दत्त गात्रेय	भान
152	गौतम वार्षज्ञे	कोल, रैणा	171	स्वामिन् वत्स	भट्ट
153	स्वामिन वत्सल्य	गासी	172	गर्षणय	करणैल
154	वीर वस	सहानी	173	राज भूति-लोगाक्षदेत	भान
155	केशव भारद्वाज	नजावन	174	कश्यप कुतसी	भटट
156	शन शण्डल्य	राज़दान, बखशी	175	राजकौशिक	पण्डित
157	महन्त भारद्वाज	बखशी	176	अत्रि विश्वामिन विसष्ठ	मरहट्टा
158	कपिल कौशिक	हरकार	177	सोम वसिष्ठ भारद्वाज	वुठू
159	केशव	खेरा	178	रात्र विश्वामित्र अगस्त्य	बखशी
160	देव स्वामिन कौकिल	किसरू	179	कपिल	नाथू, मट्टास
161	दत्त वैष्णव	रैणा	180	गोपाल देव वास गार्गेय	काव

सं0	गोत्र	ज़ात
181	देव गौतम	पूर्वी
182	स्वामिन कौत्स भारद्वाज	भट्ट
183	पत्त स्वामिन उपमन्यु लौगाक्ष	पण्डिता
184	दुबल	टाक
185	दर वार्षगण्ये	भट्ट
186	दत्तवाशाग्नि	पंडिता
187	गण कौशिक	कौल
188	स्वामिन औपमन्य	वल्ली
189	सैम्य गार्गेय	चिरागी
190	शर्मण कौशिक	मुगलू
191	दत्त वाशाग्नि	पण्डिता
192	मित्र अत्रेय	कब्बू, शाह
193	कपिल कश्यप	भटट्
194	षट शाण्डल्य	मल्ला, दास, गुड्डुल
195	स्वामिन गौतम कौशिक	बकाया
196	स्वन्ध कुच्	पण्डिता
197	स्वामिन हास्य दिव्यास	भट्ट
198	वातस्य	भट्ट
199	अत्रि भार्गव	ज़ितषी
200	स्वामिन गौतम ऋषिगुणी	कौल
201	मित्रराात्री	काबू, शाह
202	कपिल केशव	भट्ट
203	शण्ड शाण्डल्य	दास, गदा, गुडलु

गोत्र लिखाने के लिये सर्म्पक करें : 094191-33233

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

माथे पर	धनवान	दाहिनी छाती पर	औरत से प्यार
दोनों भौंहे के मध्य	यात्रा कारक	छाती के बीच	सुखमय जीवन
बाई आखं पर	औरत से कलह	ह्रदय पर	बुद्धिमान
दाहिनी आंख पर	औरत से प्यार	पीठ पर	यात्रा कारक
ठोडी पर	औरत से प्यार कम	बगल में	दूसरों को हानि पहुंचाना
बाये गाल पर	फजूल खर्च		
दाहिने गाल पर	धन की अधिकता	कमर पर	अशांत मन
कान पर	मध्यम आयु	दाहिनी हथेली पर	धनवान
गर्दन पर	आराम	बाएं हथेली पर	फजूल खर्च
दाहिनी भुजा पर	मान प्रतिष्ठा	दाहिने पैर पर	यात्रा कारक
नाक पर	यात्रा कारक	बाएं पैर पर	कंजूसी
बाई भुजा पर	झगडा कारक	पांव के तलवे पर	अधिक यात्रा
बाई छाती पर	औरत से झगडा		

अन्तिम संस्कार विधि

यह संस्कारों की कतार में 24वां तथा मनुष्य जीवन का अन्तिम संस्कार है। गीता में लिखा है :-

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु
ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मात्-अपरि-हार्येऽर्थे
न त्वं शोचितुम्-अर्हसि।।

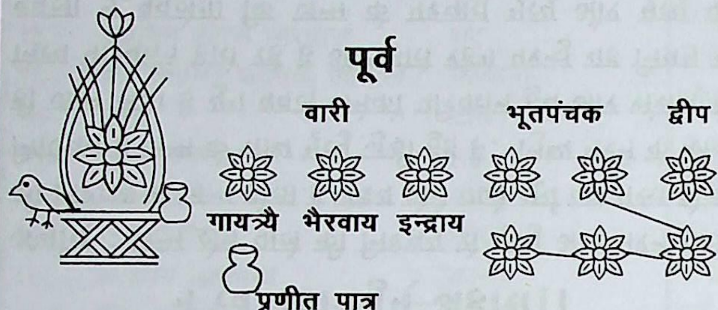
अर्थात् : जन्म लेने वाले की निश्चय से मृत्यु और मरने वाले की निश्चय से जन्म होता है उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निश्चित है जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है, मनुष्य मरने के लिये ही जन्म लेता है युग बदले अनेकों परिवर्तन हुये और संसार में नित्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा कि जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है दिन और रात की भान्ति जन्म और मृत्यु का चक्र चलता है। कौन कैसे और क्यों जन्म लेता और मरता है यह एक रहस्य है परन्तु इतना जानना जरूरी है कि मृत्यु अटल है उसके लिये शोक करना निष्फल है।

एक हिन्दू के लिये जैसे जातकर्म, नामकर्ण, चूडाकर्म आदि संस्कार वेद विधि अनुसार किये जाते हैं ऐसे ही अन्तिम संस्कार भी यज्ञ के रूप में किया जाता है। इस यज्ञ में पूर्णाहुति के रूप में पंच भौतिक शरीर को पुर्ण किया जाता है यह अन्तिम संस्कार रूपी यज्ञ किस का कहां और कब होगा किसी को मालूम नहीं है।

अन्तिम संस्कार की सामग्री

सफेद लट्ठा लगभग 10 मीटर, सुई धागा, छटांग भर रुई, पुलहोर (न मिलने पर) ऊन अथवा सूत का मोज़ा, शहद 1 तोला, केसर रती भर, घी आधा किलो (असली) धूप, अखरोट 15, यज्ञोपवीत 1, चोंग छोटे 10 न मिलने पर (डोने), दूध दही पाव-पाव भर, जव का आटा आधा किलो, जव दाना आधा किलो, वारी बड़ी 1 अदद्, ब्रिय मेव शीरीन् आदि लगभग 1 किलो, सिन्दूर 1 तोला, नारीवन 5 बन्दी, दर्भ के विष्टर 2

अन्तेष्टि कलश का चित्र





अद्द, पवित्र 2 अद्द, लकड़ी लगभग 10 मन 4 (सौ किलो)।

कनटोपे पर उल्टा गायत्री मन्त्र लिखें

ॐ त्-या दचो प्रन: योयोधिहिमधी स्यवदे गोंभ ण्यं रेर्वतुवि त्सर्त स्व: वर्भु भू ॐ।

अन्त्यदान विधि

मनुष्य के मरणसमुख होने पर अन्त्यदान करना आवश्यक है, अन्त्यदान के लिये यथाशक्ति चालव वस्त्र धन आदि एकत्रित करके अन्त्यदान करने वाले मरणो - न्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढें -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकम्-इव बन्धानात्- मृत्योर्मुखीय मामृतात्

ॐ इत्येकाक्षर ब्रह्म व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन् य: प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य

महीना पक्ष वार का नाम लेकर पढ़ें

आत्मनो वाङ्मन: कायोपार्जित पाप निवारणार्थं विष्णु प्रीत्यर्थं-अन्नं फलं दक्षिणां वस्त्रादि ददानि ददानि ददानि

पढ़कर सभी एकत्र किये वस्त्रों पर छींटे देकर-किसी दरिद्र नारायण को श्रद्धा से दीजिये।

अन्तिम संस्कार के विषय में कुछ जानकारी

गुरुजी न मिलने पर आप यह संस्कार खुद भी कर सकते हैं। जब भी आप समझेंगे कि मनुष्य के प्राण कण्ठ पर आये हैं तो मनुष्य को चारपाई अथवा बिस्तरे से उठाकर पृथ्वी पर उतारें, पृथ्वी लेपन कर के दर्भ अथवा घास बिछाकर थोड़ा सा तिल फैंके तथा मृतक को दक्षिण की ओर सिर रख कर उस पर रखें। सिर के नज़दीक ही जलता हुआ दीपक (चोंग) उत्तर की ओर मुंह करके रखें। जब तक क्रिया कर्म का कार्य आरम्भ नहीं होगा तब तक गीता पाठ अवश्य करते रहें या गीता का कैस्ट चलाये। किचन को साफ करके एक पाव जव के आटे के चुचवरू (रोटी) पाव भर आलू चूर्मा तथा एक किलो चावल का बत्ता बनाये। अपने बेड़े (आगन) में किसी जगह लेपन करें तथा अन्दर मृतक के सरहाने जलाया हुआ द्वीप लेपन की हुई जगह पर रखें, धूप जला कर रखें तथा चित्र में बनाये हुये ब्रह्म कलश, भूत पंचक के चित्र जव के आटे से बनाये ब्रह्म कलश के अषृदल पर एक द्वीप में पानी, अखरोट तथा दो दर्भ के तिनके रखें, कलश के नैऋति कोण के पास एक टाकू में दर्भ के दो तिनके, जल, डाल कर रखें। इस पात्र को प्रणीत पात्र कहते हैं गायत्री अष्टदल तथा अस्त्र अष्टदल पर एक एक दीप रखे दीप में पानी तथा अखरोट रखे भैरव पर वारी रखे। भूतपंचकों पर पांचदीप, पानी, दर्भ के दो दो तिनके डाल कर रखें, जव आटे के तीन पिंड बना कर किसी टाकू में रखे, किसी मिट्टी के बर्तन में थोड़ी सी लकड़ियां जल कर रखें। अब ब्रह्म कलश के सामने बैठ कर जलते हुये दीप-धूप को नमस्कार करते हुये पढ़ें।

ॐ कारो यस्य मूलं, क्रम-पद-जठरं, छन्द विस्तीर्ण- शाखा, ऋक्-पत्रं, साम- पुष्पं,

यजुर्-उचित फलं, स्यात्- अथर्वा- प्रतिष्ठा यज्ञ-छाया, सुश्वेतैर्- द्विजगण- मधुपैर् - गीयते-यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या, त्रिकालं दुरित-भय-हरः, पातु नो वेद वृक्षः।

भद्रं पश्येम, प्रचरेम, भद्रं, भद्रं वदेम, श्रृणु याम भद्रं, तन्नो मित्रो वरुणो मां हन्ताम्-आदितिः सिन्धुः पृथिवी उत-द्यौः। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव-चक्षुर-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धाते विष्णो- र्यत्-परमं पदम्।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़े:

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भूत पंचकों के कलश को केवल अर्घ चढ़ाते हुये पढें,

द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमः, अनु-द्रष्ट्रे नमः ख्यात्रेनमः, उपख्यात्रे नमः। जाताय नमः, जनिष्य-मानाय नमः, भूताय नमः, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, भ्रान्ताय नमः, तपसे नमः।

प्रणीतपात्र (जो ब्रह्मकलश के दायें तरफ रखा है।) में केसर का तिलक और (आगे लिखे तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुए पढ़े:

(1) संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः

(2) संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया, हृदयानि वः (3) आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।

कलश के पूर्व के तरफ अर्घ सहित तिलक फैंकते हुये पढ़ें:

ये देवाः पुरः सदोग्नि नेत्रा, रक्षोहणस्ते- नः

पान्तु, तेनोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

उत्तर की ओर अर्घतिलक फैंकते हुये पढ़ें :

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रा-वरुण-नेत्रा, रक्षोहणस्ते नः पान्तु, ते नो वन्तु, तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर की ओर अर्घ फैंकते हुये पढ़े :

ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अव-स्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा।

अपने आप को तिलक लगायें।

कलश को दो दर्भकाण्ड डालते हुये पढ़ें :

ध्रुवा-द्यौर्-ध्रुवा-पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा- विशम्- असि।

कलश को तिलक लगाते हुये पढ़ें :

अग्निम्-ईडे, पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्न-धातमम्।

यजमान अपने हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ें-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अररुषो धूर्तिः प्राणङ्- मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका ऊँगली पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ें :

वसो: पवित्रम्-असि शतधारं वसूना पवित्रम्-असि, सहस्र-धारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें

परमामने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय

आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :

स्वप्राकशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक आदि चढ़ाते हुये पढ़ें :

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् को तिलक आदि लगाते हुये पढ़े -

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः, समालभनं, गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।

यज्ञोपवीत बाँया रखकर किसी पात्र में अर्घ सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालते हुये पढ़ें

यत्रास्ति माता न पिता, न बन्धु, भ्रातापि नो-यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्रदिनं न रात्रिस्तत्रा-त्म दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य- तावत्, तिथौ-अद्य।

मृतक का नाम लेकर :-

.... **गोत्रोत्पन्नः अन्त्यक्रिया निमित्तं एष ते दीपः एष ते धूपः।**

टाकू में तिलक जल आदि डालते हुये पढ़ें -

पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्- अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्रवन्तु नः, भगवन्तः पाद्यम्-पाद्यम्।

टाकू में रखे हुये विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलश को छिड़कते हुये पढ़ें :-

महागणपत्यादिभ्य: कलशमण्डल- देवताभ्य: अस्त्राय गायत्र्यै भैरवाय; महादंष्ट्राय, करालाय, मदोत्कटाय, श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्य: पाद्यं नम:।

पाद्य शेष निर्माल्य में छोड़ कर फिर से टाकू में नया जल अर्घ्य के लिये डालते हुये पढ़ें :-

शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्त्रवन्तुन:, भगवन्त: अर्घ्यम् अर्घ्यम्। कलशमण्डल देवता, अस्त्र, गायत्रि, भैरव, महादंष्ट्र, कराल, मदोत्कट, श्मशानाधिपते, भैरव, वटुका-दय: इदं वो अर्घ्य नम:, तिलकं नम:, अर्घो नम:, पुष्पं नम: वासो नम:। आचमनीयं नम:।

खोसू (कटोरी) से तपर्ण करते हुए पढ़ें :-

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य मास तिथि वार *का नाम लेकर* **(पितु: अथवा मातु:)** *(जिसका देहान्त हुआ हो)* **अन्त्य क्रिया निमित्तं तिलाम्भसा स्वर्ग प्राप्तिर् अस्तु, परा तृप्तिर् अस्तु एता: कलश देवता: श्मशान भैरवा: प्रीयन्ता प्रीता: सन्तु।**

अन्त में सब कलशों को फूल चढ़ाते हुये पढ़े :-

ॐ तत् विष्णो: परम पदं सदा पश्यन्ति सूर्य: दिवीव चक्षुर आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांस: समिन्धिते विष्णो र्यत् परम पदम्।

टाकू में जो लकडी जल रही है उस में तिल तथा चावल के दाने डालते हुये पढ़ें :-

पात्रं तिलाऽक्षतै र्मिश्रं, कुसुमोदक विष्टरै: अग्ने श्चै शान दिक् भागे प्रणीतम् अभिधीयते। प्रणीतं नै ऋते स्थाप्यं स विष्णु नात्र संशय:।

अग्नि के सामने, आप अपने दायें तरफ एक चोंग रखिये, इस चोंग में जल विष्टर तिल डाल के रखें, यह "प्रणीत पात्र" कहलाता है, इस में तीन फूल डालते हुये पढ़ें :-

सं व: सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु व:, संसृष्टास्तन्वा सन्तु व:, संसृष्ट: प्राणो अस्तु व:, संय्या व:, प्रियास्तन्व:, संप्रिया हृदयानि व:, आत्मा वो अस्तु संप्रिय:, संप्रियास्तन्वो मम।।

प्रणीतपात्र में से नव बार जल से अग्नि को छिड़कते हुये पढ़ें:-

ऋतन्त्वा सत्येन अग्निं परिसमूहामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूहामि (2) ऋत सत्याभ्याँत्वा परिसमूहामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि (5) ऋत सत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (6) ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामि (7) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (8) ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि (9)

ज्वाला लिंग के ऊपर रखे हुय नारकतरू के पूर्व की ओर पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर तीन, पश्चिम की ओर पाँच तिनके फैंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू में एक चुचवरू उसके ऊपर थोडा सा जव रखें फिर स्रुच यानि दो मुख वाले लकड़ी के वुमुनहुर के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठा कर पढ़ें:-

मातु: अथवा पितु: अन्त्य क्रिया निमित्तं,

स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवरू पर डाल कर पढ़ें -

अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये कूष्मर्षेभ्य जुष्टं निर्वपामि।

स्रुच (दूसरे वुमुन हुरु) से घी की आहुतियाँ अग्नि में डालते हुए चुचवरू के टुकड़े बनाकर उसी के साथ डालते हुए पढ़ें-

(1) आयुष्य: प्राणं सन्तनु स्वाहा (2) प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा (3) व्यानात् अपानं सन्तनु स्वाहा (4) अपानात् चक्षु: सन्तनु स्वाहा (5) चक्षुष: श्रौत्रं सन्तनु स्वाहा (6) श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा (7) वाच: आत्मानं सन्तनु स्वाहा (8) आत्मान: पृथिवीं सन्तनु स्वाहा (9) पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा (10) अन्तरिक्षात् दिवं सन्तुनु स्वाहा (11) दिव: स्व: सन्तनु स्वाहा।

ऋतुतिथ्यादिभ्य: देवताभ्य: स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अभिजिते स्वाहा -

चुचवरू के छोटे छोटे टुकड़े भी घी के साथ आहुति के साथ डालते जायें -

वामे गायत्रयै स्वाहा, मध्ये भैरवाय स्वाहा, दक्षिणे अस्त्राय स्वाहा, भूतपंचकेभ्य: स्वाहा, ॐ भूर्लोकाय स्वाहा, ॐ भुवोलोकाय स्वाहा, ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा, ॐ भूर्भुव: स्व-र्लोकाय स्वाहा।

(आज्य पात्र का घी आदि सभी अग्नि में फैंके) अखरोट जो घी पात्र में होगा वह पूर्णहति का मंत्र पढ़ते हुये स्रुच से अग्नि में डालिये पूर्णाहुति डालते हुये पढ़ें -

आश्रावितं अत्याश्रावितं वषट्कृतं अवषट् कृतम् अननूक्तं अत्यनूक्तं च। यज्ञे तिरिक्तं कर्मणो यत् च हीनम् अग्नि स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा

(नोट) अग्नि का अछिद्र मत कीजिये - जब कि यही अग्नि आप ने शमशान में भी साथ लेना है।

कलशपूजा तथा अग्नि पूजा समाप्त करके वुज़ में लेपन करवा कर मृतक को लायें, पहने हुये कपडे उतारिये पुरुष हो या स्त्री स्नानपट लगाइये, गर्म पानी से स्नान कीजिये, गुह्यस्थान आदि को मिट्टी तथा पानी से साफ कीजिये, स्नान करके कर्ता आँगन के पूजा स्थान से अस्त्रकलश, भैरवकलश, गायत्री कलश के चोंगू और बारी का जल लाकर गर्म पानी के स्नान के पानी से मिलाये उस जल में दूध, दही, घी सर्षप, तिल डालें, शव को बिठा कर रखिये, लिखित 16 ऋचाओं से आहिस्ता आहिस्ता बाल्टी में से कर्ता पानी डालता जाये -

(1) ॐ सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् स भूमिं विष्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठत् दशांगुलम्॥ (2) पुरुष एवेदं सर्वं, यत् भूतं यत् च भव्यम्। उतामृत त्वस्ये शानो यत् अन्नेनाति रोहति। (3) एतावानस्य महिमातो, ज्यायान् च पुरुषः। पादोस्य विश्वा त्रिपाद् अस्या मृतं दिवि॥ (4) त्रिपाद् ऊधर्व उदैत् पुरुषः, पादो स्येहा भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत् सशना नशने अभिः॥ (5) तस्मात् विराड् अजायत, विराजो अधि पुरुषः। सजातो अत्यरिच्यत, पश्चात भूमिम् अथो पुरः॥ (6) यत्-पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत। वसन्तो अस्यासीद्-आज्यं ग्रीष्मं-इध्मः शरत् हविः॥ (7) तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम् अग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ (8) तस्मात यज्ञात् सर्वहुतः, संभृतं पृषत् आज्यम्। पशून तान् चक्रे, वायव्यान्- आरण्यान्- ग्राम्यान् च ये॥

(9) तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत:, ऋच: सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु-स्तस्मात्-अजायत॥ (10) तस्मात् अश्वा अजायन्त, ये के चोभयादत:। गावो ह जज्ञिरे, तस्मात् तस्मात् जाता अजावय:॥ (11) यत् पुरुषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किम्- अस्य, कौ बाहू, का ऊरू पादा उच्यते॥ (12) ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत् राजन्य: कृत:। ऊरू तदस्य यत्-वैश्य:, पदभ्यां शूद्रो अजायत॥ (13) चन्द्रम: मनसो जात:, चक्षो: सूर्यो अजायत। मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणात् वायुर्-अजायत॥ (14) नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत। पदभ्यां भूमि र्दिश: श्रोत्रात् तथा लोकान् अकल्पय न्॥ (15) सप्तास्या सन् परिधय: त्रिसप्त समिध: कृता:। देवा यत् यज्ञम् तन्वाना आबन्धन् पुरुषं पशुम्॥ (16) यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।

मृतक को स्नान करने वाले सामूहिक रूप से उच्चारण करते रहें:-

ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण *अथवा* क्षन्तव्यो मेपराध: शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो।

मृतक, पुरुष हो या स्त्री नया स्नानपट बाँधिये, पुरुष को पावों से नया यज्ञोपवीत डालकर बायें बाजू में रखिये, पुराना यज्ञोपवीत सिर से निकाले, नव द्वारों (नाक के दो नथने दो कान, दो आँखें, दो गुह्यस्थान और मुख को छोटे छोटे धूप के गोलों से बन्द

करके, अनामिका ऊँगली में पवित्र डाले सिन्दूर का तिलक और नारीवन बांधिये, यदि मृतक महिला हो तो नारीवन भी बायें कान में फंसा के रखें, मृतक के मुँह में एक सिक्का डालिये, लट्ठे तथा राम राम पट्ट आदि से मृतक के शरीर को ओढ कर सिर पर लट्ठे का कनटोपा जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मन्त्र लिखा हो यानि मृतक का सिर जिस कपड़े से ढाँपा जाये उस पर उल्टा गायत्री मन्त्र अवश्य लिखें, मृतक के पाँवों के तलों को थोडा सा शहद मले तथा घास का पुलहोर पाँवों में डालें पुलहोर में थोड़ी सी रुई भी रखिये (पुलहोर न मिलने पर ऊन या सूत का मोजा डालें) क्रिया करने वाला (यानि कर्ता) बाहिर पूजा स्थल पर निकल कर, चुचवरू के शेष बचे टुकड़े नदुर चूर्मा अथवा आलू चुर्मा भूत पंचकों के चोंग में डालें, अर्थी (यानि विमान) जो नजार ने पहले ही बना कर रखा होगा अथवा पहले का बना बनाया ही प्रयोग में लाना हो उसको अच्छी प्रकार से धोकर उस पर दर्भ बिछा कर उस पर तिल छिड़कें शव को अर्थी पर रखिये, ऊपर सफेद चादर अथवा शाल आदि डालना हो डालिये, अर्थी को फूल की मालाओं से सजाये अर्थी को आंगन में निकाल कर शव का सिर दक्षिण की तरफ होना चाहिये, अर्थी के ऊपर फूल मेवा आदि फैंकिये, अब अर्थी के लिये रत्नदीप धूप कर्पूर जलायें सभी खडें होकर सामूहिक रूप से आरती करें-

जय नारायण जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे
उद्धर मामसुरेश विनाशन् पतितोहं संसारे
घोरं हर मम नकरिपो! केश्व कल्मष भारम् मां
अनुकम्पय दीनं अनाथं,कुरुभव सागर पारम्।।
जय जय देव, जया सुर सूदन, जय केशव,
जय विष्णो, जय लक्ष्मी मुख कमल मधुव्रत,
जय दश कन्धर जिष्णो। घोरं हर मम नरकरिपो!
केशव .... यद्यपि सकलं अहं कलयामि हरे,
नहि किमपि-सत्वम् तदपि न मुञ्चति मामिदं
अच्युत पुत्र कलत्र ममत्वं घोरं हर मम नरकरिपो!
केशव .... पुनर्अपि जननं पुनर्अपि मरणं,

पुनर्अपि गर्भनिवासम् सोढुम अलं पुनर् अस्मिन् माधव माम् उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ---- त्वं जननी जनक: प्रभुर् अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम् त्वं शरणं शरणागत वत्सल, त्वं भव जलधि वहित्रम्। घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ---- जनक सुतापति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं ६ ारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम, वारय संसृति भीतिम् घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ----

समयानुसार "जय जगदीश" भी पढ़े (शंख बजाये) अब खड़े होकर क्रिया करने वाला पढ़े -

तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् मास पक्ष तिथि *वार तथा नाम गोत्र सहित लेकर* **पितु:** *अथवा* **मातु: स्वर्ग प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं कर्पूरं अर्पयामि नम:**

(नोट:- यहाँ ब्रह्मकलश का अच्छिद्र न करें) जबकि कलश का चोंग आदि आप ने श्मशान पर भी लेना है। कलश के पास तीन जव के आटे के पिंडों में से एक पिंड हाथ में उठा कर पढें

तत् सत् ब्रह्म वार तिथि

मृतक का नाम गोत्र सहित पढ़कर अर्थी पर शव के सिर के तरफ रखते हुये पढ़ें - पिता अथवा माता

अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते बोध: पिण्ड: प्रेत: तृप्यतु।

अब सारी सामग्री कलश का चोंग अखरोट सहित, अस्त्र कलश चोंग, **'गायत्री कलश'** अखरोट सहित **'भैरव कलश की बारी'** सब सामग्री इकटठी करके किसी टोकरी में उठा कर श्मशान पर ले जाइये कलश आदि जो आंगन में डाला है अर्थी निकलने के पश्चात् सब समेट कर निर्माल्य में डालें, पृथ्वी का लेपन कीजिये चोंग भी श्मशान पर साथ लीजिये, वुज़ में भी एक चोंग जला कर रखें उसके ऊपर कोई टोकरी आदि रखें श्मशान

से वापस आने पर उस को बुजाये, क्रिया करने वाला सबसे पहले शव के विमान को अपने दाहिने कन्धे से उठाये उसके पश्चात् दूसरे लोग विमान को उठा कर श्मशान की ओर चलें, चलते चलते रास्ते में सभी साथी सामूहिक रूप से उच्चारण करें -

क्षन्तव्यो मेपराध: शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो।

श्मशान पर पहुँचने से पहले आधे रास्ते में अर्थी को नीचे करके शव का सिर दक्षिण की ओर रख कर मृतक को सूर्य दर्शन करवा कर जव का दूसरा पिण्ड हाथ में लेकर पढ़ें -

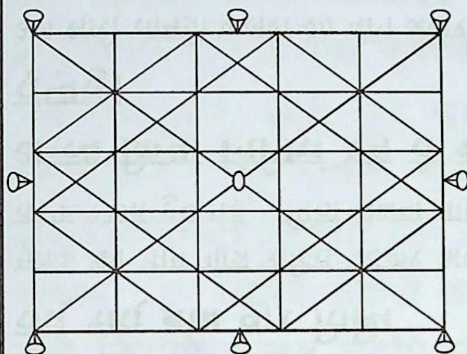
तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरे पिता अथवा *जो कोई भी हो* **अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते मकरध्वज: पिण्ड: प्रेत: तृप्यतु,**

फिर से अर्थी उठा कर श्मशान पर पहुँच कर अर्थी को नीचे रखकर जव का तीसरा पिण्ड रखते हुये पढ़ें

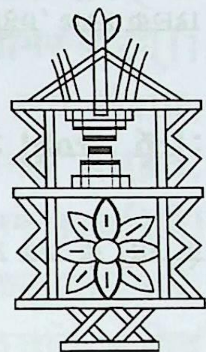
तत् सत् ब्रह्म पित: अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते यम दूतपिण्ड: प्रेत: तृप्यतु।

श्मशान भूमि की क्रिया

चितावास चित्र



ब्रह्मकलश



चित्र के अनुसार ब्रह्मकलश ज्वालालिंग चितावास का नकशा जव के आटे से बनाये, घर से ब्रह्मकलश का अखरोट सहित जो

चोंग लाया है उसमें पानी विष्ठर डालकर ब्रह्मकलश के अष्टदल पर रखें - कलश पूजा घर में हम कर चुके हैं यहाँ धूप दीप जला कर चोंग को थोड़ा सा तिलक आदि लगा कर हाथ में फूल उठा कर कलश पर डालें।

प्राणायाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के जल से नव बार छिड़कते हुये पढें

ऋतन्त्वा सत्येन परिसमूहामि, सत्यं त्वर्तेन परसिमूहामि ऋत सत्या भ्यान्तवा परिसमूहामि। ऋतन्त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यान्त्वा पर्युक्षामि, ऋतन्त्वा सत्येन परिषञ्चामि सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। ऋत सत्याभ्यां त्वा परिसिञ्चामि।

वुमुनहुरु से अग्नि में एक एक मन्त्र से आहुति डालें

आयुष: प्राणं सन्तनु स्वाहा, प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा, व्यानानात् अपानं सन्तुन स्वाहा, अपानात् चक्षु: सन्तनु स्वाहा, चक्षुष: श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा, श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा, वाच आत्मानं सन्तनु स्वाहा, आत्मान: पृथिवीं सन्तनु स्वाहा, पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा, अन्तरिक्षात् दिवं सन्तनु स्वाहा, दिव: स्व: सन्तनु स्वाहा। त्वं सोमा सि सत्पति, त्वं राजोतवृत्रहा त्वं भद्रो असि क्रतु: स्वाहा। *ऋतु तिथ्यादि* दे दें *(अन्यथा पढ़े-* **ऋतु तिथ्यादिभ्य: देवताभ्य: स्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा अभिजिते स्वाहा)**

चुचवरू के छोटे टुकड़े भी घी के आहुति के साथ डालते जायें सभी जनता जो मृतक के साथ आई हो यजमान (क्रिया करने वाले) के पास आकर पंक्तिबद्ध रूप में बैठें जनता अलग अलग टोलियों में बाते न करें बल्कि यदि आप मृतक के अन्तरात्मा की

शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्न वेदमन्त्रों से आहुति डालते समय श्रद्धा से सामूहिक रूप में **"स्वाहा"** का उच्चारण करें। यह आहति स्त्रुव (एक मुख वाले) वमुन हुर से (कर्ता) यजमान ही डालें -

(1) ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(2) ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(3) ॐ अपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(4) ॐ ब्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(5) ॐ उदानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

पात्र का घी आदि सभी अग्नि में डाले। जब मृतक के शरीर को पूर्णाहुति के लिये चित्तावासकलश पर तिलक, फूल, अर्घ, लकडी की छोटी छोटी 9 खूँटियाँ जव का आटा, बत्ता का पात्र, लेपन के पास लाकर रखें, अब पहले चित्तावास की पूजा करनी है, चित्तावास के चित्र में लिखी रेखायें जव के आटे से बनाये। इस को माया जाल भी कहते हैं, इन रेखाओं के अनुसार खूँटियाँ अपने स्थान पर दबायें (यह माया जाल धागे से भी बनाया जाता है)

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनके) डालकर तीन फूल डालते हुये पढ़े -

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टा, तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संयावः प्रिया स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम

(3) *दर्भ के दो तिनके हाथ में पकडकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें-* **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचादयात्।** *फिर से पढें -* **तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ - वारान्वितायां ईशाने गगनयुतस्य ईशानस्य आग्नेये सुकेतु युतस्य रुद्रस्य, नैत्रृते सजलयुतस्य विष्णोः, वायवे वायु**

युतस्य, *ईशानी कोण से डालते हुये पढें-* **चित्तावास देवतानां इदं-आसनं नमः, पाद्यं नमः, अर्घ्यं नमः, गन्धो नमः। अर्घो नमः पुष्पं नमः, वासो नमः। अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।**

इसी चित्तावास कलश के ऊपर लकडी की चित्ता तैयार करके मृतक को, उस पर रखें, सिर दक्षिण की ओर मुँह पूर्व की ओर रखें। लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़ों के सिरों पर रुई लगा कर घी में डुबो कर रखें, उनको उल्मुक कहते है, क्रिया करने वाले को चाहिये एक उल्मुक को टाकू या कतरु में से जलाकर जलते हुये उल्मुक से मृतक के सिर के तरफ से जलाना आरम्भ करें फिर आरम्भ करें फिर दूसरे साथी उल्मकों से चित्ता को हर तरफ से जलायें, अब घी का पात्र उमनहुर घी में डाला हुआ अखरोट आदि डालते हुये पढें।

आकूत्यै त्वास्वाहा ईशाने, कामायै त्वा स्वाहा इति वायवे, समृद्धयै त्वा स्वाहा इति नैऋते-

चित्ता के तीन प्रदक्षिणा करके सभी उल्मक चित्ता के पूर्व दक्षिण कोण में फैंके, सभी कर्ता तथा अन्यान्य साथी हाथ में यव तथा कुछ फूल उठा कर खडे रहें और यह पूर्णाहुति का मन्त्र पढ़ें

आश्रावितं अत्याश्रावितं वषटकृतम् अवषट् कृतम् अननूक्तं अत्यनूक्तं च, यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यत् च हीनम् अग्निस्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा।

फिर से यव आदि की आहुति उठाकर कर्ता पढे

अस्मत् त्वम् अभिजातासि, त्वत् अहं जायते पुनः

मृतक का नाम लेकर

आसौ पिता अथवा माता स्वर्गाय लोकाय स्वाहा

(आहुति डालिये) अब अन्त में मृतक के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथा आग का टोकू रखिये, जब चित्ता अच्छी प्रकार से

प्रज्जवलित हो जाये, मृतक का शरीर जब लगभग जल चुका हो - तो कुल्हाड़ी मृतक के सिर के तरफ जीमन में कुछ दबा कर रखें फिर कर्ता को चाहिये अस्त्र कलश की वारी को उठा कर उस में नया जल डालिये, चित्ता के तीन प्रदक्षिण करते हुये वारी का जल आहिस्ता आहिस्ता फैंकते हुये आखरी तीसरे प्रदक्षिण के अन्त में कुलहाड़ी या पत्थर पर वारी तोड़ दीजिए उपस्थान करते हुये पढें

नमो महिम्ने उत चक्षुषे महतां पिता उरु तत् गृणीमः हुतो याहि पथिभि देवयानैर् औषधीषु प्रतिष्ठा शरीरैः

कर्ता दर्भ के दो तिनके हाथ में लेकर पढे -,

पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं चित्तावास देवतानां पूजनम् अछिद्रम् अछिद्रम् अस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः

सभी श्मशान पर आई हुई जनता चित्ता की ओर हाथ जोड़ के रहें सभी सामुहिक रूप में पढे

ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषुयो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।।

सभी परिजनों का जहाँ पानी सुलभ हो नहा कर मुख शोद्धन आदि करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर थोडा सा तिल हाथ में लेकर तर्पण करना चाहिये तर्पण करते हुये पढे -

ॐ तत् सत् ब्रह्म *मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर* **पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत् तिलोदकम् एतत् ते उदक तर्पणम्।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।।

शिवापराध क्षमापन स्तोत्रम्

आदौ कर्म प्रसङ्गत् कलयति कलुषं मातृ कुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रा मेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जात वेदा:।
यत् यत् वै: तत्र दु:खं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराध: शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।१।

अर्थ : पहले कर्मप्रसङ्गसे किया हुआ पाप मुझे माताकी कुक्षिमें ला बिठाता है, फिर उस अपवित्र विष्ठा मूत्रके बीच जठराग्नि खूब सन्तप्त करता है। वहां जो जो दु:ख निरन्त व्यथित करते रहते हैं उन्हें कौन कह सकता है? हे शिव ! हे शिव ! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो।।

बाल्ये दु:खातिरेको मल लुलित वपु: स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्च चेन्द्रियेभ्यो भव गुण जनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नाना रोगादि दु:खात् रुव दनपरवश: शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराध: शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।२।

अर्थ : बाल्यावस्थामें दु:ख की अधिकता रहती थी, शरीर मल मूत्र से लिथड़ा रहता था और निरन्तर स्तनपानकी लालसा रहती थी, इन्द्रियों में कोई कार्य करने की सामर्थ्य न थी; शैवी मायासे उत्पन्न हुए नाना जन्तु मुझे काटते थे;, नाना रोगादि दु:खों के कारण मैं रोता ही रहता था, (उस समय भी) मुझसे शंकर का स्मरण नहीं बना, इसलिये हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो।।

प्रोढोऽहं यौवनस्थो विषय विषधरैः पञ्चभि र्मर्म सन्धौ
दष्टो नष्टोऽविवेकः सुत धन युवति स्वाद सौख्ये निषण्णः।
शैवी चिन्ता विहीनं मम हृदय महो मान गर्वा धिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।३।

अर्थ : जब मैं युवा अवस्था में आकर प्रौढ़ हुआ तो पांच विषयरूपी सपेर्नि मेरे मर्मस्थानों में डंसा, जिससे मेरा विवेक नष्ट हो गया और मैं धन, स्त्री और सन्तान के सुख भोगने में लग गया। उस समय भी आपके चिन्तनको भूलकर मेरा हृदय बड़े घमण्ड और अभिमान से भर गया। अत: हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो ! क्षमा करो।।

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगत गति मति श्चाधि दैवादि तापैः
पापै रोगैवियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।

मिथ्या मोहाभिलाषै र्भ्रमति मम मनो धूर्जटे ध्यान शून्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।४।

अर्थ : वृद्धावस्था में भी, जब इन्द्रियों की गति शिथिल हो गयी है, बुद्धि मन्द पड़ गयी है और आधिदैविकादि तापों, पापों, रोगों और वियोगों से शरीर जर्जरित हो गया है, मेरा मन मिथ्या मोह और अभिलाषाओं से दुर्बल और दीन होकर (आप) श्रीमहादेव जी के चिन्तन से शून्य ही भ्रम रहा है। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपद गहन प्रत्यवाया कुलाख्यं

श्रौते वार्ता कथं में द्विज कुल विहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे

नास्था धर्मे विचारः श्रवण मननयोः किं निदि ध्यासितव्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।५।

अर्थ : पद पद पर अति गहन प्रायश्चितौं से व्याप्त होने के कारण मुझसे तो स्मार्तकर्म भी नहीं हो सकते, फिर जो द्विजकुलके लिये विहित है, उन ब्रह्मप्राप्ति के मार्ग स्वरूप श्रौतकर्मो की तो बात ही क्या है? धर्ममें आस्था नहीं है और श्रवण मननके विषयमें विचार ही नहीं होता, निदिध्यासन (ध्यान) भी कैसे किया जाय? अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर!

हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

स्नात्वा प्रत्यूष काले स्नपन विधि विधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचित् बहुतरगहनात् खण्डविल्वी दलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धा पूण्पे त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।६।

अर्थ : प्रातः काल स्नान करके आपका अभिषेक करने के लिये मैं गङ्गजल लेकर प्रस्तुत नहीं हुआ, न कभी आपकी पूजा के लिये वनसे बिल्वपत्र ही लाया और न आपके लिये तालाब में खिले हुअ कमलों की माला तथ गन्ध पुष्प ही लाकर अर्पण किये। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

दुग्धै र्मध्वाज्य युक्तै र्दधि सित सहितैः स्नापितं नैव लिङ्ग
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनक विरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूर दीपै र्विविध रस युतै नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।७।

अर्थ : मधु, घृत, दधि और शर्करायुक्त दुध (पञ्चामृत) से मैंने आपके लिङ्ग को स्नान नहीं कराया, चन्दन आदि से अनुलेपन नहीं किया, धतूरे के फूल, धूप, दीप, कपूर तथा नाना रसोंसे युह्म नैवेद्यों द्वारा पूजन भी नहीं किया। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतर धनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते तक्षसंख्यैर्हुतवहदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।।
नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रत जप नियमै रुद्रजाप्यै र्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।८।

अर्थ : मैंने चितमें शिव नामक आपका स्परण करके ब्राह्मणों को प्रचुर धन नहीं दिया, न आपके एक लक्ष बीजमन्त्रों द्वारा अग्नि में आहुतियां दी और न व्रत एवं जपके नियमेसे तथा रुद्रजाप और वेदविधि से गंगा तट पर कोई साधना ही की। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

स्थितवा स्थाने सरोजे प्रणव मय मरुत्कुम्भके सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटित विभवे ज्योति रूपे पराख्ये।

लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकल तनुगतं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।९।

अर्थ : जिस सूक्ष्ममार्गप्राप्य सहस्त्रदल कमल में पहुंचकर प्राण समूह प्रणवनाद में लीन हो जाते है और जहां जाकर वेद के वाक्यार्थ तथा तात्पर्यभूत पूर्णतया आविर्भृत ज्योतिरूप शान्त परम तत्वमें लीन हो जाता है, उस कमल में स्थित होकर मैं सर्वान्तर्यामी कल्याणकारी आपका स्परण नहीं करता हूँ। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।।

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुण विरहित्तो ध्वस्त मोहान्ध कारो
नासाग्र न्यस्त दृष्टि र्विदित भवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्या वस्थया त्वां विगत कलिमलं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।१०।

अर्थ : नम्र, निःसङ्ग, शुद्ध और त्रिगुणातीत होकर, मोहान्धकार का ध्वंस कर तथा नासिकाग्र में दृष्टि स्थिर कर मैंने (आप) शंकर के गुणों को जानकर कभी आपका दर्शन नहीं किया और न उन्मनी अवस्था से कलिमलरहित आप कल्याण स्वरूप का स्मरण ही करता हूँ। अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो।

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परन्तु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हों। कहीं-कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्द बातें समय-समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्र

जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं। सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध है, मातृपक्ष से चार पीढ़ी तक पितृपक्ष से पांच पीढी तक विवाह नही कर सकते हैं।

दत्तक (मंगत् अनुन)

अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है। परन्तु साले का लडका दत्तक ला सकते हैं।

अशौच - (होंछ)

दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं यह अशौच ग्यारह दिन तक रहता है और दूसरा मरने का अशौच, जिस को मृतक कहते हैं, यह अशौच दस दिन तक रहता है, बिना विवाह के कन्या का पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता-पिता के मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

1 मरने के अशौच के दिनों यदि दूसरा मरने का अशौच आये या जन्म के अशौच पर फिर से जन्म का अशौच आये तो पहले अशौच की समाप्ति पर ही दूसरे अशौच की समाप्ति हो जाती है।

2 जन्म के अशौच पर यदि मरने का अशौच आये तो मरने के अशौच पर ही अशौच की समाप्ति होती है।

3 विवाहित लडकी को यदि पिता के घर में पुत्रोत्पति हो तो माता पिता को तीन दिन, सगे भाई, चाचा को एक दिन का सूतक होता है।

4 यदि दसवें दिन पर दूसरा अशौच पड़े चाहे वह मरने का अशौच हो या जन्म का अशौच हो, तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है यदि ग्यारहवें दिन दूसरा अशौच चाहे वह मरने का अशौच हो या जन्म का अशौच हो तो तीन दिन और अशौच बढ़ाना चाहिये।

5 माता के मरने पर यदि अशौच के दिनों में पिता का देहान्त हो जाये तो पिता के अशौच की समाप्ति पर ही शुद्धि होती है। यदि पिता ही पहले मरे और अशौच के दिनों में ही माता का देहान्त हो जाये तो पिता के अशौच में दो दिन की वृद्धि करनी चाहिये।

6 मृतक के दस दिनों के अन्दर यदि जन्म या मरने का दूसरा अशौच आये तो भी दसवां तथा ग्यारहवां दिन निश्चित दिन पर अवश्य करें और 12वां दिन बाद में करना चाहिये।

7 देवगौण होने के पश्चात् यदि विवाह अथवा यज्ञोपवती पर मृत्यु या जन्म का अशौच पढ़े तो अशौच का कोई दोष नही होता है। देवगौण सात (7) दिनों तक रहता है।

8 **अशौच का प्रभाव** : यदि घर में मरने या जन्म का अशौच पड़े तो अशौच हमारे नित्य कार्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता है जैसे तिलक लगाना, मन्दिर जाना, पितरों को तर्पण करना, नित्य नहाना, कपडे बदलना इत्यादि परन्तु अशौच में हम कोई नया कार्य आरम्भ नही कर सकते है।

यदि किसी शुभ कार्य, विवाह, यंज्ञोपवीत इत्यादि के पूर्व या शुभकार्य के दिनों में ही किसी प्रकार का अशौच पडे चाहे वह मरने का अशौच हो या जनने का अशौच हो, से किसी प्रकार का दोष शुभकार्य पर नहीं होता है। धर्मशास्त्र में लिखा है :

बहु कालिक संकल्पो गृहीतश्च पुरा यदि
सूतके मृतके चैव व्रतं तन्नैव दुष्यति।।

छलुन

दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करें तो उस को ग्यारहवें, बाहरवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये

शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखिये हिन्दू संस्कृति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक वार होती है छलुन के समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार पंचक छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचय

1 अस्थियां मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न कर सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें।

2 यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार "**ॐ नमः शिवाय**" मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी में अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें। इस का अशौच भी दस दिन रहता है।

बिना यज्ञोपवीत लड़के की मृत्यु हो तो क्या करें?

1 यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् 10वां दिन अवश्य करें, 11वां और 12वां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभवार पर बालकों को भी पूड़ी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। "**श्रद्धया देयम्-अश्रद्धया-देयम्**" देना ही शान्ति का मार्ग है।

2 जिस बच्चे का यज्ञोपवीत संस्कार किया होगा तथा विवाह नहीं कया होगा, या किसी प्रकार का कार्य करने में असमर्थ हो तो मृत्यु होने पर उसका दसवां, 11वां और 12वां करना चाहिए। घर का कोई भी सदस्य उस का क्रिया कर्म कर सकता है।

श्राद्ध

श्राद्ध की जो तिथि हो, पंचांग में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "**दि**" का चिह्न हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि "**प्र**" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से पंचांग में, "**श्राद्ध और मध्याह्न**" दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये। श्राद्ध पर मांस, मछली खाना शास्त्र विरुद्ध है।

मसिक श्राद्ध (मासवार)

मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर पंचांग में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ है तो विधि अनुसार संकल्प करें। (श्राद्ध संकल्प विधि पंचांग में दर्ज है। तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिण से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्ध (षडमोस)

मृतक के श्राद्ध की जो तिथि जो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उसे एक दिन पहले षठ्-मासिक श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्-मासिक-श्राद्ध) में किसी प्रकार का विघ्न पड़े तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवार) तक किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है। षठ मासिक श्राद्ध पर मांस खाना या बलि देना शास्त्र विरुद्ध है।

वार्षिक श्राद्ध (वहरव्र)

मासवार की जो तिथि हो उस तिथि को दि/प्र के आधार से एक दिन पहले मासवार करें और निश्चित तिथि के दिन वार्षिक श्राद्ध (वहरवार) करें। जब किसी के वार्षिक श्राद्ध (वहरव्र) में किसी प्रकार का विध्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरव्र भी कर सकता है। जब तक वहरव्र संम्पन्न न हो तब तक कुम्भ देते रहना है तथा चावल इत्यादि जो आप

पितृ के निमित रखते है वह चालू रखना है तथा थाल भी उसी दिन उठाना हैं जब आप वार्षिक श्राद्ध करेंगे। वार्षिक श्राद्ध पर कोई मादक पदार्थ अथवा मांस खाना शास्त्र विरुद्ध है।

अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें

अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का अशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत् गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां दिन इत्यादि नहीं होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में

विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पित्तर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्ग कृष्ण पक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ है तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइयें, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है **“देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्”** जो गृहस्थी पितृ श्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नर्क में जाता है।

ज्येष्ठ महीना

यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा ? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नहीं है।

पंचक

धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषजि, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर आदि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मुचरून निषेध है, शेष सभी कामो के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौण

देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि जन्म का अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है।

★ आत्महत्या करने वालों का अशौच नही है ना ही किसी प्रकार की क्रिया है।

★ प्रमाद से जो अग्नि व जलादि से मर जाये उस का अशौच भी है और उन की क्रिया की जाती है।

★ अस्थि क्षेप मरने के दस दिनों के भीतर करना चाहिये उस में किसी प्रकार के मुहूर्त, अस्त इत्यादि का दोष नही है। दस दिनों के पश्चात् शुभ मुहूर्त पर ही अस्थि क्षेप करना चाहियें

★ अस्थि क्षेप गंगा, देविका तथा उत्तर मानस (कश्मीर की हरमुकुट गंगा) में करना चाहिये।

★ माता पिता के दसवें दिन पर तथा यज्ञोपवीत पर वपन जरूर करना चाहिये।

★ पति, पत्नी का दाह संस्कार तथा क्रिया कर्म कर सकता है।

★ पत्नी, पति का दाह संस्कार तथा क्रिया कर्म कर सकती है।

★ माता या पिता के मरने पर यदि पुत्र यज्ञोपवीत रहित भी हो तो उस को मार्ग पर यज्ञोपवीत डाल कर क्रिया की जाती है। फिर षठ् मासिक या वार्षिक श्राद्ध से पहले उस को यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये।

दाह संस्कार : जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दाह संस्कार सूर्य अस्त से पूर्व करना चाहिये। मृतक का दाह संस्कार कोई भी कर सकता है जैसे पुत्र, पुत्री, पुत्री का लड़का या लड़की, सगोत्री, पत्नी, पति, भाई, गुरुजी अथवा मृतक का परम मित्र।

दसवां दिन : जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दसवां ग्यारहवा तथा बारहवां दिन हम धार्मिक विधि से करते है परन्तु दसवां दिन हम घर से बाहर किसी नदी के किनारे पर करते है जो कि एक प्रकार की प्रथा हमारे समाज में है परन्तु जहां पर नदी न हो तो वहां पर आप दसवां दिन घर पर भी कर सकते हैं इस में किसी प्रकार की पाबन्दी शास्त्र के अनुसार नही है।

दीपदान (तीलद्युन): किसी के मृत्यु पर हम उस के निमित दीपदान अर्थात् तील दयुन भी करते है हम दीपदान किसी भी मासवार अथवा षडमोस पर कर सकते हैं इस दिन मुहूर्त वार, नक्षत्र इत्यादि देखने की कोई जरूरत नही है। इन दिनों के बिना आप को मुहूर्त पर ही दीपदान करना होगा।

☛ विवाह होने के पश्चात् लडकी अपने माता पिता का दाह संस्कार, दसवां, ग्यारहवां, बारहवां तथा श्राद्ध भी कर सकती है परन्तु इस बात का ध्यान रखे कि क्रिया करते समय माता, पिता का गोत्र ही प्रयोग में लाना है तथा यज्ञोपवीत के बदले वह अपने गुत्थ को प्रयोग कर सकती है।

अधिक मास आने पर बारह मास का वर्ष तथा तेरह मास का वर्ष किस को ?

आद्यन्तर्योमले मासे मासान्द्वादश कारयेत्

अर्थ: यदि कोई अधिक मास में मरे अथवा यदि किसी का वार्षिक सपिण्डी (वहरवार) अधिक मास में आये तो उस को बारह मास का वर्ष होता है दूसरा वार्षिक 13 मास के बाद आता है।

मलस्य मध्यपाते 13 मासाः।

अर्थ: अधिक मास से पहले मरे हुये का वर्ष 13 मास का आता है।

एक राशिणे सूर्ये भवेत् वर्षद्वयपुनः

अर्थ: सूर्य के एक राशि में होने पर जब दो अमावसी आ जायें तो भानुमास या अधिमास आता है। (धर्मशास्त्र)

दीपदान की सामग्री

जव	= 1 कि ग्रा	दीप (छोटे)	= 9
शक्कर	= 500 ग्रा	दीप (बडे)	= 8
नारियल	= 100 ग्रा	रूई	= थोडी सी
खजूर	= 100 ग्रा	शलगम	= 1 अदद
नीलोफर	= 100 ग्रा	फूल	= 2 कि
घी	= 500 ग्रा	फूलमाला	= 2
लाय	= 10 ग्रा	लकडी	= 7 कि
ब्रय-सरशफ	= 50 ग्रा	दूध	= 200 ग्रा
शहद	= 50 ग्रा	दही	= 200 ग्रा
दूप	= 1 डिब्बा	प्रतिमा	= विष्णु (चान्दी की) थाली, चाकू, खोसू, गिलास, दर्पण, सूई, धागा, कंगा, एक आलू लाल
कालातिल	= 250 ग्रा		
चावल आटा	= 500 ग्रा		
अखरोट	= 1 कि		
काफूर	= 1 पेक्ट		
टाकू	= 2		

दसवें दिन की सामग्री

काला या लाल तिल = 50 ग्राम, शहद = 20 ग्राम, दूध = 250 ग्राम, फल = 1 किलो, शक्कर = 25 ग्राम, गुड = 25 ग्राम, ऊन कच्चा = 20 ग्राम (यदि कच्चा न मिले तो असली ऊन ही रखें) धूप, फूल = 4 माला तथा एक किलो खुले फूल, अर्घ के लिये थोडा चावल, बत्ता बनाने के लिये एक किलो चावल - एक पतीला, तथा स्टोव। केसर या चन्दन का तिलक, थोडी सी दर्भ (दर्भ न मिलने पर द्रमुन घास) पविर्थ (पविर्थ न मिलने पर सोने की अंगूठी) चोंग, चोंग के लिये तेल = 20 ग्राम, चोंग के लिये थोडी रूई, माचिस। मिटटी के दो छोटे घड्डे अलग अलग साईज़ के। दो टाकू, सफेद कपडा और लाल कपडा 50 संटी मीटर, लिपाई के लिये थोडी मिटटी, बैठने के लिये दो आसन या दो चटाई) तुलमूर छोटी, जव आटा ढेढ पाव, देसी घी = 20 ग्राम।

धर्म शास्त्र (तथा समय की ज़रूरत)

यदि किसी मृतक के क्रियाकर्म तथा दसवें, ग्यारहवें एवं बारहवें दिन पर किसी प्रकार के प्राकृतिक प्रकोप के कारण रुकावट आयेगी तो मृतक के दसवें दिन पर क्रिया करने वाला जव आटे के दस छोटे पिंड बनाकर मृतक के निमित जल में प्रवाह करें यह दस पिंड घर पर भी मृतक के निमित अर्पित कर सकते हैं नहर पर दरिया पर जाने की ज़रूरत नही है तथा ग्यारहवें दिन प्रात: पंचगव्य बनाकर (या गंगाजल) घर के सभी सदस्यों को पिलायें तथा उसी दिन से कुम्भ भी आरम्भ करें, ग्यारहवां, बारहवां दिन व्यवस्था ठीक होने पर किसी मासवार पर कर सकते हैं।

धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड के विषय में यदि कोई संशय हो तो

94191-33233 पर सम्पर्क करें।

हृटि फोल (मंगल सूत्र)

यह एक प्रकार का मंगल सूत्र है जो सुहागिन की निशानी है। पूर्व समय में हमारी माताएं फ्यरण पहनती थीं। फ्यरण के दोनों बाहों पर एक रंगदार या प्रिंटिड कपडे की एक पट्टी लगती थी जिन को 'नुरिवार' कहते थे, जिस किसी के पति का देहान्त होता था तो वह माता उस पट्टी को अपने दोनों बाहुओं से उत्तार देती थी तथा बिना पट्टी के फ्यरण पहनती थी यह प्रथा विस्थापन तक हमारे समाज में चलती थी। आज कल जब भी किसी के घर में किसी का देहान्त होता है तो हमारी मातायें, बहनें अपने 'हृटि फोल' (मंगल सूत्र) को काट डालते हैं और कई दिनों तक इस के बिना ही रहती हैं जो एक गलत प्रथा है, 'हृटि फोल' (मंगल सूत्र) उसी को काटना है जो विधवा हो जाएगी, इस गलत प्रथा को बदलने की आवश्यकता है यह तभी सम्भव हो सकता है जब हमारी मातृ शक्ति इस कुप्रथा को समाप्त करने में अपना सहयोग देंगी।

11वें तथा 12वें दिन की सामग्री

(नोट : बारहवें दिन की सामग्री ग्यारहवें दिन की सामग्री से ही थोडी बहुत बचा कर रखें।)

कलश = 1 अदद, दीप = 1 अदद, टाकू = 5 अदद, अखरोट = ढेढ किलो, शक्कर = ढेढ किलो, जव = ढेढ किलो, बादाम = आदा किलो, नीलोफर = आदा किलो, खजूर = आदा किलो, नाबद = आदा किलो, नारजील = आदा किलो, गुगलधूप = 100 ग्राम, धूप = दो डब्बे, कन्द = 3 अदद, कलश के लिये वस्त्र, यज्ञोपवीत, थोडा चावल, दीप (चोंग) के लिये थोडा तेल, रुई, माचिस, बैठने के लिये आसन, बेदी बनाने के लिये 15 ईटें, पविर्थ या सोने की अंगूठी, काला तिल = आदा किलो, शहद = छोटी बोतल, श्रीफल = 3 अदद, हवन सामग्री = 1 डब्बा, देसी घी = 1 किलो, लकडी = 10 किलो, गंगा जल, फूल = 2 किलो, दूध = 1 पाव, दही = 1 पाव, कापूर = 1 डब्बा, केसर थोडा सा, थाली, गिलास, कवली, आईना, कंगा, सूई, धागा = एक एक। एक प्रतिमा विष्णु की सोने अथवा चांदी की, वस्त्र, गोप्रदान के लिये।

अस्थि संचय की सामग्री

फूल - एक किलो, फूलमाला - एक अदद, कलश छोटा - एक अदद, सफेद कपडा - एक मीटर, धूप, अगरबती, दूध - एक किलो, दीपक - एक, रूई, माचिस, फल, थोडा सा ड्राई फ्रूट इत्यादि

अस्थि क्षेपण के श्राद्ध की सामग्री

जव आटा - 700 ग्राम, काला तिल - सो ग्राम, लाय - दस ग्राम, घी - दस ग्राम, शहद - दस ग्राम, दूध - 250 ग्राम, दही - 250 ग्राम, फल - एक किलो, फूल - एक किलो, टाकू - 2, चावल - 250 ग्राम, अखरोट - 10, धूप

- मरने के वर्ष में यदि अधिमास आये तो अधिमास में ही मासिक श्राद्ध करना चाहिए।
- मृत्यु मास से यदि अधिमास बारहवां हो तो अधिमास में ही वार्षिक श्राद्ध करना चाहिए।
- मल मास में मरे हुए को यदि कभी मलमास में श्राद्ध आयेगा वह मलमास में ही करना चाहिए, शुद्ध में नहीं।

मूल नक्षत्र देखने का चित्र 2079 (2022-23) के लिये

पक्ष	दिनांक	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	दिनांक
वैशाख कृष्ण	20 अप्रैल	चतु	11-40 रात	पंचमी	5-14 प्रातः	पंच	10-46 दिन	पंचमी	4-19 दिन	पंच	9-50 रात	21 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	18 मई	तृतीया	8-9 दिन	तृतीया	1-32 दिन	तृतीया	6-53 शां	तृतीया	12-15 रात	चतु	5-36 प्रातः	19 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	14 जून	पूर्णि	6-31 शां	पूर्णि	11-47 रात	प्रतिप्रदा	5-3 प्रातः	प्रतिपदा	10-18 दिन	प्रतिपदा	3-32 दिन	15 जून
आषाढ शुक्ल	11 जुलाई	द्वाद	5-15 रात	त्रयोदशी	10-32 दिन	त्रयोदशी	3-49 दिन	त्रयोदशी	9-05 रात	त्रयोदशी	2-21 रात	12 जुलाई
श्रावण शुक्ल	8 अगस्त	एका	2-36 दिन	एकादशी	8-02 रात	एकादशी	1-28 रात	द्वादशी	6-53 प्रातः	द्वादशी	12-17 दिन	9 अगस्त
भाद्र शुक्ल	4 सप्त	अष्ट	9-42 रात	अष्टमी	3-19 रात	नवमी	8-54 दिन	नवमी	2-30 दिन	नवमी	8-5 रात	5 सितम्बर
आश्विन शुक्ल	1 अक्टू	षष्ठी	3-10 रात	सप्तमी	8-51 दिन	सप्तमी	2-32 दिन	सप्तमी	8-12 रात	सप्तमी	1-52 रात	2 अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल	29 अक्टू	चतु	9-5 दिन	चतु	2-41 दिन	चतु	8-16 रात	चतुर्थी	1-51 रात	षष्ठी	7-25 दिन	30 अक्टूबर
मार्ग शुक्ल	25 नव	द्वितीया	5-20 दिन	द्वितीया	10-45 रात	द्वितीया	4-10 रात	तृतीया	9-34 दिन	तृतीया	2-57 दिन	26 नव
पौष कृष्ण	22 दिस	चर्तु	4-2 रात	अमा	9-20 दिन	अमा	2-38 दिन	अमावसी	7-55 रात	अमावसी	1-12 रात	23 दिस
माघ कृष्ण	19 जनवरी	द्वाद	3-17 दिन	द्वाद	8-38 रात	द्वाद	1-59 रात	त्रयोदशी	7-19 प्रातः	त्रयोदशी	12-39 दिन	20 जनवरी
फाल्गुन कृष्ण	15 फरवरी	नवमी	12-45 रात	एका	6-18 प्रातः	एका	11-49 दिन	एकादशी	5-21 शां	एकादशी	10-52 रात	16 फरवरी
चैत्र कृष्ण	15 मार्च	अष्टमी	7-33 प्रातः	अष्ट	1-16 दिन	अष्टमी	6-59 शां	अष्टमी	12-41 रात	नवमी	6-23 प्रातः	16 मार्च

अश्लेषा नक्षत्र देखने का चित्र 2079 (2022-23) के लिये

पक्ष	दिनांक	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	दिनांक
चैत्र शुक्ल	11 अप्रैल	दशमी	6-50 प्रातः	दशमी	1-16 दिन	दशमी	7-42 रात	दश	2-08 रात	एकादशी	8-34 दिन	12 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	8 मई	सप्तमी	2-56 दिन	सप्तमी	9-30 रात	सप्त	4-03 रात	अष्टमी	10-35 दिन	अष्टमी	5-7 दिन	9 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	4 जून	पंचमी	9-54 रात	पंचमी	4-32 रात	षष्ठी	11-10 दिन	षष्ठी	5-47 शां	षष्ठी	12-24 रात	5 जून
आषाढ शुक्ल	1 जुलाई	द्वितीया	3-55 रात	द्वितीया	10-34 दिन	द्वितीया	5-13 शां	द्वितीया	11-51 रात	चतुर्थी	6-29 प्रातः	3 जुलाई
श्रावण शुक्ल	29 जुलाई	प्रतिपदा	9-46 दिन	प्रतिपदा	4-23 दिन	प्रतिपदा	11-00 रात	द्वितीया	5-36 प्रातः	द्वितीया	12-12 दिन	30 जुलाई
भाद्र कृष्ण	25 अगस्त	त्रयोदशी	4-15 दिन	त्रयोदशी	10-50 रात	चर्तु	5-25 प्रातः	चर्तु	11-59 दिन	चतुर्थी	6-32 शां	26 अगस्त
आश्विन कृष्ण	21 सप्त	एकादशी	11-46 रात	द्वादशी	6-21 प्रातः	द्वादशी	12-55 दिन	द्वादशी	7-29 शां	द्वादशी	2-2 रात	22 सप्त
कार्तिक कृष्ण	19 अक्टूबर	नवमी	8-1 दिन	नवमी	2-39 दिन	नवमी	9-16 रात	नवमी	3-53 रात	दशमी	10-29 दिन	20 अक्टूबर
मार्ग कृष्ण	15 नवम्बर	सप्तमी	4-12 दिन	सप्तमी	10-54 रात	अष्टमी	5-36 प्रातः	अष्टमी	12-18 दिन	अष्टमी	6-58 शां	16 अक्टूबर
पौष कृष्ण	12 दिसम्बर	चतु	11-35 रात	पंचमी	6-20 प्रातः	पंच	1-04 दिन	पंच	7-48 शां	पंचमी	2-31 रात	13 दिस
माघ कृष्ण	9 जनवरी	द्वितीया	6-4 प्रातः	द्वितीया	12-49 दिन	द्वितीया	7-33 शां	द्वितीया	2-17 रात	तृतीया	9-00 दिन	10 जनवरी
माघ शुक्ल	5 फरवरी	पूर्णि	12-12 दिन	पूर्णि	6-55 शां	पूर्णि	1-33 रात	प्रतिपदा	8-20 दिन	प्रतिपदा	3-2 दिन	6 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च	द्वादशी	6-40 शां	द्वादशी	1-23 रात	त्रयोदशी	8-6 दिन	त्रयोदशी	2-48 दिन	त्रयोदशी	9-29 रात	5 मार्च

OUR PUBLICATIONS FROM

KASHMIRI PANDIT ASSOCIATION
Kashyap Bhawan, Bhawani Nagar, Marol, Morshi Road, Andheri East, Mumbai, Ph : 28950320, 09819783432

KASHMIRI MASALA STORE
Sector 28/29, Chowk Faridabad, M : 9210323628, 9891463618

DHAR KASHMIRI MASALA
Block B, Shalimar Garden, M : 09818823459

RAINA STORE
557/D, Dilshad Garden,Delhi PH : 22129518, 9910815500

RAINA STORE C/O S.M. WORLD
Shop No. 13, Shalimar Garden, Ghaziabad, M : 9910815500

DURGA MASALA STORE
131-132, INA Market, New Delhi-23, PH : 9811710186

KRISHAN LAL MASALA STORE
271, INA Market, New Delhi, PH : 24653227

RISHI GENERAL STORE
Kashmir Colony, Najab Garh, PH : 25024499

MAHA LAXMI STORE (MASALE WALEY)
39, INA Market, New Delhi, PH : 9811757688, 24633642

VITASTA GENERAL STORE
S.No.5, Phase II, New Palam Vihar, Gurgaon, M: 9990904223

CHINAR STORE
Dwarika Morh, New Delhi, PH : 9873456553, 9899667678

RAJ STORE
211, Vipan Garden, New Delhi-52

OM SAI
29, Popular Apartment, Sec.13, Rohini, Delhi, PH : 9891799463

JAIN PROVISION STORE
Swaran Path, Mansarovar, Jaipur Raj, PH : 2390334, 9460182938

SAI STORE
Vipan Garden, Delhi, PH : 9953511051

KOSHUR VAAN
Flat B-402, Umang Priemier, IVY Estate, Naga Road, Wagholi, Pune, M: 08587806697

SHARIKA SPECIES
Bharti Appartments, Porwal Park, Yerewada, Pune, M : 9422351640, 9423912857

RAM RICCH PAL, SURESH CHAND
S.No. 5/95, Anaj Mandi, Old Faridabad, Opp Mother Diary, M : 09818596017

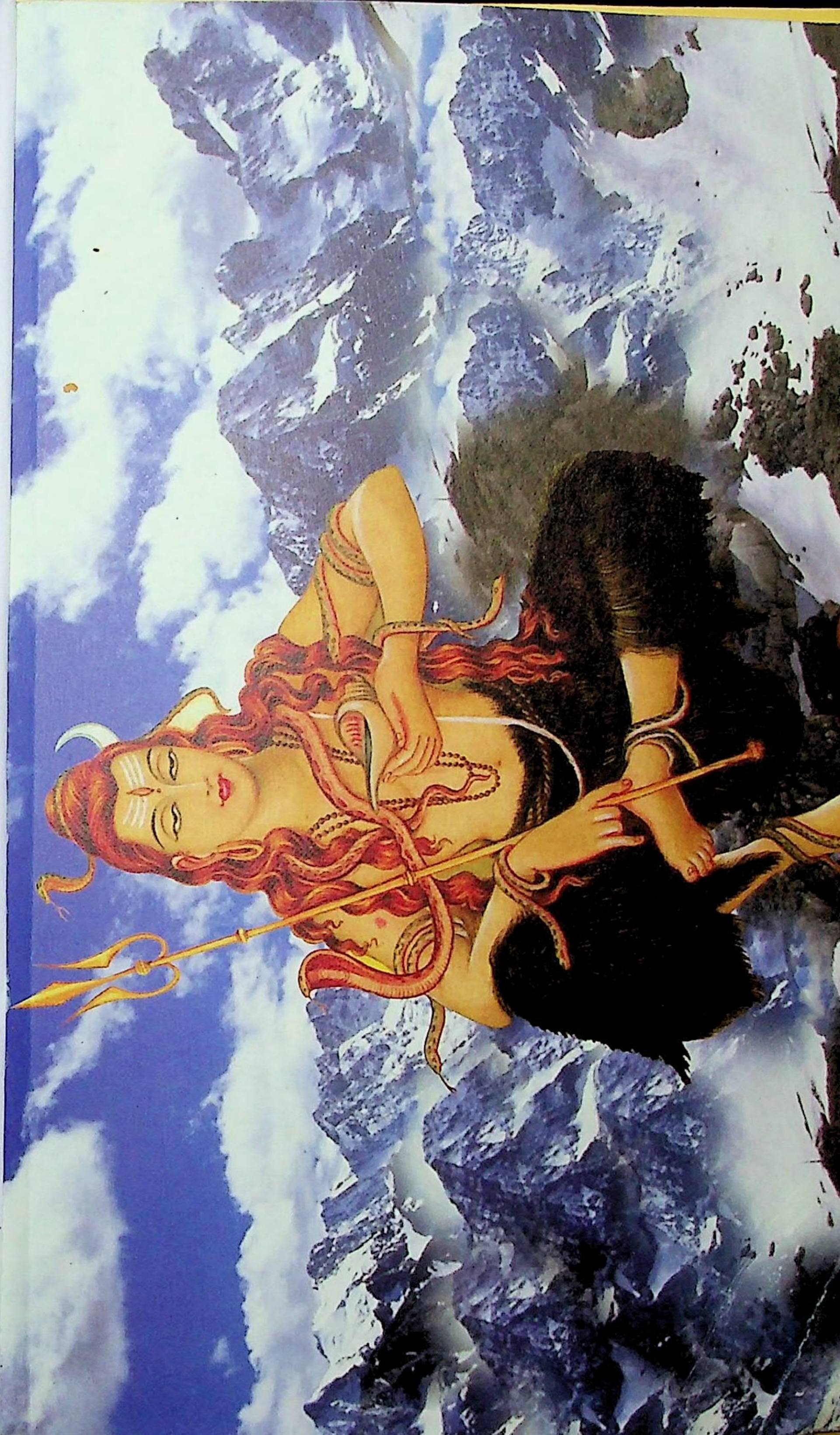
MAANAV SUVIDHA SHOPEE (JAIN MASALEY WALE)
Pacca Gharat Talab Tillo, Jammu, PH : 2555274, 9419833111

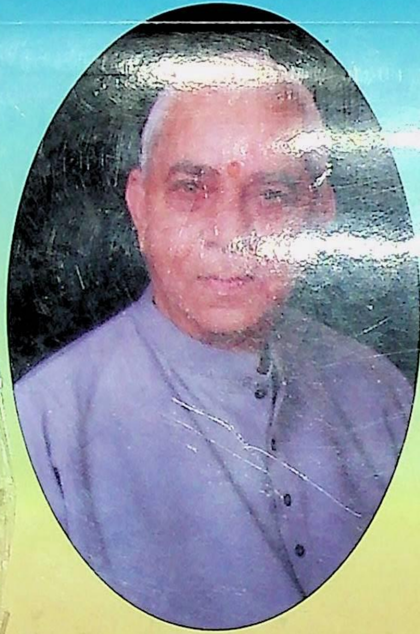
PUBLIC GENERAL STORE
Gole Quarter, Muthi, PH : 9796403923

RAM SHYAM GENERAL STORE
Subash Nagar, Jammu PH : 2582917, 2580742

DINESH STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu, PH : 2554703
KANGAN TRADING COMPANY
Udhewala, Bohri, Jammu PH : 9419130480
KOUL PROVISIONAL STORE
Gole Pulley, Talab Tillo, Jammu, PH : 9419130479, 2501130
G.L. DEPARTMENTAL STORE
Talab Tillo, Jammu, PH : 2505587
ASHA GENERAL STORE
Muthi, Jammu PH : 9796479447
S. KHABRI GENERAL STORE
Block 147, Lane 23, Jagti Camp, Jammu
DURGA TRADERS
Patta Bohri, Jammu PH : 9419121168
SURBI GENERAL STORE
Tomal, Bohri, Jammu PH : 2552848, 9419706786
KAR BOOK HUT
Block 114, LNo. 20, Jagti Township, Jammu, M: 9018702050
KAR STATIONERY MART
Behind LNo. 7, Jagti Township, Jammu, M : 9419144839
PAWAN PHOTOSTAT & STATIONERY
Purkhoo Camp, Jammu, M : 9906320731
SHAKTI STORE
Bhagwati Nagar, Jammu, M : 9796623489

CHUNI LAL SURESH KUMAR
199, Gali Chabli Wali, Kanak Mandi, Jammu, M : 9419168323
ASHA TRADERS
Subash Nagar, Jammu, PH : 9419127502
ASHISH BOOK SELLERS
Pacca Danga, Jammu
BHAT GENERAL STORE
Janipur Chowk, Jammu, Ph : 9697530797
AJAY BOOK SHOP
Janipur, Jammu
THAPLOO GENERAL STORE
Janipur, Jammu
BINDROO PROVISION STORE
Subash Nagar, Jammu, Ph : 979484017
AYUSHI GENERAL STORE
EWS Coloney Lower Roop Nagar, Jammu, M : 9419390499
KAMAL MEDICOS
S.No. 8, Shoping Complex, Bantalab, Jammu, M : 9906272376
KASHMIRI BAZAR
K-204, Durga Nagar, Sec 2, Jammu, M : 9015247365
KASHMIRI BAKERY
Main Road Sec 53, Noida, M : 9350119502
S.S. DAILY NEEDS STORES
Saraswati Vihar, Bohri, Jammu, M : 9419228542

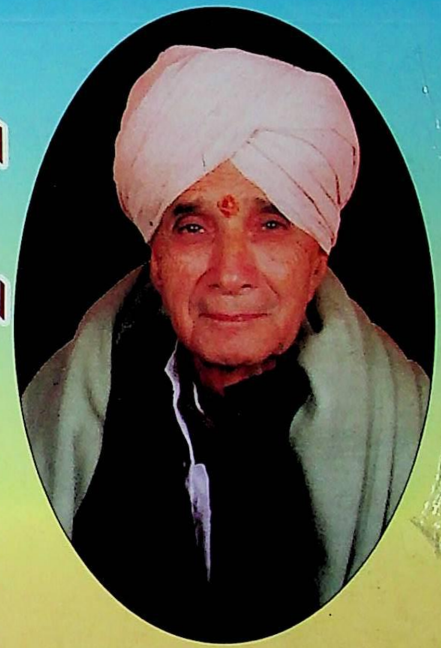




सम्पादक
ओंकार नाथ शास्त्री

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन-भोजनेषु।
एकोऽथवा-प्यच्युत तत्समक्षं
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम्॥

भावार्थ : हे गुरुदेव! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से अपमानित हुये होंगे उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ।



संस्थापक
पं. प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय (रजि.)

अजीत कालोनी, गोलगुजराल जम्मू, स्वरदूत :
0191 2555763 9419119922 9419240070 9419103424

